॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कैलाशवासि स्वामि १०८ पूर्णगिरि गुरुचरणां
स्मृतिकल्पलतायामेकत्रिंशत्तमं पुष्पम्

अथ

श्रीवैष्णवप्रतिष्ठाप्रदीपः

सम्पादकः
गोलोकधामवासि वैद्यप्रवर पं० चरणदासात्मज
पं० विहारिलाल शास्त्रि वासिष्ठः
अध्यक्षचरः ज्योतिषविभाग

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् मानितविश्वविद्यालयः रणवीर परिसर जम्मू(तवियो)

प्रकाशकः
कै० वा० श्री १०८ पूर्णगिरि गुरुचरणानां

पट्टशिष्यः
श्री कुलदीपशर्मा
नगरोटा (उपरेता) बसोहली

प्रथमसंस्करणम् संवत् २०६३ विक्रमी २००६ ई०

वैष्णवी प्रिंटिंगप्रेस बाईपास सिद्धाड्वी (बेधड़ा) जम्मू तवियो

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कैलाशवासि स्वामि १०८ पूर्णगिरि गुरुचरणानां
स्मृतिकल्पलतायामेकत्रिंशत्तमं पुष्पम्

अथ

श्रीवैष्णवप्रतिष्ठाप्रतीपः

सम्पादकः

गोलोकधामवासि वैद्यप्रवर पं० चरणदासात्मज

पं० विहारिलाल शास्त्रि वासिष्ठः

अध्यक्षचरः ज्योतिषविभाग

यसंस्कृतसंस्थानम् मानितविश्वविद्यालयः रणवीर परिसर जम्मू (तवि़षी)

प्रकाशकः

कै० वा० श्री १०८ पूर्णगिरि गुरुचरणानां

पट्टशिष्यः

श्री कुलदीपशर्मा

नगरोटा (उपरेला) बसोहली

प्रथमसंस्करणम् संवत् २०६३ विक्रमी २००६ ई०

वैष्णवी प्रिंटिंगप्रेस बाईपास सिद्धाटवी (सिधड़ा) जम्मू तविषी

संक्षेपतः सर्वदेवप्रतिष्ठा मुहूर्तनिर्णयः

देवानां प्रसिष्ठाविष्णोः शयनाभिधचातुर्मास्यं विहायोत्तरायणे विधीयते। चण्डी, कालभैरव, नृसिह, ग्रामक्षुद्रदेवानांतामस देवानां च चातुर्मास्ये देवशयनवर्जिते दक्षिणायनेऽपि प्रसिष्ठा कृत्यमनुष्ठीयते। देवप्रतिष्ठा बिशेषतः पूर्वाह्ण एव प्रशस्यते। शुक्लप्रतिपदामावास्यारिक्तातिरिक्ततिथय एव प्रतिष्ठायां प्रशस्ताः। "या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वै स्थापनंशुभम् इति मतानुसारं तृतीयस्यां गौरी, चतुर्थ्यांगणेशः, पञ्चम्यां सरस्वती नागाश्च षष्ठ्यां स्कन्द इत्यादि क्रमेण श्रीरामनवमी नृसिह चतुर्दशी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी त्यादि प्रतिष्ठा कर्तव्या. भौमवारं विहाय सर्वेवासराः शुभाः। मृदुक्षिप्रचर ध्रुवैः" मृ. चि. ऽनु. रे., अश्वि, पुष्य, ह, अभि, पुन, स्वा, श्र, ध, श, रो, उ ३ एषु नक्षत्रेषु शुभा। नक्षत्रेश्वराणां देवानाँ स्व स्व नक्षत्रेष्वपि प्रतिष्ठा धर्मशास्त्रेषु प्रोक्ता। अश्विनी कुमाराणां अश्विनी, यमस्य भरणी, शिवस्यार्द्रा, सूर्यस्य हस्ता, चन्द्रस्य मृगशिरा, चन्द्रादीनां पुष्यभे, गणेश, विद्याधरयक्षराक्षससर्प भूतादीनां रेवतीभे, बुधस्य श्रवणभे, मूलंभे दुर्गादीनां देवीनाम्, नागसर्पाणामाश्लेषाभे, कुबेर स्कन्दयोश्चानुराधाभे, गन्धर्ववसूनां धनिष्ठाभे प्रतिष्ठा विधीयते। त्रिषडाय ३.६.११ भावेषु सचन्द्रेषु पापग्रहेषु अष्टम, द्वादशभावौ विहायान्यत्र शुभग्रहाः शुभाः स्युः। सिंहे सूर्यो घटे ब्रह्मा, कन्यायां विष्णुदेवता। शिवस्य मिथुने श्रेष्ठा दुर्गायास्तु द्विदेहभे ३, ६, ९, १२। चरेलग्ने १।४।७ १० तु क्षुद्राणां यक्षगन्धर्वरक्षसाम् स्थिरेलग्ने २, ५, ८, ११ तु देवानां सर्वेषां स्थापनं शुभम्। कुलाचारानुसारं च कुलदेवं च स्थापयेत्। अनभिज्ञाः कुलाचारे रवौवारेऽथ पूर्णिमा। लोक प्रसिद्ध देवानां लोकाचारानुसारतः।

(सिंहे सूर्यो घटे ब्रह्मा कन्यायां विष्णुदेवता।
शिवस्य मिथुनेलग्ने दुर्गायास्तु द्विदेहभे ॥ ३।६।९।१२

चरे १।४ ७ १० लग्ने तु क्षुद्राणा यक्षगन्धर्वरक्षसाम्।
स्थिरे २।५।८।११ लग्ने तु देवानां सर्वेषां स्थापनं शुभम्।

इति प्रतिष्ठा मुहूर्तः

प्रतिष्ठा महत्व

प्रति उपसर्ग पूर्वक गति निवृत्त्यर्थक "ष्ठा" धातु से प्रतिष्ठा शब्द मानसिक दुष्प्रवृत्तियों की ओर से निवृत्ति से सर्वथा सत् प्रतिष्ठा की भावना आते ही स्वतः सत् प्रवृत्तियां प्रकाशित होकर मनुष्य सत् चित् आनन्द स्वरूप होकर अलौकिक परमानन्दमय सागर की तरङ्गों से अनन्त जन्मान्तरीय वासनाओं से मुक्त होकर जन्ममरण के चक्र से छूटकर सदा के लिये जीवन्मुक्त हो जाता है। भगवान् ही सर्वत्रव्यापक नहीं उसकी सृष्टि में पृथ्वी, जल, तेज, तेज, वायु, आकाश ये पांचों भी सर्वव्यापक हैं।

किन्तु सर्वत्र उनको प्राप्त नहीं किया जासकता। पृथ्वी के सूक्ष्मतत्व गन्ध को आप सारे शरीर से ग्रहण नहीं कर सकते उनके भी मन्दिर रूपी नाक जैसे मन्दिर से ही गन्ध का ग्रहण होगा। जलतत्व भी सर्वव्यापक है किन्तु उसके रसास्वादन के लिये रसना में ही स्थान है इसी प्रकार अग्नि-तत्व भी सर्वत्र व्यापक है किन्तु उसके देखने के लिये एकमात्र चक्षुही इन्द्रियरूपी मन्दिर है जो पूर्णतः देखने में समर्थ है। वायुतत्व के स्पर्श का ज्ञानत्वचा में ही उपलब्ध है इसी प्रकार आकाशतत्व भी सर्वव्यापक है किन्तु आकाश का गुण शब्द के ज्ञानके लिये के कर्णरूप श्रुति मन्दिर ही भगवान् की ओर से नियत है। यह तो रहा आध्यात्मिक उदाहरण अब आधिभौतिक रूप में भी पांचों महाभूत सर्वव्यापक हैं किन्तु सर्वत्र उनकी उपलब्धि नहीं होती पृथिवीतत्व का नगर में एक मिट्टी का टुकड़ा भी लेना चाहें तो बाजार से किसी से मुलतानी मिट्टी ही मिलेगे अन्यथा कोसों नगर से बाहर जाना पड़ेगा। जलतत्व भी सर्वव्यापक है किन्तु उसके लिये कूपं, वापी, आदि ही उपलब्धि स्थान निश्चित होते हैं। वायु भी सर्वत्र व्यापक है वायु के लिये मोटर के पहियों में भरने के लिये भी सर्विस स्टेशन पर जाना पड़े घर में किसी को वायु की आवश्यकता लिये

स्विचका स्थान निश्चत हो अग्नि तत्व भी सर्वव्यापक है किन्तु उसको भी माचस आदिके रूप में मूर्तिमान से काम लिया जाएगा आकाश तत्व के शब्द ग्रहण के लिये टेपरिकार्ड नियत होते हैं । ऐसे ही परमात्मा के सर्वव्यापक होने पर भी सभी जगह उसकी प्राप्ति के लिये मन्दिर, तीर्थ, एवं मूर्ति जैसे साधनों से ही प्राप्त कर सकते हैं । अतः महर्षियों ने अल्पज्ञों को विश्वास दिलाने के विभिन्न कोटियों में प्राप्त करने के लिये मूर्ति साधन को सर्वोत्तम मानकर प्रतिष्ठा के द्वारा परमात्मा के अनन्त देवभेद से पूजाओं के नाना प्रकार विधान बनाकर जनता को सन्मार्ग पर चलाने के लिए सनातन धर्म की नींव रखी अतः प्रतिष्ठा के द्वारा रखी गई मूर्तियों के प्रभाव से जनता अपनी दुर्वासनाओं से बचने के लिये शास्त्र वासना द्वारा आध्यात्मिक ओर लगा रहे तो सर्वत्र शान्ति का वातावरण बना रहेगा। अराजकता के भयसे मानव सुरक्षित रहेगा ।

इस के अतिरिक्त जिन गुरुलोगों से अध्ययन कर शास्त्रों के प्रचार के लिये अध्ययनाध्यापन, कथावाचन, प्रवचन आदि द्वारा जनता मैं शान्ति के वातावरण लाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं उन गुरुलोगों के चित्र भी इसी प्रतिष्ठा प्रदीप में अङ्कित हैं। इस वर्ष दो व्यक्तियों के चित्र मिले हैं एक पल्लीग्रामाभिजन पं. आरूढभानु शास्त्री जी जिनके द्वारा महाराजाधिराज श्रीप्रतापसिंह जी के स्वर्गारोहण के वाद महाराजाधिराज श्रीहरिसिंह जी के राज्याभिषेक द्वारा सिंहासनारोहण के समय उनकी प्रशस्ति प्रस्तुत की थी उसका सर्वप्रथम श्लोक जो उनके सिंहासनारोहण समय से लेकर उनके स्वर्गारोहण तक श्रीरघुनाथ मन्दिर में प्रतिदिन प्रातः सन्ध्या एवं सायं सन्ध्या के वाद श्रीरघुनाथ जी के द्वार पर पंक्तिबद्ध श्रीरघुनाथ संस्कृत बिद्यालय के समग्रछात्र उच्चारण करते थे वह वसन्ततिलकाछन्द रचित श्लोक निम्न प्रकार से है—

यो रामवंशमणिरद्भुतशक्तिशाली सीमाञ्जहाति न मनागपि पूर्वजानाम् ।
वर्षायुतं ससुखमेष बयोऽनु जातो दारैः सुतैश्च जयतां हरिसिंह बीरः ॥

इनका परिचय इस प्रकार है—

श्री आरूढ़ भानुशास्त्री प्रशस्तिः

यल्लीलाभिजनोऽजनिः स्वयमयं गोत्रो भरद्वाजभाग्
भट्टाढ्यो द्विजभूषणः पदनये नूत्नो त्वयं पाणिनिः ।
पञ्चाम्बुष्वधिगत्य शास्त्रिपदवीं श्री विश्वविद्यालयाद्
रूढारामपदं सुशोध्यकुलपः स्वारूढभानुं व्यधात् ।१।

जम्ब्वां श्रीरघुनाथमन्दिरभुवो गीर्वाणवाणी गृहे
राज्ञः श्रीपरतापसिंहसमये आरूढभानुँ बुधम् ।
आहूयात्र नियोजितो नृपवरैरध्यापकाख्ये पदे
नव्यव्याकरणे विशेषत इमे लब्धप्रतिष्ठास्तदा ।२।

परशूरामगुरोः समागमक्षणे वाराणसीतस्त्विमे
सम्भ्रान्तारघुनाथसंस्कृतगिरां विद्यालयं तत्यजुः ।
कन्यानां पठनार्थं निर्मितनवं स्वार्यैः समाजप्रियै-
विद्यापीठमितीह संस्कृतगिरां गेहेऽधिकारी वरैः ।३।

आहूता बहुमानपूर्वकमिमे आरूढभानुबुधाः
स्वेष्टं श्रेष्ठपदन्त्ववाप्य गुरवो लब्धप्रतिष्ठाः स्वयम् ।
श्रेष्ठा (सेठा) ख्यातशकुन्तला सुनियता प्राचार्य शिष्टे पदे
विद्यापीठमथोन्नतिं प्रतिपदं प्राप्तं स्वतःसत्पथा ।४।

श्री विश्वनाथशास्त्री संक्षिप्त प्रशस्तिः—

पौलस्त्यास्तटभूपुलस्त्यनगराधीशार्चिताः शास्त्रिणो
नानाशास्त्र विचारसारनिपुणाः श्रीविश्वनाथाभिधाः ।
स्वातन्त्र्योत्तरमादृतानृपवरे रघुनाथविद्यालये
शास्त्राध्यापन तत्पराः प्रतिदिनं लब्धप्रतिष्ठा इमे ।१।

पण्डित आरूढभानुशास्त्री एवं श्री पं. विश्वनाथ शास्त्री खजूरिया।

जम्मू वास्तव्य के चित्रों उपलब्धि में डा० प्रियतमदत्तशास्त्रिभ्यः पौनः पुन्येन धन्यवादाः ।

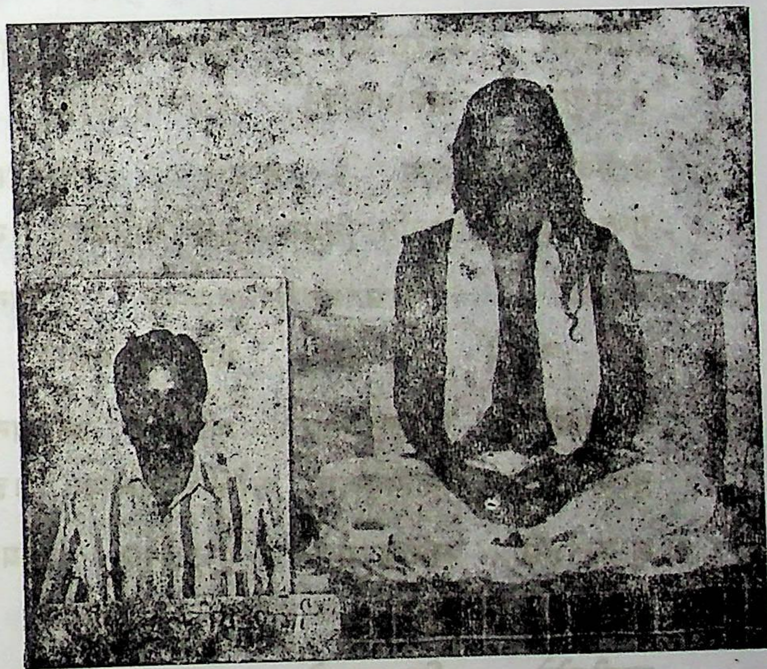
विदुषां वशंवदः—

विहारिलाल शास्त्री वासिष्ठः

आर्षविहारिविहारः
२३ श्रीरघुनाथपुरी जम्मू तविषी
हरिशयनी एकादशी शुक्रवार
सं० २०६३ आषाढ प्र० २३

श्रीपूर्णाऽऽविर्भाव:

जम्मूप्रान्ते तविषि सरित: स्रोतसां कल्पमूले
गौरीकुण्डे हिमगिरिसुतास्नानपुण्योदकेषु ।
अत्रेर्वंशे परमतपसाराधानाद्यैश्च धन्ये
गण्ये मान्ये द्विजवरगृहे जन्मपूर्णप्रभूणाम् ॥



श्रीपूर्णशिवसायुज्य प्राप्ति:

(श्री) पूर्णात्मानो रसयुगनखै २०४६ वैक्रमे श्रावणेऽमा
गौरीकुण्डे पथिकसुखदं रम्यहर्म्यं विधाय ॥
कर्कस्थेऽर्के धवलदलभाक् पक्षतौ बुद्धवारे
योगेनात्ये जनुभुवि महादेवलोकं प्रपन्ना: ॥

स्वा० श्री १०८ गुरुवरपूर्णगिरि प्रशस्तिः

जम्बुप्रान्ते तविषि सरितः स्रोतसां कल्पमूले
गौरीकुण्डे हिमगिरिसुतास्नानपुण्योदकेषु ।
शुद्धिक्षेत्रे जगति विदिदे गोमुखीवाद्वितीये
गङ्गाद्वारे भुवनमहिते धूर्जटेः काशीकूटे ।१।

जातात्रैव प्रवरसरितां देविका ब्रह्मसूत्रँ
त्रैधावृत्वा तविषिसरितँ दक्षवामभ्रमन्ति ।
उत्तत्रैवेण्यामुधमपुरभू मण्डले जन्दराहे
गुप्ता साक्षाद् भवति नियतं भूतलं पावयन्ती ।२।

अत्रेर्वंशे परमतपसाराधनाद्यैश्च धन्ये
गण्ये मान्ये द्विजवरगृहे जन्मपूर्णप्रभूणाम् ।
बाल्येऽपीमे सकलकृतिषु कौशलँ दर्शमाना
भृत्ये कृत्येऽप्यधिकनिपुणाः सैनिकेष्वग्रगण्याः ।३।

भृत्यन्तेऽमी यतिवरगणे पूजनीयेषु पूज्याः
भूँढेवन्यां फणिधरपुरे कौघभड्ढू मुनीशे ।
सुन्द्रीकोटे किशनपुरके सु करालालयेऽर्च्यैं
माडा विश्वस्थलिपुरवरे सान्द्रिहट्टें च थें च ।४।

प्लेसक्षेत्रे लखनपुरभूभद्रबाहुपुराख्ये
कस्पालाख्ये नरनमुठिके छन्निनाम्नीह धाम्नि ।

देवीदेवप्रतिमभवनानीह निर्मापयन्तः
यज्ञैर्यागैरनुदिनममी वेदिपूजानुसारम् ।५।

पौनः पुन्यं लखनपुरगा यज्ञशिक्षार्थमेते
रम्यं हर्म्यं सशिवशिवा शंकराचार्यमध्यम् ।
ऐरावत्या महितपुलिने यज्ञशालां विशालां
पञ्चप्रख्यैरचलनवलैः कुण्डकैः शोभमानाम् ।६

वेदीमेकां स्थपतिरचितां दूरतो दीप्यमानां
निर्माप्याशु क्रतुवरहितं सेवकैः शिष्यवर्यैः ।
युक्तामुक्ता अपि च जगतां धन्यमान्या वदान्या
मर्यादाया ह्यचलदृढ़िमां शिक्षणार्थं प्रसक्ताः ।७।

।। इति पूर्णगिरिगुरुप्रशस्तिः ।।

बिश्वप्रसिद्ध
भारतीयसंस्कृति एवं संस्कृत के
पुनरुद्धारार्थ नानाविद्यापीठों व
नाना संस्था संस्थापक
परमश्रद्धेय डॉ० मण्डनमिश्र जी



कुलपति
सम्पूर्णानन्द सं. विश्वविद्यालय
वाराणसी
मेरे सम्पादनक्षेत्र के प्रारम्भिक
श्रीगणेशविधाता

सम्पादन क्षेत्र के मार्गदर्शक
आदरणीय प्रो० रामचन्द्रपाण्डे



ज्योतिर्विभागाध्यक्ष
प्रधानसम्पादक विश्वपञ्चाङ्ग
काशीहिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी—५

पं० बालकृष्ण शास्त्री



प्राचार्य

प० श्रीचन्द्रजी काव्यतीर्थ



उप प्राचार्य

पं० परशुरामशास्त्री व्या आ.



प्राचार्य

पं० काकारामशास्त्री काव्यतीर्थ



प्राचार्य

पं० जयरामशास्त्री न्या० आ.



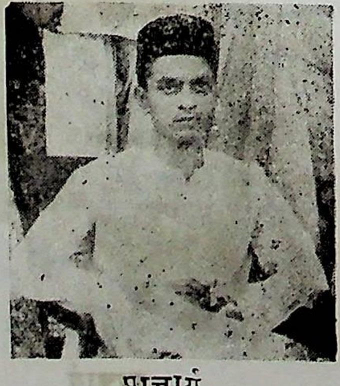
प्राचार्य

पं० पूर्णचन्द्रशास्त्री ज्यो. आ.



प्राचार्य

डा० अनन्तरामशास्त्री सा. आ



प्राचार्य

पं० मूलराजशास्त्री या. आ.



प्राचार्य

पं० रमाकान्तशास्त्री



आयुर्वेदाध्यापक

पं० महेश्वरशास्त्री



षडदर्श..चार्य

प० श्रीचन्द्रजी पाण्डेय काशी



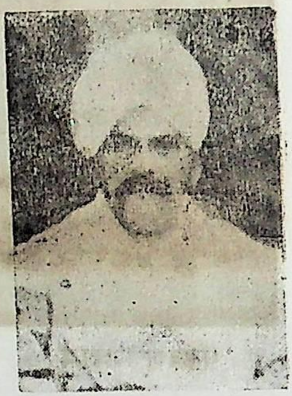
सि० ज्यो०, व्या०, सा० आ०

पं० रामशरणशास्त्री काव्यतीर्थ



प्राचार्य स विद्यालय वीरगञ्ज

ऋग्वेदाध्यापक



पं० ठाकुरदत्त श्रीवत्स

वेदपाठी



पं० तारामणि रैणा याज्ञिक

सामवेदाध्यापक



पं० रामशरण गोस्वामी

वेदपाठी



पं० विश्वम्भर शास्त्री



सर्वतन्त्रस्वतन्त्र
श्री वाचस्पति शास्त्री



पं० आरूढ़भानुशास्त्री



पं० वासुदेवा जी सिद्ध



श्री विश्वनाथशास्त्री

पं० मदनमोहन शास्त्री
ज्यो० आ० का० ती०



सम्पादक पचाङ्गकल्पद्रुम



परवाक्य प्रमाण पारावाराण
सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीमद्
वागीश्वर शास्त्रिवर्या
साहित्याचार्याः

पं० नायकचन्द्रमिश्र ज्यो० आ०



सम्पादक चूडामणि
एक राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग

पं० बिहारिलाल वासिष्ठ ज्यो. आ.



सम्पादक
वैष्णवविजय पञ्चाङ्ग

राजगुरु स्वामी श्रीनित्यानन्दजी

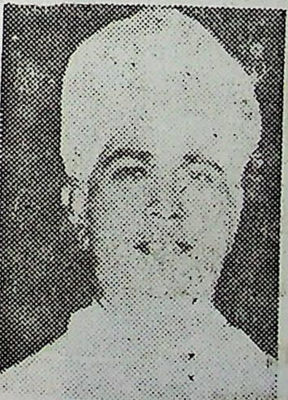


प्रथमसम्पादक
१. सं. विवाहपद्धति बृहत्काय
२. सं. त्रयोदशरत्नविवाहप्रकाश



मान्यवर
महन्त श्रीबलदेवदास जी
कड़वा भलवाल

पं० जगन्नाथजी वासिष्ठमजूआ



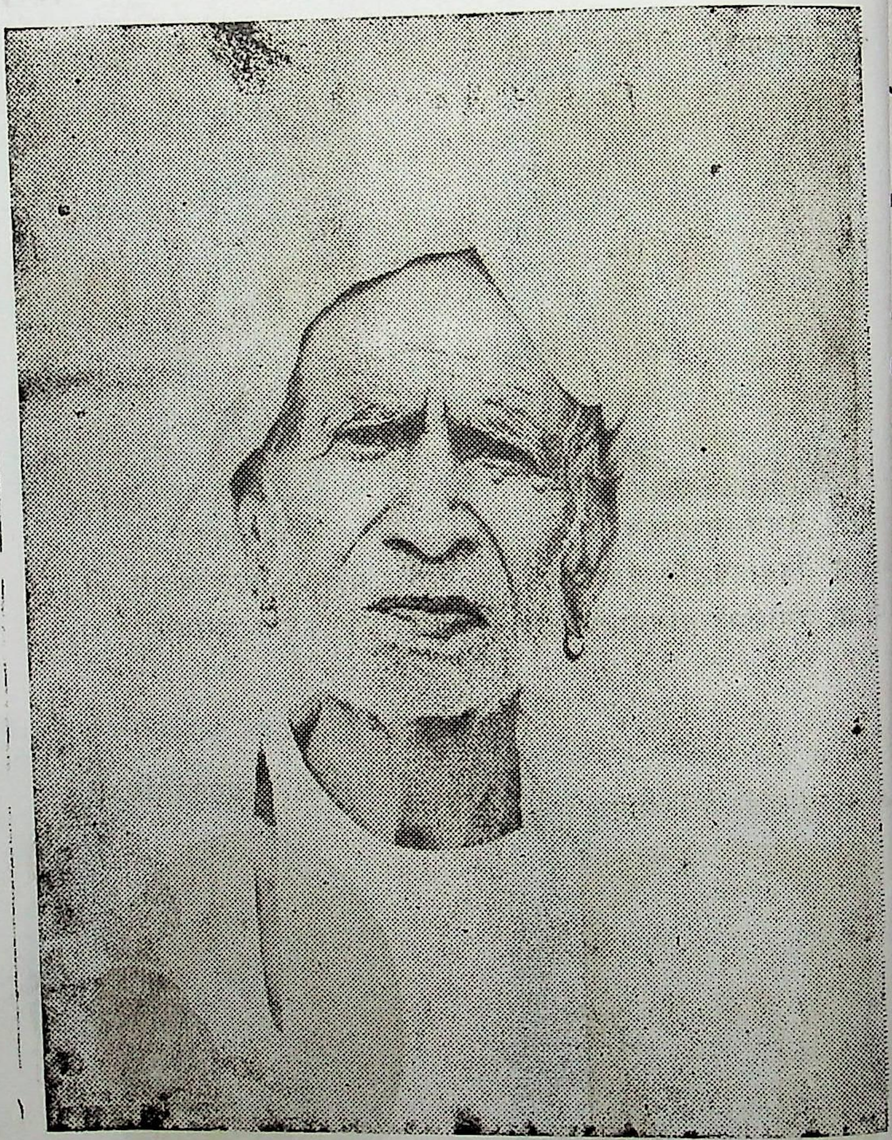
तृतीय सम्पादक
वासिष्ठी विवाहपद्धति

अभिन्न हृदयपरममित्र



पं० दीपचन्द्र खजूरिया ज्यो० आ०
हीरानगर

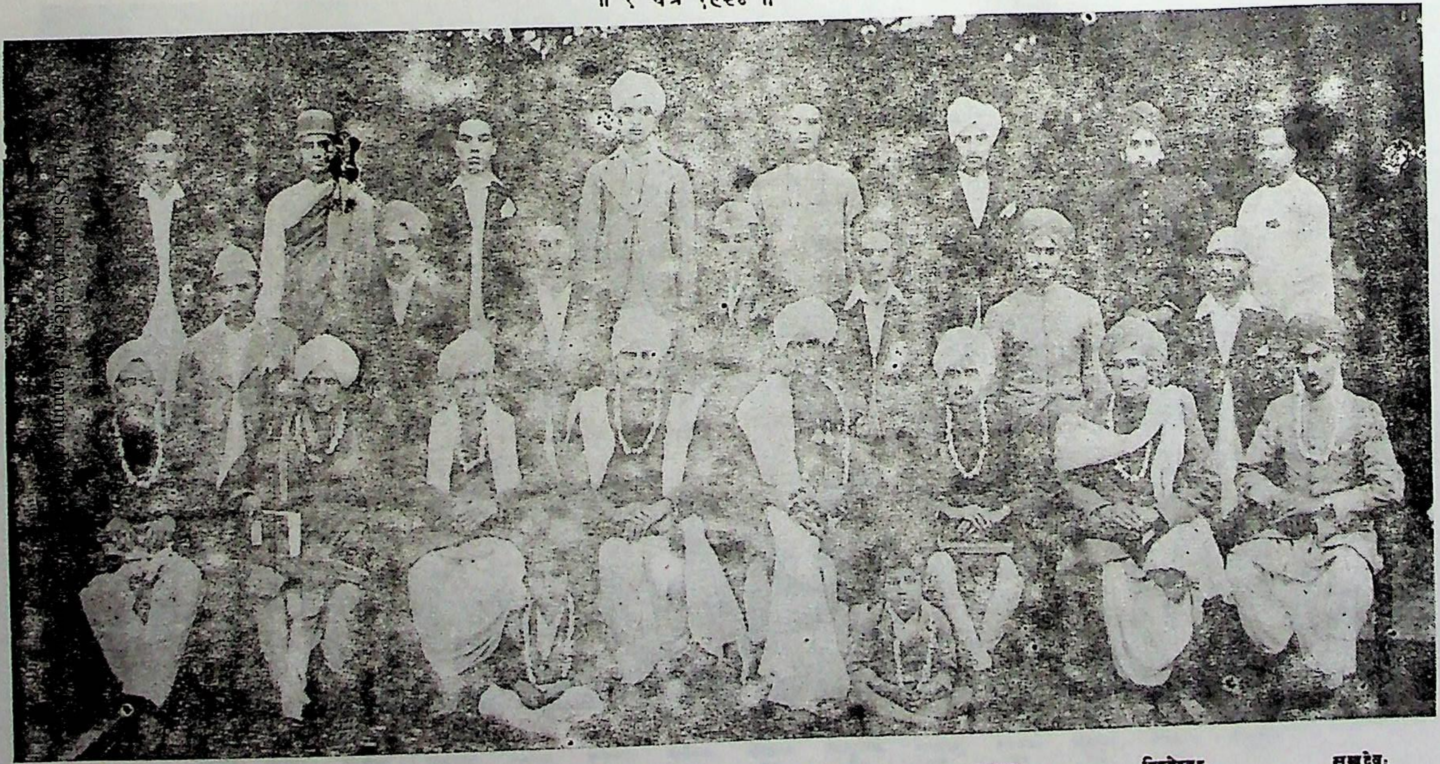
पण्डित ज्वाला सहायजी



प्राध्यापक लवपुरीय
वंशीधर संस्कृत महाविद्यालय
वैक्रम सं० १९६०–१९५५

—※ शास्त्री श्रेणी ※—

॥ १ चैत्र १९६४ ॥



आदित्य, गङ्गाधर, गङ्गादत्त, रामजीदत्त, लेखराम, क्षेमचन्द्र, देवीरमण, रामनाथ, चन्द्र शेखर, भवानीदत्त, रामदत्त, सोहनलाल, विश्वेश्वर, हरिकृष्ण; सुखदेव;

पं० रमाकान्त जी, (प्रो० आयुर्वेद) पं० काकाराम जी, (प्रो० अलङ्कार) पं० परशुराम जी, (प्रो० व्याकरण) पं० श्रीचन्द्र जी, (वा० प्रिंसिपल) पं० बालकृष्ण जी, (प्रिंसिपल) पं० चन्द्रमौली जी, (सैक्रटरी) पं० मदन मोहन जी, (प्रो० ज्योतिष) पं० चन्द्रमणी जी; (प्रो० साङ्ख्य)

भाषा. विशारद, शास्त्री सं० १९९८



[illegible], विश्वबन्धु, हरिशरण, कृष्णचन्द्र, [illegible], कृष्णदत्त, पृथ्वीनाथ, दीनानाथ, विष्णुलाल, रामलाल, हरिभक्त, [illegible], [illegible], [illegible]

[illegible], [illegible], रामचन्द्र, इन्द्रदेव, [illegible], द्वारिकानाथ, दुर्गादत्त, [illegible], पं० [illegible], [illegible], [illegible], हरिचन्द्र, ठाकुरदास

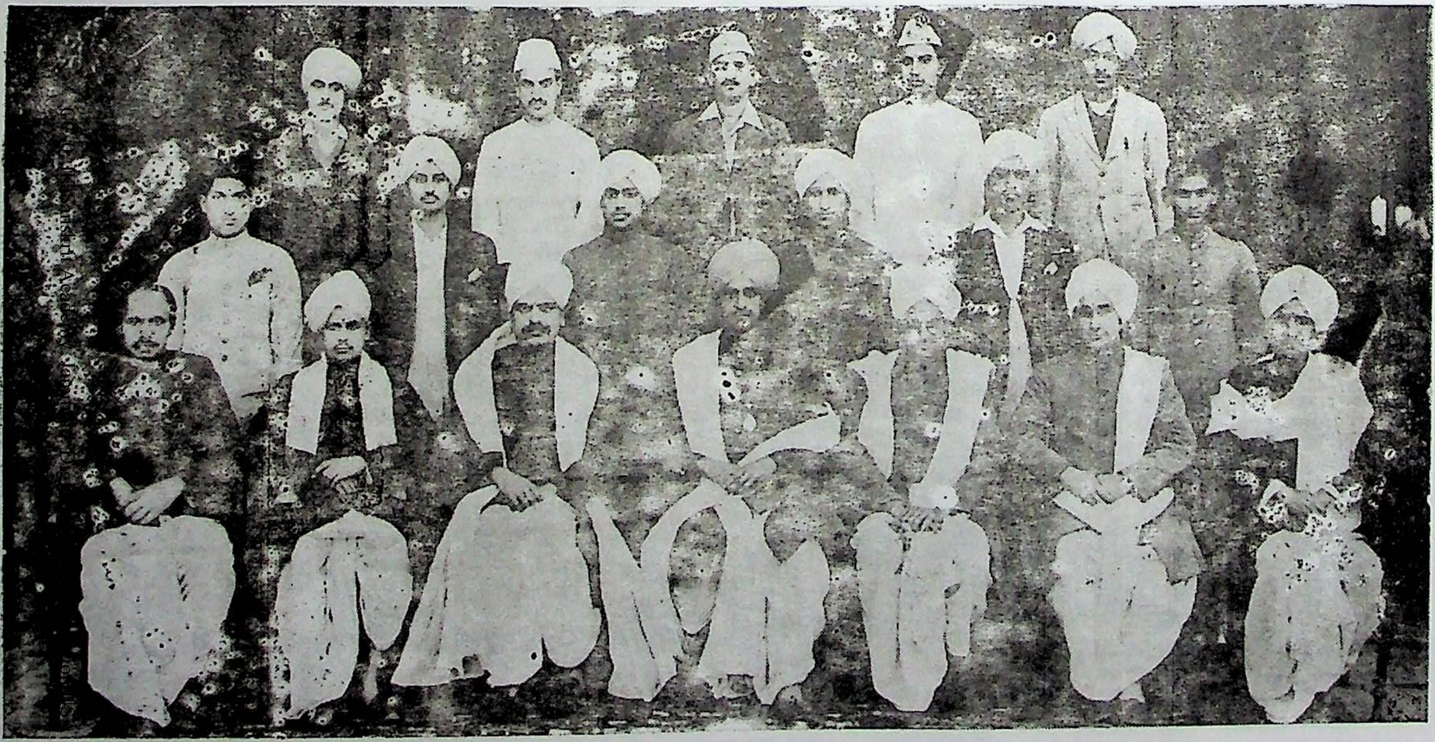
[illegible], पं० [illegible] शर्मा, पं० [illegible], पं० मदनमोहन शा०, पं० [illegible], पं० [illegible] शा०, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा, पं० पूर्णचन्द्र जी शा०, पं० [illegible] जी शा०, डा० [illegible] जी, पं० [illegible] जी

कृष्णचन्द्र, कृष्णचन्द्र, [illegible], शान्तिप्रकाश, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

C.N. Dogra & Sons. Jammu



२० चैत्र १९९५ आनर्ज़ (शास्त्री)



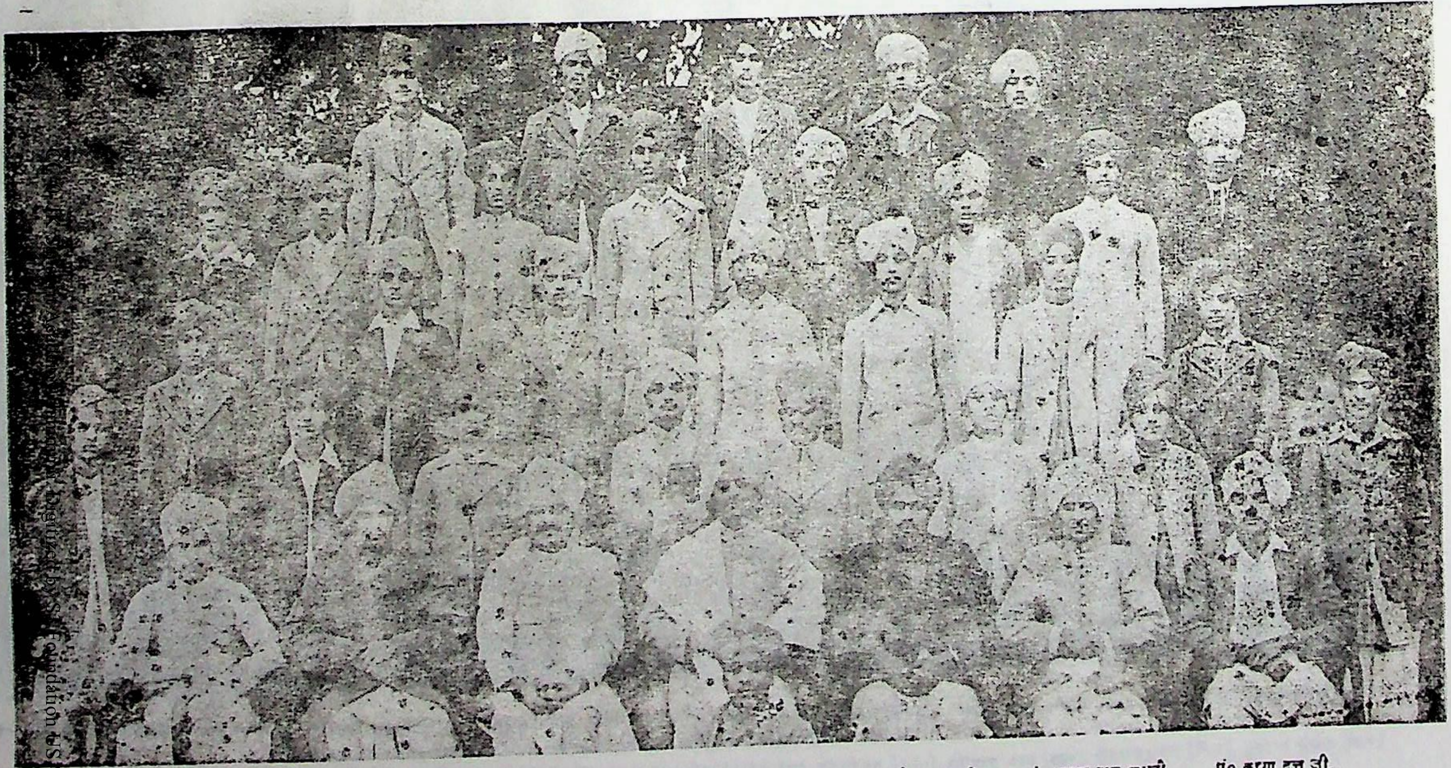
मोहन लाल शा० बलजी नाथ शा० श्री हर्ष शा० राम दत्त शा० गौरी शङ्कर शा०

हरवंश लाल शा० हरि दत्त शा० श्री घनश्याम मिश्र शा० गौरी दत्त शा० चन्द्रशेखर शा० सा० के० गङ्गा दत्त विनोद शा०

पं० महेश्वर जी शा० प्रो० (न्याय) पं० परशु राम जी शा० प्रो० (व्याकरण) पं० श्री चन्द्र जी त० वाइस प्रि० प्रा० (वेद) रा० पं० बालकृष्ण जी शा० (प्रिंसिपल) पं० भोला नाथ जी शा० बी० ए० (प्रो० वेदान्त) पं मदन मोहन जी शा० (प्रो० ज्योतिष) पं काका राम जी शा० (प्रो० अलङ्कार)



शास्त्र विशारद श्रेणी वसन्त १९९६



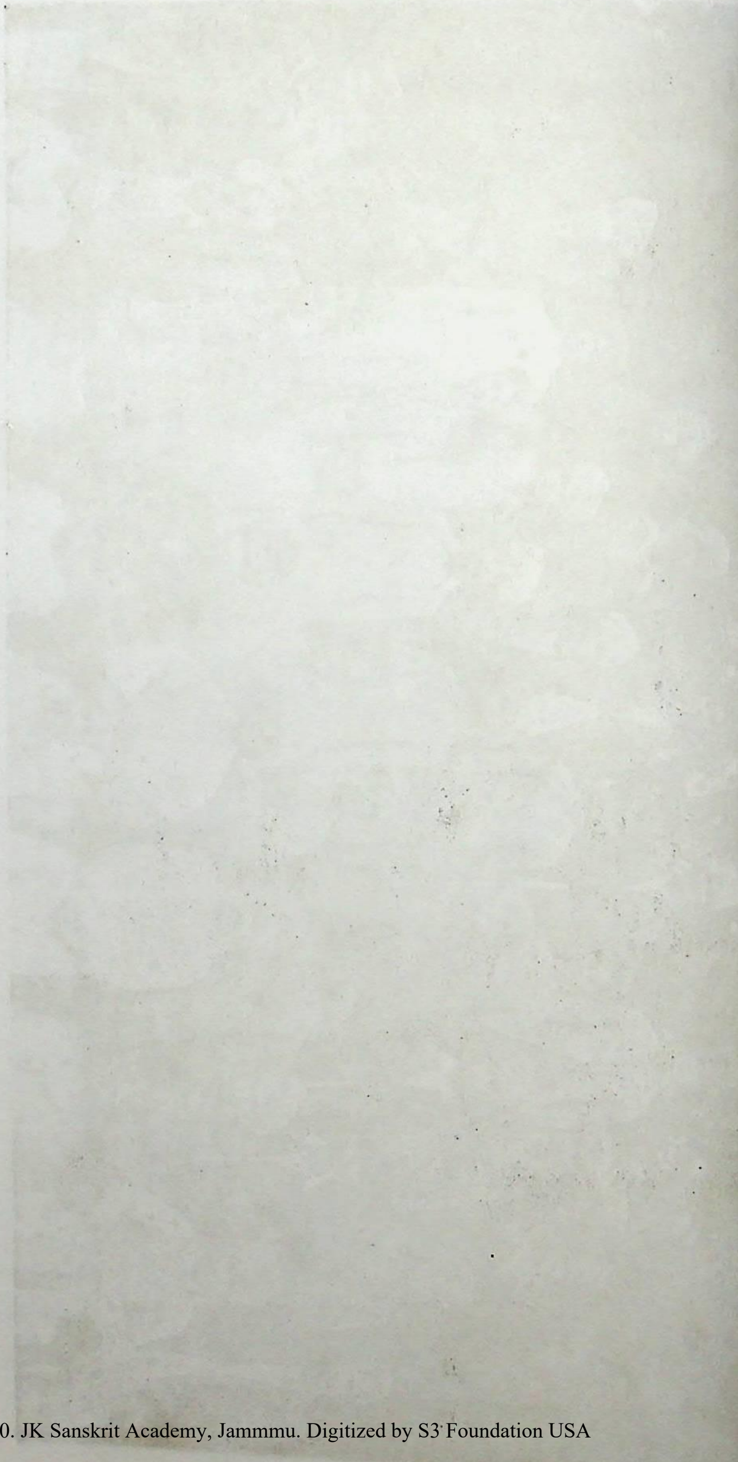
पं० चन्द्रमौलि शास्त्री, सेक्रेटरी   पं० परशुराम शास्त्री, व्याकरणाध्यापक   पं० श्रीचन्द्र शर्मा, वाइसप्रिन्सिपल   पं० बालकृष्ण शास्त्री, प्रिन्सिपल   पं० महेश्वर शास्त्री, न्यायाध्यापक   पं० काका राम शास्त्री, साहित्याध्यापक   पं० कृष्ण दत्त जी, सङ्गीतमास्टर

ब्रह्मदत्त, तिलकराज, रामलाल, प्रभुदयालु वर्मा, हरिश्चन्द्र, उत्तम चन्द, कृष्ण चन्द, सन्तराम मेड़ाल,

चमनलाल, अनन्तराम, रामेश्वरदत्त, देवराज, आनन्दप्रकाश, बोधचन्द्र, कुञ्जलाल

मनोहरलाल, देशराज, विष्णुदत्त, सन्तराम, बाबूराम, रांजाराम, सोमराज,

दुर्गादत्त, प्रेमनाथ, देशबन्धु, दुर्गादत्त, का. दुर्गादत्त, भा. कृष्णदत्त,



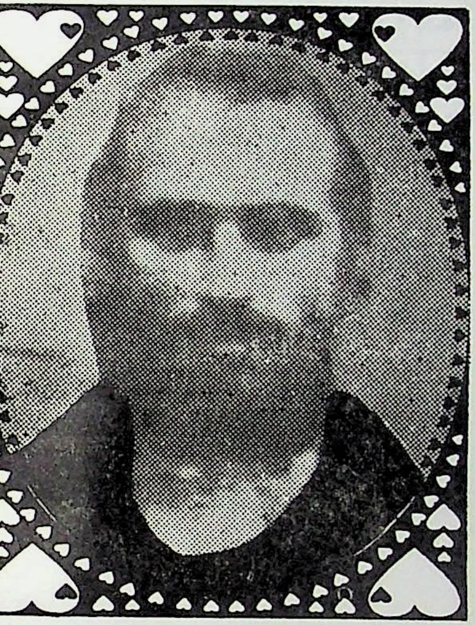


१—बाईं ओर से दक्षिण की ओर बैंच पर खड़े—परमेश्वर दत्त (शा०), राम कृष्ण (प्रा०), पीताम्बर शर्मा (शास्त्री), मुकन्द राम (विशारद), बाल कृष्ण (वि०), दिन मणि (वि०), कृष्ण कुमार (वि०),
हरिश्चन्द्र (शा०), चूनी लाल (शा०), गिरिधारी लाल (वि), पुण्य प्रभाव (प्रा०)

२— „ „ „ „ ज़मीन पर खड़े—विश्वम्भर [प्राज्ञ], जगदीश तपस्वी [प्रा०], हंस राज [वि०], परमानन्द [वि०], चन्द्रवदन [शा०], गोविन्द राम [शा०], पीताम्बर दत्त [वि०], सुदर्शन कुमार [वि०]
सोम दत्त [विशारद], लाल चन्द [वि०]

३— „ „ „ „ कुर्सियों पर बैठे हुए—प० अनन्त राम शास्त्री [प्रोफेसर], राम कृष्ण शा० [लाइब्रेरियन], प० वानी राम शास्त्री [प्रोफेसर], पं० रमाकान्त शास्त्री [प्रोफेसर],
पं० काशी राम शा० [वाइस प्रिंसिपल] प० परशुराम शा० [व्याकरणाचार्य प्रिंसिपल], पं० पूर्ण चन्द्र शास्त्री [प्रोफेसर], पं० जयराम शा० [प्रोफेसर],
पं० मूल राज शा० [प्रोफेसर], प० शान्ति प्रकाश शा० प्रोफेसर [छात्रावासाध्यक्ष], पं० द्वारिका नाथ शास्त्री [प्रोफेसर]

४— „ „ „ „ भूमि पर बैठे हुए—दुनिचन्द [चपरासी], मोहन लाल प्रा०], देशराज [प्रा०], मनसा राम चौकीदार

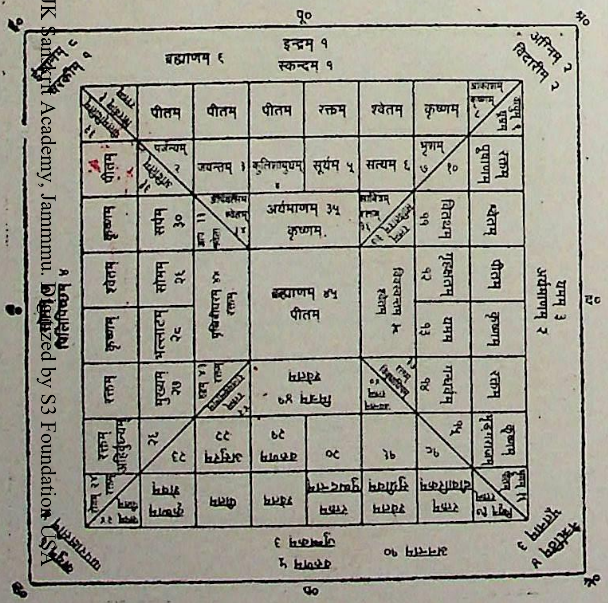


जम्बूसाम्बपुरोः सुमेलपुर भूर्ग्रामो द्विजमण्डितः
पूज्यैर्भूरिखजूर्दुहात्तर भवैर्गोस्वामि विष्णूनरैः
भूरि ज्ञातिभवेषु कर्मठगुरुर्विद्याधरः पण्डितः
भारद्वाजकुले कुशाग्रमतिमान् काशी च तस्यात्मजः
पुत्राःपञ्चमितास्तु तस्यसकला स्तुयस्तु काका ततो
दुर्गाद्यो हृदयालुमध्यमसुतः सोह्नू कनिष्ठोऽभवत्
तस्माद्धै हृदयालुतः षडभवन् श्रीपर्शुरामोऽग्रज-
स्तस्मात्पुत्र चतुष्टयं समभवद् गङ्गाभिरामोऽनुजः

जम्वुसाम्वयोर्मध्यवर्तीसुमेलपुरवास्तव्य
विप्रवंशीय भूरिजातिमतो भरद्वाजगोत्रोद्भव
श्रीमद्गुरुवर्यगङ्गारामशर्मणांवँशावली

विद्याधर १.. .. ..कुबेर २
काशी
१ गुटा देया | २ शामू रूपा | ३ दामोदर १ गुदु २ कण्ठु ३ लक्ष्मू | ४ काका देसी | ५ मया कुननू | पुत्राः पुत्रवध्वः
साधु (कण्ठु) | रामकृष्ण (लक्ष्मू)
१ दुर्गा | २ हरदयालुः | ३ सोहनू
(दुर्गा): १ दुनी इन्द्र | २ गोपाल ममू | ३ भक्तराम बलभद्र | ४ रामचन्द्र
(सोहनू): १ दुर्योधन | २ प्रसन्नवदन | ३ श्रीधर | ४ अनन्तराम | ५ लब्भू
(हरदयालुः): १ परशुराम | २ सद्गुण | ३ सन्तराम | ४ रामदास | ५ रामेश्वर | ६ वामदेव
नित्यानन्द
(परशुराम): १ दीनानाथ | २ अमरनाथ | ३ गौरीशंकर | ४ गंगाराम
चिन्तपूरणी
प्रेम | किशोर

चतुःषष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम्



इक्यासी पदोंसे युक्त वास्तुचक्र

पूर्व

ईशान — इन्द्र — अग्नि

चरकी — स्कन्द — विदारी

उत्तर — पिलिपिच्छ (पिलिपिञ्ज)

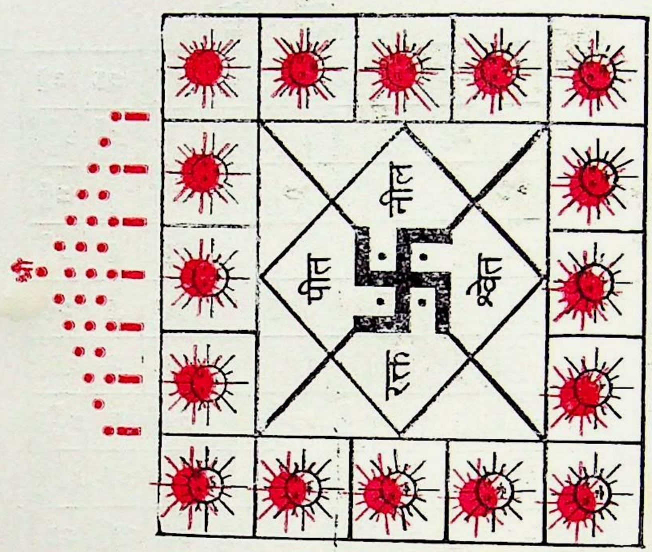
सोम (कुबेर)

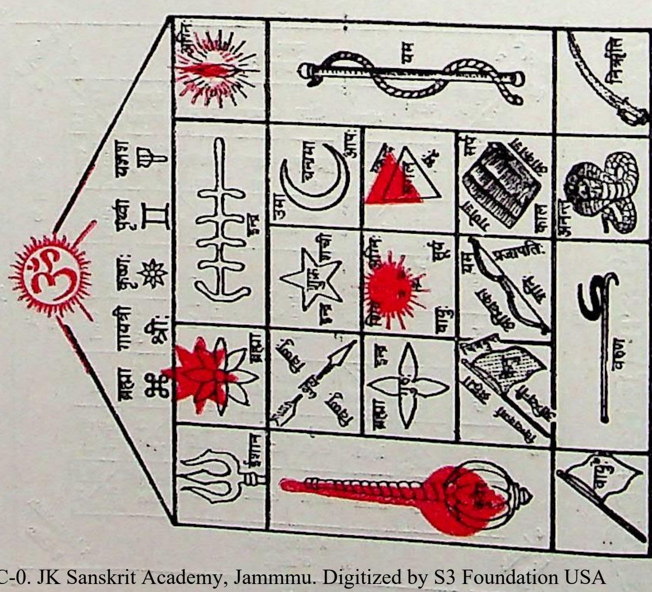
(वितथ) कन्दर्प

दक्षिण — यम

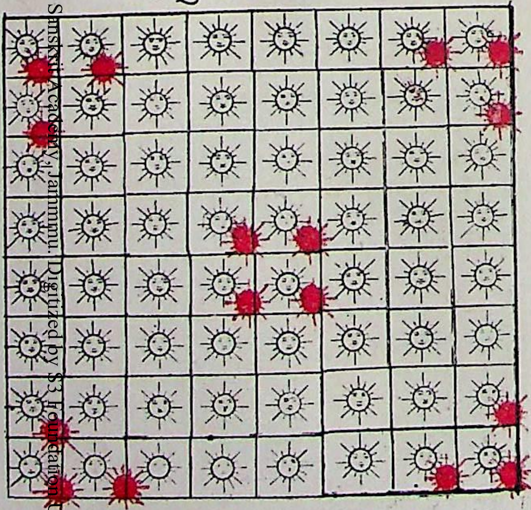
१ ईश	२ (पर्जन्य) पन	३ (जयन्त) जप	४ (इन्द्र) शक्र	५ अर्क (आदित्य या सूर्य)	६ सत्य	७ भृश	८ व्योम (आकाश)	९ हव्यवाह (अग्नि)
३२ दिति	३३ आप	आप	मरीचि	मरीचि	मरीचि	सविता	१४ सविता	१० पूष
३१ अदिति	आपवत्स	४४ आपवत्स	मरीचि	३७ मरीचि	मरीचि	सावित्री	३८ सावित्री	११ वितथ
३० गिरि(शैल) या ऋषि	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर				विवस्वान्	विवस्वान्	१२ सोम (गृहक्षत)
२९ सोम	पृथ्वीधर	४३ पृथ्वीधर		४५ ब्रह्मा		३९ विवस्वान्	विवस्वान्	१३ कृतान्त (धर्मराज या यम)
२८ भल्लाट	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर				विवस्वान्	विवस्वान्	१४ गन्धर्व
२७ मुख्य	रुद्र रुद्रदास	४२ रुद्र रुद्रदास	मित्र	४१ मित्र	मित्र	४० विष्णु-इन्दु	विष्णु-इन्दु	१५ भृङ्ग या (भृङ्गराज)
२६ अहि (नाग)	३६ यक्ष्म	यक्ष्म	मित्र	मित्र	मित्र	इन्द्र-जय	३५ इन्द्र-जय	१६ मृग
२५ रोग	२४ यक्ष्मा (पापयक्ष्मा)	२३ शोष या शोष	२२ दैत्य (असुर)	२१ वरुण	२० पुष्पदन्त	१९ सुग्रीव	१८ द्वारपाल (दौवारिक)	१७ पितर

वायु — पाप (पापराक्षसी) — जम्भ — वरुण — पूतना — निर्ऋति

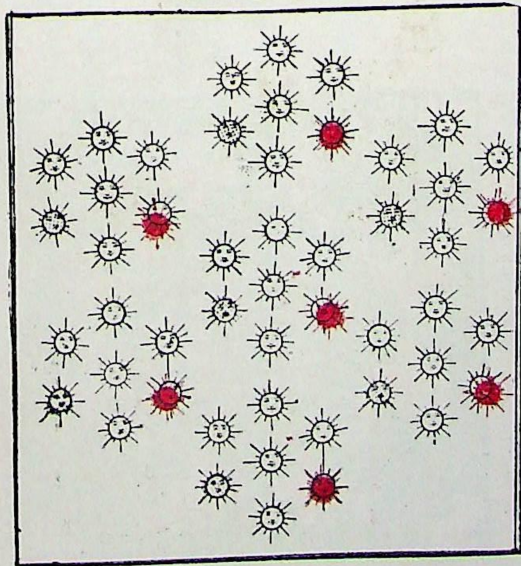

श्री
पीत
नील
श्वेत
रक्त


ब्रह्मा
गायत्री
कृष्णः
पृथ्वी
श्रीः
ईशान
निर्ऋति
वरुण
वायुः
काल
अनन्त
चन्द्रमा
सूर्य
प्रजापतिः
उमा
आपः

॥ चतुष्षष्टियोगिनीपीठम् ॥

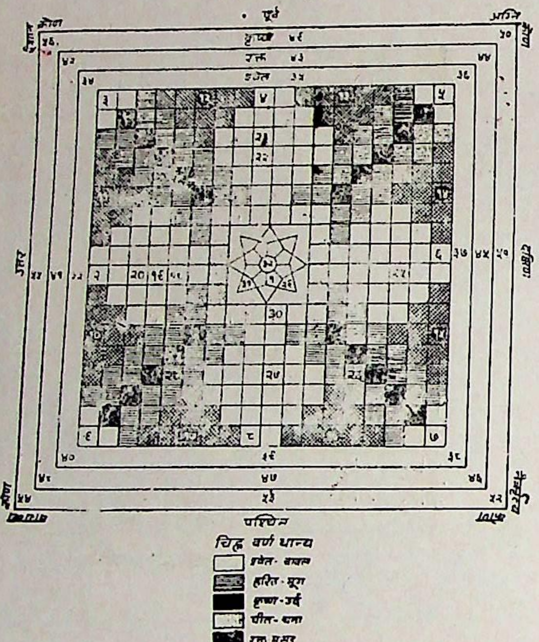


एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालपीठम्

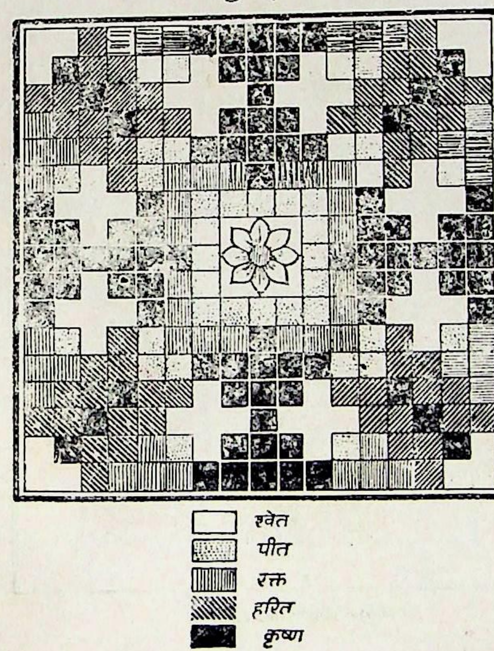


सर्वतोभद्रचक्रम्

(१९ रेखात्मकम्)



शिवार्चने चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्



श्रीवैष्णवसर्वदेवप्रतिष्ठाप्रदीपस्य

विषयानुक्रमणिका:—

इति वैष्णवसर्वदेवप्रतिष्ठाप्रदीपस्य विषयानुक्रमः समाप्तः।

।। श्री सूर्यनारायणाय नमः ।।

ॐ अथ नेत्रोपनिषत् ॐ

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथातश्चाक्षुषीं पठित सिद्धां चक्षूरोगहरां विद्यां व्याख्यास्यामः। यथाचक्षूरोगाः सर्वतोनश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति। तस्याह चाक्षुषी विद्यायाः अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीसूर्योदेवता चक्षूरोग निवृत्तये जपे बिनियोगः।

ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरोभव मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय ममजातरूपं तेजोदर्शय दर्शय यथाहमन्धो न स्याम् तथा कल्याणं कुरु कुरु येन पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तामि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय। ॐ नमः करुणा करायामृताय ॐ नमः श्री सूर्य्याय ॐ नमो भगवतेसूर्यायाक्षितेजसे नमः ॐ खेचराय नमः ॐ महते नमः ॐ तपसे नमः रजसे असतो मां सद्गमय तमसो मां ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतङ्गमय उष्णोभगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः यद्रूपां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणोनित्यमधीते न तस्याक्षिरोगोभवति न तस्य कुलेऽन्धो भवती अष्टौब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ॐ विश्वरूपं घृणि तै जात वेदसे हिरण्मय पुरुषं ज्योतिरूपं तं सहस्त्ररश्मि शतधा वर्त्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषः सूर्यः ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिन्यह्वोवाह्निनी स्वाहा ।।

।। इति श्री अथर्वण वेदोक्त नेत्रोपनिषत्संपूर्णम् ।।

एकादशीव्रतोद्यापनोपयोगि

श्रीराधादामोदरयुगल सहस्रनामावली स्वाहाकारपद्धतिः

अस्य राधादामोदरयुगलसहस्रनाममाला मन्त्रस्य नारदऋषि-रनुष्छन्द. राधादामोदरयुगलं दैवतं श्रीराधादामोदरयोरचल-भक्तिभावात्मकमैश्वर्याभिवृद्धयर्थं सहस्रनाममालाहोमे विनियोगः ।

ध्यानम्

श्रीवृन्दाबिपिनप्रतोलिषु नमत्सम्फुल्लवल्ली तति-
ष्वन्तर्जालविघट्टनैः सुरभिणा वातेन संसेविते ।
कालिन्दीपुलिने बिहारिणमथो राधैकजीवातुकं
वन्दे नन्दकिशोरमिन्दुवदनंस्निग्धाम्बुदाडम्बरम् ।।

अर्थः— श्रीबृन्दावन की गलियों में झुकी हुई लतावेलों की पंक्तियां फैली हुई हैं। उनके भीतर घुसकर लोटपोट करने से शीतल मन्दवायु सुगन्ध से भर गयी है। वह सुगन्धित वायु उस यमुनापुलिन को सब ओर से सुवासित कर रही है। जहां श्री राधारानी के एकमात्र जीवनधन नागर नन्दकिशोर बिचरण कर रहे हैं। उन का मुख चन्द्रमा से भी अधिक मनोहर है और उनकी अङ्गकान्ति स्निग्धमेघों की श्याममनोहर छवि को छीने लेती है। मैं उन्हीं नटवर नन्दकिशोर की बन्दना करता हूं ।।

श्रीदामोदरपञ्चशतीनाममाला स्वाहाकारः—

१. ॐ देवकीनन्दनाय स्वाहा ।
२. ॐ शौरये स्वाहा ।
३. ॐ वासुदेवाय स्वाहा ।
४. ओं बलानुजाय स्वाहा ।
५. ॐ गदाग्रजाय स्वाहा ।
६. ॐ कंसमोहाय स्वाहा ।

७. ॐ कंससेवक मोहनाय स्वाहा।
८. ॐ भिन्नार्गलाय स्वाहा।
९. ॐ भिन्नलोहाय स्वाहा।
१०. ॐ पितृवाह्याय स्वाहा।
११. ॐ पितृस्तुताय स्वाहा।
१२. ॐ मातृस्तुताय स्वाहा।
१३. ॐ शिवध्येयाय स्वाहा।
१४. ॐ यमुनाजलभेदनाय स्वाहा
१५. ॐ व्रजवासिने स्वाहा।
१६. ॐ व्रजानन्दिने स्वाहा।
१७. ॐ नन्दबालाय स्वाहा।
१८. ॐ दयानिधये स्वाहा।
१९. ॐ लीलाबालाय स्वाहा।
२० ॐ पद्मनेत्राय स्वाहा।
२१. ॐ गोकुलोत्सवाय स्वाहा।
२२. ॐ ईश्वराय स्वाहा।
२३. ॐ गोपिकानन्दनाय स्वाहा
२४. ॐ कृष्णाय स्वाहा।
२५. ॐ गोपानन्दाय स्वाहा।
२६. ॐ सतांगतये स्वाहा।
२७. ॐ बकप्राणहराय स्वाहा।
२८. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२९. ॐ बकमुक्तिप्रदाय स्वाहा
३०. ॐ हरये स्वाहा।
३१. ॐ बलदोलाशयशयाय स्
३२. ॐ श्यामलाय स्वाहा।
३३. ॐ सर्व सुन्दराय स्वाहा
३४. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा।
३५. ॐ हृषीकेशाय स्वाहा।
३६. ॐ क्रीडामनुजबालकाय
३७. ॐ लीलाविध्वस्तशकटा
३८. ॐ वेदमन्त्राभिषेचिताय
३९. ॐ यशोदानन्दनाय स्वा
४०. ॐ कान्ताय स्वाहा।
४१. ॐ मुनिकोटिनिषेविताय
४२. ॐ नित्यंमधुवनावासिने
४३. ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा।
४४. ॐ सम्भवाय स्वाहा।
४५. ॐ क्रतवे स्वाहा।
४६. ॐ रमापतये स्वाहा।
४७. ॐ यदुपतये स्वाहा।
४८. ॐ मुरारये स्वाहा।
४९. ॐ मधुसूदनाय स्वाहा।
५०. ॐ माधवाय स्वाहा।

५१. ॐ मानहारिणे स्वाहा ।
५२. ॐ श्रीपतये स्वाहा ।
५३. ॐ भूधराय स्वाहा ।
५४. ॐ प्रभवे स्वाहा ।
५५. ॐ बृहद्वनमहालीलाय स्वाहा ।
५६. ॐ नन्दसूनवे स्वाहा ।
५७. ॐ महासनाय स्वाहा ।
५८. ॐ तृणावर्तं प्राणहारिणे ०
५९. ॐ यशोदा विस्मयप्रदाय०
६०. ॐ त्रैलोक्यवक्त्राय स्वाहा
६१. ॐ पद्माक्षाय स्वाहा ।
६२. ॐ पद्महस्ताय स्वाहा ।
६३. ॐ प्रियङ्कराय स्वाहा ।
६४. ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा ।
६५. ॐ धर्मगोप्त्रे स्वाहा ।
६६. ॐ भूपतये स्वाहा ।
६७. ॐ श्रीधराय स्वाहा ।
६८. ॐ स्वराजे स्वाहा ।
६९. ॐ अजाध्यक्षाय स्वाहा ।
७०. ॐ शिवाध्यक्षाय स्वाहा ।
७१. ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा ।
७२. ॐ महेश्वराय स्वाहा ।
७३. ॐ वेदान्तवेद्याय स्वाहा ।
७४. ॐ ब्रह्मस्थाय स्वाहा ।
७५. ॐ प्रजापतये स्वाहा ।
७६. ॐ अमोघदृशे स्वाहा ।
७७. ॐ गोपीकरावलम्बिनेस्वाहा
७८. ॐ गोपबालक सुप्रियायस्वाहा
७९. ॐ बलानुयायिने स्वाहा ।
८०. ॐ बलवते स्वाहा ।
८१. ॐ श्रीदामप्रियाय स्वाहा
८२. ॐ आत्मवते स्वाहा ।
८३. ॐ गोपीगृहाङ्गणरतये०
८४. ॐ भद्राय स्वाहा ।
८५. ॐ सुश्लोकमङ्गलाय स्वाहा
८६. ॐ नवनीतहराय स्वाहा ।
८७. ओं नवनीतप्रियाशनाय०
८८. ओं बालाय स्वाहा ।
८९. ओं बालवृन्दिने स्वाहा ।
९०. ओं मर्कवृन्दिने स्वाहा ।
९१. ओं चकिताक्षाय स्वाहा ।
९२. ओं पलायिताय स्वाहा ।
९३. ओं यशोदातर्जिताय स्वाहा
९४. ओं कम्पिते स्वाहा ।

९५. ओं मायार्दितशोभनाय०
९६. ओं दामोदराय स्वाहा
९७. ओं अप्रमेयात्मने स्वाहा
९८. ओं दयालवे स्वाहा
९९. ओं भक्तवत्सलाय स्वाहा
१००. ओं उलूखले सुबद्धाय०
१०१. ओं नम्रशिरसे स्वाहा
१०२. ओं गोपीकदर्थिताय०
१०३. ओं वृक्षभङ्गिने स्वाहा
१०४. ओं शोकभङ्गिने स्वाहा
१०५. ओं धनदात्मजमोक्षणाय०
१०६.. ओं देवर्षिव्रतश्लाघिने०
१०७. ॐ भक्तवात्सल्यसागराय०
१०८. ॐ व्रजकोलाहलकराय०
१०९. ॐ व्रजानन्दविवर्धनाय०
११०. ॐ गोपात्मने स्वाहा
१११. ॐ प्रेरकाय स्वाहा
११२. ॐ साक्षिणे स्वाहा
११३. ॐ वृन्दावननिवासकृते०
११४. ॐ वत्सपालाय स्वाहा
११५. ॐ वत्सपतये स्वाहा
११६. ॐ गोपदारकमण्डनाय०
११७. ॐ बालक्रीडाय स्वाहा
११८. ॐ बालरतये स्वाहा
११९. ॐ बालकाय स्वाहा
१२०. ॐ कनकाङ्गदिने स्वाहा
१२१. ॐ पीताम्बराय स्वाहा
१२२. ॐ हेममालिने स्वाहा
१२३. ॐ मणिमुक्ताविभूषणाय
१२४. ॐ किङ्किणीकटकिने०
१२५. ॐ सूत्रिणे स्वाहा
१२६. ॐ नूपुरिणे स्वाहा
१२७. ॐ मुद्रिकान्विताय स्वा
१२८. ॐ वत्सासुर प्रध्वंसिने०
१२९. ॐ वकासुरविनाशनाय
१३०. ॐ अघासुरविनाशिने०
१३१. ॐ विनिद्रीकृतबालका
१३२. ॐ आद्याय स्वाहा
१३३. ॐ आत्मप्रदाय स्वाहा
१३४. ॐ सङ्गिने स्वाहा
१३५. ॐ यमुनातीरभोजनाय
१३६. ॐ गोपालमण्डलीमध्या
१३७. ॐ सर्वगोपालभूषणाय
१३८. ॐ कृतहस्ततलग्रासाय

१३९. ॐ व्यञ्जनाश्रितशाखिकाय
१४०. ॐ कृतबाहुशृङ्गयष्टये०
१४१. ॐ गुञ्जालङ्कृतकण्ठकाय०
१४२. ॐ मयूरपिच्छमुकुटाय०
१४३. ॐ वनमालाविभूषिताय०
१४४. ॐ गैरिकचित्रितवपुषे०
१४५. ॐ नवमेघवपुषे स्वाहा
१४६. ॐ स्मराय स्वाहा
१४७. ॐ कोटिकन्दर्पलावण्याय०
१४८. ॐ लसन्मकरकुण्डलाय०
१४९. ॐ आजानुबाहवे स्वाहा
१५०. ॐ भगवते स्वाहा
१५१. ॐ निद्रारहितलोचनाय०
१५२. ॐ कोटिसागरगाम्भीर्याय०
१५३. ॐ कालकालाय स्वाहा
१५४. ॐ सदाशिवाय स्वाहा
१५५. ॐ विरञ्चिमोहनवपुषे०
१५६. ॐ गोपवत्सवपुर्धराय०
१५७. ॐ ब्रह्माण्डकोटिजनकाय०
१५८. ॐ ब्रह्ममोहविनाशकाय०
१५९. ओ ब्रह्मणे स्वाहा
१६०. ओं ब्रह्मणेडिताय स्वाहा
१६१. ॐ स्वामिने स्वाहा
१६२. ॐ शक्रदर्पादिनाशनाय०
१६३. ॐ गिरिपूजोपदेष्ट्रे स्वाहा
१६४. ॐ धृतगोवर्धनाचलाय०
१६५. ॐ पुरन्दरेडिताय स्वाहा
१६६. ॐ पूज्याय स्वाहा
१६७. ॐ कामधेनुप्रपूजिताय०
१६८. ॐ सर्वतीर्थाभिषिक्ताय०
१७९. ॐ गोविन्दाय स्वाहा
१७०. ॐ गोपरक्षकाय स्वाहा
१७१. ॐ कालियार्तिकराय०
१७२. ॐ क्रूराय स्वाहा
१७३. ॐ नागपत्नीरिताय०
१७४. ओं विराजे स्वाहा
१७५. ॐ धेनुकारये स्वाहा
१७६. ॐ प्रलम्बारये स्वाहा
१७७. ॐ वृषासुरविमर्दनाय०
१७८. ॐ मयासुरात्मजध्वंसिने०
१७९. ॐ केशिकण्ठविदारकाय०
१८०. ॐ गोपगोप्त्रे स्वाहा
१८१. ॐ धेनुगोप्त्रे स्वाहा
१८२. ॐ दावाग्निपरिशोषकाय०

१८२. ॐ गोपकन्यावस्त्रहारिणे०
१८३. ॐ गोपकन्यावरप्रदाय०
१८४. ॐ यज्ञपत्न्यन्नभोजिने०
१८५. ॐ मुनिमानापहारकाय०
१८६. ओं जलेशमानमथनाय०
१८७. ओं नन्दगोपालजीवनाय०
१८८. ओं गन्धर्वशापमोक्त्रे०
१८९. ओं शंखचूडशिरोहराय०
१९०. ओं वंशीवटिने स्वाहा
१९१. ओं वेणुवादिने स्वाहा
१९२. ओं गोपीचिन्तापहारकाय०
१९३. ओं सर्वगोप्त्रे स्वाहा
१९४. ॐ समाह्वानाय स्वाहा
१९५. ॐ सर्वगोपीमनोरथाय०
१९६. ॐ व्यंग्यधर्मप्रवक्त्रे स्वाहा
१९७. ॐ गोपीमण्डलमोहनाय०
१९८. ॐ रासक्रीडारसास्वादिने०
१९९. ॐ रसिकाय स्वाहा
२००. ॐ राधिकाधवाय स्वाहा
२०१. ॐ किशोरीप्राणनाथाय०
२०२. ॐ वृषभानुसुताप्रियाय०
२०३. ॐ सर्वगोपीजनानन्दिने०
२०४. ॐ गोपीजनविमोहनाय०

२०५. ॐ गोपीकागीतचरिताय
२०६. ॐ गोपीनर्तनलालसाय०
२०७. ॐ गोपीस्कन्धाश्रितकरा
२०८. ॐ गोपिकाचुम्बनप्रिया
२०९. ॐ गोपिकामार्जितमुखाय
२१०. ॐ गोपीव्यजनवीजिताय
२११. ॐ गोपिकाकेशसंस्कारि
२१२. ॐ गोपिकापुष्पसंस्तरा
२१३. ॐ गोपिकाहृदयालम्बि
२१४. ॐ गोपीवहनतत्पराय
२१५. ओं गोपिकामदहारिणे
२१६. ओं गोपिकापरिमार्जिता
२१७. ओं गोपिकाकृतसल्लील
२१८. ओं गोपिकासंस्मृतप्रिया
२१९. ओं गोपिकावन्दितपदा
२२०. ओं गोपिकावशवर्तनाय
२२१. ओं राधापराजितायस्
२२२. ओं श्रीमते स्वाहा
२२३. ओ निकुञ्जेसुविहारक
२२४. ओं कुञ्जप्रियाय स्वा
२२५. ओं कुञ्जवासिने स्वा
२२६. ओं वृन्दावनविकाश

२२७. ओं यमुनाजलसंसिक्ताङ्गाय०
२२८. ओं यमुनासौख्यदायकाय०
२२९. ओं शशिसंस्तम्भनाय०
२३०. ओं शूराय स्वाहा
२३१. ॐ कामिने स्वाहा
२३२. ॐ कामविमोहनाय स्वाहा
२३३. ॐ कामाद्याय स्वाहा
२३४. ॐ कामनाथाय स्वाहा
२३५. ॐ काममानसभेदनाय०
२३६. ॐ कामदाय स्वाहा
२३७. ॐ कामरूपाय स्वाहा
२३८. ॐ कामिनीकामसंचयाय०
२३९. ॐ नित्यक्रीडाय स्वाहा
२४०. ॐ महालीलाय स्वाहा
२४१. ॐ सर्वस्मै स्वाहा
२४२. ॐ सर्वगताय स्वाहा
२४३. ॐ परमात्मने स्वाहा
२४४. ॐ पराधीशाय स्वाहा
२४५. ॐ सर्वकारणकारणाय०
२४६. ॐ गृहीतनारदवचसे०
२४७. ॐ अक्रूरपरिचिन्तिताय०
२४८. ॐ अक्रूरवन्दितपदाय०
२४९. ओं गोपिकातोषकारकाय०
२५०. ओं अक्रूरवाक्यसंग्राहिणे०
२५१. ओं मथुरावासकारणाय०
२५२. ओं अक्रूरतापशमनाय०
२५३. ओं रजकायुः प्रणाशनाय०
२५४. ओं मथुरानन्ददायिने०
२५५. ओं कंसवस्त्रविलुण्ठनाय०
२५६. ओं कंसवस्त्रपरीधानाय०
२५७. ओं गोपवस्त्रप्रदायकाय०
२५८. ओं सुदामगृहगामिने स्वाहा
२५९. ओं सुदामपरिपूजिताय०
२६०. ओं तन्तुवायकसंप्रीताय०
२६१. ओं कुब्जाचन्दनलेपनाय०
२६२. ओं कुब्जारूपप्रदाय स्वाहा
२६३. ओं विज्ञाय स्वाहा
२६४. ओं मुकुन्दाय स्वाहा
२६५. ओं विष्टरश्रवसे स्वाहा
२६६. ओं सर्वज्ञाय स्वाहा
२६७. ओं मथुरालोकिने स्वाहा
२६८. ओं सर्वलोकाभिनन्दनाय०
२६९. ओं कृपाकटाक्षदर्शिने०
२७०. ओं दैत्यारये स्वाहा

२७१. ओं देवपालकाय स्वाहा
२७२. ओं सर्वदुःखप्रशमनाय०
२७३. ओं धनुर्भङ्गिने स्वाहा
२७४. ओं महोत्सवाय स्वाहा
२७५. ओं कुवलयापीडहन्त्रे०
२७६. ओं दन्तस्कन्धाय स्वाहा
२७७. ओं बलाग्रण्ये स्वााहा
२७८. ओं कल्परूपधराय स्वाहा
२७९. ओं धीराय स्वाहा
२८०. ओं दिब्यवस्त्रानुलेपनाय०
२८१. ओं मल्लरूपाय स्वाहा
२८२. ओं महाकालाय स्वाहा
२८३- ओं कामरूपिणे स्वाहा
२८४. ओं बलान्विताय स्वाहा
२८५. ॐ कंसत्रासकराय स्वाहा
२८६. ॐ भीमाय स्वाहा
२८७. ॐ मुष्टिकान्ताय स्वाहा
२८८. ॐ कंसघ्ने स्वाहा
२८९. ॐ चाणूरघ्नाय स्वाहा
२९०. ॐ भयहराय स्वाहा
२९१. ॐ शलारये स्वाहा
२९२. ॐ शतोलान्तकायस्वाहा

२९३. ॐ वैकुण्ठवासिने स्वाहा
२९४. ॐ कंसारये स्वाहा
२९५. ॐ सर्वदुष्टनिषूदनाय०
२९६. ॐ देवदुन्दुभिनिर्घोषिने०
२९७. ॐ पितृशोकनिवारणाय०
२९८. ॐ यादवेन्द्राय स्वाहा
२९९. ॐ सतांनाथाय स्वाहा
३००. ॐ यादवारिप्रमर्दनाय०
३०१. ओं शौरिशोकविनाशिने०
३०२. ॐ देवकीतापनाशनाय०
३०३. ॐ उग्रसेनप्रतित्रात्रे स्वाहा
३०४. ॐ उग्रसेनाभिपूजिताय०
३०५. ॐ उग्रसेनाभिषेकिने०
३०६. ॐ उग्रसेनदयापराय स्वा
३०७. ॐ सर्वसात्वतसाक्षिणे०
३०८. ॐ यदूनामभिनन्दनाय०
३०९. ॐ सर्वमाथुरसंसेव्याय०
३१०. ॐ करुणाय स्वाहा
३११. ॐ भक्तबान्धवाय स्वा
३१२. ॐ सर्वगोपालधनदाय०
३१३. ॐ गोपीगोपाललालसा
३१४. ॐ शौरिदत्तोपवीतिने

३१५. ॐ उग्रसेनदयाकराय०
३१६. ॐ गुरुभक्ताय स्वाहा
३१७. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा
३१८. ॐ निगमाध्ययनेरताय०
३१९. ॐ संकर्षणसहाध्यायिने०
३२०. ॐ सुदामसुहृदे स्वाहा
३२१. ॐ विद्यानिधये स्वाहा
३२२. ॐ कलाकोषाय स्वाहा
३२३. ॐ मृतपुत्रप्रदाय स्वाहा
३२४. ॐ चक्रिणे स्वाहा
३२५. ॐ पाञ्चजनिने स्वाहा
३२६. ॐ सर्वनारकिमोचनाय०
३२७. ॐ यमार्चिताय स्वाहा
३२८. ॐ परस्मै स्वाहा
३२९. ॐ देवाय स्वाहा
३३०. ॐ नामोच्चारवशाय०
३३१. ओं अच्युताय स्वाहा
३३२. ओं कुब्जाविलासिने स्वाहा
३३३. ओं सुभगाय स्वाहा
३३४. ओं दीनबन्धवे स्वाहा
३३५. ओं अनूपमाय स्वाहा
३३६. ओं अक्रूरगृहगोप्त्रे स्वाहा
३३७. ओं प्रतिज्ञापालकायस्वाहा
३३८. ओं शुभाय स्वाहा
३३९. ओं जरासन्धजयिने स्वाहा
३४०. ओं विदुषे स्वाहा
३४१. ओं यवनान्ताय स्वाहा
३४२. ओं द्विजाश्रयाय स्वाहा
३४३. ओं मुचुकुन्दप्रियकराय०
३४४. ओं जरासन्धपलायिताय०
३४५. ओं द्वारकाजनकाय स्वाहा
३४६. ओं गूढाय स्वाहा
३४७. ओं ब्रह्मण्याय स्वाहा
३४८. ओं सत्यसंगराय स्वाहा
३४९. ओं लीलाधराय स्वाहा
३५०. ओं प्रियकराय स्वाहा
३५१. ओं विश्वकर्मणे स्वाहा
३५२. ओं यशः प्रदाय स्वाहा
३५३. ओं रुक्मिणीप्रियसन्देशाय०
३५४. ओं रुक्मिशोकविवर्धनाय०
३५५. ओं चैद्यशोकालयाय स्वाहा
३५६. ओं श्रेष्ठाय स्वाहा
३५७. ओं दुष्टराजन्यनाशनाय०
३५८. ओं रुक्मिवैरूप्यकरणाय०

३५९. ओं रुक्मिणीबचनेरताय०
३६०. ओं बलभद्रबचोग्राहिणे०
३६१. ओं मुक्तरुक्मिने स्वाहा
३६२. ओं जनार्दनाय स्वाहा
३६३. ओं रुक्मिणीप्राणनाथाय०
३६४. ओं सत्यभामापतये स्वाहा
३६५. ओं स्वयंभक्तपक्षिणेस्वाहा०
३६६. ओं भक्तिवश्यायस्वाहा०
३६७. ओं अक्रूरमणिदायकाय०
३६८. ओं शतधन्वप्राणहारिणे०
३६९. ओं ऋक्षराजसुताप्रियाय०
३७०. ओं सत्राजित्तनयाकान्ताय०
३७१. ओं मित्रवृन्दापहारकाय०
३७२. ओं सत्यापतये स्वाहा
३७३- ओं लक्ष्मणाजिते स्वाहा
३७४- ओं पूज्याय स्वाहा
३७५. ॐ भद्राप्रियङ्कुरायस्वाहा
३७६. ॐ नरकासुरघातिनेस्वाहा
३७७. ॐ लीलाकन्याहराय०
३७८. ॐ जयिने स्वाहा
३७९. ॐ मुरारये स्वाहा
३८०. ॐ मदनेशाय स्वाहा

३८१. ॐ धरित्रीदु:खनाशनाय०
३८२. ॐ वैनतेयिने स्वाहा
३८३. ॐ स्वर्गगामिने स्वाहा
३८४. ॐ आदित्या:कुण्डलदाय
३८५. ॐ इन्द्रार्चिताय स्वाहा
३८६. ॐ रमाकान्ताय स्वाहा
३८७. ॐ वज्रिभार्याप्रपूजिताय
३८८. ॐ पारिजातापहारिणे०
३८९. ॐ शक्रमानापहारकाय०
३९०. ॐ प्रद्युम्नजनकाय स्वाहा
३९१. ॐ साम्बताताय स्वाहा
३९२. ॐ बहुसुताय स्वाहा
३९३. ॐ विधवे स्वाहा
३९४. ॐ गर्गाचार्याय स्वाहा
३९५. ॐ सत्यगतये स्वाहा
३९६. ॐ धर्माधाराय स्वाहा
३९७. ॐ धराधराय स्वाहा
३९८. ॐ द्वारकामण्डनाय स्वाहा
३९९. ॐ श्लोक्याय स्वाहा
४००. ॐ सुश्लोकाय स्वाहा
४०१. ॐ निगमालयाय स्वाहा
४०२. ॐ पौण्ड्रकप्राणहारिणे०

४०३. ॐ काशिराजशिरोहराय०
४०४. ॐ [illegible]व विप्रवाहिने०
४०५. ॐ सुदक्षिणभयावहाय०
४०६. ॐ जरासन्धविदारिणे०
४०७. ॐ धर्मनन्दयज्ञकृते स्वाहा
४०८. ॐ शिशुपालशिरच्छेदिने०
४०९. ॐ दन्तवक्त्रविनाशनाय०
४१०. ॐ विदूरथान्तकाय स्वाहा
४११. ॐ श्रीशाय स्वाहा
४१२. ॐ श्रीदाय स्वाहा
४१३. ॐ द्विविदनाशनाय स्वाहा
४१४. ॐ रुक्मिणीमानहारिणे०
४१५. ॐ रुक्मिणीमानवर्धनाय०
४१६. ॐ देवर्षिशापहर्त्रे स्वाहा
४१७. ॐ द्रोपदीवाक्यपालकाय०
४१८. ॐ दुर्वासोभयहारिणे०
४१९. ॐ पाञ्चालीस्मरणागताय०
४२०. ॐ पार्थदूताय स्वाहा
४२१. ॐ पार्थमन्त्रिणे स्वाहा
४२२. ॐ पार्थदुःखौघनाशनाय०
४२३. ॐ पार्थमानापहारिणे०
४२४. ॐ पार्थजीवनदायकाय०

४२५. ॐ पाञ्चाली वस्त्रदात्रे०
४२६. ॐ वि[illegible]
४२७. ॐ श्वेतार्थसारथये स्वाहा
४२८. ॐ सत्याय स्वाहा
४२९. ॐ सत्यसाध्याय स्वाहा
४३०. ॐ भयापहाय स्वाहा
४३१. ॐ सत्यसन्धाय स्वाहा
४३२. ॐ सत्यरतये स्वाहा
४३३. ॐ सत्यप्रियाय स्वाहा
४३४. ॐ उदारधिये स्वाहा
४३५. ॐ महासेनजयिने स्वाहा
४३६. ॐ शिवसैन्यविनाशनाय०
४३७. ॐ बाणासुरभुजछेत्रेस्वाहा०
४३८. ॐ बाणबाहुवरप्रदाय०
४३९. ॐ तार्क्ष्यमानापहारिणे०
४४० ॐ तार्क्ष्यतेजोविवर्धनाय०
४४१. ॐ रामस्वरूपधारिणे०
४४२. ॐ सत्यभामामुदावहाय०
४४३. ॐ रत्नाकरजलक्रीडाय०
४४४. ओं व्रजलीलाप्रदर्शकाय०
४४५. ओं स्वप्रतिज्ञापरिध्वंसिने०
४४६. ओं भीष्माज्ञापरिपालकाय०

४४७. ॐ बीरायुधहराय स्वाहा
४४८. ॐ कालाय स्वाहा
४४९. ॐ कालिकेशाय स्वाहा
४५०. ॐ महाबलाय स्वाहा
४५१. ॐ बर्वरीकशिरोहारिणे०
४५२. ॐ बर्वरीकशिरःप्रदाय०
४५३. ॐ धर्मपुत्रजयिने स्वाहा
४५४. ॐ शूरदुर्योधनमदान्तकाय०
४५५. ॐ गोपिकाप्रीतिनिबन्धनित्य-
क्रीडाय स्वाहा
४५६. ॐ व्रजेश्वराय स्वाहा
४५७. ॐ राधाकुण्डरतये स्वाहा
४५८. ओं धन्याय स्वाहा
४५९. ॐ सदान्दोलसमाश्रिताय०
४६०. ॐ सदामधुवनानन्दिने०
४६१. ॐ सदावृन्दावनप्रियाय०
४६२. ॐ अशोकवनसन्नद्धाय०
४६३. ॐ सदातिलकसङ्गताय०
४६४. ॐ सदागोवर्धनरतयेस्वाहा
४६५. ॐ सदागोकुलबल्लभाय०
४६६. ॐ भाण्डीरवटसंवासिने०
४६७. ॐ नित्यंवंशीवटस्थिताय०
४६८. ॐ नन्दग्रामकृतावासाय०

४६९. ॐ वृषभानुगृहप्रियाय०
४७०. ॐ गृहीतकामिनीरूपाय०
४७१. ॐ नित्यविलासकृते स्वाहा
४७२. ॐ बल्लवीजनसङ्गोप्त्रे०
४७३. ॐ बल्लवीजनबल्लभाय
४७४. ॐ देवशर्मकृपाकर्त्रे स्वाहा
४७५. ॐ कल्पपादपसंस्थिताय
४७६. ॐ शिलानुगन्धनिलयाय
४७७. ॐ पादचारिणे स्वाहा
४७८. ॐ घनच्छवये स्वाहा
४७९. ॐ अतसीकुसुमप्रख्याय०
४८०. ॐ सदालक्ष्मीकृपाकराय
४८१. ॐ त्रिपुरारिप्रियकराय०
४८२. ॐ उग्रधन्वने स्वाहा
४८३. ॐ अपराजिताय स्वाहा
४८४. ॐ षड्धुरध्वंसकर्त्रे स्वा
४८५. ॐ निकुम्भप्राणहारकाय
४८६. ॐ वज्रनाभपुरध्वंसिने
४८७. ॐ पौण्ड्रकप्राणहारकाय
४८८. ॐ बहुलाश्वप्रीतिकर्त्रे
४८९. ॐ द्विजवर्यप्रियङ्कराय
४९०. ॐ शिवसंकटहारिणेस्वा

४९१. ॐ वृकासुरविनाशनाय०
४९२. ॐ भृगुसत्कारकारिणे०
४९३. ॐ शिवसात्विकताप्रदाय०
४९४. ॐ गोकर्णपूजकाय स्वाहा
४९५. ॐ साम्बकुष्ठविध्वंसकारणाय
४९६. ॐ वेदस्तुताय स्वाहा
४९७. ॐ वेदवेत्रे स्वाहा
४९८. ॐ यदुवंशविवर्धनायस्वाहा
४९९. ॐ यदुवंशविनाशिने स्वाहा
५००. ॐ उद्धवोद्धारकारकाय०
५०१. ॐ राधायै स्वाहा
५०२. ॐ राधिकायै स्वाहा
५०३. ॐ आनन्दायै स्वाहा
५०४. ॐ वृषभानुजायै स्वाहा
५०५. ॐ वृन्दावनेश्वर्यै स्वाहा
५०६. ॐ पुण्यायै स्वाहा
५०७. ॐ कृष्णमानसहारिण्यै०
५०८ ॐ प्रगल्भायै स्वाहा
५०९. ॐ चतुरायै स्वाहा
५१०. ॐ कामायै स्वाहा
५११. ॐ कामिन्यै स्वाहा
५१२. ॐ हरिमोहिन्यै स्वाहा

५१३. ॐ ललितायै स्वाहा
५१४. ॐ मधुरायै स्वाहा
५१५. ॐ माध्व्यै स्वाहा
५१६. ॐ किशोर्यै स्वाहा
५१७. ॐ कनकप्रभायै स्वाहा
५१८. ओं जितचन्द्रायै स्वाहा
५१९. ओं जितमृगायै स्वाहा
५२०. ओं जितसिंहायै स्वाहा
५२१. ओं जितद्विपायै स्वाहा
५२२. ओं जितरम्भायै स्वाहा
५२३. ओं जितपिकायै स्वाहा
५२४. ओं गोबिन्दहृदयोद्भवायै०
५२५. ओं जितबिम्बायै स्वाहा
५२६. ओं जितशुकायै स्वाहा
५२७. ओं जितपद्मायै स्वाहा
५२८. ओं कुमारिकायै स्वाहा
५२९. ओं श्रीकृष्णाकर्षणायै०
५३०. ओं देव्यै स्वाहा
५३१. ओं नित्ययुग्मस्वरूपिण्यै०
५३२. ओं नित्यंविहारिण्यै स्वाहा
५३३. ओं कान्तायै स्वाहा
५३४. ओं रसिकायै स्वाहा

५३५. ॐ कृष्णवल्लभायै स्वाहा
५३६. ॐ आमोदिन्यै स्वाहा
५३७. ॐ मोदवत्यै स्वाहा
५३८. ॐ नन्दनन्दनभूषितायै०
५३९. ॐ दिव्याम्बरायै स्वाहा
५४०. ॐ दिव्यहारायै स्वाहा
५४१. ॐ मुक्तामणिविभूषितायै०
५४२. ॐ कुञ्जप्रियायै स्वाहा
५४३. ॐ कुञ्जवासायै स्वाहा
५४४. ॐ कुञ्जनायकनायिकायै०
५४५. ॐ चारुरूपायै स्वाहा
५४६. ॐ चारुवक्त्रायै स्वाहा
५४७. ॐ चारुहेमाङ्गदायै स्वाहा
५४८. ॐ शुभायै स्वाहा
५४९. ॐ श्रीकृष्णवेणुसङ्गीतायै०
५५०. ॐ मुरलीहारिण्यै स्वाहा
५५१. ॐ शिवायै स्वाहा
५५२. ॐ भद्रायै स्वाहा
५५३. ॐ भगवत्यै स्वाहा
५५४. ॐ शान्तायै स्वाहा
५५५. ॐ कुमुदायै स्वाहा
५५६. ॐ सुन्दर्यै स्वाहा
५५७. ॐ प्रियायै स्वाहा
५५८. ॐ कृष्णक्रीडायै स्वाहा
५५९. ॐ कृष्ण रत्यै स्वाहा
५६०. ॐ कृष्णसहचारिण्यै०
५६१. ॐ वंशीवटप्रियस्थानायै०
५६२. ॐ युग्मायुग्मस्वरूपिण्यै०
५६३. ॐ भाण्डीरवासिन्यै स्वाहा
५६४. ॐ शुभ्रायै स्वाहा
५६५. ॐ गोपीनाथप्रियायै०
५६६. ॐ सख्यै स्वाहा
५६७. ॐ श्रुतिनिःश्वसितायै०
५६८. ॐ दिव्यायै स्वाहा
५६९. ॐ गोविन्दरसदायिन्यै०
५७०. ॐ श्रीकृष्णप्रार्थिन्यै स्वाहा
५७१. ॐ ईशानायै स्वाहा
५७२. ॐ महानन्दप्रदायिन्यै०
५७३. ॐ वैकुण्ठजनसंसेव्यायै०
५७४. ॐ कोटिलक्ष्मीसुखावहा
५७५. ॐ कोटिकन्दर्पलावण्या
५७६. ॐ रतिकोटिरतिप्रदायै
५७७. ॐ भक्तिग्राह्यायै स्वाहा
५७८. ॐ भक्तिरूपायै स्वाहा

५७९. ॐ लावण्यसरस्यै स्वाहा
५८०. ॐ उमायै स्वाहा
५८१. ॐ ब्रह्मरुद्रादिसंराध्यायै०
५८२. ॐ नित्यंकौतूहलान्वितायै
५८३. ॐ नित्यलीलायै स्वाहा
५८४. ॐ नित्यकामायै स्वाहा
५८५. ॐ नित्यशृङ्गारभूषितायै०
५८६. ॐ नित्यवृन्दावनरसायै०
५८७. ॐ नन्दनन्दनसंयुतायै०
५८८. ॐ गोपिकामण्डलीयुक्तायै०
५८९. ॐ नित्यंगोपालसङ्गतायै०
५९०. ॐ गोरसक्षेपिण्यै स्वाहा
५९१. ॐ शूरायै स्वाहा
५९२. ॐ सानन्ददायै स्वाहा
५९३. ओं आनन्ददायिन्यै स्वाहा
५९४. ओं महालीलाप्रकृष्टायै०
५९५. ओं नागयै स्वाहा
५९६. ओं नगचारिण्यै स्वाहा
५९७. ओं नित्यमाघूर्णितायै०
५९८. ओं पूर्णायै स्वाहा
५९९. ओं कस्तूरीतिलकान्वितायै०
६००. ओं पद्मायै स्वाहा
६०१. ओं श्यामायै स्वाहा
६०२. ओं मृगाक्ष्यै स्वाहा
६०३. ओं सिद्धिरूपायै स्वाहा
६०४. ओं रसावहायै स्वाहा
६०५. ओं कोटिचन्द्राननायै०
६०६. ओं गौर्यै स्वाहा
६०७. ओं कोटिकोकिलास्वरायै०
६०८. ओं शीलसौन्दर्यनिलयायै
६०९. ओं नन्दनन्दनलालितायै०
६१०. ओं अशोकवनसंवासायै०
६११. ओं भाण्डिरवनसङ्गतायै०
६१२. ओं कल्पद्रुमतलाविष्टायै०
६१३. ओं कृष्णायै स्वाहा
६१४. ओं विश्वस्यै स्वाहा
६१५. ओं हरिप्रियायै स्वाहा
६१६. ओं अजागम्यायै स्वाहा
६१७. ओं भवागम्यायै स्वाहा
६१८. ओं गोवर्धनकृतालयायै०
६१९. ओं यमुनातीरनिलयायै०
६२०. ओं शश्वद्गोविन्दजल्पिन्यै०
६२१. ओं शश्वन्मानवत्यै स्वाहा
६२२. ओं स्निग्धायै स्वाहा

६२३. ॐ श्रीकृष्णपरिवन्दितायै०
६२४. ॐ कृष्णस्तुतायै स्वाहा
६२५. ॐ कृष्णव्रतायै स्वाहा
६२६. ॐ कृष्णहृदयालयायैस्वाहा
६२७. ॐ देवद्रुमफलायै स्वाहा
६२८. ॐ सेव्यायै स्वाहा
६२९. ॐ वृन्दावनरसालयायै०
६३०. ॐ कोटितीर्थमय्यै स्वाहा
६३१. ॐ सत्यायै स्वाहा
६३२. ॐ कोटितीर्थफलप्रदायै०
६३३. ॐ कोटियोगसुदुष्प्राप्यायै०
६३४. ॐ कोटियज्ञदुराश्रयायै०
६३५. ॐ मनसायै स्वाहा
६३६. ॐ शशिलेखायै स्वाहा
६३७ ॐ श्रीकोटिसुभगायै स्वाहा
६३८. ॐ अनघायै स्वाहा
६३९. ॐ कोटिमुक्तसुखायै०
६४०. ॐ सौम्यायै स्वाहा
६४१. ॐ लक्ष्मीकोटिविलासिन्यै०
६४२. ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा
६४३. ॐ त्रिकालस्थायै स्वाहा
६४४. ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा
६४५. ॐ अधीश्वर्यै स्वाहा
६४६. ॐ त्रिवेदज्ञायै स्वाहा
६४७. ॐ त्रिलोकज्ञायै स्वाहा
६४८. ॐ तुरीयान्तनिवासिन्यै०
६४९. ॐ दुर्गाराध्यायै स्वाहा
६५०. ॐ रमाराध्यायै स्वाहा
६५१. ॐ विश्वाराध्यायै स्वाहा
६५२. ॐ चिदात्मिकायै स्वाहा
६५३. ॐ देवाराध्यायै स्वाहा
६५४. ॐ पराराध्यायै स्वाहा
६५५. ॐ ब्रह्माराध्यायै स्वाहा
६५६. ॐ परात्मिकायै स्वाहा
६५७. ॐ शिवाराध्यायै स्वाहा
६५८. ॐ प्रेमसाध्यायै स्वाहा
६५९. ॐ भक्ताराध्यायै स्वाहा
६६०. ॐ रसात्मिकायै स्वाहा
६६१. ॐ कृष्णप्राणार्पिण्यै स्वाहा
६६२. ॐ भामायै स्वाहा
६६३. ॐ शुद्धप्रेमविलासिन्यै०
६६४. ॐ कृष्णाराध्यायै स्वाहा
६६५. ॐ भक्तिसाध्यायै स्वाहा
६६६. ॐ भक्तवृन्दनिषेवितायै०

६६७. ॐ विश्वाधारायै स्वाहा
६६८. ॐ कृपाधारायै स्वाहा
६६९. ॐ जीवाधारायै स्वाहा
६७०. ॐअतिनायिकायै स्वाहा
६७१. ॐ शुद्धप्रेममय्यै स्वाहा
६७२. ॐ लज्जायै स्वाहा
६७३. ॐ नित्यसिद्धायै स्वाहा
६७४. ॐ शिरोमण्यै स्वाहा
६७५. ॐ दिव्यरूपायै स्वाहा
६७६. ॐ दिव्यभोगायै स्वाहा
६७७. ॐ दिव्यवेषायै स्वाहा
६७८. ॐ मुदान्वितायै स्वाहा
६७९. ॐ दिव्याङ्गनावृन्दसारायै ०
६८० ॐ नित्यनूतनयौवनायै ०
६८१. ओं परब्रह्मावृतायै स्वाहा
६८२. ओं ध्येयायै स्वाहा
६८३. ओं महारूपायै स्वाहा
६८४. ओं महोज्ज्वलायै स्वाहा
६८५. ओं कोटिसूर्यप्रभायै स्वाहा
६८६. ओं कोटिचन्द्रबिम्बाधि-
कच्छव्यै स्वाहा
६८७. ओं कोमलामृतवाचे स्वाहा

६८८. ओं आद्यायै स्वाहा
६८९. ओं वेदाद्यायै स्वाहा
६९०. ओं वेददुर्लभायै स्वाहा
६९१. ओं कृष्णासक्तायै स्वाहा
६९२. ओं कृष्णभक्तायै स्वाहा
६९३. ओं चन्द्रावलिनिषेवितायै
६९४. ओं कलाषोडशसम्पूर्णायै ०
६९५. ओं कृष्णदेहार्धधारिण्यै ०
६९६. ओं कृष्णबुद्ध्यै स्वाहा
६९७. ओं कृष्णसारायै स्वाहा
६९८. ओं कृष्णरूपविहारिण्यै ०
६९९. ओं कृष्णकान्तायै स्वाहा
७००. ओं कृष्णधनायै स्वाहा
७०१. ओं कृष्णमोहनकारिण्यै ०
७०२. ॐ कृष्णदृष्ट्यै स्वाहा
७०३. ॐ कृष्णगोत्रायै स्वाहा
७०४. ॐ कृष्णदेव्यै स्वाहा
७०५. ॐ कुलोद्वहायै स्वाहा
७०६. ॐ सर्वभूतस्थितात्मिकायै०
७०७. ॐ सर्वलोकनमस्कृतायै०
७०८. ॐ कृष्णदात्र्यै स्वाहा
७०९. ॐ प्रेमधात्र्यै स्वाहा

७१०. ॐ स्वर्णगात्र्यै स्वाहा
७११. ॐ मनोरमायै स्वाहा
७१२. ॐ नगधात्र्यै स्वाहा
७१३. ॐ यशोदात्र्यै स्वाहा
७१४. ॐ महादेव्यै स्वाहा
७१५. ॐ शुभङ्कर्यै स्वाहा
७१६. ॐ श्रीशेषदेवजनन्यै स्वाहा
७१७. ॐ अवतारगणप्रस्वै०
७१८. ॐ उत्पलाङ्कायै स्वाहा
७१९. ॐ अरविन्दाङ्कायै स्वाहा
७२०. ॐ प्रसादाङ्कायै स्वाहा
७२१. ॐ अद्वितीयकायै स्वाहा
७२२. ॐ रथाङ्कायै स्वाहा
७२३. ॐ कुञ्जराङ्कायै स्वाहा
७२४. ॐ कुण्डलाङ्कपदस्थितायै०
७२५. ॐ छत्राङ्कायै स्वाहा
७२६. ॐ विद्युदङ्कायै स्वाहा
७२७. ॐ पुष्पमालाङ्कितायै०
७२८. ॐ दण्डाकायै स्वाहा
७२९. ॐ मुकुटाङ्कायै स्वाहा
७३०. ॐ पूर्णचन्द्रायै स्वाहा
७३१. ॐ शुकाङ्कितायै स्वाहा
७३२. ॐ कृष्णान्नाहारपाका
७३३. ॐ वृन्दाकुञ्जविहारि
७३४. ॐ कृष्णप्रबोधनकर्यै स्व
७३५. ॐ कृष्णशेषान्नभोजि
७३६. ॐ पद्मकेसरमध्यस्थायै
७३७. ॐ सङ्गीतागमवेदिन्यै
७३८. ॐ कोटिकल्पान्तभ्रूभ
७३९. ॐ अप्राप्तप्रलयायै स्व
७४०. ॐ अच्युतायै स्वाहा
७४१. ॐ सर्वसत्वनिध्यै स्वा
७४२. ॐ पद्मशंखादिनिधिसे
७४३. ॐ अणिमादिगुणैश्वर्या
७४४. ॐ देववृन्दविमोहिन्यै
७४५. ॐ सर्वानन्दप्रदायै स्व
७४६. ॐ सर्वायै स्वाहा
७४७. ॐ सुवर्णलतिकाकृत्यैस्व
७४८. ॐ कृष्णाभिसारसंकेत
७४९. ॐ मालिन्यै स्वाहा
७५०. ॐ नृत्यपण्डितायै स्व
७५१. ॐ गोपिसिन्धुसकाशा
७५२. ॐ गोपमण्डपशोभिन्यै
७५३. ॐ श्रीकृष्णप्रीतिदायै

७५४. ॐ भीतायै स्वाहा
७५५. ॐ प्रत्यङ्गपुलकाञ्चितायै०
७५६. ॐ श्रीकृष्णालिङ्गनरतायै०
७५७ ॐ गोविन्दविरहाक्षमायै०
७५८. ॐ अनन्तगुणसम्पन्नायै०
७५९. ॐ कृष्णकीर्तनलालसायै०
७६०. ॐ बीजत्रयमयीमूर्त्यैस्वाहा
७६१. ॐ कृष्णानुग्रहवाञ्छिन्यै०
७६२. ॐ विमलादिनिषेव्यायै०
७६३. ॐ ललिताद्यर्चितायै०
७६४. ॐ सत्यै स्वाहा
७६५. ॐ पद्मवृन्दस्थितायै स्वाहा
७६६. ॐ हृष्टायै स्वाहा
७६७. ॐ त्रिपुरापरिसेवितायै०
७६८. ॐ वृन्दावत्यर्चितायैस्वाहा
७६९. ॐ श्रद्धायै स्वाहा
७७०. ॐ दुर्ज्ञेयायै स्वाहा
७७१. ॐ भक्तवल्लभायै स्वाहा
७७२. ॐ दुर्लभायै स्वाहा
७७३. ॐ सान्द्रसौख्यात्मिकायै०
७७४. ॐ श्रेयोहेत्वै स्वाहा
७७५. ॐ सुमोक्षदायै स्वाहा

७७६. ॐ सारङ्गायै स्वाहा
७७७. ओं शारदायै स्वाहा
७७८. ओं बोधायै स्वाहा
७७९. ओं सद्वृन्दावनचारिण्यै०
७८०. ओं ब्रह्मानन्दायै स्वाहा
७८१. ओं चिदानन्दायै स्वाहा
७८२. ओं ध्यानानन्दायै स्वाहा
७८३. ओं अर्धमातृकायै स्वाहा
७८४. ओं गन्धर्वायै स्वाहा
७८५. ओं सुरतज्ञायै स्वाहा
७८६. ओं गोविन्दप्राणसङ्गमायै०
७८७. ओं कृष्णाङ्गभूषणायै०
७८८. ओं रत्नभूषणायै स्वाहा
७८९. ओं स्वर्णभूषितायै स्वाहा
७९०. ओं श्रीकृष्णहृदयावासायै०
७९१. ओं मुक्ताकनकनासिकायै०
७९२. ओं सद्रत्नकङ्कणयुतायै०
७९३. ओं श्रीमन्नीलगिरिस्थितायै
७९४. ओं स्वर्णनूपुरसम्पन्नायै०
७९५. ओं स्वर्णकिंकिणिमण्डितायै०
७९६. ओं अशेषरासकुतुकायै०
७९७. ओं रम्भोरुव्यै स्वाहा

७९८. ॐ तनुमध्यमायै स्वाहा
७९९. ॐ पराकृत्यै स्वाहा
८००. ॐ परानन्दायै स्वाहा
८०१. ॐ परस्वर्गविहारिण्यै०
८०२. ॐ प्रसूनकवर्यै स्वाहा
८०३. ॐ चित्रायै स्वाहा
८०४. ॐ महासिन्दूरसुन्दर्यैस्वाहा
८०५. ॐ कैशोरवयसायै स्वाहा
८०६. ॐ बालायै स्वाहा
८०७. ॐ प्रमादाकुलशेखरायै०
८०८. ॐ कृष्णाधरसुधास्वादायै०
८०९. ॐ श्यामप्रेमविनोदिन्यै०
८१०. ॐ शिखिपिच्छिलसच्चूडायै
८११. ॐ स्वर्णचम्पकभूषितायै०
८१२. ॐ कुङ्कुमालक्तककस्तूरी-
मण्डितायै स्वाहा
८१३. ॐ अपराजितायै स्वाहा
८१४. ॐ हेमहारान्वितायै स्वाहा
८१५. ॐ पुष्पहाराढ्यायै स्वाहा
८१६. ॐ रसवत्यै स्वाहा
८१७. ॐ माधुर्यमधुरायै स्वाहा
८१८. ॐ पद्मायै स्वाहा

८१९. ॐ पद्महस्तायै स्वाहा
८२०. ॐ सुविश्रुतायै स्वा
८२१. ॐ भ्रूभङ्गाभङ्गकोदण्
कटाक्षसरसन्धिन्यै स्वा
८२२. ॐ शेषदेयशिरःस्थायै
८२३. ॐ नित्यस्थलविहारि
८२४. ॐ कारुण्यजलमध्यस्थ
८२५ ॐ नित्यमत्तायै स्वा
८२६. ॐ अधिरोरिण्यै स्वा
८२७. ॐ अष्टभाषावत्यै स्
८२८. ॐ अष्टनायिकायै स्
८२९. ॐ लक्षणान्वितायै स्
८३०. ॐ सुनीतिज्ञायै स्वा
८३१. ॐ श्रुतिज्ञायै स्वाहा
८३२. ॐ सर्वज्ञायै स्वाहा
८३३. ॐ दुःखहारिण्यै स्वा
८३४. ॐ रजोगुणेश्वर्यै स्वा
८३५. ॐ शरच्चन्द्रनिभासा
८३६. ॐ केतकीकुसुमाभास
८३७. ॐ सरासिन्धुवनस्थित
८३८. ॐ हेमपुष्पाधिककरा
८३९. ॐ पञ्चशक्तिमय्यै स

८४०. ॐ हितायै स्वाहा
८४१. ॐ स्तनकुम्भ्यै स्वाहा
८४२. ॐ नराढ्यायै स्वाहा
८४३. ॐ क्षीणपुण्यायै स्वाहा
८४४. ॐ यशस्विन्यै स्वाहा
८४५. ॐ वैराजसूर्यजनन्यै स्वाहा
८४६. ॐ श्रीशायै स्वाहा
८४७. ॐ भुवनमोहिन्यै स्वाहा
८४८. ॐ महाशोभायै स्वाहा
८४९. ॐ महामायायै स्वाहा
८५०. ॐ महाकान्त्यै स्वाहा
८५१. ॐ महास्मृत्यै स्वाहा
८५२. ॐ महामोहायै स्वाहा
८५३. ॐ महाविद्यायै स्वाहा
८५४. ॐ महाकीर्त्यै स्वाहा
८५५. ॐ महारत्यै स्वाहा
८५६. ॐ महाधैर्यायै स्वाहा
८५७. ॐ महावीर्यायै स्वाहा
८५८. ॐ महाशक्त्यै स्वाहा
८५९. ॐ महाद्युत्यै स्वाहा
८६०. ॐ महागौर्य्यै स्वाहा
८६१. ॐ महासम्पदे स्वाहा
८६२. ॐ महाभोगविलासिन्यै ०
८६३. ॐ समयायै स्वाहा
८६४. ॐ भक्तिदायै स्वाहा
८६५. ओं अशोकायै स्वाहा
८६६. ओं वात्सल्यरसदायिन्यै ०
८६७. ओं सुहृद्भक्तिप्रदायै ०
८६८. ॐ स्वच्छायै स्वाहा
८६९. ॐ माधुर्यरसवर्षिण्यै स्वाहा
८७०. ॐ भावभक्तिप्रदायै स्वाहा
८७१. ॐ शुद्धप्रेमभक्तिविधायिन्यै
८७२. ॐ गोपरामायै स्वाहा
८७३. ॐ अभिरामायै स्वाहा
८७४. ॐ क्रीडारामायै स्वाहा
८७५. ॐ परेश्वर्य्यै स्वाहा
८७६. ॐ नित्यरामायै स्वाहा
८७७. ॐ आत्मरामायै स्वाहा
८७८ ॐ कृष्णरामायै स्वाहा
८७९. ॐ रमेश्वर्य्यै स्वाहा
८८०. ॐ एकानेकजगद्व्याप्तायै०
८८१. ॐ विश्वलीलाप्रकाशिन्यै०
८८२. ॐ सरस्वतीशायै स्वाहा
८८३. ॐ दुर्गेशायै स्वाहा

८८४. ॐ जगदीशायै स्वाहा
८८५. ॐ जगद्विध्यै स्वाहा
८८६. ॐ विष्णुवंशनिवासायै०
८८७. ॐ विष्णुवंशसमुद्भवायै०
८८८. ॐ विष्णुवंशस्तुतायैस्वाहा
८८९. ॐ कर्त्र्यै स्वाहा
८९० ॐ सदाविष्णुवंशावन्यै०
८९१. ॐ आरामस्थायै स्वाहा
८९२. ॐ वनस्थायै स्वाहा
८९३ ॐसूर्यपुत्र्यवगाहिन्यै स्वाहा
८९४. ॐ प्रीतिस्थायै स्वाहा
८९५. ॐ नित्ययन्त्रस्थायै स्वाहा
८९६. ॐ गोलोकस्थायै स्वाहा
८९७. ॐ विभूतिदायै स्वाहा
८९८. ॐ स्वानुभूतिस्थितायै०
८९९. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा
९००. ॐ सर्वलोकनिवासिन्यै०
९०१. ॐ अमृतायै स्वाहा
९०२. ॐ अद्भुतायै स्वाहा
९०३. ॐ श्रमन्नारायणसमीरितयै०
९०४. ॐ अक्षरायै स्वाहा
९०५. ॐ कूटस्थायै स्वाहा

९०६. ॐ महापुरुषसम्भवाय
९०७. ॐ औदार्यभावसाध्या
९०८. ॐ स्थूलसूक्ष्मातिरूपि
९१०. ॐ गाङ्गेयमुकुरप्रभाय
९११. ॐ नीलोत्पलजिताक्ष्य
९१२. ॐ सद्रत्नकत्रराग्विता
९१३. ॐ प्रेमपर्यङ्कनिलयाय
९१४. ॐ तेजोमण्डलमध्यग
९१५ ॐ कृष्णाङ्गगोपनाभेद
९१६. ॐ लीलावरणनायिक
९१७. ॐ सुधासिन्धुसमुल्लास
९१८. ॐ अमृतस्यन्दविधायि
९१९. ॐ कृष्णचित्तायै स्वा
९२०. ॐ रासचित्तायै स्वा
९२१. ॐ प्रेमचित्तायै स्वाह
९२२. ॐ हरिप्रियायै स्वाह
९२३. ॐ अचिन्तनगुणग्रामा
९२४. ॐ कृष्णलीलायै स्वा
९२५. ॐ मलापहायै स्वाह
९२६. ॐ राससिन्धुशशाङ्काय
९२७. ॐ रासमण्डलमण्डिन
९२८. ॐ नतव्रतायै स्वाहा

९२९. ॐ श्रीहरीच्छासुमूर्त्यैस्वाहा०
९३०. ॐ सुरवन्दितायै स्वाहा
९३१. ॐ गोपीचूड़ामण्यै स्वाहा
९३२. ॐ गोपीगणेड्यायै स्वाहा
९३३. ओं विरजाधिकायै स्वाहा
९३४. ओं गोपप्रेष्ठायै स्वाहा
९३५. ओं गोपकन्यायै स्वाहा
९३६. ओं गोपनार्यै स्वाहा
९३७. ओं सुगोपिकायै स्वाहा
९३८. ओं गोपधामायै स्वाहा
९३९. ओं सुदामाम्बायै स्वाहा
९४०. ओं गोपाल्यै स्वाहा
९४१. ओं गोपमोहिन्यै स्वाहा
९४२. ओं गोपभूषायै स्वाहा
९४३. ओं कृष्णभूषायै स्वाहा
९४४. ओं वृन्दावनचन्द्रिकायै०
९४५. ओं वीणादिघोषनिरतायै०
९४६. ओं रासोत्सवविकासिन्यै०
९४७. ओं कृष्णचेष्टायै स्वाहा
९४८. ओं अपरिज्ञातायै स्वाहा
९४९. ओं कोटिकन्दर्पमोहिन्यै०
९५०. ओं श्रीकृष्णगुणगानाढ्यायै०
९५१. ओं देवसुन्दरिमोहिन्यैस्वाहा
९५२. ओं कृष्णचन्द्रमनोज्ञायैस्वाहा
९५३. ओं कृष्णदेवसहोदर्यै स्वाहा
९५४. ओं कृष्णाभिलाषिण्यै०
९५५. ओं कृष्णप्रेमानुग्रहवाञ्छिन्यै
९५६. ओं क्षेमायै स्वाहा
९५७. ओं मधुरालापायै स्वाहा
९५८. ओं भ्रुवोमायायै स्वाहा
९५९. ओं सुभद्रिकायै स्वाहा
९६०. ओं प्रकृत्यै स्वाहा
९६१. ओं परमानन्दायै स्वाहा
९६२. ओं नीपद्रुमतलस्थितायै०
९६३. ओं कृपाकटाक्षायै स्वाहा
९६४. ओं बिम्बोष्ठ्यै स्वाहा
९६५. ओं रम्भायै स्वाहा
९६६. ओं चारुनितम्बिन्यै स्वाहा
९६७. ओं स्मरकेलिनिधानायै०
९६८. ओं गण्डताटङ्कमण्डितायै०
९६९. ओं हेमाद्रिकान्तिरुचिरायै०
९७०. ओं प्रेमाढ्यायै स्वाहा
९७१. ओं मदमन्थरायै स्वाहा
९७२. ओं कृष्णचिन्तायै स्वाहा

९७३. ॐ प्रेमचिन्तायै स्वाहा
९७४. ॐ रतिचिन्तायै स्वाहा
९७५. ॐ कृष्णदायै स्वाहा
९७६. ॐ रासचिन्तायै स्वाहा
९७७. ॐ भावचिन्तायै स्वाहा
९७८. ॐ शुद्धचिन्तायै स्वाहा
९७९. ॐ महारसायै स्वाहा
९८०. ॐ कृष्णादृष्टित्रुटियुगायै०
९८१. ॐ दृष्टिपक्ष्मविनिन्दिन्यै०
९८२. ॐ कन्दर्पजनन्यै स्वाहा
९८३. ॐ मुख्यायै स्वाहा
९८४. ॐ वैकुण्ठगतिदायिन्यै ०
९८५. ॐ रासभावायै स्वाहा
९८६. ॐ प्रियाश्लिष्टायै स्वाहा

९८७. ॐ प्रेष्ठायै स्वाहा
९८८. ॐ प्रथमनायिकायै
९८९. ॐ शुद्धायै स्वाहा
९९०. ॐ सुधादेहिन्यै स्वा
९९१. ॐ श्रीरामायै स्वा
९९२. ॐ रसमञ्जर्यै स्वा
९९३. ॐ सुप्रभावायै स्वा
९९४. ॐ शुभाचारायै स्व
९९५. ॐ स्वर्णदीनर्मदाम्बि
९९६. ॐ गोमतीचन्द्रभागे
९९७. ॐ सरयूताम्रपर्णिस्व
९९८. ॐ निष्कलङ्कचरित्रा
९९९. ॐ निर्गुणायै स्वाहा
१०००. ॐ निरञ्जनायै

इति राधादामोदरयुगलरूपभगवतः सहस्रनामावली स्वाहाकारः

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

❀ प्रभु प्रार्थना ❀

हे प्रभो ! आनन्द सिन्धो ! तत्वज्ञानं दीयताम् ।
शीघ्रमन्तर्दुर्गुणान्मे दूरतो ह्यपनीयताम् ॥
प्रीयतां शरणागते मे सदाचारी स्यामहम् ।
ब्रह्मचारी धर्मधीरो वीरव्रतधारीस्वयम् ॥

ॐ श्रीराधादामोदरयुगल सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

एकोनपञ्चाशाक्षरा श्रीराधादामोदर चतुर्व्यूहगायत्री

ओं नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय विद्महे ।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय संकर्षणाय धीमहि ।
राधादामोदरैकात्मा स नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

॥ श्रीराधादामोदरयुगलध्यानम् ॥

श्री वृन्दाविपिनप्रतोलिषु नमत्संफुल्लवल्लीतति-
ष्वन्तर्जालविघट्टनैः सुरभिणा यातेन संसेविते ।
कालिन्दीपुलिने विहारिणमथो राधैकजीवातुकं
वन्दे नन्दकिशोरमिन्दुवदनं स्निग्धाम्बुदाडम्बरम् ॥

श्रीसनत्कुमार उवाच

सदाशिवस्त्वयाप्राप्तं युगलंस्तवमुत्तमम् ।
स्मारितोसि नारदर्षे ! पुनस्तत्त्वां वदाम्यम् ॥

ॐ श्रीराधादामोदराभ्यां नमः

देवकीनन्दनः शौरिर्वासुदेवो बलानुजः ।
गदाग्रजः कंसमोहः कंससेवकमोहनः ॥१॥

भिन्नार्गलोभिन्नलोहः पितृबाह्यः पितृस्तुतः ।
मातृस्तुतः शिवध्येयो यमुनाजलभेदन ।२।

व्रजवासी व्रजानन्दो नन्दबालो दयानिधिः ।
लीलाबालः पद्मनेत्रः गोकुलोत्सव ईश्वरः ।३।

गोपिकानन्दनः कृष्णो गोपानन्दः सतांगतिः ।
बकप्राणहरोविष्णुर्बकमुक्तिप्रदो हरिः ।४।

बलदोलाशयशयः श्यामलः सर्वसुन्दरः ।
पद्मनाभो हृषीकेश क्रीडामनुजबालकः ।५।

लीलाविध्वस्तशकटो वेदमन्त्राभिषेचितः ।
यशोदानन्दनः कान्तो मुनिकोटिनिषेवितः ।६।

नित्यं मधुवनावासो बैकुण्ठः सम्भवः क्रतुः ।
रमापतिर्यदुपतिर्मुरारिर्मधुसूदनः ।७।

माधवो मानहारी च श्रीपतिर्भूधरः प्रभुः ।
बृहद् वनमहालीलो नन्दसूनुर्महासनः ।८।

तृणावर्त प्राणहारी यशोदाविस्मय प्रदः ।
त्रैलोक्यवक्त्र पद्माक्षः पद्महस्तः प्रियंकरः।९।

ब्रह्मण्यो धर्मगोप्ता च भूपतिः श्रीधरः स्वराट् ।
अजाध्यक्षः शिवाध्यक्षो धर्माध्यक्षो महेश्वरः ।१०।

वेदान्तवेद्यो ब्रह्मस्थः प्रजापतिरमोघदृक् ।

गोपीकरावलम्बी च गोपबालकसुप्रियः ।११।

बलानुयायी बलवान् श्रीदामप्रिय आत्मवान् ।
गोपीगृहाङ्गणरतिर्भद्रः सुश्लोकमङ्गलः ।१२।

नवनीतहरो बालो नवनीतप्रियाशनः ।
बालवृन्दी मर्कवृन्दी चकिताक्षः पलायितः ।१३।

यशोदातर्जितः कम्पी मायारुदितशोभनः ।
दामोदरोऽप्रमेयात्मा दयालुर्भक्तवत्सलः ।१४।

उलूखले सुबद्धश्च नम्रशिर्गोपीकर्दथितः ।
वृक्षभङ्गी शोकभङ्गी धनदात्मजमोक्षणः ।१५।

देवर्षिवचनश्लाघी भक्तवात्सल्यसागरः ।
व्रजकोलाहलकरो व्रजानन्द विवर्धन ।१६।

गोपात्मा प्रेरकः साक्षी वृन्दावननिवासकृत् ।
वत्सपालो वत्सपति र्गोपदारकमण्डन ।१७।

बालक्रीडो बालरतिर्बालक कनकाङ्गदी ।
पीताम्बरो हेममाली मणिमुक्ता विभूषणः ।१८।

किङ्किणीकटकी सूत्री नूपुरी मुद्रिकान्वितः ।
वत्सासुर प्रतिध्वंसी वकासुरविनाशनः ।१९।

अघासुर विनाशी च विनिद्रीकृतबालकः ।
आद्य आत्मप्रदः सङ्गी यमुनातीरभोजनः ।२०।

गोपालमण्डलीमध्यः सर्वगोपालभूषणः ।

कृतहस्त तलग्रासो व्यञ्जनाश्रितशाखिकः ।२१।

कृतबाहुभृङ्गयष्टिर्गुञ्जालङ्कृतकण्ठकः ।
मयूरपिच्छमुकुटो बनमालाविभूषितः ।२२।

गैरिकाचित्रितवपुर्नवमेघवपुः स्मरः ।
कोटिकन्दर्पलावण्यो लसन्मकरकुण्डलः ।२३।

आजानुबाहुर्भगवान् निद्रारहितलोचनः ।
कोटिसागरगाम्भीर्यः कालकालः सदाशिवः ।२४।

विरञ्चिमोहनवपुर्गोपवत्सवपुर्धरः ।
ब्रह्माण्डकोटिजनको ब्रह्ममोहविनाशकः ।२५।

ब्रह्मा ब्रह्मेडितः स्वामी शक्रदर्पादिनाशकः ।
गिरिपूजोपदेष्टा च धृतगोवर्धनाचलः ।२६।

पुरन्दरेडितः पूज्यः कामधेनुप्रपूजितः ।
सर्वतीर्थाभिषिक्तश्च गोविन्दो गोपरक्षकः ।२७।

कालियार्तिकरः क्रूरो नागपत्नीरितो विराट् ।
धेनुकारिः प्रलम्बारिर्वृषासुरविमर्दनः ।२८।

मयासुरात्मजध्वंसी केशिकण्ठविदारकः ।
गोपगोप्ता धेनुगोप्ता दावाग्निपरिशोषकः ।२९।

गोपकन्यावस्त्रहारी गोपकन्यावरप्रदः ।
यज्ञपत्न्यन्नभोजी च मुनिमानापहारकः ।३०।

जलेशमानमथनो नन्दगोपालजीवनः ।
गन्धर्वशापमोक्ता च शंखचूडशिरोहरः ।३१।

वंशीवटी वेणुवादी गोपीचिन्तापहारकः ।
सर्वगोप्ता समाह्वानः सर्वगोपीमनोरथः ।३२।

व्यङ्गधर्म प्रवक्ता च गोपीमण्डलमोहनः ।
रासक्रीडा रसास्वादी रसिको राधिका धवः ।३३।

किशोरीप्राणनाथश्च वृषभानुसुताप्रियः ।
सर्वगोपीजनानन्दी गोपीजनविमोहनः ।३४।

गोपिकागीतचरितो गोपीनर्तनलालसः ।
गोपीस्कन्धाश्रितकरो गोपिकाचुम्बनप्रियः ।३५।

गोपिकामार्जितमुखो गोपीव्यजनवीजितः ।
गोपिकाकेशसंस्कारी गोपिकापुष्पसंस्तरः ।३६।

गोपिकाहृदयालम्बी गोपीवहनतत्परः ।
गोपिकामदहारी च गोपीकापरिमार्जितः ।३७।

गोपिकाकृतसल्लीलः गोपिका संस्मृतप्रियः ।
गोपिकावन्दितपदः गोपिकावशवर्तन ।३८।

राधापराजितः श्रीमान्निकुञ्जे सुविहारवान् ।
कुञ्जप्रियः कुञ्जवासी वृन्दावनविकाशनः ।३९।

यमुनाजलसिक्ताङ्गो यमुनासौख्यदायकः ।
शशिसंस्तम्भनः शूरः कामी कामविमोहनः ।४०।

कामाद्यः कामनाथश्च काममानसभेदनः ।
कामदः कामरूपश्च कामिनीकामसञ्चयः ।४१।

नित्यक्रीडो महालील: सर्व. सर्वगतस्तथा ।
परमात्मा पराधीश सर्वकारणकारण: ।४२।

गृहीतनारदवच: ह्यक्रूरपरिचिन्तित: ।
अक्रूरवन्दितपदो गोपिका तोषकारक: ।४३।

अक्रूरवाक्यसंग्राही मथुरा वासकारण: ।
अक्रूरतापशमनो रजकायु: प्रणाशन: ४४।

मथुरानन्ददायी च कंसवस्त्रविलुण्ठन: ।
कंसवस्त्रपरीधानो गोपवस्त्रप्रदायक: ।४५।

सुदामगृहगामी च सुदाम परिपूजित: ।
तन्तुवायकसम्प्रीत: कुब्जाचन्दनलेपन: ।४६।

कुब्जारूपप्रदो विज्ञो मुकुन्दो विष्टरश्रवा: ।
सर्वज्ञो मथुरालोकी सर्वलोकाभिनन्दन: ।४७।

कृपाकटाक्षदर्शी च दैत्यारिर्देवपालक: ।
सर्वदु:खप्रशमनो धनुर्भङ्गी महोत्सव: ।४८।

कुवलयापीडहन्ता च दन्तस्कन्धोबलाग्रणी ।
कल्परूपधरो धीरो दिव्यवस्त्रानुलेपन: ४६।

भल्लरूपो महाकाल: कामरूपीबलान्वित: ।
कंसत्रासकरो भीमो मुष्टिकान्तश्च कंसहा ।५०।

चाणूरघ्नो भयहर: शलारिस्तोषलान्तक: ।
वैकुण्ठवासी कंसारि: सर्वदुष्टनिषूदन: ।५१।

देवदुन्दुभिनिर्घोषी पितृशोकनिवारणः ।
यादवेन्द्रः सतांनाथो यादवारिप्रतर्दनः ।५२।

शोरिशोकविनाशी च देवकीतापनाशनः ।
उग्रसेनपरित्राता उग्रसेनाभिपूजितः ।५३।

उग्रसेनाभिषेकी च उग्रसेनदयापरः ।
हर्वसात्वतसाक्षी च यदूनामभिनन्दनः ।५४।

सर्वसाथुरसंसेव्यः करुणो भक्तबान्धव ।
सर्वगोपालधनदो गोपीगोपाललालसः ।५५।

शौरिदत्तोपवीती च उग्रसेनदयाकरः ।
गुरुभक्तो ब्रह्मचारी निगमाध्ययनेरतः ।५६।

संकर्षणसहाध्यायी सुदामसुहृदेव च ।
विद्यानिधिः कलाकोषो मृतपुत्रप्रदस्तथा ।५७।

चक्री पांचजनी चैव सर्वनारकिमोचनः ।
यमार्चितः परो देवो नामोच्चारवशोऽच्युतः ।५८।

कुब्जाविलासी सुभगो दीनबन्धुरनूपमः ।
अक्रूरगृहगोप्ता च प्रतिठापालकः शुभ ।५९।

जरासन्धजयी विद्वान् यवनान्तो द्विजाश्रयः ।
मुचुकुन्दप्रियकरो जरासन्धपलायितः ।६०।

द्वारकाजनको गूढो ब्रह्मण्यः सत्यसङ्गरः ।
लीलाधरः प्रियकरो बिश्वकर्मा यशः प्रदः ।६१।

रुक्मिणी प्रियसन्देशो: रुक्मशोकप्रवर्धनः ।
चैद्यशोकालयः श्रेष्ठो दुष्टराजन्यनाशनः ।६२।

रुक्मिवैरूप्यकरणो रुक्मिणीवचनेरतः ।
बलभद्रवचो ग्राही मुक्तरुक्मी जनार्दनः ।६३।

रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामापतिः स्वयम् ।
भक्तपक्षी भक्तवश्यो ह्यक्रूरमणिदायकः ।६४।

शतधन्वप्राणहारी ऋक्षराजसुताप्रियः ।
सत्राजित्तनयाकान्तो मित्रवृन्दापहारकः ।६५।

सत्यापतिर्लक्ष्मणाजित् पूज्यो भद्राप्रियङ्करः ।
नरकासुरघाती च लीलाकन्याहरो जयी ।६६।

मुरारिर्मदनेशोऽपि धरित्रीदुःखनाशनः ।
वैनतेयी स्वर्गगामी अदित्याः कुण्डलप्रदः ।६७।

इन्द्रार्चितो रमाकान्तो वज्रिभार्या प्रपूजितः ।
पारिजातापहारी च शक्रमानापहारकः ।६८।

प्रद्युम्नजनक साम्बतातो बहुसुतो ःविधुः ।
गर्गाचार्य सत्यगति धर्माधारः धराधरः ।६९।

द्वारकामण्डनः श्लोक्यः सुश्लोको निगमालयः ।
पौण्ड्रकप्राणहारी च काशीराजशिरोहर ।७०।

अवैष्णवविप्रदाही सुदक्षिणभयावहः ।
जरासन्धविदारी च धर्मनन्दनयज्ञकृत् ७१।

शिशुपालशिरश्छेदी दन्तवक्त्रविनाशनः ।
विदूरथान्तकः श्रीशः श्रीदो द्विविदनाशनः ।७२।

रुक्मिणीमानहारी च रुक्मिणी मानवर्धनः ।
देवर्षिशापहर्ता च द्रौपदी वाक्यपालकः ।७३।

दुर्वासो भयहारी च पांचालीस्मरणागतः ।
पार्थदूतः पार्थमन्त्री पार्थदु.खौघनाशनः ।७४।

पार्थमानापहारी च पार्थजीवनदायकः ।
पाञ्चालीवस्त्रदाता च विश्वपालकपालकः ।७५।

श्वेताश्वसारथिः सत्य सत्यसाध्वी भयापहः ।
सत्यसन्धः सत्यरतिः सत्यप्रिय उदारधी ।७६।

महासेनजयी चैव शिवसैन्यविनाशनः ।
बाणासुरभुजच्छेत्ता बाणबाहुवरप्रदः ।७७।

तार्क्ष्यमानापहारी च तार्क्ष्यतेजो विवर्धनः ।
रामस्वरूपधारी च सत्यभामा मुदावहः ।७८।

रत्नाकरजलक्रीडः व्रजलीला प्रदर्शकः ।
स्वप्रतिज्ञापरिध्वंसी भीमाज्ञापरिपालकः ।७९।

वीरायुधहरः कालः कालिकेश महाबलः ।
वर्वरीकशिरोहारी वर्वरीकशिरः प्रदः ।८०।

धर्मपुत्रजयीशूरदुर्योधनमदान्तकः ।
गोपिकाप्रीतिनिर्बन्धनित्यक्रीडः व्रजेश्वरः ।८१।

राधाकुण्डरतिर्धन्यः सदान्दोलसमाश्रितः ।
सदामधुवनानन्दी सदावृन्दावनप्रियः ।८२।

अशोकवनसन्नद्धः सदातिलक सङ्गतः ।
सदागोवर्धनरतिः सदागोकुल वल्लभः ।८३।

भाण्डीरवटसंवासी नित्यं वंशीवटस्थित ।
नन्दीग्रामकृतावासः वृषभानुगृहप्रियः ।८४।

गृहीतकामिनीरूपो नित्यं रासविलासकृत् ।
वल्लवीजनसंगोप्तः वल्लवीजनवल्लभः ।८५।

देवशर्मकृपाकर्ता कल्पपादपसंस्थितः ।
शिलानुगन्धनिलय पादचारी घनच्छविः ।८६।

अतसीकुसुमप्रख्यः सदालक्ष्मीकृपाकरः ।
त्रिपुरारिप्रियकरो ह्युग्रधन्वा पराजितः ।८७।

षड्धुरध्वंसकर्ता च निकुम्भप्राणहारकः ।
वज्रनाभपुरध्वंसी पौण्ड्रक प्राणहारकः ।८८।

बहुलाश्वप्रीतिकर्ता द्विजवर्य प्रियङ्करः ।
शिवसंकटहारी च वृकासुर बिनाशनः ।८९।

भृगुसत्कारकारी च शिवसात्त्विकताप्रदः ।
गोकर्णपूजकः साम्बकुष्ठविध्वंसकारणः ।९०।

वेदस्तुतो वेदवेत्ता यदुवंशविवर्धनः ।
यदुवंशविनाशी च उद्धवोद्धारकारकः ।९१।

इति दामोदर पञ्चशत

राधा च राधिका चैव आनन्दा वृषभानुजा ।
वृन्दावनेश्वरी पुण्या कृष्णमानसहारिणी ।९२।

प्रगल्भा चतुरा कामा कामिनी हरिमोहिनी ।
ललिता मधुरा माध्वी किशोरी कनकप्रभा ।९३।

जितचन्द्राजितमृगा जितसिंहा जितद्विपा ।
जितरम्भा जितपिका गोविन्दहृदयोद्भवा ।९४।

जितबिम्बा जितशुका जितपद्माकुमारिका ।
श्रीकृष्णाकर्षणादेवी नित्ययुग्मस्वरूपिणी ।९५।

नित्यंविहारिणी कान्ता रसिका कृष्णवल्लभा ।
आमोदिनी मोदवती नन्दनन्दनभूषिता ।९६।

दिव्याम्बरा दिव्याहारा मुक्तामणि विभूषिता ।
कुञ्जप्रिया कुञ्जवासा कुञ्जनायकनायिका ।९७।

चारुरूपा चारुवक्त्रा चारुहेमाङ्गदा शुभा ।
श्रीकृष्णवेणुसङ्गीता मुरलीहारिणी शिवा ।९८।

भद्रा भगवती शान्ता कुमुदा सुन्दरी प्रिया ।
कृष्णक्रीडा कृष्णरतिः श्रीकृष्णसहचारिणी ।९९।

वंशीवटप्रियस्थाना युग्मायुग्म स्वरूपिणी ।
भाण्डीरवासिनी शुभ्रा गोपीनाथप्रियासखी ।१००।

श्रुतिनिःश्वसिता दिव्या गोविन्दरसदायिनी ।
श्रीकृष्णप्रार्थिनीशाना महानन्दप्रदायिनी ।१०१।

वैकुण्ठजनसंसेव्या कोटिलक्ष्मीसुखावहा ।
कोटिकन्दर्पलावण्या रतिकोटिरतिप्रद ।१०२।

भक्तिग्राह्या भक्तिरूपा लावण्यसरसी उमा ।
ब्रह्मरुद्रादिसंराध्या नित्यकौतूहलान्विता ।१०३।

नित्यलीला नित्यकामा नित्यशृङ्गारभूषिता ।
नित्यवृन्दावनरसा नन्दनन्दनसंयुता ।१०४।

गोपिकामण्डीयुक्ता नित्यं गोपालसंगता ।
गोरसक्षेपिणी शूरा सानन्दाऽऽनन्ददायिनी ।१०५।

महालीला प्रकृष्टा च नागरी नगचारिणी ।
नित्यमाघूर्णिता पूर्णा कस्तूरीतिलकान्विता ।१०६।

पद्मा श्यामा मृगाक्षी च सिद्धिरूपा रसावहा ।
कोटिचन्द्राननां गौरी कोटिकोकिलसस्वरा ।१०७।

शीलसौन्दर्यनिलया नन्दनन्दनलालिता ।
अशोकवनसंवासा भाण्डीरवनसङ्गता ।१०८।

कल्पद्रुमलताविष्टा कृष्णाविश्वा हरिप्रिया ।
अजागम्या भवागम्या गोवर्धनकृतालया १०९।

यमुनातीर निलया शश्वद्गोविन्दजल्पिनी ।
शश्वन्मानवती स्निग्धा श्रीकृष्णपरिवन्दिता ।११०।

कृष्णस्तुता कृष्णव्रता श्रीकृष्णहृदयालया ।
देवद्रुमफलासेव्या वृन्दावन रसालया ।१११।

कोटितीर्थमयी सत्या कोटितीर्थफलप्रदा ।
कोटियुग सुदुष्प्राप्या कोटियज्ञदुराश्रया ।११२।

मनसाशशिलेखा च श्रीकोटिसुभगानघा ।
कोटिमुक्तसुखा सौम्या लक्ष्मीकोटि विलासिनी ।११३।

तिलोत्तमात्रिकालस्था त्रिकालज्ञाऽप्यधीश्वरी ।
त्रिवेदज्ञा त्रिलोकज्ञा तुरीयान्तनिवासिनी ।११४।

दुर्गाराध्या रमाराध्या विश्वाराध्या चिदात्मिका ।
देवाराध्या पराराध्या ब्रह्माराध्या परात्मिका ।११५।

शिवाराध्या प्रेमसाध्या भक्ताराध्या रसात्मिका ।
कृष्णप्राणार्पिणी भामा शुद्धप्रेमविलासिनी ।११६।

कृष्णाराध्या भक्तिसाध्या भक्तवृन्दनिषेविता ।
विश्वाधारा कृपाधारा जीवाधारातिनायिका ।११७।

शुद्धप्रेममयीलज्जा नित्यसिद्धाशिरोमणिः ।
दिव्यरूपा दिव्यभोगा दिव्यवेषा मुदान्विता ।११८।

दिव्याङ्गना वृन्दसारा नित्यनूतनयौवना ।
परब्रह्मावृताध्येया महारूपामहोज्वला ।११९।

कोटिसूर्यप्रभा कोटि चन्द्रबिम्बाधिकच्छविः ।
कोमलामृतवागाद्या वेदाद्या वेददुर्लभा ।१२०।

कृष्णासक्ता कृष्णभक्ता चन्द्रावलिनिषेविता ।
कलाषोडशसम्पूर्णा कृष्णदेहार्धधारिणी ।१२१।

कृष्णबुद्धि कृष्णसारा कृष्णरूपविहारिणी ।
कृष्णकान्ता कृष्णधना कृष्णमोहनकारिणी ।१२२।

कृष्णदृष्टिः कृष्णगोत्रा कृष्णदेवी कुलोद्वहा ।
सर्वभूतस्थितात्मा च सर्वलोकनमस्कृता ।१२३।

कृष्णदात्री प्रेमधात्री स्वर्णगात्री मनोरमा ।
नगधात्री यशोधात्री महादेवी शुभङ्करी ।१२४।

श्रीशेषदेवजननी अवतारगणप्रसूः ।
उत्पलाङ्कारबिन्दाङ्का प्रसादाङ्का द्वितीयका ।१२५।

रथाङ्का कुञ्जराङ्का च कुण्डलाङ्कपदस्थिता ।
छत्राङ्का विद्युदङ्का च पुष्पमालाङ्कितापि च ।१२६।

दण्डाङ्का मुकुटाङ्का च पूर्णचन्द्रा शुकाङ्किता ।
कृष्णान्नाहारपाका च वृन्दाकुञ्जविहारिणी ।१२७।

कृष्णप्रबोधनकरी कृष्णशेषान्नभोजिनी ।
पद्मकेसरमध्यस्था सङ्गीतागमवेदिनी ।१२८।

कोटिकल्पान्तभ्रूभङ्गा अप्राप्तप्रलयाच्युता ।
सर्वसत्त्वनिधिः पद्मशङ्खादिनिधिसेविता ।१२९।

अणिमादिगुणैश्वर्या देववृन्दविमोहिनी ।
सर्वानन्दप्रदा सर्वा सुवर्णलतिकाकृतिः ।१३०।

कृष्णाभिसारसंकेता मालिनी नृत्यपण्डिता ।
गोपीसिन्धुसकाशाख्या गोपमण्डपशोभिनी ।१३१।

श्रीकृष्ण प्रीतिदाभीता प्रत्यङ्गपुलकाञ्चिता ।
श्रीकृष्णालिङ्गनरता गोविन्दविरहाक्षमा ।१३२।

अनन्तगुण सम्पन्ना कृष्णकीर्तनलालसा ।
बीजत्रयमयीमूर्तिः कृष्णानुग्रहवाञ्छिनी ।१३३।

विमलादिनिषेव्या च ललिताद्यर्चिता सती ।
पद्मवृन्दस्थिता हृष्टा त्रिपुरापरिसेविता ।१३४।

वृन्दावत्यर्चिता श्रद्धा दुर्ज्ञेया भक्तबल्लभा ।
दुर्लभा सान्द्रसौख्यात्मा श्रेयोहेतुः सुभोगदा ।१३५।

सारङ्गा शारदाबोधा सद्वृन्दावनचारिणी ।
ब्रह्मानन्दा चिदानन्दा ध्यानानन्दार्धमात्रिका ।१३६।

गन्धर्वा सुरतज्ञा च गोविन्दप्राणसङ्गमा ।
कृष्णाङ्गभूषणा रत्नभूषणा स्वर्णभूषिता ।१३७।

श्रीकृष्णहृदयावासा मुक्ताकनकनासिका ।
सद्रत्नकङ्कणयुता श्रीमन्नीलगिरिस्थिता ।१३८।

स्वर्णनूपुरसम्पन्ना स्वर्णकिङ्किणिमण्डिता ।
अशेषरासकुतुका रम्भोरू तनुमध्यमा ।१३९।

पराकृतिः परानन्दा परस्वर्गविहारिणी ।
प्रसूनकबरी चित्रा महासिन्दूरसुन्दरी ।१४०।

कैशोरवयसाबाला प्रमदाकुलशेखरा ।
कृष्णाधरसुधास्वादा श्यामप्रेमविनोदिनी ।१४१।

शिखिपिच्छलसच्चूडा स्वर्ण चम्पकभूषिता ।
कुङ्कुमालक्तकस्तूरीमण्डिता चापराजिता ।१४२।

हेमहारान्विता पुष्पहाराढ्या रसवत्यपि ।
माधुर्यमधुरा पद्मा पद्महस्ता सुविश्रुता ।१४३।

भ्रूभङ्गाभङ्गकोदण्डकटाक्षस्वरसन्धिनी ।
शेषदेवशिरस्था च नित्यस्थलविहारिणी ।१४४।

कारुण्यजलमध्या च नित्यमत्ताधिरोहिणी ।
अष्टभाषावती चाष्टनायिका लक्षणान्विता ।१४५।

सुनीतिज्ञाश्रुतज्ञा च सर्वज्ञा दुःखहारिणी ।
रजोगुणेश्वरी चैव शरच्चन्द्रनिभानना ।१४६।

केतकीकुसुमाभासा सदासिन्धुवनस्थिता ।
हेमपुष्पाधिककरा पञ्चशक्तिमयी हिता ।१४७।

स्तनकुम्भी नराढ्या च क्षीणपुण्या यशस्विनी ।
वैराजसूयजननी श्रीशा भुवनमोहिनी ।१४८।

महाशोभामहामाया महाकान्तिः महास्मृतिः ।
महामोहा महाविद्या महाकीर्तिः महारतिः ।१४९।

महाधैर्या महावीर्या महाशक्तिः महाद्युतिः ।
महागौरी महासम्पन्महाभोगविलासिनी ।१५०।

समया भक्तिदाशोका वात्सल्यरसदायिनी ।
[illegible] माधुर्यरसवर्षिणी ।१५१।

भावभक्तिप्रदा शुद्धप्रेमभक्तिविधायिनी ।
गोपरामाभिरामा च क्रीडारामा परेश्वरी ।१५२।

नित्यरामा चात्मरामा कृष्णरामा रमेश्वरी ।
एकानेकजगद्व्याप्ता विश्वलीला प्रकाशिनी ।१५३।

सरस्वतीशा दुर्गेशा जगदीशा जगद्विधिः ।
विष्णुवंशनिवासा च विष्णुवंशसमुद्भवा ।१५४।

विष्णुवंशस्तुता कर्त्री विष्णुवंशावनी सदा ।
आरामस्था वनस्था च सूर्यपुत्र्यवगाहिनी ।१५५।

प्रीतिस्था नित्ययन्त्रस्था गोलोकस्थाविभूतिदा ।
स्वानुभूतिस्थिता व्यक्ता सर्वलोकनिवासिनी ।१५६।

अमृता ह्यद्भुता श्रीमन्नारायणसमीरिता ।
अक्षरापि च कूटस्था महापुरुष सम्भवा ।१५७।

औदार्यभावसाध्या च स्थूलसूक्ष्मातिरूपिणी ।
शिरीषपुष्पमृदुला गाङ्गेयमुकुरप्रभा ।१५८।

नीलोत्पलजिताक्षी च सद्रत्नकबरान्विता ।
प्रेमपर्यङ्कनिलया तेजोमण्डलमध्यगा ।१५९।

कृष्णाङ्गगोपनाभेदा लीलावरणनायिका ।
सुधासिन्धु समुल्लासामृतस्यन्दविधायिनी ।१६०।

कृष्णचित्ता रासचित्ता प्रेमचित्ता हरिप्रिया ।
अचिन्तनगुणग्रामा कृष्णलीला मलापहा ।१६१।

राससिन्धुशशाङ्का च रासमण्डलमण्डिता ।
नतव्रता श्रीहरीच्छा सुमूर्तिः सुरवन्दिता ।१६२।

गोपीचूडामणिर्गोपी गणेड्या विरजाधिका ।
गोपप्रेष्ठा गोपकन्या गोपनारी सुगोपिका ।१६३।

गोपधामा सुदामाम्बा गोपाली गोपमोहिनी ।
गोपभूषा कृष्णभूषा श्रीवृन्दावनचन्द्रिका ।१६४।

वीणादिघोषनिरता रासोत्सवविकासिनी ।
कृष्णचेष्टा परिज्ञाता कोटिकन्दर्पमोहिनी ।१६५।

श्रीकृष्णगुणगानाढ्या देवसुन्दरिमोहिनी ।
कृष्णचन्द्रमनोज्ञा च कृष्णदेवसहोदरी ।१६६।

कृष्णाभिलाषिणी कृष्णाप्रेमानुग्रहवाञ्छिनी ।
क्षेमा च मधुरालापा भ्रुवोमाया सुभद्रिका ।१६७।

प्रकृतिः परमानन्दा नीपद्रुमतलस्थिता ।
कृपाकटाक्षा विम्बोष्ठी रम्भाचारुनितम्बिनी ।१६८।

स्मरकेलिनिधाना च गण्डताटङ्कमण्डिता ।
हेमाद्रिकान्तिरुचिरा प्रेमाढ्या मदमन्थरा ।१६९।

कृष्णचिन्ता प्रेमचिन्ता रतिचिन्ता च कृष्णदा ।
रासचिन्ता भावचिन्ता शुद्धचिन्ता महारसा ।१७०।

कृष्णादृष्टित्रुटियुगा दृष्टिपक्ष्मविनिन्दिनी ।
कन्दर्पजननी मुख्या वैकुण्ठगतिदायिनी ।१७१।

रासभावा प्रियाश्लिष्टा प्रेष्ठा प्रथमनायिका ।
शुद्धासुधादेहिनी च श्रीरामा रसमञ्जरी ।१७२।

सुप्रभावा शुभाचारा स्वर्णदी नर्मदाम्बिका ।
गोमतीचन्द्रभागेड्या सरयूताम्रपर्णिसूः ।१७३।

निष्कलङ्कचित्रा च निर्गुणा च निरञ्जना ।
एतन्नामसहस्रं तु युग्मरूपस्य नारद ।१७४।

पठनीयं प्रयत्नेन वृन्दावनरसावहे ।
महापापप्रशमनं बन्ध्यात्वविनिवर्तकम् ।१७५।

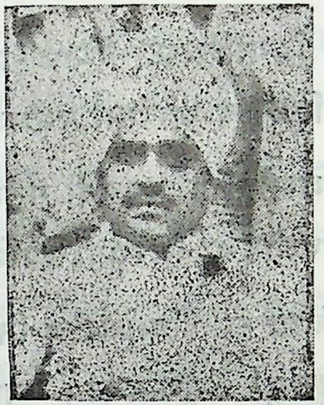
दारिद्र्यशमनं रोगनाशनं कामदं महत् ।
पापापहं वैरिहरं राधामाधव भक्तिदम् ।१७६।

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
राधासङ्गसुधासिन्धो नमो नित्यबिहारिणी ।१७७।

राधादेवी जगत्कर्त्री जगत्पालनतत्परा ।
जगल्लय बिधात्री च सर्वेशी सर्वसूतिका ।१७८।

तस्यानामसहस्रं हि मयाप्रोक्तं मुनीश्वर ।
भुक्ति मुक्तिप्रदं दिव्यं कि भूयः श्रोमिच्छसि ।१७९।

इति नारदीय महापुराणे श्रीराधादामोदरसहस्रनामकथनम्
पूर्वभागे द्व्यशीतितमोऽध्यायः



कालीजन्म्याश्रमासीनं श्रीपूर्णचन्द्रशास्त्रिणम् ।
सिद्धान्तज्योतिषाचार्यं सद्गुरुं नौमिसादरम् ॥

प्रत्येक एकादशी एवं कार्तिकमास के अधिष्ठातृ दे श्रीराधादामोदर शास्त्रों में बताए गये हैं। इन के अति चातुर्मास्य व्रतोद्यापन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी श्रीराधाजन्माष्टमी उद्यापन में भी इस सहस्रनामावली से आहुतिएं देने का वि है किन्तु इसकी उपलब्धि किसी भी पुस्तक बिक्रेता से न से होम में त्रुटि के अनुभव की पूर्ति के लिये प्रयास सफलता लिये गुरुजनों को श्रेय जाता है अतः परमपूज्यगुरु श्री पूर्णचन्द्र जी ज्योतिष के मूर्धन्य विद्वद्वराग्रगण्य महाराज के करकमलों में सादर समर्पित करता हूं।

इस से भगवान् सच्चिदानन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र श्रीराधा महारानी सहितनित्य प्रसन्न रहें।

निवेदकः
विहारीलाल वासिष्ठ
श्री गुरुचरण सेवक

ॐ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ देवप्रतिष्ठाविषयानुक्रमः ॥

मण्डपस्य शिलान्यास ध्वजारोहणपूर्वकम् ।
पापघटंप्रदायादौ प्रायश्चित्तं विधाय च ॥
शुचिः स्नातः प्राङ् मुखः कृतमित्यक्रियः स्वयम् ।
यजमानः सपत्नीकः प्रतिज्ञातो द्विजाज्ञया ॥
श्रीगणेशं समभ्यर्च्य कलशस्थापनोत्तरम् ।
पुण्याहवाचनान्ते च यजमानाभिषेचनम् ॥
मातृकापूजनं कृत्वा नान्दीश्राद्धं विधीयते ।
विप्राणां वरणं कुर्यात् मधुपर्कपुरस्सरम् ॥
यजमानः सपत्नीकः सद्विजो मण्डपं विशेत् ।
निधायाग्नेय्यां कलशं पीठविन्यासपूर्वकम् ॥
पञ्चगव्येन दिग्बन्धो वास्तुपूजनपूर्वकम् ।
मण्डपं पूजयित्वादौ भद्रपीठार्चनं ततः ।
कलशं स्थापयेन्मध्ये सर्वलक्षणलक्षितम् ।
प्रतिमास्थापनं कुर्यादग्न्युत्तारणपूर्वकम् ॥
कुण्डेऽग्निस्थापनं कृत्वा ग्रहपूजां विधाय च ।
रुद्रकलशमैशान्यां संस्थाप्य विधिमाचरेत् ॥
योगिनी क्षेत्रपालांश्चाभ्यर्च्य विधाय कुशकण्डिकाम् ।
मण्डपाधीश्वरान् हुत्वा गत्वा कर्मकुटीं हुनेत् ॥
जलाधिवासनं पूर्वं ततश्चान्नाधिवासनम् ।
देवंरथे सुसंस्थाप्य स्नानमण्डपमानयेत् ॥

तं देवं प्राङ्मुखं कृत्वा भद्रोपरिनिधाय च ।
कार्यं संस्नपनं तत्र कृत्वाग्रामप्रदक्षिणाम् ॥
यागमण्डपमभ्येत्य मधुपर्केण पूजनम् ।
शय्याधिवासनान्ते च मूर्तौन्यास विधिं चरेत् ।
निद्रां प्रतिष्ठापयेत् कुम्भे पूजां कृत्वा विधानतः ।
होमोदेवस्य कर्तव्य आवर्णाभ्यर्चनादिभिः ।
शान्तिपौष्टिकहोमान्ते परिवाराधिवासनम् ।
अधिवासयाथ प्रासादं प्रतिष्ठा शिखरस्य च ॥
ध्वजस्यारोहणं कृत्वा प्रासादोत्सर्जनं ततः ।
देवप्रतिष्ठापनं कुर्यात् परिवारांश्च स्थापयेत् ।
अङ्गपूजांविधायाथ देवस्य प्रार्थनाविधिः ।
देवपूजां विधायान्ते देवनाम विनिर्णयः ॥
प्रतिष्ठादेवसाधूत्थ देवांश्च मण्डलेऽर्चितान् ।
तांश्च होमैः पुरस्कृत्य स्वीयकल्याणहेतवे ॥
पूजास्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ।
हुत्वातत्रवसोर्धारां भस्मना त्र्यायुषं तथा ॥
संस्रवप्राशनान्ते च शय्यापीठान्प्रदाय च ।
श्रेयः सम्पादनं दानमभिषेको विसर्जनम् ॥
भूयसीं दक्षिणां दत्वा कुमारीविप्रपूजनम् ॥
सूर्यार्घ्यपूर्वकं कर्ता कुर्यादासनवन्दनाम् ॥

इति सर्वदेव प्रतिष्ठानुक्रमः

अथ शान्तिपाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः ।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभिनो निवर्तताम् ।
देवाना ँ सख्यमुपसे दिभावयं देवान ऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।
तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ।
अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विनासरस्वती नः सुभगामयस्करत् ।
तन्नो वातो मयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः ।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।

तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ।
स्वस्ति नऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि स्वस्ति नोवृहस्पतिर्दधातु ।

पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोविश्वे नोदेवाऽअवसागमन्निह ।।
भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु ।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।

तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवा: पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यै:।
नाकङ्गृभ्णाना सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिव:।

आयुष्यम्वर्च्चस्यꣳरायस्पोष मौद्भिदम्। इदꣳहिरण्य
र्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्। द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्ति: पृ
शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे
शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वꣳशान्ति: शान्तिरेवशान्ति सामाशान्ति

यतो यत: समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्न: कुरुप्रजाभ्योऽभयन्न: पशुभ्य:।

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषाविश्ववेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥
पय: पृथिव्याम्पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा:।
पयस्वती: प्रदिश: सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसिविष्णो: श्नप्त्रे
विष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे
अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता
देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्दे
देवता वरुणो देवता। द्यौ: शान्ति रन्तरिक्षꣳ शान्ति: पृ
शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे
शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वꣳ शान्ति: शान्तिरेवशांति: सामाशान्ति
विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआ

इमारुद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।। एतन्तेदेवसवितर्यज्ञम्प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेन मामव । मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ।

गणानान्त्वा गणपतिँहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिँ हवामहेँ निधीनान्त्वा निधिपतिँ हवामहे वसोमम आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम् । नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः । ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः नमः । ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ श्री मातृ पितृ चरणकमलेभ्यो नमः । ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः । ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः । ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः । ॐ अधिदेव प्रत्यधिदेव सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः । ॐ समस्त लोकपालेभ्यो नमः । ॐ वास्तु क्षेत्रपालयोगिनी सर्वतोभद्र पीठाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः । ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः । ॐ श्री राधादामोदराभ्यां नमः। ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामभ्यो

नमः । ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः । ॐ प्रयागादि तीर्थराजेभ्यो नमः । ॐ त्रित्रिंशतकोटिदेवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायमहाविष्णवे नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ।

ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः ।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वं विघ्नोपशान्तये ।
अभीप्सितार्थ सिद्धचर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्र्यम्बकेगौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थोभगवान् मङ्गलायतनोहरिः ।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि ।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थोधनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिंब्रह्मेशान जनार्दनाः ।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

पवित्रधारणम्—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य-
च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपतेपवित्र-
पूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।

वैष्णवाचमनम्— ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ।
ॐ माधवाय नमः ।

हस्तप्रक्षालनम्—ॐ गोविन्दाय नमः । ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः ।

प्राणायाम—ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

दिग्बन्धनम्—ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥

ॐ प्राच्यै नम ॐ अवाच्यै नमः ॐ प्रतीच्यै नमः ॐ उदीच्यै नमः

ॐ अन्तरिक्षाय नमः ॐ यज्ञभूम्यै नमः ।

विनियोगः–ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः ।

पृथ्वीपूजा–ॐ पृथिव्यै (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयो अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम् शरीरे स्नानीयं वस्त्रोपवस्त्रं यज्ञोवीत एष गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि धूपोदीपश्च नैवेद्य दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि । इति सर्वेषां देवानां कृते सर्वत्र प्रयोज्यम् ।

पृथ्वी प्रार्थना–ॐपृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥

भूम्यां त्रिकोणमण्डलं कृत्वा दूर्वाक्षत पुष्पाणि निधाय कर्म पात्रं न्यसेत् । तत्र कर्मपात्रं पूर्ववद् गंधाद्यैः सम्पूज्य

तीर्थाभिमंत्रणम्–ॐ गङ्गेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदेसिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

आत्मसिंचनम्–ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

स्मार्ताचमनम्–ॐ गङ्गाविष्णु ॐ गङ्गाविष्णु ॐ गङ्गाविष्णु ।

आत्मतिलकम्–ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां भूयासꣳसुवर्च्चामुखेन ।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् ॥

अङ्गन्यास–ॐ मनो वाक् प्राण चक्षु श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिरः शिखा बाहुभ्यां यशोबलम् ।

शिखाबन्धनम्– ॐ ब्रह्मपाशसहस्रेण शिवशूलशतेन च ।
विष्णुचक्रसहस्रेण शिखाबन्धं करोम्यहम् ॥

सूर्यार्घ्यम्–ॐ एहि सूर्य सहस्रांशोतेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

ध्यानम्-ॐध्येयःसदासवितृमण्डलवर्तीनारायणःसरसिजासनसन्निविष्टः केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटीहारीहिरण्मयवपुर्धृत शङ्खचक्रः ।

दीपार्घ्यम्– ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह ।
प्रसीद मम गोविन्द दीपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपप्रार्थना–ॐ भो दीप ! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकार निवारक ।
इमा मया कृता पूजा गृह्ण तेजो विवर्धय ॥

धूपार्घ्यम्—–ॐ वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्य सुमनोहर ।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम् ॥

धूपप्रार्थना–ॐ वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते ॥

विशेषः– एषाऽष्टमपूजा सर्वकर्मसु प्रयोज्या ।

प्रतिज्ञासंकल्पः–ॐविष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पेवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे

आर्यावर्तैकदेशे वैष्णवक्षेत्रे अमुकनाम संवत्सरे श्रीसूर्ये अमुका
अमुकऽऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तममासे अमुकमासे अमुक
अमुकतिथौ अमुकवासरे चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमु
राशिस्थिते देवगुरौशेषेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु स
एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायांशुभ पुण्यतिथौ अमुको
अमुकशर्माऽहं मम आत्मनः श्रृति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त
कायिक वाचिकमानसिक सांसर्गिक चतुर्विधपातकदुरितक्षयद्वा
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विध पुरुषार्थं प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत
क्रियमाणें । अमुक देवप्रतिष्ठा कर्मणि सर्वत्र निर्विघ्नता सिद्ध
गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये ।

।। श्री गौरीगणेशपूजा ।।

आवाहनम्– ॐ गणानान्त्वागणपति ँ हवामहेप्रियाणान्त्वाप्रिय
ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम ।
आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
स सस्स्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् ।।
आसनम्– ॐ वर्ष्मोस्मि समानामामुद्यतामिव सूर्यः ।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ।।
पाद्यम्– ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।।

अर्घ्यम्—ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि अपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमश्यामममधुमन्तन्तऽऊर्मिम् ॥

आचमनम्-ॐइमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके

स्नानम्- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥

पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

शुद्धस्नानम्-ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम् ॥

दधिस्नाननम्—ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूँषि तारिषत् ॥

घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम् ॥

मधुस्नानम्—मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँरजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमांऽअस्तुसूर्य। माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥

शर्करास्नानम्—ॐ अपाँ रसमुद्वयसँ सूर्यसन्तँ समाहितम्। अपाँरसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टङ् गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

उद्वर्तनस्नानम्-ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो

विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽडित:
मित्रावरुणौ त्वोत्तरत परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारि
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥

शुद्धस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्वि
श्येत श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलि
रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।

वस्त्रम्—ॐयुवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जाय
तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्त

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरता
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तुतेजः

चन्दनम्— ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनं स्त्वा मिन्द्रस्त्वा वृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

अक्षतान्— अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषतस्वभान
विप्रानविष्ठायामतीयोजान्विन्द्रते हरी ।

पुष्पाणि— ॐ ओषधी प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

दुर्वाङ्कुरम्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीः परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।

सुगन्धतैलम्-ॐअहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाध
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाᳪसम्परिपातु विश्व

धूपम्—ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयम्वयंधूर्वाम
देवानामसिवह्नितमᳪसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्

दीपम्—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।

नैवेद्यम्— ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जंन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।

हस्तप्रक्षालनम्—ॐ अ॑ᳫशुना तेऽअ॑ᳫशुः पृच्यतां परुषः परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसो अच्युतः॥

फलम्— ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व ᳫ हसः॥

ताम्बूलम्—उतस्माद् द्रवितस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राव्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।

आरार्त्तिकम्— ॐ आरात्रिः पार्थिवᳫरजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाᳫसि बृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः॥
इदᳫहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरᳫसर्वगणᳫस्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि॥
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासु धत्त।

पुष्पाञ्जलि—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणायकुर्महे।
समेकामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुवेराय वैश्रवणाय महाराजायनमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं

वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायैस्यात्
सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्याःसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडि
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्यकामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।

प्रदक्षिणा—ॐ सप्तास्यामन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृता ।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥

विशेषार्घ्यः—ॐ रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः
विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥
लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
वा विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ॥
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।
नया पूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपतिः सांगः सपरिवारःप्रीयताम्

यज्ञारम्भेध्वजारोहणपुरःसर शिलान्यासः

ंकल्प-गृहारम्भमुहूर्तोक्तेशुभसमये भूशोधनं कृत्वा ईशानदिग्भागेगणेशं संपूज्य देशकालाद्युच्चार्य करिष्यमाणा यज्ञमण्डपाङ्गीभूतस-नवग्रहवास्तु पृथ्वी कूर्मानन्तादीनां पूजन पूर्वकं यज्ञमण्डपार्थं शिलान्यास ध्वजारोहणादौ गणपति पूजनं करिष्ये । तत्रादौ गणेशादीन् संपूज्य ध्वजारोहण स्थाने गर्त्तं खनित्वा तत्र गुडतिलतैलञ्च निक्षिप्य षोडशोपचारैः शालिग्राम शिलां सम्पूज्य वैष्णवयागे गरुडाङ्कितं पीतध्वजं घण्टिकाचामरभूषितं सज्जीकृत्य ॐ इदं विष्णुरिति ध्वजालम्भ (स्पर्शं) ॐ विष्णुरराडइति ध्वजोच्छ्रायः । धामन्ते विश्वभुवनमधिश्रित मन्त्रेण ध्वजपूजनम् ध्वजे गरुडाय नमः । इति विधिवत् सम्पूज्यः—

डोच्छ्र्यणम्--ॐ यो मे दण्डः परापत द्वैहायसोऽधिभूम्यान्तमहं पुनराददे । आयुषेब्रह्मणे वर्च्चसाय । इतिमन्त्रेण दण्डालम्भः

दण्डोच्छ्रयणञ्च। विष्णुसहस्रनाम पाठकं वा वृणुयात्। रुद्रया
वृषभाङ्कितं श्वेतध्वजं सम्पूज्य रुद्री शिवसहस्रनामजापकं वृ
अन्नपूर्णाजापकं च वृणुयात्। यज्ञ मण्डपोक्त भूस्थले पूर्वादि
पञ्चाङ्गुलशंकूनमध्ये नवाङ्गुलं शंकुञ्च शंख चक्र गदा
भूषितमारोपयेत्। रुद्रयागे तु त्रिशूलाङ्कित शंकूनामारोपणमु

शंकूस्थापनमन्त्रः-ॐ विशन्तुभूतलेनागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

चतुर्दिक्षु बलिदानान्ते वास्तुपुरुषं विधिवत्संपूज्यपद्मशूल
बसुन्धरां ध्यायन् पुष्पाञ्जलिमादाय।

पृथिव्यावाहनम्—आगच्छसर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
पृथिवब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥
रत्नाकरे विष्णुना त्वं धृतावाराह रूपिणा।
आगच्छ वरदेधात्रि यज्ञेऽस्मिन् शुभदायिनि।
ततः षोडशोपचारैः पृथ्वीं सपूज्य।

प्रार्थना— ॐ जयदेवि जगद्धात्रि जगत्कल्याणकारिणी।
यज्ञभागं प्रतीच्छस्व सुखार्थं प्रणमाम्यहम्॥

दर्भैःवासस्थानमार्जनम्—ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवे
मच्छा नः शर्मसप्रथाः।

पंचगव्यामृतैरभिषिचनम्-ॐसिञ्चन्ति परिषिञ्चत्युत्सिचन्ति पु
सुरायै बभ्वै मदे किन्त्वो बदति किन्त्व

ततः पायसापूपादि नैवेद्येन सपरिबारायै भूम्यै बलिं सम
गुडतैलञ्च प्रक्षिपेत्।

अभ्रिग्रहणं (खुरपी)–ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां
पूष्णोहस्ताभ्याम् ।

गर्तोल्लेखनम्–ॐ इदमहᳪरक्षसां ग्रीवा ऽअपि कृन्तामि ।

खनित्र(कुद्दाल)पूजा-ॐ त्वष्ट्रा विनिर्मितः पूर्वंलोकानां हितकाम्यया ।
पूजितोऽसि खनित्र त्वं सिद्धिदोभव मेऽधुना ॥

सूत्रधारपूजा–ॐ नमामि विश्वकर्माणं सर्वसूत्रप्रवर्त्तकम् ।
मण्डपादि प्रसिद्ध्यर्थं सर्वसिद्धि समृद्धिदम् ।

खननाङ्गपूजा– आधार शक्त्यै नमः, कूर्माय, अनन्ताय, यज्ञभूम्यै,
वास्तुपुरुषायः इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यश्च बलिसमर्पयेत् ।

खननम्— ॐ मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहङ्खनामि वः ।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकᳪ सर्वमस्त्वनातुरम् ।

यवदर्भसिद्धार्थक्षपनम्–ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ।

दूर्वाङ्कुरारोपणम्-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेणशतेन च ।

सुवर्णवपनम्-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्

पुष्पाञ्जलिः—ॐ त्वंदेवि खननार्थं तु मखे पूजां गृहाण मे ।
पूजनाच्छेष कूर्माभ्यां शुद्धां बुद्धि प्रयच्छ मे ॥

पंचशिलाः पंचगव्यतीर्थ जलादिनां संस्थाप्य कुंकुमादिनोपलिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य नंदादिक्रमेण पद्म, सिंहासन, तोरणच्छत्रे, कूर्मं, विष्णुचिह्नैः केवलं स्वस्तिकचिह्नेनवाङ्कयित्वा ॐ आब्रह्मन् इतिनत्वा ॐ भद्रं कर्णेभिः० इतिभद्रा । ॐ जातवेदसेसु० इति जया ।

ॐ यमायत्वा० इतिरिक्ता । ॐ पूर्णादर्विपरापत० इति पूर्णा। गन्धादिनासम्पूज्य तासुनन्दादिक्रमेण । ॐ ब्रह्मयज्ञानं० इति ब्रह्म पूजा । ॐ विष्णोरराट्० इति विष्णु पूजा । ॐ तमीशान० इति ईश्वर पूजा । ॐ त्र्यम्बकंयजामहे० सदाशिवपूजा च कार्या। ईशानादिप्रदक्षिणक्रमेण चतुर्दिक्षुमध्ये च गुड तैलं दत्वा पद्म, महापद्म शंख, मकर, समुद्र, समुद्रनामकपंचकलशान् संस्थाप्य ईशान्यां वा सर्पाकारां वास्तु प्रतिमां कलशे प्रतिष्ठाप्य ईशानादिषु क्रमश नन्दादि पंचशिला: स्थापनीया ।

शिलान्यासमन्त्र: ॐ क्षेमस्य पत्नी वृहती सुवासारयिनोधेहि सुभगे सुवीर्यान् । अश्वावद गोमदूर्ज्जस्वत्पर्णं वनस्पतिरिव अभित: पूर्यंता ७ रयिरिदमनुश्रेयोवसाना । आग्नेयादि क्रमेणापि शिलान्यास: प्रोक्त: ।

प्रार्थना—ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च ईशानश्च सदाशिव: । पञ्चदेवा: शिलास्वासु आयुर्बलयशस्करा: ।। नन्दाऽऽनन्दप्रदाभूयाद्भद्रा भद्राणि यच्छतु । जयास्याज्जयदारिक्ता पूर्णा भूयाद्वरप्रदा ।। ततो दक्षिणान्ते देवान् विसर्ज्यं सूर्यार्घ्यं दत्वा प्रमादादिति क्षमापनं पठेत् । ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ।।

इतिध्वजारोहणपूर्वकं शिलान्यास: ।।

अथ 'हेमाद्रिकृत: प्रायश्चित्त स्नानसंकल्प:'

ॐ स्वस्ति श्रीमुकुन्दसच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्ति विजृम्भिताविद्यायोगात कालकर्मस्वभावाविर्भूतमहत्तत्वोदित

हङ्कारोद्भूतवियदादिपञ्चमहाभूतेन्द्रियदेवतानिर्मितेऽण्डकटाहे चतुर्दश-लोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूतसकललोकपितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्त-दुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्य समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य जगद्रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्येयमानस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्य-क्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्तवासुकितक्षककुलिककर्कोटकपद्ममहापद्मशङ्खाद्यष्टमहानागै-र्ध्रियमाणे ऐरावतपुण्डरीकवामनकुमुदाञ्जनपुष्पदन्तसार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजप्रतिष्ठितानामतलवितलसुतलतलातलरसातल-महातलपाताललोकानामुपरिभागे भूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोकज-नोलोकतपोलोकसत्यलोकाख्यसप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैल-महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकालमहाफणिराजशेषस्य सहस्रफणानां मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डोत्तम्भिते अमरावत्यशोकवती-भोगवतीसिद्धवतीगान्धर्ववतीकाञ्चयवन्त्यलकावतीयशोवतीति पुण्यपुरीप्रतिष्ठिते इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानाष्टदिक्पा-लप्रतिष्ठिते वरध्रुवाधरसोमपाप्रभञ्जनानलप्रत्यूषप्रभासाख्याष्टवसु-भिर्विराजिते हरत्र्यम्बकवृषाकपिशम्भुकपर्दीरैवतमृगव्याधापराजितकपालीभैरवशम्भु-कपर्दिवृषाकपिबहुरूपाख्यैकादशरुद्रैः संशोभिते शक्रोपेन्द्रसवितृ-धातृत्वष्ट्रर्यमेन्द्रेशानभगमित्रपूषाख्यद्वादशादित्यप्रकाशिते यमनियमा

मासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गनिरतवसिष्ठव
खिल्यविश्वामित्रदक्षकात्यायनकौण्डिन्यगौतमाङ्गिरसपाराशर्यव्या
वाल्मीकशुकशौनकभरद्वाजसनकसनन्दनसनातनसनत्कुमारनारदा
मुख्यमुनिभिः पवित्रिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुरससु
सर्पिर्दधिक्षीरोदकयुक्तसप्तार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्च
शाकपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यताम्रगभस्तिमानसौम्यगन्धर्व
चारणभारतेतिनवखण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेतमहासरोरु
कारपञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्यामथुरामाया
काशीकाञ्च्यवन्तिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीप्रतिष्ठिते महामुक्तिप्रद
शालग्रामशम्भलनन्दिग्रामेतिग्रामत्रयविराजिते चम्पकारण्यबदरिका
रण्यदण्डकारण्यार्बुदारण्यधर्मारण्यपद्मारण्यगुह्यारण्यजम्बूकारण्य
विन्ध्यारण्यद्राक्षारण्यनहुषारण्यकाम्यकारण्यद्वैतारण्यनैमिषारण्या
दीनां मध्ये सुमेरुनिषधकूटशुभ्रकूटश्रीकूटहेमकूटरजतकूटचित्रकू
त्रिकूटकिष्किन्धश्वेताद्रिकूटहिमविन्ध्याचलानां हरिवर्षकिम्पुरुषव
योश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाच
सह्याचलविन्ध्याचलानामुत्तरेण स्वर्णप्रस्थचण्डप्रस्थसूक्तिक
वन्तकरमणकमहारमणकपाञ्चजन्यसिंहललङ्काऽशोकवत्यलकाव
सिद्धवतीगान्धर्ववत्यादिपुण्यपुरीविराजिते नवखण्डोपद्वीपमध्ये
दक्षिणावस्थितरेणुकाद्वयसूकरकाशीकाञ्चीकालिकालवटेश्वरकाल
ञ्जरमहाकालेतिनवोखरयुते द्वादशज्योतिर्लिङ्गगङ्गा (भागीरथी)
गोदा (गौतमी) क्षिप्रायमुनासरस्वतीनर्मदातापीपयोष्णीचन्द्रभागा
कावेरीमन्दाकिनीप्रवराकृष्णावेण्याभीमरथीतुङ्गभद्रामलापहा

ताम्रपर्णीविशालाक्षीवञ्जुलाधर्मवतीवेत्रवतीभोगावतीविशोका-
कौशिकीगण्डकीवासिष्ठीनर्मदाविश्वामित्रीफल्गुनीचित्रकाश्यपी-
सरयूसर्वपापहारिणीकरतोयाप्रणीतावज्रावक्रगामिनीसुवर्णरेखाशोणा-
भवनाशिनी शीघ्रगाकुशवर्तिनीब्रह्मानन्दामहितनद्येत्यनेकपुण्यनदी-
भिर्विलसिते ब्रह्मपुत्रसिन्धुनदादिपरमपवित्रजलविराजिते हिमवन्मेरु-
गोवर्धनक्रौञ्चचित्रकूटहेमकूटमहेन्द्रमलयसह्योन्द्रकीलपारियात्राद्य-
नेकपर्वतसमन्विते मतङ्गमाल्यकिष्किन्धऋष्यशृङ्गेतिमहानगसमन्विते
अङ्गवङ्गकलिङ्गकाश्मीरकाम्बोजसौवीरसौराष्ट्रमहाराष्ट्रमगध-
नेपालकेरलचोरलपाञ्चालगौडमालवमलयसिंहलद्रविडकर्नाटक-
ललाटकरहाटवरहाटपानाटपाण्डचनिषधमागधआन्ध्रदशार्णवभोज-
कुरुगान्धारविदर्भविदेहबाह्लीकबर्बरककैयकोसलविराटशूरसेनकोङ्कण
कैकटमत्स्यमद्रपारसिकखर्जूरयावनम्लेच्छवान्धरेति सिद्धवत्यन्यदेश-
विशेषभाषाभूमिपालविचित्रिते इलावृतकुरुभद्राश्वकेतुमालकिम्पुरुष-
रमनकहिरण्मयादिनववर्षाणां मध्ये भरतखण्डे बकुलचम्पकपाटला-
वजपुन्नागजातिकरवीररसालकह्लारकेतक्याविनानाविधकुसुमस्तबक-
विराजिते कोकन्तहिरण्यशृङ्गकुब्जार्बुदमणिकर्णीवटशालग्रामसूकर-
मथुरागयानिष्क्रमणलोहार्गलपोतस्वामिप्रभासबदरीतिचतुर्दशगुह्य-
विलसिते जम्बुद्वीपे कुरुक्षेत्रादिसमभूमध्यरेखायाः पश्चिमदिग्भागे
कुलमेरोर्दक्षिणदिग्भागेविन्ध्यस्य दक्षिणदेशे श्रीशैलस्य वायव्यदेशे
कृष्णावेण्योर्मध्यदेशे मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनपरशुरामरामकृष्ण-
बुद्धकल्कीतिदशावताराणां मध्ये बौद्धावतारे गङ्गादिसरिद्भिःपाविते
एवं नवसहस्रयोजनविस्तीर्णभारतवर्षे निखिलजनपावनपरमभाग-

ब्रह्मोत्तमशौनकादिनिवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक-देशे सूर्यान्वयभूभृत्प्रतिष्ठिते श्रीमन्नारायणनाभिकमलोद्भूतसकल-जगत्स्रष्टु परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेता-द्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगाणां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्रीमन्नृपविक्रमार्कात् श्रीमन्नृप-शालिवाहनाद्वा यथा संख्यागमेन चान्द्रसावनसौरनाक्षत्रादिप्रकारे-णागतानां प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनि श्रीमार्तण्डमण्डले अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुक-करणे अमुकराशिस्थे चन्द्रे अमुकस्थे सूर्ये अमुकस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकशर्मण (भार्यया सहाधिकृतस्य) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवनवार्द्धक्यावस्थासु वाक्पाणिपाद-पायूपस्थघ्राणरसनाचक्षुःस्पर्शनश्रोत्रमनोभिश्चरित-ज्ञाताज्ञातकामा-कामकृतमहापातकोपपातकादिसञ्चितानां पापानां ब्रह्महननसुरापान-सुवर्णस्तेयगुरुतल्पगमनतत्संसर्गरूपमहापातकानां बुद्धिपूर्वकाणां मनोवाक्कायकृतानां बहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट-सङ्करीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरणविहिताकरण-कर्मलोपर्जितानां सर्पादिवधहयविक्रयगोविक्रय-

खरोष्ट्रविक्रयदासीविक्रयअजादिपशुविक्रयस्वगृहविक्रयनीलीविक्रय-
अक्षेपविक्रयारण्यविक्रयजलचरादिजन्तुविक्रयस्थलचरादिविक्रय-
खेचरादिविक्रयसम्भूतानांनिरर्थकवृक्षच्छेदनऋणानपाकरणब्रह्मस्वा-
पहरणदेवस्वापहरणराजस्वापहरणपरद्रव्यापहरणतैलादिद्रव्यापहरण-
फलादिहरणलोहादिहरणनानावस्तुहरणरूपानां ब्राह्मणनिन्दागुरु-
न्दावेदनिन्दाशास्त्रनिन्दापरनिन्दाभक्ष्यभक्षणाभोज्यभोजनाचोष्यचोषणा-
लेह्यलेहनापेयपानास्पृश्यस्पर्शनाश्राव्यश्रवणाहिंस्यहिंसनावन्द्यवन्दना-
चिन्त्यचिन्तनायाज्ययाजनापूज्यपूजनरूपाणां मातृपितृतिरस्कार-
स्त्रीपुरुषप्रीतिभेदनपरस्त्रीगमनविधवागमनवेश्यागमनदासीगमन-
चाण्डालादिहीनजातिगमनगुरुगमनरजस्वलागमनपश्वादिगमनरूपाणां
कूटसाक्षित्वपैशून्यवादमिथ्यापवादम्लेच्छसम्भाषणब्रह्मद्वेषकरणब्रह्म-
वृत्तिहरणवृत्तिच्छेदननपरवृत्तिहरणरूपाणां मित्रवञ्चनगुरुवञ्चन
स्वामिवञ्चनासत्यभाषणगर्भपातनपथितम्बूलचर्वणहीनजातिसे-
वनपरान्नभोजनगणान्नभोजनलशुनपलाण्डुगृञ्जनभक्षणतालवृक्ष-
फलभक्षणोच्छिष्टभक्षणमार्जारोच्छिष्टभक्षणपर्युषितान्नभक्षणरूपाणां
पंक्तिभेदकरणभ्रूणहिंसापशुहिंसाबालहिंसाद्यनेकहिंसोद्भूतानां शौच-
त्यागस्नानत्यागसन्ध्यात्यागोपासनाग्नित्यागवैश्वदेवत्यागरूपाणां
निषिद्धाचरणकुग्रामवासब्रह्मद्रोहगुरुद्रोहपितृमातृद्रोहपरद्रोहपरनिन्दा
त्मस्तुतिदुष्टप्रतिग्रहदुर्जनसंसर्गरूपाणां गोयानवृषभयानमहिषी-
यानगर्दभयानोष्ट्रयानाजयानभृत्याभरणस्वग्रामत्यागगोत्रत्यागकुल-
त्यागदूरस्थमन्त्रणविप्राशाभेदनावन्दिताशीर्वादग्रहणपतितसम्भाषण-
रूपाणां पतितजनसंक्रिभोजनादृग्मनकर्मकृतयामनोरथादिपापानां तथा

इत्यादि प्रकीर्णपातकानां एतत्कालपर्यन्तं सञ्चितानां लघुस्थू
सूक्ष्माणां च निःशेषपरिहारार्थं दशावरान् दशापरान् आत्म
सहितान् एकविंशति पुरुषानुद्धर्तुं ब्रह्मलोकावधि पञ्चाशत्कोटि
योजनविस्तीर्णेऽस्मिन्भूमण्डले सप्तर्षिमण्डलपर्यन्तं वालुका
कृतराशेः वर्षसहस्रावसाने एकैकवालुकापकर्षक्रमेण सर्वराश्य
कर्षसंमितकालपर्यन्तं ब्रह्मलोके ब्रह्मसायुज्यताप्राप्त्यर्थं कुरुक्षेत्रा
सर्वतीर्थेषु स्नानपूर्वकं सहस्रगोदानजन्यफलप्राप्त्यर्थं तथा
समस्तपितृणां आत्मनश्च विष्ण्वादिलोकप्राप्तये अधीतानामध्ये
माणानां चाध्यायानां स्थापनविच्छेदक्रोशघोषणद्वन्द्वत्रिवृतिद्रुत
द्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां गलोपलम्बितविवृतोच्चारि
वर्णानाम् श्लिष्टास्पष्टवर्णविघट्टनादिभिः पठितानां श्रुती
यद्यातयामत्वं तत्परिहारार्थं अष्टात्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्यासं
रतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छान्त्यजादेः शृण्वतोऽध्य
अशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनोशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वा
पदच्छेदकण्डिकाध्यञ्जन ह्रस्वदीर्घ लुप्तकण्ठतालुमूर्द्धन्योष्ठ्यदन्त्य
नासिकानुनासिकरेफजिह्वामूलीयोपध्मानीयोदात्तानुदत्तस्वरितादि
व्यत्ययेनोच्चारे माधुर्याक्षरव्यक्तिहीनत्वाद्यनेकप्रत्यवायपरिहारपू
सर्वस्व वेदस्य सवीर्यत्वसम्पादनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्रीपर
श्वरप्रीत्यर्थं देवब्राह्मणसवितृसूर्यनारायणसन्निधौ गङ्गाभागीर
अमुकतीर्थे वा यज्ञप्रतिष्ठादि साङ्गतार्थं पापघटादिदानपू
सर्वप्रायश्चित्तमहं करिष्ये ॥ इति हेमाद्रिकृतः सङ्कल्पप्रयोगः ॥

अथ पापघटदानविधिः

तत्र कर्ता पूर्वं दिने कृतैक बृढनियमो ब्रह्मचर्येण रात्रिं नीत्वा द्वितीये दिने प्रातरुत्थाय कृत नित्य क्रियः प्राङ्मुखासन उपविश्याचम्य प्राणानायम्य स्वेष्ट देव गुरु गणपतीन् ध्यात्वा कुशाक्षत जलान्यादाय ।

संकल्पः—ॐ तत्सद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक गोत्रोऽमुकशर्मा श्री परमेश्वर प्रीति द्वारा नारायण याग ससिद्ध्यर्थं नाना जन्मार्जित वाङ्मनः कायकृत महापातकोपपातकादि समस्तपापक्षयकामः पापघटदानाङ्गत्वेन गणपतिपूजनपूर्वकं गौर्यादिमातृणां वसोर्द्धारा सहितानां पूजनपूर्वकं ब्रह्माचार्यादीमां वरणं पुण्याह वाचनं च करिष्ये । इति संकल्प्य तानि प्रोक्तकार्याणि सम्पाद्य ततः स्वगृह्योक्त प्रकारेण स्थण्डिलेऽग्नि संस्थाप्य ब्रह्मोपवेशनादि कुश कण्डिकां चरुं श्रपयित्वा सांगतां कृत्वा ग्रहस्थापनं कुर्यात् तत्स्थान् देवान् संपूज्य सर्वतोभद्रमण्डलं निर्माय मण्डलदेवान् संपूज्य मध्ये हेमराजतताम्रश्चान्यतम धातुमय वा कलश विधिना कलशं सस्थाप्य तदुपरिस्थ पूर्णपात्रंयथाशक्तिपरिमितं ताम्रादि धातुमयं कलशं स्थापयित्वा ॐ कलशस्य मुखे विष्णु० इत्यादिना कलशं सम्प्रार्थ्य तस्मिन्घटे पातकानि स्मृत्वा वक्ष्यादिना प्रतिपातकं घृतं सितां वा निक्षिपेत् । तद्यथा—

मनसा दुर्विनीतेन यन्मया पातकं कृतम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेव प्रसादतः ॥१॥

व्रजता तिष्ठता चापि कर्मणा यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।२।
परस्व हरणेनापि पातकं यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।३।
सुवर्णस्तेयजं पापं मनोवाक्काय कर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ।४।
रस विक्रयतः पापं ब्रह्मजन्मनि संचितम् । तत्तिष्ठतु० ।५।
क्षत्रधर्मविहीनेन क्षत्रजन्मनि यत्कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।६।
वैश्य जन्मन्यपि मया यद्घोरं पातकं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।७।
शूद्र जन्मनि यत्पापं सततं समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।८।
गुरुदाराभिगमनात्पातकं यन्मया कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।९।
अपेयपानसंभूतमाक्षेपात् पातकं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।१०।
वापीकूपतडागादि भेदनेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।११।
अभक्ष्यभक्षणेनैव संचितं यच्चपातकम् । तत्तिष्ठतु० ।१२।
अवाच्यवादसम्भूतमस्पृश्य स्पर्शनं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।१३।
वृक्षगुल्म लतादीनां छेदनेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।१४।
संमूलछेदनाद्यथासत्कर्मकरणोद्भवम् । तत्तिष्ठतु० ।१५।
परप्रतापसंभूतं पापं यत्समुपार्जितम् तत्तिष्ठतु० ।१६।
पर द्रोहेण यत्पापं वाङ्मनः कायकर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ।१७।
परस्त्री गमनात्पापं निबन्धेन कृतं च यत् तत्तिष्ठतु० ।१८।
परापवावजं पापं यन्मयासमुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।१९।
विधवा गमनात्पापं निबन्धेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।२०।
यातृसंगमजं पापं मया यत्तु पुरार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।२१।
स्वसा संगमजं पापं यत्पापं पुंस्त्री संगजम् । तत्तिष्ठतु० ।२२।
गोत्रस्त्री गमनेनापि यत्पापं मयि संस्थितम् । तत्तिष्ठतु० ।२३।

गोत्रहत्या समद्भूतं यत्पापं मयि संस्थितम् । तत्तिष्ठतु० ।२४।
गर्भपातनजैर्नाना रोगैश्चापि मया कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।२५।
भ्रूणहत्या समुद्भूतं पापं यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।२६।
ब्रह्महत्या समुद्भूतं पापं यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।२७।
पितुर्बध समुद्भूत पातकं यन्मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु० ।२८।
मातुर्बन्धेन यत्पापं मनो वाक्काय सम्भृतम् । तत्तिष्ठतु० ।२९।
भगिनी भ्रातृनाशेन काभलोभकृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।३०।
ज्ञाति ब्रह्मजनस्यापि गर्वात्स्वीकरणात्तु यत् । तत्तिष्ठतु० ।३१।
विष प्रदानजं पाप यच्च ज्ञाति बधोद्भवम् । तत्तिष्ठतु० ।३२।
देश ग्राम गृहाराम दाहतः पातकं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।३३।
विश्वस्तं सुस्थिरं सुप्तं हत्वा यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।३४।
भीतं शरणमापन्नमरक्षित्वार्जित च यत् । तत्तिष्ठतु० ।३५।
भोजने ब्राह्मणादीनां विघ्नेन यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।३६।
ब्रह्मचार्यरयति दैन्यात्किल्विषं संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ।३७।
कन्या वर विवाहेतु विघ्नेनाऽऽचरितं च यत् । तत्तिष्ठतु० ३८।
पितृ मातृ वियोगेन बालानां यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।३९।
दाम्पत्य प्रीति विच्छेदाद् यत् कृतं पापसञ्चयम् । तत्ति ठतु० ।४०।
न्यासाद्यपहरणेनैव यत्पापं समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।४१।
दुष्टसङ्गप्रसङ्गेन पापं यन्मयि संचितम् । तत्तिष्ठतु० ।४२।
वस्त्रोपवस्त्रहरणादन्यथा रोधने च यत् । तत्तिष्ठतु० ।४३।
अध्वजात तृषार्तस्यविघ्नाचरणतश्च यत् । तत्तिष्ठतु० ।४४।
स्वस्त्रिया ऋतु संगेन द्वेषाच्च यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।४५।

पित्रोरर्थे समुद्भूतं पातकं संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ।४६।
राजस्त्री गमनेनैव पातकं संभृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।४७।
राज्ञोवधसमुदभूतं पातकं संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ।४८।
चौर्य्येण संचित पापं मनोवाक्कायकर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ।४९।
जडोन्मत्तं प्रमत्तं च हतवान् यदहं पुरा । तत्तिष्ठतु० ।५०।
परक्षेत्रापहरणात् पापं यत् संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ।५१।
अकामायास्त्रिया चापि व्रतभङ्गेन यत्कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।५२।
प्रतिश्रुतस्यादानेन यत्पुरासञ्चितं मया । तत्तिष्ठतु० ।५३।
निष्कल षे जने पापारोपणाद्यत्कृतं मया । तत्तिष्ठतु० ।५४।
परापवादिनां पापं निःशंकेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ५५।
देवद्विज प्रसादानां भंजनेन कृतं मया । तत्तिष्ठतु० ५६।
देवता प्रतिमाभङ्गं प्रमादेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।५७
आज्ञाभङ्गेन पूज्यानां तर्जनेन वरस्त्रियः । तत्तिष्ठतु० ।५८।
विद्यावित्तवयोभिश्चावज्ञानान्मानखण्डनात् । तत्तिष्ठतु० ।५९।
शुकशारिक क्रोशानामन्येषां पशुपक्षिणाम् तत्तिष्ठतु० ।६०।
नीडादीनां च हरणाद्यत्पापं च मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।६१।
द्विजमित्रगुरुद्वेषात्संचितं यच्च किल्विषम् । तत्तिष्ठतु० ।६२।
तीर्थे देवालये वह्नौ विण्मूत्रकरणेन यत् । तत्तिष्ठतु० ।६३।
लोकवेदविरुद्धस्य सेवनाद्यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।६४।
साधूनामुपहासेन धर्मतश्चालनेन यत् । तत्तिष्ठतु० ।६५।
कूट मान तुलाभिश्च यत्पापं च मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु० ।६६।
कामात्क्रोधात्तथालोभाद्द्वेषात्साक्ष्ये कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ६

वन्दिना सङ्गत पापं जन्म जन्मनि संचितम् । तत्तिष्ठतु० ।६८।
कण्डनाद्यवरोधेन मार्गे पाप कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।६९।
वद्धौ च मातृ पितरौ पोष्य वर्ग युतो मया ।
सामर्थ्येऽपि न पुष्टौ यत्तत्पापमिह तिष्ठतु० ।७०।
भ्रष्ट मार्गेण पृष्टोऽहं जानताप्यन्यथा वने ।
अनेन गच्छेति मया पातकं यदुपार्जितम् ।७१।
बलेनाबलिनं बद्ध्वामर्जितो यज्जलेमया ।
तीर्थावगाह संकल्प वारणाद्धेतु वावतः ।७२।
पुण्यकर्म कृतोत्साद भंजिते नार्जितं च यत् । तत्तिष्ठतु० ।७३।
विद्या स्नानं व्रत स्नानं विघ्नितं यत्पुरानया । तत्तिष्ठतु० ।७४।
पतिव्रताभिगमनाद्बलेन यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।७५।
कुमारी गमनोद्भूतं पातकं यन्मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु० ।७६।
अभक्ष्यभक्षणात्पापं यन्मया पूर्व संचितम् । तत्तिष्ठतु० ।७७।
इह जन्मनि यत्पापं ज्ञानभ्रंशकरं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ७८।
कूपाशौच कृतं पापं यन्मयादारुणं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ।७९।
चिताकाष्ठकृतैर्यूपैर्यन्मया सकृतार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।८०।
दुष्टप्रतिग्रहोत्पन्नं कामलोभादिभिश्च यत् । तत्तिष्ठतु० ।८१।
रजस्वलायाः संगेन पातकं यन्मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।८२।
विधवास्त्रीसेवनेनैव बहुशो यन्मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ।८३।
ज्ञाताज्ञातैरनेकैश्च घटोऽयं संभृतो मया । तत्तिष्ठतु० ।८४।
पूर्वजन्मान्तरोत्पन्नैरेतज्जन्म कृतैरपि । तत्तिष्ठतु० ।८५।

पुंसांविशेषः– महापापोपपापाभ्यां नानायोनिषु यत्कृतम् ।
बालभावेन यत्पापं क्षुत्तृडर्थे च यत्कृतम् ।८६।
आत्मार्थं चैव यत्पापं परार्थे चैव यत्कृतम् ।
तीर्थेषु चैव यत्पापं गुर्ववज्ञाकृतं च यत् ।८७।
रागद्वेषादिजनितं काम क्रोधेन यत्कृतम् ।
हिंसानिद्रादिजं पापं भेददृष्टया च यन्मया ।८८।
देहाभिमानजं पापंसर्वदा यन्मयाकृतम् ।
भूतं भव्यं च यत्पापं भविष्यं चैव गौतमि ।८९।
शुष्कमार्द्रं च यत्पापं जानताजानता कृतम् ।
महल्लघु च यत्पापं तन्मे नाशय जाह्नवि ।९०।
ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः ।
महापापानि चत्वारि तत्संसर्गी तु पञ्चमः ।९१।
अतिपातकमन्यच्च तन्न्यूनमुपपातकम् ।
गोवधो व्रात्यता स्तेय ऋणानां चानपक्रियाः ९२
अनाहिताग्निता पण्यविक्रयः परिवेदनम् ।
इन्धनार्थे द्रुमच्छेदः स्त्रीहिंसौषधिजीवनम् ।९३।
हिंसायात्राविधानं च भृतकाध्यापनं तथा ।
प्रथमाश्रममारभ्य यत्किञ्चित्किल्बिषंकृतम् ।९४।
कृमिकीटादिहननं यत्किञ्चित्प्राणिहिंसनम् ।
मातापित्रोरशुश्रूषा तद्वाक्याकरण तथा ।९५।

अपूज्यपूजनं चैव पूज्यानां च व्यतिक्रमः ।
अनाश्रमस्थताग्न्यादिदेवाशुश्रूषणं तथा ।९६।
परकार्यापहरणं परद्रव्योपजीवनम् ।
ततोऽज्ञानकृतं वापि कायिकं वाचिकं तथा ।९७।
मानसं त्रिविधं पापं प्रायश्चित्तैरनाशितम् ।
तस्मादशेष पापेभ्यस्त्राहि त्रैलोक्यपावनि ।९८।
निष्पापोऽस्म्यधुना देवि प्रसादात्तव नान्यथा ॥
['स्त्रीणां विशेषः'--पाणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मापरिपालनम् ।९९।
इन्द्रियाभिरति पुंस्सु नानायोनिषु या भवेत् ।
कृमिकीटादिहननं पंक्तिभेदादिकं तथा ।१००।
स्पृष्टास्पृष्टमनाचारं मनसा दोषकल्पनम् ।
तत्सर्वं नाशयेः क्षिप्रं गङ्गे त्वं यात्रयानया] १०१।

एवं घृतेनसितया वा प्रतिपातक स्मरणेन घटः पूरणीयः ।

ततो घटं संपूज्य सदीपं घट पूरितं पापकलशाय नमः । गन्धपुष्पादिभि संपूज्य ततोब्राह्मणवरणम् ।

संकल्पः—ॐ तत्सद्येत्यादि पापघटं दातुममुकगोत्रं ब्राह्मणमेभिवरण-द्रव्यैस्त्वामहवृणे ।

हेमाद्रिसंकल्पः-ॐ तत्सद्येत्यादि पठित्वान्ते मत्कर्तृकानेक जन्मार्जित-ज्ञाताज्ञात वाङ्मनः कायकृतपातकोपपातकादिपूरितमिमं घटं गन्धपुष्पाद्यर्चितं अमुक शर्माणं भूदेवं त्वामहं वृणे । संकल्पं ब्राह्मणहस्ते दद्यात् ।

दानप्रतिष्ठा—ॐ अद्यकृत्यैतत्पापघटदान प्रतिष्ठार्थमिदं हि
यथाशक्ति परिमितं अग्निदेवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे।
दद्यात्। कृतेनानेनदानेन पापहा विष्णुः प्रीयताम् इतिव
ततः प्रतिगृहीतारं ब्राह्मणं प्रार्थयेत्।

प्रार्थना—महेश्वर द्विजश्रेष्ठ जगतस्ताप हारक।
त्राहि मां दुःख संतप्तं त्रिभिस्तापैः सदार्द्दितम्। १।
संसारकूपतस्त्वं मां समुद्धर नमोऽस्तुते।
त्वदन्यो नास्ति मां देवः समुद्धर्तुंक्षमः क्षितौ। २।
लक्ष्मीकान्तेन देवेन त्वादृशोऽपहरः कृतः।
कथं त्वं मादृशैः पूज्यो भूयस्तु कृपयास्तु तत्। ३।

इत्यादि सम्प्रार्थ्य। अन्यदक्षिणादिकंदत्वा विसर्जयेत्।

दाताशुद्धस्नानं कृत्वा आसनंचोपविश्य ग्रहाहुतिहोमपूर्वकं यथा
ॐ इदं विष्णुः विचक्रमे० पूर्णाहुति यावत् समा
गोंदानान्नदानादीनि दत्वा यथा शक्त्या ब्राह्मणान् भोज
ततो यथा शक्त्या आचार्यादीनां दक्षिणादानेन संतो य प्रांजलि
प्रार्थयेत्। तद्यथा—

यजमानः प्रार्थयेत्—सर्वधर्म विवेक्तारो गोप्तारः सकलाद्वि
मम देहस्य संशुद्धिकुर्वन्तु द्विजसत्तमः। मयाकृतं मह
ज्ञातमज्ञातपातकम्। प्रसादः क्रियतांमह्यंशुभानुज्ञां प्रयच्छ
पूज्यैःकृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैरिति नमेत्।
आचार्यादयोऽपि गणाधिपंसमभ्यच्येत्यादि रक्षापाठं

पुण्याहवाचनंकुर्युः दीर्घायुस्त-इत्यादिना यजमानस्य तिलकं- कृत्वा । ॐ सुजातोज्योतिषेति रक्षाबंधनं कुर्युः ।

इति श्रीज्वालासहाय पण्डितेन अघोरवास्तव्येन लिखितपापघट- दानविधिः समाप्तः ।

अथ सर्वप्राशिचत्त प्रयोगः

यजमानः—आचार्योक्त प्रायश्चित्त सामग्रीमेकीकृत्य अपराह्ले धर्म- शास्त्रकुलशान् विप्रान् स्वासनेषु सम्पूज्य समौनं सचैलं स्नात्वा क्लिन्नवासोवा यज्ञाहूत विप्रान् प्रदक्षिणी कृत्य बद्धाञ्जलिःसंवदेत्

प्रार्थना—समस्त सम्पत्समवाप्ति हेतव समुत्थितापत्कुल धूमकेतव. ।
अपार संसार समुद्र सेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मण पादरेणवः ।१।
आपद्घनध्वान्त सहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयः पुनन्तु मां ब्राह्मण पादरेणव ।२।
समस्तशास्त्रोक्तविमर्शहेतवः मलीमसोत्तारि विशुद्धसेतवः ।
आप्तोसमज्ञाननिदानघेनवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादरेणवः ।३।

विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः ।
दर्शनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनात् सर्वसम्पदः ।
आधिव्याधिहरं नृणां मृत्यु दारिद्रचनाशनम् ।
श्रीयशः कीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपंकजम् ।४।

सदस्येभ्योगोदानम्— ज्ञाताज्ञातकृतपाप प्रायश्चित्ताङ्गत्वेनेदं
गोवृषनिष्क्रयं द्रव्यं सदस्येभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

यज्ञसदस्यकृतप्रश्नः–किन्तेकार्यंवदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज।
तत्त्वतोब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः ।१।
अस्माकं चैवं सर्वेषां सत्यमेव परं बलम्।
यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम् ।२।
यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्ध्यसि कर्हिचित्।
अतोमिथ्यां चमां वादीः सत्यं वद यथार्थतः ।३।

प्रायश्चित्तीयजमानः-अमुक नाम्नो मम जन्म प्रभृति अद्यदिन यावज्ज्ञाताज्ञात कामाकामसकृदसकृत्कायिकायिकवाचिकमानसिकपातकानां निरसनार्थमनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः ।

विप्राणांप्रार्थना– आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भगवद्रूश इदं जगत्।
यक्षरक्षः पिशाचादि सदेवासुर मानुषम् १।
सर्वेधर्मविवैक्तारोगो तारः सकला द्विजाः ।
मम देहस्यसंशुद्धिं कुर्वन्तु द्विज सत्तमाः ।२।
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञात किल्विषम्।
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ ।३।
पूज्यैः कृत पवित्रोऽहंभवेयं द्विजसतमैः ।
अतो मामनुगृह्णन्तु ।

विप्राः---अनुगृह्णीमः ।

विप्राः-अमुकस्य ते ज्ञाताज्ञातकामाकाम सकृत् कायिक वाचिक मानसिक पातकानां निरसनार्थं षडब्दप्रायश्चित्तममुक प्रत्या

म्नायद्वारा यथा संख्य गोनिष्क्रयभूतं यथा शक्ति रजत प्रत्याम्नाय द्वारा प्राच्योदीच्याङ्ग सहितं त्वया आचरितव्यं तेन तव शुद्धिर्भविष्यति त्वं कृतार्थो भविष्यसीति त्रिरुपदिशेत् ।

शिरोमुण्डनम्—अद्य प्रायश्चिताङ्गत्वेन शिरोमुण्डनं दन्तधावनं दशविधस्नानानि च करिष्ये ।

यजमानःशिरसिहस्तं निधाय-ॐयानिकानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्ति तस्मत्केशान्वपाम्यहम् ॥

दन्तधावनम्–ॐ आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ।१।
मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये ।
ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।२।

यज्ञभस्मस्नानम्- ॐ अग्निरितिभस्म । ॐ वायुरितिभस्म । ॐ जलमितिभस्म । ॐ स्थलमितिभस्म । ॐ व्योमेतिभस्म ।

यज्ञभस्माभिमन्त्र्य शिरसिमर्दनम्—ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदाशिवोम् । ॐ ईशानायनमः शिरसि ।

मुखेभस्ममर्दनम्–ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् । ॐ तत्पुरुषायनमः मुखे ।

हृदिभस्ममर्दनम्–ॐअघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्य सर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्य । ॐ अघोराय नमः इति हृदये ।

गुह्ये भस्ममर्दनम्—ॐ वाम देवायनमो ज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमो
रुद्रायनम कालायनमः कलविकरणायनमः। ॐ वामदेवाय
नमोगुह्ये।

पादयो: भस्ममर्दनम्—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमो
भवेभवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवायनमः। ॐ सद्योजाताय
नमः पादयो:।

सर्वाङ्गेषुभस्ममर्दनम्—ॐ प्रसद्यभ मनायोनिमपश्च पृथिवीमग्ने
सꣳसृज्य मातृ भिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान् पुनरासदः। ॐ नमः सर्वाङ्गेषु

शुद्धोदकस्नानम् —ॐ देवस्यत्वासवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्।

गोमयग्रहणम् स्नानञ्च—गोमयमादाय प्रणवेन दिक्षुदक्षिणभागं
तीर्थे चोत्तरभागं प्रक्षिप्य शेषेणस्नानम्:—
ॐ अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां रसं वने।१।
तासां वृषभपत्नीनां पवित्रंकायशोधनम्।
यन्मे रोगांश्च शोकांश्च पापं मे हर गोमय।२।

सूर्यायगोमयदर्शनम्-ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानो
ऽअश्वेषु रीरिष:। मानोवीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः
सदमित्वा हवामहे।

सर्वाङ्गेषुगोमयस्नानम्-ॐगन्धद्वारां दुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम्॥

शुद्धोदकस्नानम्— ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन
ॐ महेरणाय चक्षसे।

तीर्थमृत्तिकाग्रहणम्–ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया कायसंचितम् ।१।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।
त्वया हृतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते ।२।

सर्वाङ्गेषुमृत्तिका—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पाँसुरे ।

शुद्धोदकस्नानम्-ॐ देवस्यत्वा सवितुर्प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्

गोमूत्रस्नानम्- -ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

गोमयस्नानम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

पयःस्नानम्—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य संगथे ।।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत् प्रणऽआयुँषितारिषत् ।।

घृतस्नानम्–ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामसि ।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।।

कुशोदकस्नानम्–ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम् । एवं पञ्चगव्य स्नानं कृत्वा शुद्धोदकेन स्नात्वा ।

जलेऽघमर्षणम्—ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ।। त्रिरावृत्य

स्नानांगतर्पणम्– सव्येन प्राङ्मुख । ॐ भूर्देवांस्तर्पयामि । भुवर्देवांस्तर्पयामि । ॐ स्वर्देवांस्तर्पयामि । ॐ भूर्भुवस्स्वर्देवांस्तर्प

कण्ठीकृत्य(निवोतिना)–ॐ भूः ऋषींस्तर्पयामि ॐ भुवः ऋषींस्त यामि ॐ स्वः ऋषींस्तर्पयामि ॐ भूर्भुवःस्वर्ऋषींस्तर्पयामि

अपसव्येन-ॐ भूः पितृंस्तर्पयामि ॐ भुव पितृंस्तर्पयामि । ॐ पितृंस्तर्पयामि ॐ भूर्भुव स्वः पितृंस्तर्पयामि ।

सव्येन- ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ गौतमादयऋषयस्तृप्य इति एकैकमञ्जलिं देवतीर्थेन जले क्षिपेत् । ततोऽधउदङ्मुखो

यज्ञोपवीतंकंठीकृत्य–ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम् । प्रजापति तीर्थेन अञ्जलिद्वय दद्यात् । ततः दक्षिण कृष्णतिलोदकं पितृतीर्थेन ।

अपसव्यंकृत्वा-कव्यवाडनलादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ अस्मत् पितामहाः प्रपितामाह्यास्तृप्यन्ताम् ॐ अस्मन्मातृपिता प्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् । ॐ अस्मन्मातामह प्रमातामह प्रमातामहास्तृप्यन्ताम् । ॐ अस्मन्मातामहीप्रमातामही मातामह्यस्तृप्यन्ताम् । ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यत

राजयक्ष्मतर्पणम्—ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भ तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् । ततस्तीरमाग

तटे जलाञ्जलिनिक्षेपः– ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः
कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परांगतिम् ।

सूर्यार्घः – ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मांदेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

यजमानः—जलाद्बहिर्निष्क्रम्य अहतं श्वेतं सदशं धौतवस्त्रं परिधाय उपवस्त्रं गृहीत्वाद्विराचमेत् । ततो यथाचारं भस्म चन्दनादिना तिलकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनं कुर्यात् ।

अथ प्रायश्चित्ताङ्ग विष्णुपूजाप्रयोगः

संकल्पः– देशकालौ संकीर्त्याऽमुकशर्माहं मम सर्वपापक्षयार्थं श्री विष्णुः प्रीत्यर्थं विष्णुयागादिकर्मेण निर्विघ्नतयासिद्ध्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन गणमातृका ग्रहपूजापूर्वकं पुरुषसूक्तेन श्रीमहाविष्णु पूजां करिष्ये ।

विप्राज्ञया– हस्तमात्रं चतुरस्र स्थण्डिल त्रयं कृत्वा प्रथमस्थण्डिलोपरि गणमातृकाः सम्पूज्य द्वितीयोपरि ग्रहान् तृतीयोपरि

यजमानः– तण्डुलैः अष्टदलं कृत्वा तन्मध्ये कलशस्थापनविधिना ताम्रकलशं स्थापयेत् कलशोपरि पट्टवस्त्रं प्रसार्य तत्र गन्धेन अष्टदलयंत्रं विलिख्य तन्मध्ये तुलसीदलोपरि शालिग्रामप्रतिमां स्वर्णमयीं वा अग्न्युत्तारणपूर्विकां स्थापयेत् । तत्र स्वर्णमूर्तिश्चेत्तर्हि मूर्ति पात्रे निधाय प्राणप्रतिष्ठापन विधिना प्राणान् प्रतिष्ठाप्य पुष्पाणि विकीर्य स्वशरीरे विष्णुप्रतिमाङ्गे च

पुरुषसूक्तन्यासं कुर्यात् "देवो भूत्वा देवं यजेत्" इति वाक्यात्। ततः न्यासान्ते कलशं शंख घ टे च सम्पूज्य देवं ध्यायन् घण्टानादं कृत्वा षोडशोपचारविधिना महाविष्णोः पूजां कुर्यात्। ततः ॐ महाविष्णवे नमः स्तुतिपाठं समर्प्य ॐ अनेन षोडशोपचार पूजनेन पापहा श्री महाविष्णु प्रीयताम्। इति परमेश्वरार्पणं कुर्यात्। ततः पुरुषसूक्तेन प्रतिऋचं सन्तर्प्य मन्त्रान्ते सर्वत्र भगवान् पापहा महाविष्णुस्तृप्यताम्। इति तर्पणम्।

अथ विष्णु श्राद्धम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्ताङ्गतया विष्णु श्राद्ध सम्पत्तये श्री विष्णूद्देशेन त्र्यधिक युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तमामान्नं तन्निष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये।

यजमानः—विष्णु स्वरूप ब्राह्मणं गन्धादिना सम्पूज्य पापापहश्रीविष्णु प्रीतये विष्णुश्राद्धस्य सम्पूर्णतासिद्धयर्थं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमामान्न तन्निष्क्र य द्रव्यं वा अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे। एवं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्योदत्वा प्रायश्चित्ताङ्गभावो गोदानं तन्निष्क्रयद्रव्यं वा दद्यात्।

प्रत्यक्ष गोदानम्—देश कालौ संकीर्त्य प्रारीप्सित प्रायश्चित्तस्य पूर्वाङ्गतया विहितं गोदानं करिष्ये। इति संकल्प्य। ब्राह्मणं वृत्वा यथा विधि ब्राह्मण पूजनं धेनु पूजनं च कुर्यात्। ततो गोपुच्छे देवर्षि पितृ तर्पण कृत्वा कांस्य पात्रे गो पुच्छं निधाय दुग्धतिल कुश सुवर्ण युतं कृत्वा दक्षिण हस्तेन गृहीत्वा

अष्टशक्तिसहित सत्येश षोडशोपचारैः पूजनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्यामुकशर्मावर्मागुप्तो वाहं निज सकलपाप क्षयार्थं श्री लक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थं देवप्रतिष्ठा विष्णुयागादि कर्मणो वा निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं यथालब्धोपचारैः अष्टशक्ति-सहित श्री सत्येशपूजां करिष्ये ।

१. रुक्मिणी—वैदर्भीं भीष्मकसुतां रुक्मिणीं कृष्णवल्लभाम् ।
गदापद्मसमायुक्तां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥

२. सत्यभामा—आवाहयाम्यहं सत्यभामा सत्राजिदात्मजाम् ।
सर्वसिद्धिप्रदां श्रेष्ठां भौमासुरवधोद्यताम् ॥

३. जाम्बवती—जाम्बवतीं महाभागां महाविष्णुप्रियां शुभाम् ।
स्यमन्तकमिषादाप्तां शान्तामावाहयाम्यहम् ॥

४. सत्या— सप्तवृषान् वशीकृत्य प्राप्तां कृष्णप्रेयसीम् ।
नाग्नजितीं च कौसल्यां सत्यामावाहयाम्यहम् ॥

५. कालिन्दी—वनाद्वनं परिभ्रान्तां विह्वलां सूर्यनन्दिनीम् ।
आवाहयामि कालिन्दीं पार्थसार्थानुकम्पिताम् ॥

६. मित्रविन्दा—आवन्त्य जयसेनस्य राजाधिदेविसम्भवाम् ।
विन्दानुविन्दभगिनीं मित्रविन्दां समाह्वये ॥

६. लक्ष्मणा— मद्राधीशवृहत्सेनपुत्रीं माद्रीं सुलक्षणाम् ।
आवाहयामि कृष्णाप्तां मत्स्यवेधपणार्जिताम् ॥

७. भद्रा—कैकयेशधृष्टकेतोः श्रुतकीर्ति समुद्भवाम् ।
सन्तर्दनादिभगिनीं भद्रामावाहयाम्यहम् ॥

श्री सत्येशषोडशोपचारपूजा

।। श्रीसत्येशध्यानम् ।।

सत्यव्रतं सत्यपरं च सत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यामृत सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये॥

आवाहनम्ः—उर्व्यां क्षीरसमुद्रेऽस्मिन् शीतचन्द्रे सकर्णिके।
तत्र त्वं सत्यया सार्धं सत्येश अत्र सन्निधौ ।१

आसनम्ः— सोमसूर्याग्निसंकाशं पद्ममष्टदलान्वितम् ।
संगृहाणासनं देव त्रैलोक्यस्थितिकारण ।२।

पाद्यम्ः—रत्नाभरणसर्वाङ्ग सर्वदेवनमस्कृत ।
पाद्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम् ।३।

अर्घ्यंः— सत्येश सुखभूयिष्ठ सत्येश मुक्तिदायक ।
सत्येश सत्यया युक्त गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ।४।

आचमनम् – गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् ।
गृहाणाचमनं देव त्रैलोकस्यापि पावनम् ५।

स्नानमः— क्षीरसागरकल्लोलैः स्नासि पापनिषूदन ।
रक्ष मां भूतभव्येश दत्तेन अस्त्विम्बुना ।६।

वस्त्रम्ः— हरस्व सर्वदुरितं येन त्वं वेष्टितो हरे।
वस्त्रेणानेन शुभ्रेण सत्येश कुरु वाञ्छितम् ।७।

यज्ञोपवीतम्— यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं पापनाशनम् ।
यज्ञोपवीतदानेन कुरु मां सर्वपावनम् ।८।

गन्धः– सुगन्धि चन्दनं दिव्यं केशरागरुसंयुतम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ गृहाण परमेश्वर ।९।

पुष्पाणिः— सत्येशाय नमस्तुभ्यं मूर्त्तामूर्त्तस्वरूपिणे ।
वासुदेवेश गृह्यन्तां पुष्पाणि पूजनाय ते ।१०

धूपः– शक्तिवृंदयुतो देव पूजां धूपं मनोहरम् ।
गृहाण सत्यया सार्द्धं रक्ष मां परमेश्वर ।११।

दीपः– ज्योतीरूपमरूपं त्वां वदन्ति मुनिपुंगवाः ।
ज्योतिर्मध्ये स्थितो दीपं गृहाण त्वं नमोऽस्तु ते ।१२।

नैवेद्यम्ः– त्राता त्वमेव सत्येश सत्यया सह चिन्त्यते ।
गृहाण देवदेवेश मम नैवेद्यमुत्तमम् ।१३।

ताबूलम्ः – पूगीफलं सकर्पूरं तांबूलं सुमनोहरम् ।
पवित्रीकरणं नित्यं सत्येश प्रतिगृह्यताम् ।१४।

हिरण्यदक्षिणाम्ः- हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो ।
अनन्तपुण्यफलदां दक्षिणामर्पयाम्यहम् ।१५।

पुष्पांजलिः– नारायण नमस्तेऽस्तु वासुदेव नमोनमः ।
त्रैलोक्यजगदाधार त्राहि मां मधुसूदन ।१६।

अनया पूजया अष्टशक्तिसहितःसत्येशः प्रीयतां न मम ।

——

(पूर्वाङ्गं विष्णु श्राद्धम्)

(पृष्ठ ८४ का पाठ यहीं पढ़ें)

देशकालौ संकीर्त्य मम समस्त पापक्षयार्थं पापहा श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थंमिमां गां सवत्सां सोपस्करां यथाशक्ति, विभूषितां

रुद्रदैवतां तुभ्यमहं सम्प्रददे । इत्युच्चार्य सकल्पजल
गोपुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् ।

प्रार्थना—यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याऽघनाशिनी ।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ।

यजमानः—गोदानसाङ्गता सिद्ध्यर्थं विप्राय दक्षिणां दत्वा
गोदान कर्मणा पापापहः श्री महाविष्णु प्रीयताम् ।
जलमुत्सृजेत् । गोदानासम्भवे यथाशक्ति तन्मूल्यदेयम् ।

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्त पूर्वाङ्गतया विहितं यथा
गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यदानमहं करिष्ये । ब्राह्मणं सम्पूज्य
द्रव्य गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्तपूर्वाङ्ग
विहितमिदं गौनिष्क्रयीभूतं यथाशक्ति रजतद्रव्य तुभ्यमहं

पूर्वाङ्ग प्रायश्चितहोमः-तत्रादौ शुद्धमृत्तिकया चतुरस्रं स्थण्डिलंकृत्वा
संस्कारपूर्वकमग्नि स्थापनं कृत्वा ॐ हुं फट् इतिमन्त्रेणक्रव्याद
नैऋत्यां दिशिकिंचिदप्यरित्यज्य । ॐ अग्निन्दूतम्पुरो दधे ह
वाहमुपब्रुवे । देवां२ आसादयादिह । इतिमन्त्रेण आत्माभि
मग्निं स्थापयेत् । अग्निपात्रयोः साक्षतोदकं निक्षिप्य अग्नि
कृत्वा ॐ चत्वारिश्शृंगा त्रयोऽअस्यपादाः द्वे शीर्षे सप्तह
सोऽअस्य । त्रिधाबद्धोवृषभो रोरवीति महो देवो म
आविवेश । ॐ विट्नाम्ने अग्निपुरुषायनमः । वायव्य
वह्निरग्निं षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । ततःकुशक
कृत्वा प्राजापत्यहोमं कुर्यात् ।

प्राजापत्यहोमः—ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । इतिमनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम । इत्याघारौ ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । एवं सप्तवारान् कृत्वा(अष्टोत्तरशताहुतयो भवन्ति) एवं अष्टोत्तरशताहुती र्हुत्वा पञ्चगव्य होमं कुर्यात् । तत्र साग्रै सप्तपत्रकुशैः पञ्चगव्यं गृहीत्वा दशाहुतीर्जुहुयात् ।

ब्रह्मकूर्चहोमः-ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ँ सूयवसिनीमनवे दशस्या । व्यस्कभ्नारोदसि विष्णवेतेदाधर्त्थं पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा । इदं विष्णवे न मम । ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो-ऽअश्वेषु रीरिषः । मानोवीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे स्वाहा । इदं रुद्राय न मम । अत्र प्रणीतो-दकस्पर्शः । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योर-भिस्रवन्तुनः स्वाहा । इदं अद्भ्यो न मम । ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः । स बुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा । इदं सवित्रे न मम । ॐ स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । परमेष्ठिने न मम । ॐ भूर्भुवः स्वाहा । इदं

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। भूराद्या नवाहुतयः होतव्याः । तत पूर्णाहुतिं भस्मधारणमेव प्रायश्चित्त होमं समाप्य । व्रत ग्रहणं करिष्ये इति विप्रान् पृष्ट्वा कुरुष्व इति विप्राज्ञयाऽ स्नातः ।

पञ्चगव्यप्राशनम्-ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।

प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ।

प्रणवेन गृहीत्वा प्रणवेनैव सर्वं पञ्चगव्यं पिबेत् ॥

एतच्च सर्वंग्रामाद्बहिर्नद्यादेस्तीरे नक्षत्रदर्शनं कार्यम्। व्रतं निशामुखेग्राह्यं बहिस्तारकदर्शने इति" स्मृतिवाक्यात्। मुमूर्षोस्तु गृहादावेव कार्यम् अस्मिन् दिने उपवासः ॥

अशक्तौ हविष्याशनम्। अयं च पञ्चगव्यस्य दशाहुति होमो ब्रह्मकूर्चाख्यपञ्चगव्यपाने सर्वत्र ज्ञेयः । ततो गृहमागस्य प्रायश्चित्तस्यप्रत्याम्नायानुसारेणानुष्ठीय उत्तराङ्गाणि कुर्यात् ।

संकल्पः-अमुक शर्मणो मे जन्मतः अद्यावधि ज्ञाताज्ञात पातकानां निरासार्थं गोनिष्क्रयरजतदानं प्रत्याम्नायेनाङ्गीकृतस्य षडब्द प्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थंमशीत्यधिकशतगोनिष्क्रय भूत प्रतिकृच्छ्रं निष्कं वा तदर्धं वा तदर्धप्रमाणरजतं वा चन्द्रदैवतं नामानाम गोत्रेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

प्रायश्चित्तानुसारेण यथा शक्ति सहस्रं शतं पञ्चाशत पंचविंशति द्वादश संख्याकान् वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । ततो यस्यस्मृत्येत्युक्त्वा परमेश्वरार्पणं कुर्यात् ।

स्त्रीणांकृते प्रायश्चित्ते– स्त्रीणां होमः कृताकृतः। करणपक्षे विधवायाः क्षौरान्ते पूर्ववत् कृत्वा अमन्त्रकानि दश स्नानानि। सधवायास्तु संकल्पान्ते दन्तधावनं कृत्वा तूष्णींदशस्नानानि वस्त्रपरिधानान्ते विष्णु श्राद्धगोदानानि कृत्वा प्रायश्चित्त होमार्थमाचार्यं त्वां वृणे। इति विप्रंवृत्वा पूर्ववत् विप्रद्वारा सर्वं पूर्वाङ्गं कारयित्वा स्वयं पञ्चगव्यं तूर्णीं प्राश्य मुख्य प्रत्याम्नाय द्रव्यं विसृज्योत्तराङ्गानि कारयेत्। होमाभाव पक्षे दशविधस्नानान्ते विष्णुश्राद्धगोदाने कृत्वा विप्रेण पञ्चगव्यं कारयित्वा तूष्णीं पञ्चगव्य च प्राश्य प्रायश्चित्त द्रव्यं सङ्कल्प्यदत्त्वोत्तराङ्ग विष्णुश्राद्धगोदानदशदानानि कुर्यात्। अथ शूद्रस्य संकल्पान्तमविकृतं प्राग्वत्। ततः क्षौरान्तेऽमन्त्रकदशस्नानानि वस्त्र तिलक धारणान्ते विष्णु श्राद्धं गोदानं कृत्वा विप्रद्वारा पञ्चगव्यं कारयित्वा तूष्णीं पिबेत् शूद्रेण कपिलायाः पञ्चग यानि न पेयानि। नास्यविप्रद्वारा होमः। प्रायश्चित्त द्रव्यं देवोत्तराङ्गविष्णुश्राद्धगोदानानि दशदानानि च कुर्यात्।

ॐ श्रीगणेशाय नमः

॥ अथ दशविधंप्रायश्चित्तस्नानम् ॥

१. भस्मस्नानम्:- यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसंचयम्।

तथा मे दहतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्।

२. मृत्तिकास्नानम्:—अश्वक्रान्ते रथाक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे॥

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥

मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्॥

३. गोमयस्नानम्- गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला।
स्नानार्थं संस्कृत देवि पापं मे हर गोमय।

अग्रमग्रं वरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय।

४. पञ्चगव्यस्नानम्:—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्य पुनातु माम्॥

५. गोरजस्नानम्:—गवां क्षुरेण निर्धूतं यद्रेणु गगने गतम्।
शिरसा तेन संलेपो महापातकनाशनम्॥

६. धान्यस्नानम्:—धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु॥

७. फलस्नानम्—वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा।
तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्॥

८. सर्वौषधिस्नानम्ः—औषध्य सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतोद्भवाः ।
दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम् ॥

९. कुशोदकस्नानम्ः-कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः ।
कुशाग्रे शंकरः प्रोक्तःतेन नश्यतु पातकम् ।

१०. हिरण्यस्नानम्ः—हिण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदं मम पापं व्यपोहतु ॥

ततो गंगोदकस्नानम्ः-विष्णुपादाग्रसंभूते गङ्गे त्रिपथगामिनि ।
धर्मद्रवेति विख्याता पापं मे हर जाह्नवि ॥

॥ तत शुद्धोदकेन स्नायात् ॥

॥ इति दशविधस्नानम् ॥

स्नानान्ते वस्त्राणि परिधाय सन्ध्यावन्दनम् ।

वैष्णवसन्ध्या वराहपुराणे

जलाञ्जलिमादाय सूर्यमण्डले

। नारायणध्यानम् ॥

ॐ भवोद्भवमादि व्यक्तमव्ययमादित्यं सर्वदेवा ब्रह्मरुद्रेन्द्रास्ताञ्च कृष्णो यथासीद्ध्यानयोग स्थितास्ते सन्ध्यासंज्ञा वासुदेवं नमन्ति वय देवमादिमव्यक्तरूपं कृत्वा चास्मभि देवसंस्था तथापि ससारार्थंकर्मं तत् कारणमेव सन्ध्यासंस्थाय वासुदेवाय नमोनमः ।

॥ इति वैष्णवदीक्षायां चतुर्वर्णं सन्ध्या ॥

अथ उत्तराङ्ग विष्णु श्राद्धम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्ताङ्गतया विष्णु श्राद्ध सम्पत्त
श्री विष्णूद्देशेन त्र्यधिक युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तमामा
तन्निष्क्रयद्रव्यदान करिष्ये ।

यजमानः—विष्णु स्वरूपं ब्राह्मणं गन्धादिना सम्पूज्य पापाप
श्रीविष्णु प्रीतये विष्णुश्राद्धस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं युग्म
ब्राह्मणभोजनपर्याप्तमामान्नं तन्निष्क्रय द्रव्यं वा अमुकश
ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे । एवं चतुर्भ्यो दत्वा प्रायश्चित्त
ङ्गमादौ गोदानं तन्निष्क्रयद्रव्य वा दद्यात् ।

।। विधानपारिजातोक्तम् ।

विधानपारिजातेऽतिविस्तृतं सपि ड विष्णु श्राद्धमुक्तम्

तत्रस्वणमण्डपे सर्वतोभद्रमण्डलं सम्पूज्य तदुपरि स्वर्णमय लक्ष्मीनार
विधिवत्प्रतिष्ठाप्य दक्षिणे शंकर स्वर्णमयं वामेच स्वर्णमयं ब्राह्मणं
स्थापयेत् तयोर्मध्ये स्वर्णमये गरुडासने लक्ष्मीनारायणौ सपूज्य देव
समन्तात् षड्त्रिंशद्विष्णुब्रह्मेशानां पार्षदाः सम्पूज्याः ।

पृथुर्ध्रुवस्तथाभानुश्चन्द्रभानुः प्रियव्रतः ।
नाभिः स्कन्दोबलिर्व्यासः स्वयम्भुरौशनसः क्रतुः ।१।

दक्षप्रजापतिर्भीमः कपिलः शबलोऽर्जुनः ।
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यः वशिष्ठोऽथर्वएवच ।२।

रुक्माङ्गदोभरतः धौम्यः सुनन्दो नन्दवर्धनः ।
प्रह्लादो नारदो वैण्यनन्दनो वायुनन्दनः ।३।

विष्वक्सेनो जयोभद्रः सुग्रीवोऽथ विभीषणः ।
पार्षदा हरिहराब्जानां षट्त्रिंशत् पान्तु मां सदा ।४।

प्रत्यक्ष गोदानम्—देश कालौ संकीर्त्य प्रारीप्सित प्रायश्चित्तस्य पूर्वाङ्गत्वया विहितं गोदानं करिष्ये। इति संकल्प्य। ब्राह्मणं बृत्वा यथा विधि ब्राह्मण पूजनं धेनु पूजनं च कुर्यात्। ततो गोपुच्छे देवर्षि पितृ तर्पणं कृत्वा कांस्य पात्रे गो पुच्छं निधाय दुग्धतिल कुश सुवर्ण युतं कृत्वा दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य मम समस्त पापक्षयार्थं पापहा श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थमिमां गां सवत्सां सोपस्करां यथाशक्ति विभूषितां रुद्रदैवतां तुभ्यमहंसम्प्रदे। इत्युच्चार्य संकल्पजलयुतं गोपुच्छ विप्रहस्ते दद्यात्।

पूर्वादिदिक्षुदशलोकपालान् उत्तरे दुर्गा क्षेत्रपाल गणपतिं च यथाक्रमं सम्पूज्य विष्णो: सम्मुखे गरुडंसंस्थाप्य विधिवत्संपूज्य रात्रिजागरण पूजनादिनातिवाह्य प्रात: स्नात: कृतनित्यक्रिय: सप्तपञ्चत्रीन् शक्त्या विष्णुभक्तान् शुचीन् सपुत्रान् श्राद्धीयलक्षणसम्पन्नान् विप्रान् श्राद्धविधिना निमन्त्रयेत्। कृतापसव्योऽवाङ् मुखोदक्षिणजानु अर्चयित्वा—अमुकगोत्रममुकशर्माणं विष्णुश्राद्धे त्वामहं निमन्त्रये। एवं सर्वेषु ब्राह्मणेषु निमन्त्रयामि भोविप्रा विष्णुश्राद्धे क्षणाय व:।

भस्मीकुरुत तान् दोषान् बाले गर्भे च येस्थिता:॥ इति साष्टाङ्गं प्रणमेत्। पुन: सर्वानावाहितदेवान् संपूज्य स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारैः स्थापिताग्नेः कुण्डे ब्रह्म विष्णु महेश्वराणां प्रत्येकमष्टोत्तर शताहुतिभिर्ब्रह्मविष्णु शिवान् होमेन सन्तोष्याचार्यादीन् दक्षिणादिना सन्तोष्य श्राद्धेनिमन्त्रितविप्रान्—आसन गन्ध पुष्प धूपदीपाच्छादन युग्मभोजनभाजन जलभाजन छत्रोपानद् युगव्यजनादीनि देयानि। ततो घृतशर्करापायसतिल संयुक्तेनान्नेन नानागोत्रान् पितृमुद्दिश्य भोक्तृ ब्राह्मण समसंख्यकान् पिण्डान् स्वगृह्योक्तविधिना भूमौ बर्हिषिविष्णुं स्मरन् दद्यात्।

तिर्यग्योनिषु ये जाता स्तिर्यग्जास्त्वन्य जन्मनि।
तेषां पिण्डोमयादत्त: अक्षय्यमुपतिष्ठतु ।१।

प्रार्थना– यज्ञसाधनमूला या विश्वस्याघौघनाशिनी ।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥

यजमानः—गोदानसाङ्गता सिद्ध्यर्थं विप्राय दक्षिणां दत्वा
गोदान कर्मणा पापापहः श्री महाविष्णुः प्रीयताम् ।
जलमुत्सृजत् । गोदानासम्भवे यथाशक्ति तन्मूल्यदेयम् ।

संकल्पः–देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्त पूर्वाङ्गतया विहितं यथा
गोनिष्क्रयी भूत द्रव्यदानमहं करिष्ये । ब्राह्मण सम्
देय द्रव्यं गृहीत्वा देशकालौ सकीर्त्य प्रायश्चित्तपूर्वाङ्ग
विहितमिदं गौनिष्क्रयीभूतं यथाशक्ति रजतद्रव्य तुभ्य
सम्प्रददे ।

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम ।
मयादत्तेन पिण्डेन तृप्ता यान्तु च ते गतिम् ।२।

आब्रह्मणे ये मम वंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः
वंशद्वये ये ममदासभूता भृत्यास्तथाश्रित सेवकाश्च

मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः
जन्मान्तरं ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधापिण्डमहं ददामि ।३

अजातदन्ता ये केचिद् ये च गर्भे प्रपीडिताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम् ।४।

बन्धुवर्गाश्च ये केचिन्नामगोत्र विवर्जिताः ।
स्वगोत्रे परगोत्रे वा तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ।५।

उद्बन्धनमृताये च बिषशस्त्र हताश्चये ।
शृङ्गिभिर्दंष्ट्रिभिर्वापि तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ।६।

उत्तराङ्गप्रायश्चित्तहोम

प्राजापत्यहोमः—ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इतिमनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम इत्याघारौ ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारान् कृत्वा(अष्टोत्तरशताहुतयो भवन्ति) एवं अष्टोत्तरशताहुती हुत्वा पञ्चगव्य होम कुर्यात्। तत्र साग्रै सप्तपत्रकुशैः पञ्चगव्यं गृहीत्वा दशाहुतीर्जुहुयात्।

अग्निदाहेमृताये च सिंह व्याघ्रहताश्च ये।
आत्मनो घातिनो ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ।७।

अग्निदग्धा च ये केचिन्नाग्निदग्धाश्च येऽपरे।
विद्युच्चौर हता ये च तेभ्यः पिण्ड ददाम्यहम् ।८।

रौरवे चान्धतामिस्रे कालसूत्रे च ये गताः।
तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम् ।९।

असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः।
तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम् ।१०।

अनेकयातना संस्था मृताः प्रेतेषु ये गताः।
तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम् ।११।

असंख्य यातना संस्था ये नीता यमकिंकरैः।
तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम् ।१२।

पशुत्वान्निर्गता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः।
अथवा वृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ।१३।

अन्यैर्दुर्मरणैर्ये च क्षुधयातृषया मृताः।
भूत प्रेतपिशाचाश्च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ।१४।

ब्रह्मकूर्चंहोम:–ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ँ सूयवसिनीमनवे
दशस्या । व्यस्कभ्नारोदसि विष्णवेतेदाधर्त्थं पृथिवीमभितो
मयूखै: स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा । इदं विष्णवे न
मम । ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो
ऽअश्वेषु रीरिष: । मानोवीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्त:
सदमित्वा हवामहे स्वाहा । इदं रुद्राय न मम । अत्र प्रणीतो
दकस्पर्शः । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्यो
भिस्रवन्तु न: स्वाहा । इदं अद्‌भ्यो न मम । ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं
पुरस्ताद्विसीमत: सुरुचोवेन आव: । स बुध्न्याऽउपमा अस्य
विष्ठा: सतश्च योनिमसतश्च विव: स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम

दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठा: पितरो बान्धवादय: ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा ।१५।

जात्यन्तरसहस्त्राणि भ्रमन्ते स्वेन कर्मणा ।
मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्य: पिण्डं ददाम्यहम् ।१६।

ये केचित्प्रेमरूपेण वर्तन्ते पितरो मम ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा ।१७।

अत्र केचिद् आद्यानेव त्रीन् श्लोकानाहु: ।
एवं पिण्डान् दत्वा श्राद्धशेषं समापयेत् ।।

आचार्य:—यत्कृतं न्यूनातिरिक्तं विष्णुश्राद्धं तत्सम्पूर्णमस्तु ।
ब्राह्मणा:— अस्तु सम्पूर्णम् ।
आचार्य:—क्लेशिता भवन्त: । इत्युक्त्वा विशन् विसर्जयेत् ।

भूमिं सम्मार्ज्य स्वाचार्यं पूजयित्वा गोदान प्रतिमादान दक्षिणा
सन्तोष्य विसर्ज्य अश्वत्थपूजोत्तरम् स्वयं नैवेद्यं गृह्णीयात् ।।

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा । इदं सवित्रे न मम । ॐ स्वाहा इदं परमेष्ठिने न मम । ॐ भूर्भुवः स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । भूराद्या नवाहुतयः होतव्याः । तत पूर्णाहुतिं भस्मधारणमेवं प्रायश्चित्त होमं समाप्य । व्रत ग्रहणं करिष्ये इति विप्रान् पृष्ट्वा कुरुष्व इति विप्राज्ञयाऽऽज्ञातः ।

पञ्चगव्यप्राशनम्-ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।

प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ।

प्रणवेन गृही वा प्रणवेनैव सर्वं पञ्चगव्यं पिबेत् ॥

॥ अथ दशमहादानम् ॥

१. गोदानम्: देशकालौ स्मृत्वा गोदान लभ्यफल प्राप्तिकाम इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं गोत्रायशर्मणे सुपूजिताय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रार्थना:– यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघनाशिनी ।

विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनया गवा ॥

२. अथ भूमिदानम्:–ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय षष्ठिवर्ष-सहस्त्रवर्षपरिमितस्वर्गं शिवपुरनिवासकामः सर्वपापक्षयकामश्च इमां भूमिं बहुसस्यप्रदां विष्णुदैवतां तुभ्यमहं सम्प्रदे नममेति ।

प्रार्थना:—सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता ।

अनन्तसस्यफलदा: अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

३. तिलदानम्ः-ॐ अद्य० गोत्रायशर्मणे इमान् तिलान् सोमदैवता (विष्णुदैवताकान्)वा सर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमह सम्प्रददे न मम

प्रार्थनाः-महर्षेर्गोत्रसम्भूताः काश्यपास्तु तिलाः स्मृताः।
तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥

४. हिरण्यदानम्ः-ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे इदं हिरण्यं अग्नि दैव समस्त पापक्षय कामस्तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति।

प्रार्थनाः- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ।

५. आज्यदानम्ः-ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे इदमाज्यं विष्णुदैव समस्तपापक्षय कामस्तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति॥

प्रार्थनाः-कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम् ।
देवानामाज्यमाहार अतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

६. वस्त्रदानम्-ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे समस्त पापक्षयकाम बार्हस्पत्ये वाससी तुभ्यमहं संप्रददे न ममेति ।

प्रार्थनाः-शीत वातोष्मसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

७. धान्यदानम् -ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे इदं धान्यं प्रजापति दै समस्त पापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मिकशिवफलाबाप्तिकामस्तुभ्य संप्रददे म ममेति ।

प्रार्थनाः-सर्वदेवमयं धान्य सर्वोत्पत्तिकरं महत् ।
प्राणिनां जीवनोपायम् अतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

८. गुडदानम्:—ॐ अद्य० मम समस्त पापक्षयपूर्वकं गृहे लक्ष्म्या स्थैर्यसिद्धिकामो गोत्राय शर्मणे सुपूजितायेमं गुडं रसवर्यं सदक्षिणं तु यमहं सम्प्रददे न ममेति ।

प्रार्थना:- गुड इक्षुरसोद्भूतो मन्त्राणां प्रणवो यथा ।
दानेनानेन मे देयं परा लक्ष्मीः स्थिरा गृहे ॥

९. रजतदानम् – ॐ अद्य० मम समस्त पापक्षयपूर्वकशिवविष्णु-पितृप्रीति कामो गोत्रायशर्मणे सुपूजिताय इदं रजतं विष्णु दैवतं सदक्षिणं तुभ्यमहं सप्रददे न ममेति ।

प्रार्थ :—प्रीतिर्यतः पितृणां च विष्णु शंकरयोः सदा ।
शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।

१०. लवनदानम्:-ॐ अद्य० देवप्रीतिकामोगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय इद लवणं सर्व रसोत्कृष्टं सदक्षिणं तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति

प्रार्थना:—यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं बिना ।
शम्भोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

११ संक्षेपतो दशमहादानानि:—ॐ अद्य० प्रायश्चित्तत्वेनैकादश-दाननिष्क्रयद्रव्यं अमुकगोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रार्थना:— गोभूतिल हिरण्याज्यवासोधान्यगुडानि च ।
रौप्य लवणयुक्तानि ददामि विष्णु प्रीतये ॥

स्वस्तिपुण्याहवाचनादौ कलशस्थापनम्

सपवित्रः पाणिरा... ...विधाय ...नान्तरम् ।

प्रतिज्ञासंकल्प–अद्य विष्णुयाग साङ्गतार्थं यज्ञस्य निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं
गणपतिपूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं करिष्ये । तत्रादौ तण्डुलै
रष्टदलं कृत्वोक्तविधिना कलशं स्थापयेत् ।

भूमिस्पर्शः–ॐ महीद्यौ पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
पिपृतां नो भरीमभिः ।

तण्डुलपुञ्जम्–ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजनपारयामसि ॥

कलशस्थापनम्–आजिघ्रकलश मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्जा
निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्र

जलपूरणम्– ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी
स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य
ऽऋतसदनमासीद ॥

तीर्थजलम्–इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमे स च तापरुष्ण्या
मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणू ह्यासुषोमया ।

गन्धक्षेपः–ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

सर्वौषधीः–ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनैनु बभ्रुणामह ँ शतंधामानि सप्त च ॥

दूर्वा– ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

पञ्चपल्लवाः–ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता ।

गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम् ॥

सप्तमृत्तिका—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥

पूंगीफलम्—ॐ या फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳬहसः ॥

पञ्चरत्नम्—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानिदाशुषे ॥

सुवर्णखण्डम्-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

रक्तवस्त्रम्—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोऽअग्ने विश्वरूपᳬसंव्ययस्व विभावसो ॥

पूर्णपात्रम्—ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जᳬ शतक्रतो ॥

श्रीफलम्—ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ᳬ हसः ॥

वरुणावाहनम्-ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशᳬसमानऽआयुः प्रमोषीः ॥
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आवाहयामि ।

देवतावाहनम्-ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः ।
संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते ॥
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः ।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सागरा: सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती॥

कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा च तविषीनदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।

नदाश्च विविधा जाता नद्य: सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥

सर्वे समुद्रा: सरितस्तीर्थानि जलदा नदा।
आयान्तु मम शान्त्यार्थं दुरितक्षयकारका:।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदो ह्यथर्वण।
अङ्गैश्चसहिता सर्वे कलशं तु समाश्रिता॥

शान्ति: पुष्टिश्च गायत्री कलशेस्थिता:।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारका:॥

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवता सुप्रतिष्ठता वरदा भवन्तु

कलशस्थदेवपूजा—ॐ कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयो: पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं। मुखे आचमनीयम् सर्वाङ्गे स्नानीयम्। गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि।

प्रार्थना:— ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापति ।
आदित्यावसवोरुद्राः विश्वेदेवा. सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिम यज्ञंकर्तुमीहे जलोद्भव ।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् ।
ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

॥ ततः पुण्याहवाचनम् ॥

कलश स्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य पुण्याह वाचकेभ्यो वेदविद्भ्यो नमः इति वेदविदो विप्रान् गन्धादिभिरभ्यर्च्य प्रधानाचार्यं विशेषवरण द्रव्यैर्वृत्वा वरण द्रव्यचतुष्टयमादाय वरणं कुर्यात्।

विप्रवरण संकल्पः— ॐ अद्येत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाण प्रतिष्ठा यज्ञकर्मणः साङ्गतार्थं पुण्याहवाचन कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैः अमुकामुकगोत्रान् ऋग्यजुः सामाथर्व विदो विप्रान् अमुकामुकशर्मणो युष्मान् अहं वृणे ।

विप्राः—वृताः स्मः । इति विप्राः प्रतिब्रूयुः ।

वरणमन्त्रः— ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजमान– अवनिकृतजानुमण्डल कमलमुकुलसदृशमञ्जलि
शिरस्याधाय कलशं धारयित्वाऽऽशिषं प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना– ॐ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।
त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य अतोधर्माणि धारयन्
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।३।

विप्राः— अस्तु दीर्घमायु ।३।

यजमानः— अपांमध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे ॥
शिवाः आपः सन्तु इति विप्र हस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्राः– सन्तु शिवा आपः ।३। इति विप्राः प्रतिब्रूयु ।

यजमानः– लक्ष्मीर्वसतु पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वं नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ॥
ॐ सौमनमस्यमस्तु ।३। इति विप्रहस्तेषु पुष्पं दद्यात् ।

विप्राः— अस्तु सौमनस्यम् । इति प्रतिवचनम् ।

यजमानः– अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥
ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात् ।

विप्राः— अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।३।

यजमानः– ॐ गन्धाः पान्तु इति विप्र हस्तेषु गन्धं दद्यात् ।

विप्राः– सौमङ्गल्यं चास्तु ।

यजमानः–ॐ अक्षताः पान्तु इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात् ।

विप्राः— आयुष्यमस्तु ।

यजमानः—ॐ पुष्पाणि पान्तु इति पुष्पाणि विप्रहस्तेषु दद्यात् ।

विप्राः— सौश्रियमस्तु ।

यजमानः— ॐ ताम्बूलानि पान्तु विप्रहस्ते ताम्बूलं दद्यात् ।

विप्राः— ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमानः—ॐ दक्षिणाः पान्तु विप्रहस्तेषु दक्षिणां दद्यात् ।

विप्राः— बहुदेयं चास्तु ।

यजमानः— ॐ स्वर्चितमस्तु विप्रहस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्राः— अस्त्वर्चितम् ।

प्रार्थना— ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टि श्रीर्यशो—

विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु इति विप्रान् प्रार्थयेत् ।

यजमानः—यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाःशोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिसम्मतं समनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । इति वदेत्

विप्राः— वाच्यताम् ।

ऋक्:—ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु रस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयं सत् ।

द्रविणोदा वीरवती मिषम्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ।१।

सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्ता

सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ।२।

नवो नवो भवति जायमानो ऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।

भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ।३

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सहते सूर्येण ।

हिरण्यदा अमृतत्वं भजंन्ते वासोदाः सो मप्रतिरन्त आयुः ।४

यजुः-ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्रादृतु भिरिष्यत

सवितात्वा सवाना ँ सुवतामग्निर्गृहपतिना ँ सोमो वनस्पतीना

बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठाचाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो

धर्मपतीनाम् ।२।

न तद्रक्षाᳫंसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳫंह्येतत्

यो बिभर्ति दाक्षायणᳫं हिरण्यᳫं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स

मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।३।

उच्चाते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे । उग्रᳫंशर्म महिश्रवः ।४

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभिदेवां २ इयक्षते ।५।

५र ४ २ ४ ५र २र १र २र १ २ १ २

सामः-ॐ देवो ३ वो ३ द्रविणोदाः । पूर्णां वि व ष्ट्वा सिचम् । उ द्वा

२ २र १ ७ १ र २ र १

१ २र १ ७ १ र २ भ १

सिञ्चा र । ध्व मुप वा पृणध्वम् । आ दि द्वोदेर । व ओ ह ते इ डा

२ २

२ ३ भा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ।१।

५ ४ ५ र र ४र ५र २ १ र

अद्य नो देव सवितः । ओ हो वा इ ह श्रु धायि । प्रजा वा २ ३

२ र २ १ २ २ १

रसा वीः । सौभगाम् । परासू २ ३ ध्वा ३ । हो वा २ ३ हा विमयᳫंसू

१ १ १ १
२ ३ ४ ५ बा ६ ५ ६ वक्षा ३ या २ ३ ४ ५ ।२।

२ १ र १ २ १र २ १र १
चन्द्रमा आउवा । एसु बान्ता राउवा । सुपर्णो धाउवा । वतेदिवि न वो

२ १ २ १ २ १ १
हि राउवा । ण्यनायिमा याउवा । पद विम्दाउवा । ति विद्युताःविन

२ १
आउवा । स्परोदा २ ३ सा ३ ४ ३ यि ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ।३।

५ र २ ४र ५ २ १ २ १
उच्चाता ३ यि जात मन्धसाः । दिवाई सा १ दूभू २ । भिया २ ३

२ २१ २ २ २र
ददायि । उग्र ँशर्म्मा । महा २ ३ थि श्रवाउ । वा ३ । स्तो

१ १ १ १
२ ३ ४ ५ ।४।

४ ३ र ४ २ ४र ५ २ १ २ २ १
उ पाऽ ५ स्मै । गा ३ या ३ तानाऽराः । पा ३ वामा ३ ना । या २

२ १ २ २ १ र ३ २
आ । हुम्मायि । दा ३ वायि । अभिदेवां ँ इया २ क्षताउ ।

१ १ १ १ १
घा २ ३ ४ ५ ।५।

अथर्वणः-ॐधातारातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापति निधिपति नौ अ

त्वष्टा विष्णुः प्रजया सरराणो यजमानाय द्रविणन्दधातु ।१।

येन देवं सवितारम्परिदेवा अधारयन् । तेनेदम्ब्रह्मणस्पते परिराष्ट्राय धत्तन ।२।

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् । भद्राहमस्मभ्यं राजञ्छक धूम त्वं कृधि ।३।

उच्चावतन्तमरुणं सुपर्णमध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम् । पश्याम त्वा सवितारं यमाहु रजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः ।४।

यजमानः—व्रत जप नियम तप स्वाध्यायक्षमदम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् इति विप्रान् प्रार्थयेत्।

विप्राः—समाहित मनसः स्मः ।

यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्तः इति वदेत् ।

विप्राः—प्रसन्नाः स्म ।

यजमानः—पूर्वोक्त रीत्याऽवनि कृत जानु मण्डलः कमलमुकुलसदृश मञ्जलिं शिरस्याधाय तत्र तमेव कलशं धारयित्वा कलशजलं

अन्यस्मिन् पात्रे वक्ष्यमाण प्रकारेण प्रतिवचनं दद्यात्। ॐ शान्तिरस्तु अस्तु इति प्रति वचनम्। पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु ॐ वृद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु ॐ आयुष्यमस्तु ॐ आरोग्यमस्तु ॐ शिवमस्तु ॐ शिवं कर्मास्तु ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॐ इष्ट सम्पदस्तु (द्वितीय पात्रे) अरिष्टनिरसनमस्तु ॐ यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु। (पुनः पात्रे) ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। इष्टकामाः सम्पद्यन्ताम् ॐ तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदेवते प्रीयेताम् ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवा प्रीयन्ताम् ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वदेवाः प्रीयन्ताम् ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वदेवाः प्रीयन्ताम् ॐ महेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम् ॐ वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्य प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयन्ताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयताम् ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयन्ताम् ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयन्ताम् ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ॐ सर्वाः कुलदेवता

प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा ग्रामदेवता प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वाः वास्तु-देवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । (ततो जलं बहिर्देशे) हताश्चब्रह्मद्विषः हताश्चपरिपन्थिनः । हताश्चास्य कर्मणो विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । (पुनः पात्रे) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम् । ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ शिवा ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा नद्य सन्तु ॐ शिवा गिरयः सन्तु । ॐ शिवा अतिथयः सन्तु । ॐ शिवा अग्नयः सन्तु । ॐ शिवा आहुतयः सन्तु । ॐ अहोरात्रे शिवेस्याताम् ।

ऋक्:-ॐ शंवः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षत्वोषधयः प्रतिधीयतम् ।
शन्नो द्यावा पृथिवी शम्प्रजाभ्य शन्नो अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे ।

यजुः-ॐआब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसो जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढामड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः

पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम् ॥

३ २ र र ५ ४ ५ २ १ र २ १ १

सामः-ॐ त्वष्टा ३ ४ । नो दैवियम् । वचा । पर्जन्यो ब्रह्मणस्पा २ ३ ती

१ र र २ २ १ र २ १ २ २ १

पुत्रै भ्रातृभिरदिति र्नू पातू २ ३ नाः । दुष्टारा २ ३ न्त्रा। मणंवा २

२ १

३ चा २ ४ ३ः । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥

अथर्वण:-ॐ गणास्त्वोपगायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् । सर्गा

वर्ष स्य वर्ष तो वर्ष न्तु पृथिवी मनु ।

यजमानः-शुक्राङ्गारक बुधबृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सहिताः

आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहा प्रीयन्ताम् । ॐ भगवन्नारायणः

प्रीयन्ताम् । ॐ भगवन् पर्जन्यः प्रीयन्ताम् । ॐ भगवान् स्वामी

महासेनः प्रीयताम् । ॐ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया

यत्पुण्यं तदस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदये

यत्पुण्यं तदस्तु । एतत्कल्याणप्रयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये

विप्राः वाचयताम् ।

यजमानः - ब्राह्मं पुण्यंमहर्यंच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम् ।

वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य च गृहे करिष्य-माण अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात् ।

विप्राः- पुण्याहम् ३ ।

ऋक्:-ॐ उद्‌गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि ।
वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमावद
विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥

यजुः—ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा
भूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥

साम:-ॐ पुनानः सोमा ३ धारा २ ३ ४ या । आपो वसानी अर्षस्या
रत्नधा योनिमृतस्यसा २ यि दसायि । ओ हा ३ उ वा उत्सो
देवोहि रा २ ३ हायि । ओ हा ३ उ वा । ण्य या । औ ३ हो
वा । हो ५ इ । डा ।

अथर्वण:—ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया ।

पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा ।

यजमानः-ॐ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम् ।

ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु न ।

भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्म कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात् ।

विप्राः—अस्तु कल्याणम् ३ इति त्रिः प्रतिब्रूयुः ।

ऋक्:—ॐ अपाः सोम मस्तमिन्द्र प्रयाहि कल्याणी जाया सुरणं गृहे

यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्

यजु:-ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः । ब्रह्म राजन्याभ्या

ंशूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणा

दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु ।

३ र ४ र २ ४र ५ १ २ २१र

सामः-ॐ का ५ या । नश्चा २ चित्रा३आभुवात् । ॐ । ती सदावृ

१ २ र २ १ २ ३ र २
स । खा । औं ३ हो होयि । कया २३ शचायि । ष्ट यौ हो ३ ।
१ १ २
हुम्मा २ । वा २ र्त्तो ३५ हायि ।

अथर्वणः-ॐ विश्वजित् कल्याण्यै मापरि देहि । कल्याणि द्विपाच्च

सर्वन्नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च न स्वम् ।

यजमानः—ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु । इति वारत्रयं ब्रूयात् ।

विप्राः—ॐ ऋद्ध्यताम् ३ ।

ऋक्:-ॐ ऋद्ध्यामस्तोमं सनुयाम वाजमानो मन्त्रं सरथे होपयातम्

यशो न पक्वं मधुगोष्वन्तरा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः ।

यजुः-ॐसत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम । दिवम्पृथिव्या

ऽअध्यारुहामा विदाम देवान्स्वर्ज्योतिः ॥

२ २ २ २ १ २ १ २ २ २ १ २ २ २

साम:—ॐ औ हो वा ।३। अगन्म ज्योतिः ।३। अमृता अभूमा ।।

१ २ १ २ २ २ २ २ १ २ २ २ १ २ २ २

अन्तरिक्षं पृथिव्या अध्यारुहाम ।३। दिवमन्तरिक्षादध्यारुहाम ।

१ २ २ २ १ २ १ २ २ १ २ २ २ २ २ २

अविदाम देवान् ३। समुदेवैरगन्महि ।३। औ हो वा ।३।

१ २ ३ १ १ १ १

सुवर्ज्योति २ ३ ४ ५: ।

अथर्वणः—ॐ ऋधङ् मन्त्रो योनिं यः आबभूवामृतासुर्वर्द्धमानः

सुजन्मा । अदब्धासु भ्राजमानो हैव त्रितो धर्त्तादाधारत्रीणि

यजमानः— ॐ स्वस्तिर्या अविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा

विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक
कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात् ।

विप्राः— ॐ स्वस्ति ३ ।

ऋक्:—ॐ स्वस्ति ऋद्धिप्रपथे श्रेष्ठा रेक्ण स्वस्त्यभिया वाममेति

सा नो अमासो अरणे निपातु स्वा वेशा भवतु देव गोपा

यजुः—ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति न स्ताक्ष्यों ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पति र्दधातु ।

२र २र ७ २ १ र र
सामः-ॐ आतारमिन्द्रमविता । रमी २ ३ न्द्राम् । हवे हवे सुहव ँ शू
७ २ १ ७ २
रमी २ ३ न्द्राम् । हुवाई नु शक्रं पुरुहू । तमी २ ३ म्द्राम् ।
२ १ २१ र २ १र २ २ ४
इद ँ स्वस्तिनो मघवा । बा ३ ४ ३ इ तू ३ वा ५ इन्द्रा ६ ५ ६ः

अथर्वणः—ॐ स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते

पुरुषेभ्यः । विश्व सुभूत सु विदत्रन्नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्य्यम् ॥

यजमानः— मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ।। इति त्रिवारं ।

विप्राः—शतं जीवन्तु भवन्तः ।

ऋक्—ॐ शतं जीव शरदो वर्द्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्

शत मिन्द्राग्नी सविता वृहस्पतिः शतायुषा हविषेम पुनर्दुः ॥

यजुः—ॐ शतमिन्नु शरदो ऽअन्तिदेवा यत्रा नश्चक्राजरसन्तनूनाम्

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः

१र र र २र१ १र२

सामः-ॐ आयु र्विश्वायु र्विश्वं विश्वमायुरशीमहि । प्रजान्त्वष्ट

११र र१र २१र२र २२र १३ १११

रधिनिधे ह्यस्मै । शतञ्जीवेम शरदो वयन्ते २३४५॥

अथर्वणः-ॐ आयुरस्मै धे हि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधि निधे ह्यस्मै

रायस्पोषं सवितरा सु वास्मै शतञ्जी वाति शरदस्तवायम्

यजमान —शिवगौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

विप्राः— ॐ अस्तु श्रीः ।३।

ऋक्ः-ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियंवयो जरितृभ्यो द

श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्यासमिथा मितद्रौ

यजुः— ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशू

रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा ॥

५ र ५ १ १ १
सामः—ॐ आयन्त इवसू ४ रायाम् । विश्वा २ इ विप्रा २ । स्यमा
१ र २ २र २१२ १
२ क्षाता । वासूनि जातो जनिमा नियोजा १ सा २ । प्रति
२र१ २र र १ २ १र२ २ १र
भागन्नदी २ धिषः प्रा २ ३ तो । भागान्ना ३ दा । हुम् ।
३ २ १ ५
धिमा ३ः । औ २ ३ ४ वा । श्रिये १ ॥

अथर्वणः-ॐ एहया तु वरुण सोमो अग्नि र्बृहस्पतिर्वसु भिरेह यातु ।

अस्य श्रिय मुप संयातु सर्व उग्रस्य चेत्तु सं मनस सजाताः ॥

यजमान— ॐ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।
भगवान् शाश्वतो नित्यं नो रक्षतु च सर्वतः ॥

ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् इति उदक त्यागः ।

ऋक्:—ॐ प्रजापते नत्व देतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजुः- ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।

यत्कामास्ते जहुमस्तन्नो ऽअस्तुवयमस्याम पतयो रयीणा ँ स्वाहा ।।

२ र १र र र २ र १

सामः—ॐ हाउ ।३। इमाः ।३ प्रजाः ३। प्रजापते । होइ ।३।

र २ र २ २र १ २

प्रजापते । हा ३ १ उ वा २ । ए । हृदया ३ १ उ । वा २।

२ १रर रर २ १ रर २ १ २१र र २ १ १

प्रजारूपमजीजने । प्रजारूपमजीजने । प्रजारूपमजीजने । इ

१ १ १ १

इडा २ ३ ४ ५ ।।

अथर्वण:— ॐ प्रजापते रावृतो ब्रह्मणावर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा

वर्चसा च । जरदष्टि कृतवीर्यो विहा याः सहस्त्रा युः सु कृतश्चरेयम्

यजमानः— ॐ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ।।

विप्राः—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।३।

ऋक्:-ॐ स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः संयन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः ।

रायो वन्तारो बृहतः स्यामास्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् ॥

यजु—ॐ प्रतिपन्था मपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः

परिद्विषो वृणक्ति विदन्ते वसु ॥

५र १र १ २ १ २ २र३

सामः—ॐ त्यमूषू । वाजि । ना ३ ४ ५ म् । देवजूता २ ३ ४ ५

५ र३२ २१ २ २ १ ४ १ २ ५

सहोवानाम्ता । रुता ३ । र ँरथानाम् । अरिष्टना १ ३ ४ इमीम्

२ २३र५ २ १ र र २ ३२

पृतना ३ ४ ३ जमाशुम् । स्वस्त । या यि । तार्क्ष्यमिहा ३ ४ ३

२ ४

हु ३ वा ५ यि मा ६ ५ ६ ।

अथर्वणः—ॐ वेदः स्वस्तिर्द्रुघण स्वस्तिः परशुर्वेदि परशुर्नः स्वस्ति

हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम् ॥

यजमानः—अत्र प्रधान देवाय महाविष्णवे नमः विष्णुः प्रीयताम्।
इति कलशजलम् अधःस्थितपात्रे पूर्ववत् क्षिपेत्॥
ॐ स्वस्ति पुण्याहवाचनकर्मसमृद्धिरस्तु। इति त्रिः।
विप्राः— ॐ अस्तु समृद्धिः।
अभिषेकः—चतुस्स्वस्ति, पय पञ्च, विष्णोःषट्, द्वादशदेवताः।
प्रातःषट्, पञ्चभगः, पञ्चन्द्रै, पञ्चवारुणैः॥
षट्, वातैः, शान्तिरष्टौ, जपान्मृत्युर्विनश्यति (संस्कारगण

अथाभिषेकः

चतुःस्वस्तिः-ॐस्वस्तिनः ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदा
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥ पुना
पयःपञ्च:-ॐपयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः
पयस्वती प्रदिशःसन्तु मह्यम्। पुनातु
विष्णोःषट्:- ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो। विष्णो
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। पुना
द्वादशदेवताः—ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा
देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता
विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणोदेवता। पुना
प्रातःषट्:— ॐ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रँहवामहे प्रातर्मित्रावरुणा
प्रातरश्विना प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमपुतरुद्रं
हुवेम॥ पुनातु

पञ्चभग – ॐ भगप्रणते भगसत्यराधोभगेमां धियमुदवा ददन्नः । भगप्रणो जनय गोभिर वैर्भगं प्रन्नृभिर्नृ वन्त स्याम । पुनातु

पञ्चेन्द्रैः-ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे । सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिद्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । पुनातु

पञ्चवारुणैः— ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ।। पुनातु ।

षड्वातैः-ॐसमुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।।

शान्तिरष्टौः—ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापः०

ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ।१ पुनातु । यो वः शिव तमो रसस्तस्य भाजयते ह नः उशतीरिव मातर २। पुनातु । तस्मा ऽरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ।३। पुनातु ।

इदमापः प्रवहतां वद्यञ्च मलञ्चयत् । यच्चाभि दुद्रोहानृतं यच्च शेपे ऽअभीरुणम् । आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ।६। पुनातु । ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।७ पुनातु । ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नोधेह्यनवीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारं तारिष ऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे । पुनातु ।

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमाः नागाः दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥९॥
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिः
शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः

शान्तिः सर्वᳫँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि। पुनातु ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः। पुनातु। ॐ पालाशो भवति। तेन ब्राह्मणो-ऽभिषिञ्चन्ति ब्रह्म वै पलाशो ब्रह्मणैवेनमेतदभिषिञ्चति।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

आचार्यः— अमृताऽभिषेकोऽस्तु।

विप्राः— अस्त्वमृताभिषेकः।

पुण्याहवाचकेभ्यो दक्षिणादानम्:—ॐ तत्सद्य कृतैतत्पुण्याह वाचन कर्मणः पूर्णता सिद्ध्यर्थं इमां सुवर्ण रजतादिमयीं दक्षिणां सूर्य चन्द्रदैवताकां वा अमुकामुक गोत्रेभ्य ऋग्यजुः सामाथर्वविद्भ्यो विप्रेभ्यो विभज्य सम्प्रददे न मम।

आचार्य दक्षिणा:-ॐ तत्सदद्यकृतैतत् पुण्याहवाचनकर्मणःसाद्गुण्यता सिद्धये इदं रजतादिद्रव्यममुक दैवताकां दक्षिणाममुकगोत्रायामुक शर्मण आचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे न मम।

यजमान तिलकम्:-ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्

पत्नीतिलकम्: गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

आशीर्वादः—ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥
अनेन पुण्याहवाचन कर्मणा श्री प्रजापतिः प्रीयताम् ॥

इति गोलोकधामवासि श्रीपण्डितवर श्रीचणदासात्मज विहारीलालशास्त्रिवासिष्ठेन संकलितं पुण्याहवाचनं सम्पूर्णम् ।

। शुभमस्तु ।

अथ नान्दी श्राद्धादौ मातृपूजा

अथ प्रयोगादौः–अत्र निखिल निबन्ध सारभूत निर्णयस्तु धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेदारम्भे गर्भाधान संस्कारादौ द्रष्टव्यः अत्र स्वधा शब्दस्थाने स्वाहा शब्द सर्वत्रैव सर्वाः क्रियाः । प्रति पार्वणं युग्मा एव ब्राह्मणाः । विवाहादिमङ्गलकर्माङ्गे वृद्धिश्राद्धे कुशास्थाने दूर्वाः यज्ञादि कर्माङ्गे तु अमूलादर्भाः । दूर्वा दर्भाश्च युग्मा एव पूर्वाह्णः कालः प्रदक्षिणं कर्म तथा चात्र प्रकृतिभूतपार्वणवदेव दैवे प्राङ्मुखाः पित्र्ये चोदङ्मुखाः विप्राः समुपवेशनीयाः न तु देव धर्मत्वेन सर्वे प्राङ्मुखाः किन्तु ब्राह्मण पंक्ति निवेशः प्रागुपक्रमः पश्चादपवर्गः आभ्युदयिके प्रदक्षिण-मुपचारः इति सूत्रबोधितत्वात् ।

संकल्पः–ॐ अद्य विवाहादिकृत्य सांगतार्थं पितृणां तृप्त्यर्थं श्रीगणेश-मातृकापूजनपूर्वकं नान्दीश्राद्धं करिष्ये । ॐ गणेश्वराय नमः

इति स्वस्तिवाचनपूर्वकं गणेशं सम्पूय । ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो. नमः । इति यथा लब्धोपचारैः षोडशमातृका पूजनं कृत्वा घृतमातृकाश्च सम्पूज्या । तद्यथा ।

अथ गौर्यादि षोडश मातृकानां पूजनमावहनञ्च

गौरीः—ॐ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां वरदप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थनाः— ॐ गौरीमिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवुशी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।

पद्मः—सुवर्णा त्वां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्य पूजितां देवीं पद्मामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्यश्च आरोहतं वरुणं मित्र गर्तन्ततश्चक्षाथामदितिर्दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि ॥

शचीः—उत्पलाक्षीं सुदर्शनां शचीं कुण्डलधारिणीम् ।
देवराजप्रियां भद्रां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थनाः—ॐ कदा च नस्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु मघवन्भूयऽइन्नु ते दानन्देवस्य पृच्यते ॥

मेधाः—विवस्वतकरं फुल्लवक्त्रां तां पद्मवासिताम् ।
बुद्धिप्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थनाः-ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिर्मेधामिन्द्रश्च। वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥

सावित्री:—जगत्स्रष्टीं जगद्धात्रीं पक्षीरूपेण सेविताम् ।
ॐ कारात्मीं च सावित्रीं देवीमावाहयाम्यहम् ।।

प्रार्थना:-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्

विजया:—दैत्यपक्षक्षयकरीं देवानां चाभयप्रदाम् ।
गीर्वाणवन्द्यां विजयां देवीमावाहयाम्यहम् ।।

प्रार्थना:—ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्योबाणवां२ऽउत ।
अनेशन्नस्य याऽइषव आभुरस्य निषङ्गधिः ।।

जया:—विश्वभद्रां जयारक्तां रक्ताम्बरधरां श्रियम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ।।

प्रार्थना:—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।

देवसेना:- मयूरवाहनारूढां शक्तिखड्गधनुर्धराम् ।
आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ।।

प्रार्थना:—ॐ देवानाम्भद्रासुमतिर्ॠजूयतान्देवाना ँ रातिरभिनोनिवर्त्तताम् । देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवाऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे

स्वधा: - कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति ।
पितृलोकार्चितान्देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ।।

प्रार्थना:-ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्

स्वाहाः— हविर्गृहीत्वा सततन्देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
स्वर्गंल्लोकार्चितास्वाह समागच्छ ममाध्वरे ॥

प्रार्थना:—ॐ स्वाहायज्ञ मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहाद्यावा-
पृथिवीभ्यां ँ स्वाहा वातावारमे स्वाहा ।

मातृः— भूतग्राममिदं कृत्स्नं यया उत्पादित पुरा ।
त्रैलोक्यपूजितां देवीं मातृरावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना:—ॐ आपो अस्मान्मातर शुन्धयन्तु घृतेन नोघृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वँहरि प्रप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ।
दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वाशिवाँशग्मान्परिदधे भद्रं वर्णपुष्यन्।

लोकमातृः - आवाहयेल्लोकमातृ जगत्पालनसंस्थिताम् ।
शक्राद्यैर्वन्दितां देवीं स्तवज्ञैश्च सुरैरपि ॥

प्रार्थना:—ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभु च
मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मे
मञ्च मे क्षुच्चमेयाज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

धृतिः—मनस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् ।
सर्वं कामसमृद्ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ।

प्रार्थना:— ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

पुष्टिः— प्रणता या सर्वं लोकेऽस्मिन्पुत्रपुष्टिसुखप्रदा ।
सर्वेभ्यश्चापि वरदा विद्युज्ज्वालार्कंकुण्डला ॥

प्रार्थना–ॐ तत्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानोहविर्भि
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः।

तुष्टिः– आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोकेषु पूजिताम्।
सन्तोषभावनादींश्च रक्षणायाध्वरे मम॥

प्रार्थनाः—ॐ बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रा ँऽअपबाधमानः
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्।

आत्मकुलदेवीः–तामात्मार्बिहितां देवीं सर्वकामफलप्रदाम्।
वंशरक्षाकरीं गोत्रीं देवीमावाहयाम्यहम्।

प्रार्थनाः—ॐ प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा
अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिकेनमानयति कश्चन् ससस्त्यश्वकः
सुभद्रिकाङ्कांम्पीलवासिनीम्॥

❋ षोडशमातृका पूजा ❋

ततः हस्तयो पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा षोडशमातृकाभ्यो नमः
गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थनाः—ॐ गौरीपद्माशचीमेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधास्वाहा मातरो लोकमातरः॥

हृष्टिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

ततो मनोजूतिरिति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य हस्तयोः पुष्पाञ्जलिं
गृहीत्वा–ॐ गौर्यै नमः, ॐ पद्मायै नमः, ॐ शच्यै नमः, ॐ मेधायै
नमः, ॐ सावित्र्यै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ जयायै नमः

ॐ देवसेनायै नमः, ॐ स्वधायै नमः, ॐ स्वाहायै नमः, ॐ मात्रे नमः, ॐ लोकमात्रे नमः, ॐ हृष्टयै नमः, ॐ पुष्टयै नमः, ॐ तुष्टयै नमः, ॐ आत्मकुलदेव्यै नमः ।

अथ वसोर्द्धारापूजनम्

आग्नेयां काष्ठ फलके कुङ्कुमादिना बिन्दुकरणेनालङ्करणं कृत्वाऽग्रामिमन्त्रं पठन् सप्तधाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात् । घृतेन सप्तधारा करणम्:—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा ॥

गुडेनैकीकरणम् — ॐ कामधुक्षः ।

श्रियादि सप्तमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च ।
गुडेन संशयिष्यामि स्युस्ताः सर्वार्थसाधिकाः ।

श्रीः—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूना ᳪ रूपमन्नस्य
रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।

लक्ष्मीः- ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण

धृतिः—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

मेधाः— ॐ मेधाम्मे वरुणोददातुमेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥

स्वाहा:—ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

प्रज्ञा:—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।

सरस्वती:—ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधिया वसुः । ॐ मनोजूतिरित्यनेन प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत्

प्रार्थना—ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—ॐ सप्तमातृकाभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ श्रियैनमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ धृत्यै नमः, ॐ मेधायै नमः, ॐ स्वाहायै नमः, ॐ प्रज्ञायै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः ॥

सामूहिक प्रार्थना:—ॐ यदङ्गत्वेन भोदेव्य; पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ।

❀ ग्राम सप्तघृतमातृका ❀

ललितादि सप्तमातृकाभ्यो नमः । वसोः पवित्रमसि इत्यावाह्य, ॐ ललितायै, उमायै, गौर्यै, अम्बिकायै, सलिलाश्रयायै भगाह्यै, भगाक्ष्यै नमः । इति सर्वोपचारैः सम्पूज्य ।

प्रार्थना— ललिता च उमागौरी अम्बिकासलिलाश्रया ।
भगाह्वी च भगाक्षी च सप्तैताघृतमातृकाः ॥

सप्तदेवमातृका पूजा

ब्राह्म्यै, माहेश्वर्यै, कौमार्यै, वैष्णव्यै, वाराह्यै, इन्द्राण्यै चामुण्डायै नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव कौमारीवैष्णवी तथा ।
वाराहीन्द्राणी चामुण्डा सप्तैता देवमातृकाः ।। शातातप

अष्टप्रत्यक्ष मनुष्यमातृकापूजाः

तिस्रः पूज्या पितु पक्षे तिस्र पूज्यास्तु मातृके ।
इत्येता मातरश्चाष्टौ पितृमातृष्वसाष्टमी । चतुर्विंशतिमते

माता १ पितामही २ प्रपितामही ३ मातामही ४ प्रमातामही ५ वृद्धप्रमातामही ६ पितृष्वसा ७ मातृष्वसा ८ । इत्यष्ट मनुष्यमातृभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

प्रार्थना:-ॐ मातापितामहीत्यादि मातामह्यादिकं च षट् ।
पितृमातृष्वसाद्यष्टौ वरदाः सन्तु मातृकाः ।।

प्रत्यक्षा प्रत्यक्षमेव कुंकुम-कुसुम-वस्त्राभरण-भोजनैः पूजनीयाः ।
परोक्षास्तु देवमातृवद अक्षतादि पुञ्जेष्वावाह्य पूजनीयाः ।।

पञ्चोङ्कार पूजनम्

पञ्चोङ्कारेभ्यो नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, गायत्रीदेव्यै नमः, गोवर्धनेश्वराय नमः, पृथिव्यै नमः, यज्ञपतये नमः, सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । एवं पञ्चोङ्कारान् सम्पूज्य ।

प्रार्थना:-ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्धनेश्वरः ।
पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पञ्चोङ्कारान्नमाम्यहम् ।।

सूचना:—पञ्चोङ्कार पूजा षोडश मातृकापूजा से पहले कर लेनी चाहिए।

आयुष्यमन्त्र जप:—ॐ आयुष्यं वर्चस्यꣳरायस्पोष मौद्भिदम्
इदꣳहिरण्य वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम् ॥

❀ अथ नान्दीश्राद्धारम्भः ❀

यजमानः-कृत हस्तस्नानः माङ्गलिक वस्त्र भूषित उत्तराभिमुख
शुभासने चोपविश्याचम्य ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु इत्यादिन्यास
विधिं विधाय प्राणान् यम्य स्वदक्षिणभागे भूमौ गन्धादि
चतुष्कोणं मण्डलं कृत्वा तत्र शङ्खचक्रे लिखित्वा गन्धाक्ष
पुष्पाणि तूष्णीं प्रक्षिप्य तत्रासनार्थं दूर्वाङ्कुरत्रयं संस्थाप्य
तदुपरि कर्मपात्रं पात्रे पवित्रं पवित्र स्थाने दूर्वाङ्कुरत्रय-

कर्मपात्रेपवित्रक्षेप:-ॐपवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य
च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।।
देवीरापो ऽअग्रेगुवोऽअग्रे पुवोग्रऽइममद्य यज्ञपतिꣳसुधा
यज्ञपतिं युवम् ।।

जल प्रक्षेप:—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये
शंय्योरभिस्रवन्तुन ।

यव प्रक्षेप:-ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ।

कर्मपात्रे—गन्धादीनि तूष्णीं प्रक्षिप्य ।

यजमानः—कर्मपात्रं सम्पन्नम ।।

विप्रः-सुसम्पन्नम्। तेन जलेन आत्मानं सम्भारांश्च संप्रोक्ष्य

अभिषेकः—ॐ यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः ।१।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम् ।
वायुर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः ।२।
ॐ यदि जाग्रद् यदि स्वप्नऽएनाꣳसि चकृमा वयम् ।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः ।३।
इति कूष्माण्डसूक्तम् ॥

आत्माभिषेकः—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।

देव गायत्रीः—ॐ देवताभ्यो देवताभ्यो देवताभ्यो नमो नमः ।
नमः स्वाहायै स्वाहायै स्वाहायै च नमो नमः ॥

❋ पञ्चसर्षपदूर्वाभिर्दिग्बन्धः ❋

ॐ अग्निष्वात्ता पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशम् ।
तथा बर्हिषदः पान्तु याम्यां मे पितरः स्थिताः ॥
प्रतीचीमाज्यपाः पान्तु उदीचीमपि सोमपाः ।
विदिशश्च गणाः सर्वे रक्षन्तूर्ध्वमधोऽपि वा ॥
रक्षो भूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ।
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ॥
यथा रक्षन्तु दिग्जातान् धर्मा रक्षन्तु राक्षसान् ।

पंक्ति वै श्रोत्रियो रक्षेदतिथिश्च सर्वं रक्षक ॥

शेष यवसर्षपादिकेन नीवीबन्धनम् ।

दिग्बन्ध से बची सरसों नीवी में बान्ध दें ।

दक्षिणकट्याँ नोवीबन्धनमः—ॐ सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ॥※

ततो गायत्री मन्त्रेण कर्मपात्रजलमभिमन्त्र्य तेन जलेन शूद्रादि दृष्टि निपातात् संघर्षणादि दोषाद् आमान्नादीनां पवित्रतास्तु। इति सम्प्रोक्ष्य ।

स एव दूर्वाभिः संकल्पः—ॐ तत्सदद्य गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानां देवानां द्वि गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानाममुक कृत्याङ्गत्वेन सांकल्पिक विधिना सत्यवसु संज्ञक विश्वेदे पूर्वकमाभ्युदयिक श्राद्धं करिष्ये । तत उत्तर वृद्धचा यवजलान्यादा

विश्वेदेवेभ्य आसनदानम्:- ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादित्र सपत्नीक मातामहादित्रयाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्यव संज्ञका विश्वेदेवा भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै। इत्यासनं २ वा ४ । तदुपरि स यव जलाद्या कुर्यात् । तत पश्चिम वृद्धचा यव जलान्यादाय ।

※नीविबन्धविधिः—(१) नीविवासो दशाँशेन स्वरक्षार्थं प्रबन्धयेत् । आश्वला
(२) दक्षिणे कटिदेशे तु तिलै सह कुशत्रयम् । याज्ञवल्क
(३) द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीण्यासने तथा।
वामकुक्षौ शिखायां च सकृद् यज्ञोपवीतके । हेमाद्रि
(४) शूद्रस्य पित्रादिश्राद्धे मोटकबन्धनम् । मथुरेश

पित्रादिभ्यः आसनदानम्:— ॐ तत्सदद्य गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखा देवाः सांकल्पिकाभ्युदयिके इदमासनं सुखासन स्वाहा । वृद्धि वृद्धि श्रियै । इत्यासनं २ वा ४ । तदुपरि सयव जलं त्यजेत् ।

मातामहादिभ्यः आसनदानम्:- ॐ तत्सदद्य २यगोत्रा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा सपत्नीका नान्दी मुखा देवाः सांकल्पिकाभ्युदयिके इदमासनं सुखासनं स्वाहा । वृद्धि वृद्धि श्रियै इत्यासनं २ वा ४ तदुपरि सयव जलं त्यजेत् ॥

देवानां पादप्रक्षालनम्:-ॐ नान्दीमुखाः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः सांकल्पिकाभ्युदायिके इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः वृद्धिः । २ वा ४ ।

पित्रादिपाद प्रक्षालनम्:-ॐ तत्सदद्य गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामहा नान्दीमुखा देवा सपत्नीका सांकल्पिकाभ्युदयिके इदं वः पाद्य पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः वृद्धिः २ वा ४ ।

मातामहादि पादप्रक्षालनम्:— ॐ तत्सदद्य २यगोत्रा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखा देवाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्य पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः वृद्धिः २ वा ४ ।

आसनोपरिपूजामन्त्रः— ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तः रक्षन्ति सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो- ऽस्वप्नजौ सत्र सदौच देवौ इति गंधादिकं समर्प्यं ।

देवेभ्यो गन्धादिदानम्:-ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादित्रय सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध संबन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका बिश्वेदेवा आसनार्चन विधौ इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूल धौतोपवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथा विभाग वो नम स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै । २ वा ४ ।

पित्रादिभ्यो गन्धादिदानम्:- ॐ तत्सदद्य गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखा देवाः आसनार्चन विधौ इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूल धौतोपवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै । २ वा ४ ।

मातामहादि गन्धादिदानम्:-ॐतत्सदद्य २वगोत्रा मातामह प्रमाताम वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दी मुखा देवा आसन चंनविधौ इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूल धौतोपवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथा विभागं बिभज्य वो नमः स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै । २ वा ४ ।

आसनोपरिपूजा—ॐ सप्तऽऋषयः । ॐ यथेमां वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्याँशूद्रायचार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु । इति मन्त्राभ्यां आसनोपरिपूजां कृत्वा । आसनानामुपरिष्ठादन्नं संस्थाप्य । अत्राम्युदयिके पक्वान्नाभावे आममन्नं तदभावे हिरण्यं तदभावे ब्राह्मण भोजन पर्याप्तान्नंनिष्क्रयीभूतं द्रव्यमिति धर्मसिन्धुः ।।

देवानां परिवेषणम्:-ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादि त्रय सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा आसनार्चनविधौ इदमामान्नं पक्वं वा दधिमधुकर्कन्धुयवमयं सोपस्कर यथा विभागं वो नमः वृद्धिः वृद्धिः श्रियै । २ वा ४ ।

पित्रादीना परिवेषणम्.-ॐ तत्सदद्य गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखाः देवा आसनार्चनविधाविदमामान्नं पक्वं वा दधिमधुकर्कन्धुयवमयं सोपस्करं यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै । २ वा ४ ।

मातामहादीनां परिवेषणम्:-ॐ तत्सदद्य २गोत्र मातामह प्रपितामह वृद्ध प्रमातामहा सपत्नीकानान्दीमुखा देवा आसनार्चन विधाविदमामान्नं पक्वं वा दधिमधुकर्कन्धुयवमयं सोपस्करं यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै । २ वा ४ ।

शाल्यन्नं दधिमध्वक्तं वदराणि यवाँस्तथा ।
मिश्रीकृत्य तु चतुरः पिण्डान् श्रीफल (विल्व) सन्निभान् ॥
दद्यान्नान्दीमुखेभ्यश्च पितृभ्यो विधिपूर्वकम् ।
द्राक्षामलकमूलानि यवांश्च विनियोजयेत् ॥
तान्येव दक्षिणार्थन्तु दद्याद्विप्रेषु सर्वदा ॥ इति चन्द्रोदये ब्राह्मे
द्वौ द्वौ चाभ्युदयेपिण्डावेकैकस्मै विनिक्षिपेत् ।
एकं नाम्ना परं तूष्णीं दद्यात् पिण्डान् पृथक् पृथक् ॥
प्राङ्मुखो देवतीर्थेन प्राक्कूलेषु कुशेषु च ।
दत्वा पिण्डान्नकुर्वीत पिण्डपात्रमधोमुखम् ।
"नान्दी मुखेभ्यः पितृभ्यः स्वाहेति वा दानमन्त्रः ॥
तत्रैव भविष्ये ।
पिण्डाः कृताकृता इत्युक्तम् ।
पिण्ड निर्वपणं कुर्यान्न वा कुर्याद्विचक्षणः ।
वृद्धिश्राद्ध महाबाहो कुलधर्मानवेक्ष्यतु ॥

देवानां दक्षिणासंकल्पः—ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः तथा सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः अमुककर्माङ्गत्वेन कृतस्याभ्युदयिकस्य फलप्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इयं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीदक्षिणा यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै २ वा ४।

पितृणाँदक्षिणासङ्कल्पः—ॐतत्सदद्यगोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखाः सपत्नीकानान्दी मुखा तथा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता हाः नान्दी मुखा देवाः अमुक कर्माङ्गत्वेनकृतस्याभ्युदयिककर्मणः साद्गुण्यार्थं इदं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणी दक्षिणां यथा विभागं वो नम स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै ४। ८।

आत्मपतिलकम्ः—सत्यानुष्ठान निरताः सर्वदा यज्ञबुद्धयः।
पितृमातृपराश्चैव सन्तस्मत्कुलजानराः॥

विशेषपूजाः—आयुः प्रजांधनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीतापितामहा॥
आयु पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशुं सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात्पितृपूजनात्॥

अथाक्षय्योदकस्थाने दद्यात् क्षीर यवादिकम्। इतिस्मृतिवचनात्

क्षीरंयवोकदानम्— नान्दी मुखाः सत्य वसुसंज्ञका. विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् गोत्राः पितृपितामह प्रपितामहा सपत्नीका नान्दी मुखा देवा प्रीयन्ताम्। २सपत्नीका मातामह प्रमातामह वृद्ध-

प्रमातामहाः सपत्नीका नान्दी मुखाः देवा प्रीयन्ताम् ॥

आशिषोग्रहणम्– गोत्रन्नो वर्द्धताम् । अभिवर्द्धन्तां वो गोत्रम् । दातारो नोभिवर्द्धताम् वर्द्धन्तां वो दातारः वेदाश्चनोभिर्द्धन्ताम् अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः । सन्ततिर्नोभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वः संततिः । श्रद्धा च नो माव्यगमत् । माव्यगमत् श्रद्धा । बहुदेयञ्च नो ऽअस्तु । अस्तु वो बहुदेयम् । अन्नञ्चबहुभवेत् । भवतुवोवह्वन्नम । अतिथींश्चलभामहै । लभतां वो ऽतिथयः । याचितारश्चनः सन्तु । सन्तु वो याचितारः । मा च याचिष्म-कञ्चन । मा याचेथाः । एताः सत्या आशिष सन्तु । सन्त्वेताः सत्या आशिषः ॥

देवगायत्री—ॐ देवताभ्यो देवताभ्यो देवताभ्यो नमो नमः । नमः स्वाहायै स्वाहायै स्वाहायै च नमो नमः । इति त्रिर्जपेत्

देवविसर्जनम्-ॐवाजे वाजे वतबाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृताऽऋतज्ञाः अस्य मध्वः पिवतामादयध्वं तृप्यता यातपथिभिर्देवयानैः ।

अनुव्रजनम्—ॐआमावाजस्य प्रसवोयगम्यादेमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे आमागन्तां पितरोमातरश्चा मा सो मो ऽअमृतत्वेन गम्यात् ।

पूर्णतावाक्यानि –इदमाभ्युदायिकं श्राद्ध विधिहीनं देशहीनं कालहीनं वाक्यहीनं श्रद्धाहीनं दक्षिणाहीनं च यत् कृतम् । तत्सुकृत मस्तु यन्नकृत तत् श्रीविष्णोः प्रसादात् ब्राह्मणानां वचनाच्चे परिपूर्णमस्तु ॥

विप्राः—ॐ अस्तु परिपूर्णम् । त्रिर्ब्रूयुः ।

ॐ तद्विष्णोः परमं पद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।

यस्य स्मृत्वा च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः।

आचार्यदक्षिणाः-ॐ तत्सदद्य० अमुककर्माङ्गतया कृतस्याभ्युदयिक-
श्राद्धस्य साङ्गफला तये इदं हिरण्यं दक्षिणात्वेनामुकशर्मणे
तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम

सूर्यायार्घ्यदानम्- ॐ ह ँ सः।

क्षमाप्रार्थना-कामतो ऽकामतो वापि यत्करोमि शुभाशुभम्।
तत्सर्वं त्वयि सन्यस्त त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम्। इति जलम्।

आसनवन्दनम् विशेष – आसत्यलोकापातालादालोकालोकपर्वतात्।
ये सन्ति ब्राह्मणाः पुण्यास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः।
न च स्मरेदृषिश्छन्दः श्राद्धे वैतानिके मखे॥
अतोनात्र ऋष्यदि स्मरणम्।

। शुभमस्तुतराम्॥

इति वैद्यप्रवर पण्डित श्री चरणदासात्मज विहारिलाल शास्त्रि
संकलितं सांकल्पिकं नान्दी श्राद्धं सम्पूर्णम्॥

❀ अथ ब्राह्मणवर्णादौ वरणश्राद्धम् ❀

"वरणश्राद्धम्" ।। यजमान स्वपादौ करौ प्रक्षाल्याचामेत् ।। अक्षतैर्दिग्बंधः ।। स्वस्तिरस्तु या० । चतुर्षु दिक्षु अक्षतान् विकीर्य- सांकल्पिकेन विधिना वरणश्राद्धोपहाराणां पवित्रताऽस्तु । देशकाल- पाकपात्रान्नद्रव्य श्रद्धासंपदस्तु ।। जलमादाय- अद्येत्यादि० सांकल्पिकेन विधिना वरणश्राद्धं करिष्ये ।।

जलं गृहीत्वा- आचार्यादृत्विग्भ्यो यथादत्तं गंधाद्यर्चनं संपन्नं सुसंपन्नम् । अर्चनविधेः पारिपूर्णताऽस्तु ।। दीपादीनां प्रदत्तानामिदं वो ज्योतिः सुज्योतिः❀ । शेषोपचारा विधिवद्भवन्तु । आचार्याद्यृत्विग्भ्यः अद्याह्नि भोजनं (दत्तं) दास्यमानं (वा) संपन्नं सुसंपन्नम् । आचार्याद्यृत्विग्भ्यो दक्षिणाः संपन्नाः सुसंपन्नाः ।। तिलकमाशीर्वादः ।। यजमानहस्ते कंकणबन्धनम् ।।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे रक्ष हि माचल ।१।

इति यजमानहस्ते कंकणबन्धनं कुर्यात् ।। ततः पत्नीवामकरे कंकणं बध्नीयात् ।। यथा

माङ्गल्यं तन्तुना येन भर्तुर्जीवनहेतुना ।।
हस्ते बध्नामि सुभगे संजीव शरदः शतम् २। इति ।

।। इति वरणश्राद्धम् ।।

❀ गन्धः सुगन्धः, पुष्पं सुपुष्पं, अक्षताः स्वक्षताः
धूपः सुधूपः, दीपः सुदीपः, नैवेद्यं सुनैवेद्यं, इत्यादिः

❋ अथ ब्राह्मणवरणम् ❋

ततो यजमान अस्मिन् विष्णुयागकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुं ममुकगोत्रामुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धाक्षत ताम्बूल सुवर्णपवित्रासनकमण्डलु धौतोत्तरीय वासोभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। एवं ब्रह्माणादीन् विप्रान् वृत्वा सम्पूज्य। ॐ व्रतेनदीक्ष माप्नोति० इत्यादिना विप्रदक्षिणकरेषु रक्षासूत्रबन्धनम्। (प्राक्कुण्डे ऋग्वेदिनावृत्वजौ याम्यकुण्डे यजुर्वेदिनौ। प्रत्यक्कुण्डे सामगौ। उत्तरकुण्डेऽथर्वाणौ) तत एवमेवाष्टौ चतुरो वा द्वारपालान् वृणुयात्। तत एकैक वेदिकौ द्वौ द्वौ जापकावेकैकं वा पूर्वादिदिशिवृणुजात्। पंचकुण्डी पक्षेत्वष्टौ होतार। अष्टौ जापका:। अष्टौ द्वारपाला गुरुश्चैवंपञ्चविंशतिऋत्विजो भवन्ति। अत्राशक्त। अष्टौ होतारश्चत्वारो जापकाश्चत्वारो द्वारपाला गुरुश्चेति सप्तदश। अत्राप्यशक्तौ चतुरोहोतृंश्चतुरो द्वारपालांश्चतुरो जापकान्गुरुंचेति त्रयोदश। अत्राप्य सामर्थ्येह्येकाग्नि विधिना कर्मकर्तुमाचार्य ब्रह्माणं च द्वौ। ततः आचार्यादीनां समस्त विप्राणां मधुपर्कविधिना पूजा प्रयोगो विधेयः। अर्थात् यज्ञे महाऋत्विजः षडष्यीः भवन्ति। ततः यजमान कुता।

प्रार्थनाः—ब्राह्मणा सन्तु मे शास्ताः पापात्पान्तु समाहिताः।
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः।
देवानां च पितृणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः।
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्॥

रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञेष्ववस्थिताः ।
ब्राह्मणाजङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥
येषां वाक्योदकेनैव शुद्धयन्ति मलिनो जनाः ।
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥
सर्वकर्मरतानित्य वेदशास्त्रार्थकोविदाः ।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा ।
यद्वाक्यामृत संसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नर द्रुमाः ।
अंगीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषाः ॥
यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः ।
यत्कृपा लोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ॥
अक्रोधनाः शौचपराः सतत ब्रह्मचारिणः ।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥
अदुष्टभाषिणो नित्यं मा सन्तु परनिन्दकाः ।
ममापि नियमाह्येते भवन्तु भवतामपि ।

आचार्य प्रार्थना—मन्त्रमूर्तिभवान्नाथ संसारोच्छेदकारक ।
साङ्गं कर्म यथा मे स्यात् तथा कुरु हि भूसुर ॥
संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः ।
प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति ॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।
सुप्रसादेन कर्तव्यं शान्तिकं विधि पूर्वकम् ॥

आचार्यो निम्नान् नियमान् विप्रेभ्यो यजमानेभ्यश्च श्रावयेत्-

क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
देवपूजाग्निहवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम् ।
उपवीती बद्धशिखो धीरो मौनी दृढव्रतः ।

धौतवासाः पञ्चकच्छोद्भिराचाम कृताह्निक ।
नैकवस्त्रोनान्तरालेन द्वीपेनार्द्र वाससा ॥

नकुर्यात्कस्यचित्पीडां कण्डून्मीलनवर्जित ।
न पदापादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ ।

न चासमाहितमना न च संश्रावयन् जपेत् ।
न च क्रमन्न च हसन्न पार्श्वानवलोकयन् ॥

जप काले न भाषेत नान्यानि प्रेक्षयेद्बुधः ।
न कम्पयेच्छिरो ग्रीवं दन्तानैव प्रकाशयेत् ।

न द्रुतं नापि विश्रान्तं क्रमान्मन्त्रं जपेत्सुधीः ।
क्रोधं मोहं क्षुधां निद्रां निष्ठीवनविजृम्भणे ॥

दर्शनं च श्वनीचानां वर्ज्जयेज्जपकर्मणि ।
पादप्रसारणं नैव कांस्य पात्रे न भोजनम् ॥

श्रद्धोत्साही मन स्थैर्यं त्रिकालं देवतार्चनम् ।
जपहोमादिषु नरमन्यं नाकारणात् स्पृशेत ॥

नालस्यं सौमनस्यं हिंसा शान्तिरेव च ।
मन्त्राधिष्ठातृदेवानां ध्यानं धारणमर्थतः ॥

पवित्रपाणिस्तिलकी ताम्बूलपरिवर्जनम् ।
असूयाद्वेषद्रोहेर्ष्या प्रहासपरिवर्जनम् ॥

मञ्चखट्वादिशयनं प्रातराहारवर्जनम् ।
परस्परमनिन्दा च न क्षौरं नातिभोजनम् ॥

निरर्थकं न संलापो नाङ्गानां चालनं मुधा ।
स्नानं त्रिषवनं चैव गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

वैश्वदेवं तथातिथ्यमथैकासनसंस्थितिः ।
प्रियावाणी प्रसन्नत्वं तत्तन्मन्त्रार्थचिन्तनम् ॥

आचार्यकथने स्थेयान्न प्रतिग्रहमाचरेत् ।
हविष्याशीमिताहारी लोभदम्भविवर्जितः ॥

अत्वरः सकलान् मन्त्रान् जपे होमे प्रयोजयेत् ।
दूरतः सन्त्यजेत्सर्वं मादकद्रव्यसेवनम् ॥

न यज्ञमण्डपे हस्तपादप्रक्षालन क्वचित् ।
नान्यं प्रतिनिधिं कुर्यान्न पर्युषितभुग्भवेत् ।

वर्तमाने जपादौ च लघुशङ्कादिकं त्यजेत् ।
कृतेऽपि तत्क्षणं वस्त्रमन्यद्धृत्वासनं भजेत् ॥

मृगीमुद्रामुपाश्रित्य यथार्थं हुतमाचरेत् ।
न स्यूतवासा नोष्णीषी नापि पारक्यवस्त्रभृत् ॥

अभ्यङ्गोन्मर्दने नैव सदा साधुमना भवेत् ।
अकौटिल्यं च स्वाध्यायं तितिक्षामार्जन भवेत् ॥

आदिष्टसमये कुर्यात् गमनागमने बुधः ।
जृम्भावीनामधः स्पर्शेनिमित्ते ऽप उपस्पृशेत् ।।
यद्वा सर्वोपघातेषु संस्मरेद्विष्णुमव्ययम् ।
पालयेद्यज्ञभाग्विद्वान द्रढिम्नानियमानिमान् ।।
अज्ञानादथवा मोहात्प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः ।।

अथ वरुणश्राद्धम्

ततो वरुण श्राद्धार्थं नानानाम गोत्रान् अमुकशर्मणोविप्रान् विष्णुयागाङ्गीभूतवरुण श्राद्धे युष्मानहं वृणे । वृताः स्म इति प्रतिवचनम् । ततः वरुणं साङ्गं प्रतिमादौ सम्पूज्य

संकल्प—अद्येत्यादि वृतानां ब्राह्मणानामासनाद्यर्चनमहं करिष्ये। वरुणश्राद्धे वरुणरूपेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इमानि आसनपाद्यार्घ्या-चमनगन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्य यज्ञोपवित वस्त्रालङ्कारादीनि ब्राह्मणेभ्यो नम इति दद्यात् । प्राजापत्यान्युपवीतानि बार्हस्पत्यानि वस्त्राणि अग्निदैवतानि सुवर्णनिर्मित्तानि कुण्डलाद्यलङ्कारादीनिताम्बूलादीनि मधुपर्कपात्रादीनि वरुण-रूपेभ्यः समस्त ब्राह्मणेभ्यः स्वाहा सम्पद्यताम् । आशिषो गृह्णीयात्

अथ जलयात्राप्रयोगः

यजमानः सपत्नीकः सुप्रक्षालितपणिपादः पुत्रपौत्रादिबान्धव-युक्तः सन् दधिमधुघृतदुग्धशर्करागन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्य पूगी-फलताम्बूलानां दक्षिणां तानि च पूजनार्थानि सुदृढ कलश कनककुंकुम

पञ्चरत्नानि पञ्चपल्लवदूर्वा आर्द्रचणक व्रीहि माषाश्चपक्वाः । ततः सुवासिनीभिः जीवत्पुत्रीभिः पतिव्रताभि मोहादि दोषरहिताभिः सर्वब्राह्मणसुहृत्सहित सन् ध्वजपताकालंकृतानि गजरथाश्वादीनि अन्यानि च नरयानानि चतुरस्रविमानानि शिविकादीनि शकटादीनि वा समारुह्य शंखभेरीमृदंगादि चतुर्विधवादित्र नादितदिङ्मण्डलो मागधचारणादि प्रगीतवंशप्रशस्तिः सन् वाद्यादि वैदिकमन्त्रघोषेण च नदीतडागादौ गच्छेत् । तत्र थण्डिलत्रयकरणम् एकं गणेशाम्बिकयोः स्थापनार्थं यजमानस्याग्रे । द्वितीयं तदग्रे तृतीयं द्वितीयादुत्तरतो वितस्तिमात्रांतरे प्रथम तृतीये हस्तमिते द्वितीय द्विहस्तमात्र कृत्वा अद्येत्यादि देशकालौ स्मृत्वा ।

संकल्पः-मम सपत्नीकस्य आयुरारोग्यै वर्यादि वृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थममुक विष्णुयाग कर्मांगत्वेन जलयात्रा कलशानां जलमातृकाणां वरुणस्य गणेशाम्बिकयो स्थापनप्रतिष्ठा पूजनाद्यर्चनमहं करिष्ये । इति संकल्प्य रक्तवस्त्रोपरि तण्डुलैः पद्मं कृत्वा तदुपरि नवकलशानां स्थापनम् । तत्रअष्टदिक्षु अष्टौ कलशान् नवमकलशं प्रधानं मध्ये च स्थापयेत् । ततः आनोभद्रा० इत्यादि शान्ति सूक्तं (रात्रिवर्गं) पठेत् । स्थापित कलेषु वरुणं संपूज्य तीर्थान्यावाहयेत् ।

तीर्थावाहनम् - आगच्छन्तु महाभागाः समुद्राः सरितो ह्रदाः ।
प्रभासं पुष्करं चैव विशाला विरजागया ॥
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च भद्राकर्णं पृथूदकम् ।
गंगा च यमुना चैव ब्रह्मपुत्रा सरस्वती ।

गोदावरी पयोष्णी च नदी चर्मण्वती तथा ।
शतद्रुः पुष्करश्चैव शोणश्चैवमहानदः ॥
तुंगभद्रा च सिंधुश्च पारावारस्तथैव च ।
क्षिप्रा वेदवती चैव पुण्यो जम्बूनदस्तथा ॥
विपाशा कौशिकी चैव नदी दुःस्वप्ननाशिनी ।
स्वर्णरेखा महीचैव भव्यं रुद्रमहालयम् ॥
विष्णुपदं महातीर्थं गंगासागर संगमः ।
अर्धतीर्थं महापुण्यं कुशावर्तं तथैव च ॥
भृगुकुत्सं कर्दमाल शक्तिभेदोऽरिसगमः ।
एवमादीनि तीर्थानि यानि सन्ति धरातले ।
आयान्तु तानि सर्वाणि कलशेषु समन्ततः ।
आवाहयामि तीर्थानि पूजार्थं यागमण्डपे ॥

यजमानः—कलशान् स्पृष्ट्वा कुर्यात् । ततः कलशोपरि शरावेषु तण्डुलैनैव अष्टदलानि कृत्वा तेषु जलमातृः स्थापयेत् । तत्रादौ यजमानाग्रे स्थण्डिलोपरि अष्टदलं कृत्वा तत्र गणेशाम्बिके स्थापयेत् तद्यथा ।

गणेशावाहनम्-एहि भालवृनबालसुधांशो विघ्नवारण विदारण सिंह ।
एकदन्त विपदन्तकरस्त्न श्रीगणेशजगदीश नमस्ते ॥
ॐ गणानान्त्वेति आवाह्य संपूज्य ततः प्रार्थयेत् ।

गौर्य्यावाहनम्—ॐ प्रणम्य मातरं देवीं सुशान्तां शुभलक्षणाम् ।
विष्णयागसिद्धयर्थमावाहयेदम्बिकामिह ॥

जलमातृकास्थापनम्-पूर्वादिक्रमेणाष्टकुम्भोपरि जलमातृणामावाहनम्

जलमातृकाणां नामानि पूर्वकुंभोपरि उर्म्यादिसप्तमातृका-

ऊर्मिर्लक्ष्मीजलापाना वारुणी जलवासिनी ।

आपगा च क्रमेणैव सप्तैता जलमातरः ॥

पूर्वेऊर्मी—महार्णवे समुद्भूतां कल्लोलान्दोलवर्द्धिनीम् ।

मोहयन्तीं जगत्सर्वमूर्मिमावाहयाम्यहम् ॥

आवाहनम्—ॐ वृष्ण ऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण

ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि । वृष सेनोऽसि राष्ट्रदा

राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रद राष्ट्रममुष्मै देहि ।

आग्नेयकुंभे—पद्मासनसमासीनां पद्महस्तां हरिप्रियाम् ।

अम्भोधितनयां देवीं लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥

आगच्छ वरदे देवि जलमातर्नमोस्तुते ।

लक्ष्मीमावाहनम्—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे

नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण

सर्वलोकम्म ऽ इषाण ।

दक्षिणकुंभोपरि—प्रलयान्ते महाघोरे एकोदधिकृतां महीम् ।

अम्बुमूर्तिधरां देवीं जलामावाहयाम्यहम् ॥

जलामावाहनम्-ॐद्युभिरक्तुभिः परिपातमस्मानरिष्टेरश्विमा सौभगेभिः

तन्नो मित्रो वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ।

नैऋतकुम्भे चतुरशीति संख्याका जन्तवो योनि संभवाः ।

मायाधाराः कृतास्तस्मात्पानामावाहयाम्यहम् ॥

पानावाहनम्-ॐ अन्तरामित्रावरुणाचरन्ती मुखं यज्ञानामभिसंविदाने
उषासाबा ँ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्ययोमाविहसादयामि ।

पश्चिमकुम्भे–वरुणस्य प्रिया देवीं पावनीं भुवनत्रये ।
सर्वाभरणशोभाढ्यां वारुणीमावाहयाम्यहम् ।।
आगच्छ वरदे देवी विशुद्धजलवासिनि ।

वरुण्यावाहनम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद ।।

वायव्यकुम्भे–जलजन्तून्विना नैव यानि तीर्थानि सर्वतः ।
आवाहयामि तां देवीं विशुद्धां जलवासिनीम् ।

जलवासिन्यावाहनम्–ॐ अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रदानायचोदयावाचं
विष्णु ँ सरस्वती ँ सवितारंञ्चवाजिन ँ स्वाहा ।

उत्तरकुंभे– रसातलं च पातालं यया व्याप्तं चराचरम् ।
जगदाधारभूतां चापगामावाहयाम्यहम् ।।
आगच्छ वरदे देवी यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ।

आपगामावाहनम्-ॐ अग्नऽइन्द्रवरुणमित्रदेवा शर्धः प्रयन्तमारुतोत
विष्णो उभाना सत्यारुद्रोऽधग्ना: सरस्वती जुषन्त ।

ऐशानकुम्भे–शुद्धोदधिसमुद्भूतां शुद्धवर्णजलप्रियाम् ।
शुद्ध्यर्थं जलकुम्भानां शुद्धामावाहयाम्यहम् ।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ।

शुद्धावाहनम्— ॐ होतायक्षद्वनस्पतिमभिह्विपिष्टतमयारभिष्ट-
यारशनयाधित । यत्राश्विनोश्छागस्य हविषः प्रियाधामानि
यत्र सरस्वत्यामेषस्यहविषः प्रियाधामानि यत्रेन्द्रस्य ऽऋषभस्य
हविषः प्रियाधामानि यत्राग्नेप्रियाधामानि यत्र सोमस्य
प्रियाधामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णप्रियाधामानि यत्र सवितुः
प्रियाधामानि यत्र वरुणस्य प्रियाधामानि यत्र वनस्पते
प्रियापाथाᳬंसि यत्र देवानामाज्यपानं प्रियाधामानि यत्राग्रे-
होतुः प्रियाधामानि तत्रैतान् प्रस्तु येवोपस्तुत्येवोपावस्तक्षद्र-
भीयसे इव कृत्वीकरदेवं देवोवनस्पतिर्जुषताᳬंहविहोतर्यज ।

मध्यकुम्भोपरि—आगच्छ जलदेवेशजलनाथ ह्यपांपते
तव पूजां करिष्यामि कुंभेऽस्मिन्सन्निधौभव ।।

वरुणावाहनम्— ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद ।

जीवमातृणां नामानि कुंभस्योत्तरतः—
मत्सी कूर्मी जलौका च दुर्दरी जलगोधिका ।
मकरी तन्तुकी चैव सप्तैता जीवमातरः ।।

मध्ये— रसातलसमुत्पन्ने मत्स्यदेव महार्णवे ।
मातंगि च प्रियेकृष्णे जीवमातर्नमोऽस्तु ते ।

मत्स्यावाहनम्—ॐ समुद्राय शिशुमारानालमतेपर्जन्याय मण्डूका-
नद्भ्यो मत्स्यान्मित्रायकुलीपयान् वरुणाय नाक्रान् ।।

पूर्वपत्रे-ह्रदे कूर्म्मसमुत्पन्नां गंभीरां चैव कर्मणि ।
पाताल जल संस्थाने जीवमातर्नमोऽस्तु ते ॥

कूर्म्यावाहनम्-ॐ कोऽसि कतमोसिकस्यासिकोनामासि । यस्य
तेनामामन्महियत्वासोमेनातीतृपाम् ॥ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः
प्रजाभिस्याॅसुवीरोवीरैः सुपोषः पोषैः ।

आग्नेयकोणे-श्वेताभ्रेबैसमुत्पन्नां जन्तुके जीवचारिणीम् ।
उत्पत्तिः सर्वभूतानां जीवमातर्नमोऽस्तुते ।

जलौक्यावाहनम्-ॐ यस्यास्ते घोर आसन जुहोम्येषां वन्धानाम-
वसर्जनाययान्त्वाजनो भूमिरिति प्रमंदते निर्ऋतित्वाहं परिवेदविश्वतः

दक्षिणपत्रे-कालाभ्रशिखराकारा विद्युतेजा च दुर्दरी ।
अर्द्धमाकाशसंस्थाने जीवमातर्नमो ऽस्तुते ॥

दुर्दर्या आवाहनम्- ॐ द्वारोदेवीरन्वस्यविश्वेव्रतादन्ते अग्ने ।
ऊरुव्यचसोधाम्नापत्यमाना: ।

नैऋत्यपत्रे-गोधिके गोसमुत्पन्ने सत्रग्दाम विभुषिते ।
सर्वाधारधरे देवी जीवमातर्नमोऽस्तुते ।

जलगोधिकाऽऽवाहनम्-ॐ गोमदूषणा सत्या अश्वावद्यासमश्विना-
र्वात द्रानृपाय्यम् ॥

पश्चिमपत्रे- नमस्ते देव देवेशि मकरेमदर्मर्दिनि ।
आश्रये सर्वभूतानाँ जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

मकरीआवाहनम्-ॐ मापोमोषधीर्हिॅसीः धाम्नो धाम्नो राजंस्ततो
वरुणनोमुञ्च । यदाहुरध्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुणनोमुञ्च

वायव्यपत्रे– अन्धकार समुत्पन्ने तन्तुके निर्मिते शिवे ।
दीप्तिरूपे त्रिभुवने जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

तंतुकी आवाहनम्–ॐ याते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनु ।
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥

उत्तरपत्रे—सर्वाधार धरे देवि कर्करि जीवमातृके ।
आश्रये सर्वभूतानां जीवमातर्नमोऽस्तु ते ॥

कर्करी आवाहनम्–ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेमनोघृतप्वः
पुनन्तु विश्वँहिरिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिभ्यः पूतएमि ।

ईशानपत्रे—नमस्ते देव देवेशि सर्पिणिमदमर्दिनि ।
सर्वाधारधरेदेवि जीवमातर्नमोऽस्तुते ।

सर्पिणी आवाहनम्–ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

अथ स्थलमातृका स्थापनम्

मध्य कलशस्य दिक्षु विदिक्षु च स्थलमातृकास्थापनम् ।

स्थलमातृकानामानि—उमा लक्ष्मीर्महामाया पानदेवी तथैव च ।
वारुणी निर्मला गोघाः सप्तैता स्थलमातरः ॥

पूर्वादि क्रमेण नाममन्त्रैः स्थापनम्–ॐ उमामावाहयामि स्थापयामि। ॐ लक्ष्मीमावाहयामि० । ॐ महामायामावाहयामि० । ॐ पानदेवीमावाहयामि० । ॐ वारुणीमावाहयामि० । ॐ निर्मलामावाहयामि० । ॐ गोधामावाहयामि० ।

प्रतिष्ठापनम्—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-
त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ं
प्रतिष्ठा । स्थापितदेवता गणेशप्रमुखाः सर्वाः सकलशा वरु-
मातरः स्थलमातरश्च सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

नाममन्त्रेण पूजनम्—ॐ श्री गणेशायनमः । ॐ अम्बिकायै नमः ।
ॐ लक्ष्म्यै नम । ॐ जलायैनमः । ॐ पामायै नमः । ॐ वारु...
नम । ॐ जलवासिन्यै नमः । ॐ आपणायै नमः । ॐ गुह...
नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ मध्यकलशेभ्यो नमः ।

अत्रादि पूजनम् पूर्वकलशाय क्षीरोदधिदिव्यभोगसमन्विताय इदमत्रादि
पूजनम् । दक्षिणकलशाय स्वादूदकाय सर्वफलप्रदायइदमत्रादि
पूजनम् । पश्चिमकलशाय क्षीरोदकाय दिव्यभोगसमन्विता...
इदमत्रादि पूजनम् । उत्तरकलशाय दध्युदकाय सर्वसमृद्धियुता...
इदमत्रादि पूजनम् । मध्यकलशाय षड्रसोदकाय सर्वज्ञानमया...
इदमत्रादि पूजनम् ।

स्थण्डिले जीवमातृ पूजनम्— ॐ मत्स्यै नमः । ॐ कूर्म्यै नम ।
जलौकिकायै नमः । ॐ दुर्दुर्य्यै नमः । ॐ जलगोधिकायै नमः ।
ॐ मकर्य्यै नमः । ॐ तन्तुक्यै नमः । ॐ सर्पिण्यै नमः ।

स्थलमातृ पूजनम्— ॐ उमायै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
महामायायै नमः । ॐ पान देव्यै नमः । ॐ वारुण्यै नमः ।
ॐ निर्मलायै नमः । ॐ गोधायै नम ।

मध्यकलशे वरुणस्य विशेष पूजनम्

मन्त्राक्षरन्यास स्वशरीरे—ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रुं वरुणाय जलाधिपतये कनिष्ठिकाभ्यां नमः। णाँ वरुणाय जलाधिपतये मध्यमाभ्याम् नमः। ॐ यं वरुणाय जलाधिपतये अनामिकाभ्यां नमः। ॐ न वरुणाय जलाधिपतये कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ म वरुणाय जलाधिपतये करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः। एवमेव हृदयादिन्यासं कुर्यात् एवं अंगन्यासं कृत्वा पूर्वबीजाना नामानि संपूज्य मध्ये वेदम्।

अंगन्यासः-ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्र-वन्तु नः वरुणस्य हृदयाय नमः। ॐ स्योनापृथ्वी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः वरुणस्य शिरसे स्वाहा। ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऊर्ज्जेधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरि-वमातरः। तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथाचनः वरुणस्य शिखायै वषट् ॐ इमम्मे वरुणस्य-श्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके। वरुणस्य नेत्रत्रयाय-वौषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि। धियो योनः प्रचोदयात् वरुणस्य अस्त्रायफट्।

कलशेजपः पूर्वाग्नेयकलशयोः ऋग्वेदिजपः—ॐ समुद्रज्येष्ठा सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनि विशमानाः। इन्द्रो य वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु। ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी

हव मेधा चकृडय । त्वामेवस्युरा चक्रे ॐ वरुणं वो०।
ॐ प्रमित्राय० २ ।

दक्षिणानैऋति कलशयोर्यजुर्वेदिनः—ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा। सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा। शिमिदायत्वा वाताय स्वाहा। ॐ समुद्रादूर्मिम्मधुमां २ ऽउदारदुपाᳬशुना समभृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्य यदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्य नाभिः स्वाहा। ॐ उक्षा समुद्रो ऽअरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्प यन्तौ । ॐ समुद्रंगच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवᳬसवितरं गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाᳬगच्छ स्वाहा द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद । ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् । इति यजुर्वेविजपः ।

१ ॐ वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे । परिव्रजेवबाह्वोर्जगन्वांसास्वर्णरम् ॥ ५ । ६४ । १

२ ॐ प्रमित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो । वरूथ्य १ वरुणं छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ऋक् ८।१०।

पश्चिमवायुकलशयोः साम-ॐ पवित्रं तेवितनं० १ ※ । ३ ॐ पयः साम ॐ गायत्री । इत्यादि सामवेदिनः पठेत् ।

उत्तरेशानकलशयोः—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शय्योरविस्रवन्तुनः । ॐ अथर्व शिखा इत्यादि अथर्व वेदिनः पठेत्

प्रार्थना— याद पृष्ठसमारूढ पाशहस्तमहाबल ।
पाहि यज्ञमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते ।

※१ ॐ पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्तनूर्नं तदामो अश्नुते शतासऽइद्वहन्तस्तत् समाशत ॥

ॐ अयं सोमऽइन्द्र तुभ्य सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।
त्वᳫंह यं चकृषे त्वं ववृषऽइन्दुमदाय युज्याय सोमम् ।२।

ॐ गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतऽउद्वᳫं शमिव येमिरे ।३।

अथर्ववेदिनः—ॐ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ।१।

अथर्वशिखोपनित् - ॐ कारार्थतया भातं तुर्योङ्कारग्रभासुरम् ।
तुर्यंतुर्यं त्रिपाद्रामं स्वमात्रं कलयेऽन्वहम् ॥

शान्तिपाठः—ॐ भद्रं कर्णेभि० ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ पिप्पलादोऽङ्गिराः सनत्कुमारश्चाथर्वाणं भगवन्तं पप्रच्छ भगवन् । किमादौध्यानं ध्यायितव्यं किं तद्धयानं को वा ध्याता कश्चिद्धयेय इति । अथैभ्योऽथर्वा प्रत्युवाच । ॐ इत्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्य-मोमित्येतदक्षरस्य पादाश्चत्वारो देवाश्चत्वारो वेदाश्चतुष्पादेतदक्षरं परंब्रह्म । पूर्वाऽस्यमात्रा पृथिव्यकारः सऽ ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः द्वितीयान्तरिक्षं स ऽ उकारः सयजुभिर्यजुर्वेदो रुद्रो रुद्रास्त्रिष्टुब्दक्षिणाग्निः ।

वरुणोपवेशनपद्मपत्राणिपूजनम्—ॐ पूर्वपत्राय नमः । ॐ आग्नेयपत्राय नमः । ॐ दक्षिणपत्राय नमः । ॐ नैर्ऋतपत्राय नमः । ॐ पश्चिमपत्राय नमः । ॐ वायव्यपत्राय नमः । ॐ उत्तरपत्राय नमः । ॐ ईशानपत्राय नमः । इति ।

तृतीया द्यौः स मकारः स सामभिः सामवेदो विष्णुरादित्या जगत्याहवनीयः या ऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सः लुप्तमकारः सोऽथर्वणैर्मन्त्रैरथर्ववेदः संवर्तकोऽग्निर्मरुत एक ऋषी रुचिरा भास्वती स्वभा । प्रथमारक्ता ब्राह्मी ब्रह्मदेवत्या द्वितीया शुभा शुक्ला रौद्री रुद्रदैवत्या तृतीया कृष्णा विष्णुमती विष्णुदेवत्या चतुर्थी विद्युन्मतीसर्ववर्णा पुरुषदैवत्या स एष ह्योङ्कारश्चतुष्पादश्चतुःशिराश्चतुर्थ्यर्धं मात्रा स्थूलह्रस्वदीर्घप्लुत इति ।

ॐ ॐ ॐ इति त्रिरुक्तश्चतुर्थं शान्तात्मा प्लुतप्रयोगे न समभित्यात्मज्योतिः सकृदावर्तव्य ॐ स एव सर्वान्प्राणान्सकृदुच्चारितमात्रः स ह्यूर्ध्वमुत्क्रामयतीत्योंकारः ॥

प्रणवः सर्वान्प्राणान्प्रणामयति नामयति चैतस्मात्प्रणवश्चतुर्धाऽवस्थित इति वेददेवयोनिर्ध्येयाश्चेति संधर्ता सर्वेभ्यो दुःखभयेभ्यः सन्तारयति तारणात्तानि सर्वाणीति विष्णुः सर्वाञ्जयति ब्रह्माऽबृहत्सर्वकारणानि संप्रतिष्ठाप्य ध्यानाद्विष्णुर्मनसि नादान्ते परमात्मनि स्थाप्य ध्येयमीशानं प्रध्यायन्तीशान सर्वमिदं प्रयुक्तम् । ब्रह्माविष्णुरुद्रेन्द्राः संप्रसूयन्ते स र्णि चेन्द्रियाणि सहभूतैः करणं सर्वमैश्वर्यं सम्पन्नं शिवमाकाशं मध्येध्रुवस्थम् । ब्रह्मा विष्णु रुद्रश्च ईश्वरः शिव एव च । पञ्चधा पञ्चदेवत्य प्रणवः परिपठ्यते तत्राधिकं क्षणमेकमास्थाय ऋतुशतस्यापि बलमवाप्नोति कृत्स्नमोंकारगतं सर्वज्ञानेन योगध्यानानां शिव एको ध्येयः शिवंकरः सर्वमन्यत्परित्यज्य इति मधीत्य द्विजो गर्भवासान्मुच्यते गर्भवासान् मुच्यत इत्योँसत्यमित्युपनिषत् ।३। ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

॥ इत्यथर्ववेदे सर्वाथर्वशिरोपनिषत्समाप्ता ॥

वरुणपूजा— आवाहयामि देवेशं वरुणं जलनायकम् ।
पाद पृष्ठमसमारूढं पाशहस्तं महबलम् ॥
आगच्छ जलदेवेश कुंभेऽस्मिन् सन्निधौ भव ।

वरुणावाहनम्—ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशᳪसमान ऽआयुः प्रमोषीः । ॐ वरुणस्योत्तम्भमसि० ॐ वरुणाय नमः । इति श्वेतगन्धाक्षत-पुष्प धूपदीप नैवेद्य ताम्बूल नानाफलदक्षिणाभिः सम्पूज्य नारिकेलेणार्घ्यं दद्यात् ।

अर्घ्यम् श्वेताभ्र शिखराकार सर्वभूतहिते रत ।
गृहणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते ॥

प्रार्थना—नदी सागरमाश्रित्य कलशेषु समाश्रित ।
प्रसादं कुरु मे देव मदीये यागमण्डपे ॥
अभ्यर्थितो मया भक्त्या परिवारसमन्वित ।
सान्निध्यं भव देवेश मदीये यागमण्डपे ॥
गृहाण ब्रह्मणा सेव्य प्रसादं कुरु मे अपः ।
सम्पूज्य बहुधा भक्त्या मन्त्रमेतमुदीरयेत् ।

वरुणमन्त्रा पठनीयाः— ततो जलसमीपे गत्वा ॐ वरुणरूपि वैश्वानराय नमः । इत्यग्नि जलमध्ये गंगादिभिः सम्पूज्य प्रार्थ्य स्रुवेण जले आज्यहोमः कुर्यात् । ॐ आपो ऽअस्मान्० ॐ आपो हिष्ठा० ॐ वरुणस्योतम्भन० ॐ इमम्मेवरुण० ॐ अग्नये० स्वाहा । ॐ सोमाय० स्वाहा । ॐ सवित्रे० स्वाहा ।

ॐ पूष्णे० स्वाहा ॐ बृहस्पतये० स्वाहा । ॐ इन्द्राय०।
ॐ पोषाय० । ॐ श्लोकाय० । ओ अंशाय० । ओं अद्भ्य: स्वाहा
ओं वार्भ्यः स्वाहा । ओं उदकाय० । ओं तिष्ठन्तीभ्य स्वाहा।
ओं स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ओं स्यन्दमानाय स्वाहा । ओं कूप्याय०
सूद्याय० । ओं धार्याभ्य:० । ओं अर्णवाय० । ओं समुद्राय०।
ओं सरिद्भ्य स्वाहा ।

बलिदानम् – मुद्गमाषचणकभक्तकोद्रवयवादि बलिद्रव्यानि पात्रे संस्थाप्य ओं बलिद्रव्याय नमः । गंधादिभिः सम्पूज्य वक्ष्यमाणमन्त्रैमत्स्यादिभ्यो:–

जलेवलिं क्षिपेत्–ॐ यस्यकूर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धयात्वम् ।
तस्मैदेवाऽअधिब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ॥
वलिंगृह्णन्तु ते देवा ये केचिज्जलमाश्रिता: ।
बुभुक्षितान्नहीनाश्च कृपणाजलवासिन ॥
दस्यवः सिंह शार्दूल अन्ये ये जलमाश्रिता ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च ये केचिद्वरुणालया ॥
तृप्तास्ते मे श्रियं दद्युर्विघ्नान् रक्षन्तु सर्वदा ।
बलिं गृह्णंत्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥
मरुतोऽथाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाग्रहा: ।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचा मातरो नगा ॥
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायका: ।
शाकिन्यो यक्ष वेताला योगिन्यः पूतनाशिवा ।

जृंभकाः सिद्धगन्धर्वा माला विद्याधरा नगाः।
जगतां शान्तिकर्त्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परनिंदकाः।
सौम्याभवन्तु तृप्ताश्च भूताः प्रेताः सुखावहा ॥
हस्तौ प्रक्षाल्य आचामेत्।

पठेत्–ॐ समुद्रंगच्छ०। ॐ समुद्रोसि०। ॐ समुद्रादूर्मि०। ॐ उक्षासमुद्र०। ॐ पञ्चनद्य०।

प्रार्थना:— प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्ववैरिनिषूदन।
पवित्रं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः।
तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन सम्पूर्णं भवतु प्रभो ॥
त्वमापो योनिः सर्वेषां देवदानवरक्षसाम्।
स्वेदजोद्भिज्जजातीनां रसानां पतये नमः ॥
प्रसादं कुरु देवेश आगच्छ यज्ञमण्डपे।
अभ्यर्चितो मया भक्त्या परिवारैर्जलाधिप।
सान्निध्यं कुरु देवेश पवित्रे यज्ञमण्डपे।

इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः बलिदानम्—

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः। इतिगन्धादिभिः पूजां कृत्वा-माषभक्तबलीन् दद्यात्। पूर्वे इन्द्राय नमः, इन्द्रानुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि। आग्नेय्याम्। अग्नयेनमः अग्न्यनुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि। दक्षिणे यमायनमः यमानुचरेभ्यो

नमः इमं बलिं समर्पयामि । नैर्ऋत्याम् ॐ नैर्ऋतये नमः निर्ऋत्यनुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि । पश्चिमे ॐ वरुणायनमः वरुणानुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि ॐ वायव्याम् । वायवे नमः वायोरनुचरेभ्यो नम इमं बलिं समर्पयामि । उत्तरे । ॐ कुबेराय नमः कुबेरानुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि । ऐशान्यांम् । ॐ ईशानाय नमः ईशानानुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि । ईशानपूर्वयोर्मध्ये । ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणोऽनुचरेभ्यो नम इमं बलिं समर्पयामि निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये । ॐ अनन्ताय नमः । अनन्तानुचरेभ्यो नमः इमं बलिं समर्पयामि ।

बलिदानमन्त्रम्:—ॐ ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्थ अप्सुक्षितोमहिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । इति बलिं दद्यात् । ततः यस्यस्मृत्या इत्यादिकर्मपूर्तिकामोविष्णुं स्मृत्वा आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयेत् ।

कलशानामुत्थापनम्—उत्तिष्ठं ब्रह्मणस्पते० तान् कलशान सुवासिनी सौभाग्यवत्यो नयेयुः । ततो मार्गे वारुणमन्त्रान् शाकुन सूक्तं पवमान सूक्तं शान्ति सूक्तं च पठन् चतुष्पदे क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । चत्वरे किंचिद्भूमिमुपलिप्य दर्भानास्तीर्य पाषाणं संस्थाप्य ॐ क्षेत्रपालाय नमः । इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य माषमुद्गभक्त सुगन्धितैल रक्तवस्त्रादियुतं बलिं गृहीत्वा ।

क्षेत्रपाल प्रार्थना—ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुर नेत्र ज्वाला मुख अवतर कपिल उर्ध्वकेशाल ... भिन्धि भिन्धि ...

बलिं दत्त्वा प्रत्यागच्छेत् । हस्तौपादौ प्रक्षाल्य आचम्य आचार्यो ब्राह्मणैःसह मण्डपे आगत्यसर्वान्कुम्भान्संस्थाप्य कलशेभ्यो जल मुद्धृत्यतत्तोयं मण्डपे क्षिपेत् ।

॥ इति यज्ञ जलयात्रा समाप्ता ॥

॥ अथ वर्द्धिनीकलशस्थापनम् ॥

यजमानः—देशकालौ सङ्कीर्त्य हस्ते जलाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य सर्वविधकल्याणार्थं महाविष्णुयागाङ्गतया (महारुद्राङ्गतया) यज्ञप्रदेशकर्तुं वर्द्धिनीकलशदेवतानां पूजन स्थापनं च करिष्ये । इति संकल्प्य पीठोपरि अक्षतादिना अष्टदलं विधाय तत्र कलश स्थापनविधि पूर्वक वर्द्धिनी कलशान् संस्थापयेत् । ततः हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा

वर्द्धिन्यावाहम्:—ॐ वर्द्धिन्यै नमः । ॐ ब्रह्मणेनमः । ॐ रुद्राय नमः ॐ विष्णवे नमः । ॐ मातृभ्यो नमः । ॐ सागरेभ्यो नमः । ॐ मह्यैनमः । ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः । ॐ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः । ॐ गायत्र्यै नमः । ॐ ऋग्वेदाय नमः । ॐ यजुर्वेदाय नमः । ॐ सामवेदाय नमः । ॐ अथर्ववेदाय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ द्वादश आदित्येभ्यो नमः । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः । ॐ मरुद्भ्यो नमः । ॐ गन्धर्वाय नमः । ॐ ऋषयेनमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ धनदाय नमः । ॐ यमायनमः । ॐ धर्माय नमः । ॐ शिवाय नमः । ॐ यक्षाय नमः । ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः । ॐ स्कन्दाय नमः । ॐ गणेशाय नमः । ॐ यक्षाय नमः । ॐ अरुन्धत्यै नमः ।

प्रतिष्ठा:—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं। यज्ञँ समिमं दधातु विश्वे देवास ऽइहमादयन्तामों प्रतिष्ठ। इति सर्वोपचारै: सम्पूज्य।

प्रार्थना- वर्द्धिनि त्वं महाभागे सर्वतीर्थोदकान्विते।
अतस्त्वां प्रार्थये देवि भव त्वं कुलवर्धिनी॥

इति वर्द्धिनी कलश स्थापनविधि:।

अथ जलयात्राप्रयोग

॥ शतचण्डी सहस्त्रचण्डीत्यादिष्वनुष्ठानेषु ॥

तत्रादौ सपत्नीको यजमानो गीतवादित्रदिग्मण्डलो मार्गे शान्तिसूक्तानि ब्राह्मणेभ्य: श्रृण्वन् सम् सुवासिनीभिर्जीवत्पुत्रीकाभि: पतिव्रताभिर्महादोष-रहिताभि: सर्वब्राह्मणसुहृत्सहित: सन् तीर्थसमीप गत्वा भूमौ स्थापितसंभार प्राङ्मुख उपविश्व। जलमादाय ॥ अद्येत्यादि० तिथौ० शतचण्डयाख्य समाप्तिपरिपूर्तिद्वारा श्रीवरुणजलदेवताप्रीत्यर्थं गणेशपूजनपूर्वकं जल जीव स्थलमातृक्षेत्रपालवरुणपूजनमहं करिष्ये। पट्टवस्त्रे अष्टदले वा पूजयेत् गणेशाय० गणेशमावाह्य गंधाक्षतपुष्पै: पूजयेत्। जलमातृपूजनम्। तज्जलमध्ये तत्समीपे मण्डपे वा। मत्सी कूर्मी वराही च दुर्दरी मकरी तथा जलूकी तंतूकी चैव सप्तैता जलमातृका: ।१। मत्स्यै० मत्सीमावा० (एवं सर्वत्र) कूर्म्यै० वाराह्यै० दर्दुर्यै० मकर्यै० जलूक्यै० तंतूक्यै० ।७। मत्स्यादिजलमातृभ्यो नम: इति यथाशक्त्या पूजयेत्। 'अथजीवमातृकापूजनम्' तत्रैव तत्पुरतस्तथैवा-क्षतसप्तपृंजेषु। कुमारी धनदानन्दा विमला मङ्गलाचला। पद्मा चैव सुविख्याता: सप्तैता जीवमातृका: ।१। कुमार्यै० कुमारीमावा० (एवं सर्वत्र) धनदायै० नन्दायै० विमलायै० मङ्गलायै० अचलायै० पद्मायै० ।७। इत्यावाह्य यथाशक्त्या पूजयेत्। "अथ स्थलमातृका पूजनम्" तत:तदग्रत: सप्ताक्षत पुजेषु। उर्मीलक्ष्मीमंहामाया पानदेवी तथैव च। वारुणी निर्मला गोधा

यजमानः—जलयात्रातः समानीतानां वर्द्धिनीत्याख्य नवकलशान्। यज्ञमण्डपस्य मध्यवेद्याः पश्चमेदिग्भागे वारुणमण्डल पार्श्वे समुपविश्य संकल्पं कुर्यात्।

संकल्पः—अहं महाविष्णुयागांगत्वेन वर्द्धिनीत्याख्य नवकलशानां वारुणमण्डलाधिष्ठातृ देवानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

सप्तैताः स्थलमातृकाः ।१। ऊर्म्यै० ऊर्मीमावा० (एवं सर्वत्र) लक्ष्म्यै० महामायायै० पानदेव्यै० वारुण्यै० निर्मलायै० गोधायै० ।७। इत्यावाह्य यथा शक्त्या पूजयेत्। "अथ चतुःषष्ठीयोगिनी पूजनम्" -चतुषष्ठीयोगिनीमावाह्य यथाशक्त्या पूजयेत्। ततो वायव्यां दिशि कुंकुमेन पुरुषाकारं क्षेत्रपालमावाह्य क्षेत्रपालाय नम इति पूजयेत्। "अथ सागरादितार्थपूजनम्' -तत्रादौ प्रक्षालितपाणिपादः कृताचमः साक्षतजलहस्तो जले क्षीरादि सप्तसागरान् मानसादि सराँसि पुष्करादितीर्थानि नदीश्चावाहयेत्। दुग्धादि सप्तसागरान् आवाह्य। मानसादि सरोभ्यो० मानसादि सरांसि आवा०। गंगादि नदीभ्यो० गंगादिनदीरावा०। इत्यावाह्य। दुग्धादिसप्तसागरेभ्यो मानसादिसरोभ्यो पुष्करादितीर्थेभ्यो गंगादिनदीभ्यो नमः इति मूलमन्त्रेण यथाशक्त्या बलिदामान्तं सम्पूज्य आचामेत्।

अथ जलमध्ये वरुणपूजनम्। अक्षतान् गृहीत्वाः—

ॐ दिशः प्रतीच्यामधिपं जलानां नाथं लसत्पाशकरं सिताङ्गम्।
सुहासवक्त्रं सितचारुहासं महाबलं तं वरुणं प्रवन्दे ॥

वरुणाय० वरुणमावा०। वरुणाय नमः इति मन्त्रेण गन्धादि बलिदानान्तं सम्पूज्य आचमेत्। अथ जले पञ्चामृतप्रक्षेपः। कामधुनुसमद्भुतं० इत्यादिमन्त्रैर्जले दुग्धं दधि घृतं मधु शर्करा प्रक्षिपेत्। अथ जलमध्ये घृताहुतिर्जुहुयात्। ह्रीं अद्भ्यो० बार्भ्यो० उदकाय० तिष्ठन्तीभ्यो० स्रवन्तीभ्यो० स्यन्दमानाभ्यो० कूप्याभ्यो० सूद्याभ्यो० धार्य्याभ्यो० अर्णवाय० समुद्राय० सरिराय० केचित्प्रतिमन्त्रं त्यागमिच्छन्ति। हस्ते जलमादाय। सर्वजलाधिपतये सपरिवाराय सायुधाय वरुणायेदं प्रीयताम्। इति जलं प्रक्षिपेत्।

ॐ दिक्षु विदिक्षु पूर्वादिक्रमेणाष्टसु आरासुप्रदक्षिणक्रमेण स्थितेभ्यः सूर्यादि नवग्रहेभ्योः लोकपालेभ्यश्च नमः । ॐ वायुसोमान्तरालमारभ्य अन्तरालासु यथा क्रमं अष्ट वसुभ्यो नमः । एकादशरुद्रेभ्यो नमः । द्वादशादित्येभ्यो नमः । अश्विभ्यां नमः । विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । पितृभ्यो नमः । यक्षेभ्यो नमः । भूतनाथेभ्यो नम । गन्धर्वाप्सरोभ्यो नम । सोमादि अष्टपत्रेषु स्कन्दादि नवदेवेभ्यो नमः । ॐ स्कंदाय नमः । ॐ दक्षायनम । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ स्वधायै नम । ॐ मृत्यवे नमः । ॐ गणपतये नमः । ॐ अद्भ्यो नमः । ॐ सेऽद्भ्योनमः ॐ वरुण य नमः । ॐ उत्तरादितः क्रमेण केसरमूलेषु ब्रह्मादि अष्टदेवेभ्यो नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ

ततोऽर्घपात्रे जलं गृहीत्वा तत्र गन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्यः—

ॐ उदारद्युते निर्मलोदारहारस्फुरत्पाशपाणे दिगीशादिवन्द्य ।
पते यादसां सार्द्रपीयूषदृष्टे नमस्ते नमस्तेऽम्बुनाथ प्रचेताः ।१।

इति त्रिरर्घ्यं दद्यात् । श्री फलादीनि गृहीत्वा । इ देहि० इति जलमध्ये क्षिपेत् । "अथ कलशस्थापनम्"— दिक्षु विदिक्षु चत्वारो मध्ये एक इति नव विश्वाधारासीत्यादिना पूर्णपात्रान्तं कृत्वा संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादिभिरभ्यर्च्यागस्त्यं प्रार्थयेत् ।

ॐ समुद्राचमनं येन चक्रे येन च वृद्धिमान् ।
सूर्यमार्गस्य संरोद्धो विन्ध्याद्रिः स्ववशीकृतः ।१।

तस्यागस्त्यस्य तातस्त्वं मङ्गलादिषु वन्दितः ॥
वरुणस्य वरं स्थानं तुभ्यं कलश ते नमः ।२।

इति संप्रार्थ्य । ततो गन्धाक्षतैराचार्यादीन सुवासिनीश्च हरिद्राकुंकुमांजनकंक

रुद्राय नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ अम्बिकायै नमः । ॐ सावित्र्यै नमः । ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः । ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः । ॐ मूलग्रामाय नमः । ॐ मेरवे नमः ।

तद्बाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादितः सोमादिसमीपे अष्टायुधदेवानामावाहनम् । ॐ गदायै नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः । ॐ वज्राय नमः । ॐ शक्तये नमः । ॐ दण्डाय नमः । ॐ खड्गाय नमः । ॐ पाशाय नमः । ॐ अंकुशाय नमः । तद्बाह्येरक्तपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गौतमादि अष्टदेवेभ्यो नमः ।

भरणादिभिः पूजयेत् ।। तांबूलं चणकादिकं दद्यादिति ।। ततः स्वासनादुत्थाय कलशान्मस्तकोपरि धारयेत् ।। ततो मन्त्रवाद्यघोषपुरःसरं प्रचलन् अर्धमार्गे वसेत् । स्थाने स्वल्पभूमिं खनेत् ।। तत्र इन्द्रादिदिक्पालान् गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। क्षेत्रपालं पूजयेत:—

आवाहयामि देवेशं भैरवं क्षेत्रपालिनम् ।
दिव्यरूपं महाकायं नानाभरणभूषितम् ।

क्षेत्रपालाय० क्षेत्रपालमावा० । गन्धादिभिः सम्पूज्य गन्धपुष्पाक्षतमाषभक्तकुंकुमाक्तबलिं हस्ते गृहीत्वा प्रार्थयेत्:—

यंयंयं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकंपायमानं
संसंसं संहारमूर्ति शिरसि धृतजटाशेखरं चन्द्रबिंबम् ।
दंदंदं दीर्घकायं कृतनरवपुषं ऊर्ध्वरेखा करालं
पंपंपं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ।१।

महाबलपराक्रमाय सपरिवाराय बर्बरकेशाय समस्तव्यापकाय चतुःषष्टिरूपाय ग्रामक्षेत्रवनव्यापिने सकलजगत्पूजिताय ह्रीं ह्रां हूं क्षेत्रपाल बलिं गृहाण भैरव रूपेण कुरुकुरु क्रूं क्रूं फां फां ह्रीं ह्रीं डमरु डमरु कुरुत यमदण्ड हस्ते हूं हूं हूं रूपादि रूपादि किलकिलितं पातु नः क्षेत्रपालः ।। भोक्षेत्रपाल बलिं गृहाण गृहाण विघ्नाभिनिवारय निवारय । इति बलिं दत्वा नमस्कारं कुर्यात् ।। ततः पाणिपादं

आवाहनम्—ॐ गौतमाय नमः ॐ भरद्वाजाय नमः । ॐ विश्वामित्राय नमः । ॐ कश्यपाय नमः । ॐ जमदग्नये नमः । ॐ वसिष्ठाय नमः । ॐ अत्रये नमः । ॐ अरुन्धत्यै नमः ।

तद्बाह्ये कृष्णपरिधौपूर्वादित क्रमेण ऐन्द्र्यादिभ्यो नमः ।

आवाहनम् ॐ ऐन्द्र्यै नमः । ॐ कौमार्यै नमः । ॐ ब्राह्म्यै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ चामुण्डायै नमः । ॐ वैष्णव्यै नमः । ॐ कौबेर्यै नमः । ॐ वैनायक्यै नमः ।

सूर्याद्यावाहितदेवतानां प्राणप्रतिष्ठापनं पूजनं च ।

ॐ मनोजूति० इतिप्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

प्रार्थना—ॐ वर्द्धिनि त्वं महाभागे सर्वतीर्थोदकेनान्विते ।
त्वत्तोयेन प्रपूर्येऽह भव त्वं कुलवर्द्धिनी ।

वर्द्धिनी कलशेषु मत्स्यादिजलमातृणामणिमादिसिद्धिभ्यो नमः ।

कलश प्रार्थनम्— कलशस्यमुखे विष्णु० इति प्रार्थनां कुर्यात् ।

हस्ते जलमादाय अनेन वर्द्धिनि कलशस्थापनकर्मणा महालक्ष्मीः प्रीयमाम् इति वर्द्धिनी कलशस्थापनम् ।

प्रक्षाल्याचम्य मण्डप प्रदक्षिणिकृत्य पश्चिमद्वारे स्थित्वा यजमानं सुवासिन्यो नीराज्य तेनैव द्वारेण सर्वकलशानां मण्डपमध्ये प्रवेशनपूर्वकं कलशस्थित किंचित् जल पात्रान्तरे गृहीत्वा दूर्वाम्रपल्लवैर्यजमानस्य मूर्ध्नि आचार्य ऋत्विग्भिः सह अभिषेकः कार्यः ॥ ततो कलशेभ्यो नमस्कृत्य पठेत् ॥

सुराणामधिपे यज्ञे मण्डपे स्थापिते मया ।
तस्य यज्ञे महालक्ष्मी त्वं सौख्यं मा च देहि मे ॥ इति नमस्कारं कुर्यात् इति ।

। अथ मण्डपप्रवेशम् ।

ततः मण्डपस्थलं सम्प्राप्य संभारान् गृहीत्वा सुवासिनी-ब्राह्मणांश्च पुरस्तात् कृत्वा वाद्यघोषादि सहिता सपरिकरः सम्पूर्ण कुम्भोयजमानः ।

यजमानस्यः मण्डपप्रदक्षिणा– ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्प-श्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु वाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः । प्रदक्षिणीकृत्य मण्डपस्य पश्चिमद्वारमागत्य पाणिभ्यां चार्घ्य पात्रं आदाय शान्तिपाठं पठेत् । ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतᳬसेना अजयत्साकमिन्द्रः । ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्र प्रपद्ये । वागोजः सहौजोमयि प्राणापानौ । ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः० इत्यादिकं सम्पूर्णशान्त्यध्यायानि पठेत् । द्वारदेशेऽर्घ्यंदद्यात् ।

ध्यानम्–ॐ पृथिवीं चतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठोऽपरो स्थिताम् पद्मशंखचक्र त्रिशूलकरां विहसितां सुप्रसन्नां गोरूपधरां सवत्सां वसुंधराम् ।

प्रार्थना–ॐ आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि: ।

पृथ्वी त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिमन्त्रिता ॥

भूतधात्री रत्नगर्भा विपुला सागराम्बरा ।

अस्मिन्यज्ञे महादेवि विघ्नंविध्वंसयाम्बिके ॥

पुष्पाञ्जलि–ॐ पृथ्व्यै नमः । इति पूर्वोपचारैः सम्पूज्य ।

प्रार्थना:—ॐ उद्धृतासि वराहेण विष्णुना शतबाहुना ।
दंष्ट्राग्रेलीलया देवि यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम् ॥

शेष प्रार्थना— ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुनाशंकरेण ।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च ॥

यमेन पूजिता देविधर्म वृद्धिजिगीषया ।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता ।
गृहिणार्घ्यं च मे देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥

इति यज्ञभूम्यै अष्टाङ्ग अर्घ्यंदत्वा साष्टांग प्रणिपत्य कूर्मं पूजयेत् । ॐ कूर्मासनाय नमः इति रजतमयं कूर्मं सम्पूज्य । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ शेषासनाय नमः इति शेषं सम्पूज्य यज्ञमण्डपस्य पश्चिमद्वारेण प्रविशेत् । होमद्रव्यः प्रवेश पूर्वद्वारेण । दानद्रव्य प्रवेशो दक्षिण द्वारेण । दानार्थान्प्रतिष्ठार्थान्सम्भारानुत्तरद्वारेण प्रवेशयेत् । तत आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपांल्लाजामिश्रितान्गृहीत्वादिग्रक्षणं कुर्यात् ।

दिग्रक्षणमन्त्रः—ॐ रक्षोहणंवलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे निष्टयोयममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानोयमसमानो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमे सम्बन्धुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि । रक्षोहणौवोवलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनो वनयामि

वैष्णवान्‌रक्षोहणौ वो वलगहनो वस्तृणामिवैष्णवान्‌रक्षोहणौवां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवीरक्षहोणौ वां वलगहनौ पर्य्यूहामि-वैष्णवी वैष्णवमसिवैष्णवास्थ रक्षसाम्भागोसिनिरस्त ँ रक्ष इदमह ँ रक्षोभितिष्ठामीदमह ँ रक्षोवबाध ऽइदमह ँ रक्षो-धमन्तमो नयामि । घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां वायोवेस्तो-कानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृते ऊऽर्ध्वनभसम्मारुत-ङ्गच्छतम् । रक्षोहाविश्वा चर्षणि रभियोनि मयोहते । द्रोणे-सधस्थमासदत् ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तुशिवाज्ञया ।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे ॥

यदत्र संस्थित भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थ तत्र गच्छतु ।

भूतप्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ।
स्थानादस्माद्व्रजन्‍त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवन्त्विमाम् ।

भूतानि राक्षसा वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम् ॥

एतैर्मन्त्रैरीशानादिसर्वदिक्षुश्वेतसर्षपान् विकीर्य देवा आयान्तु-यातुधाना अपयान्तु, विष्णो देवयजनं रक्षस्व इति रक्षां कृत्वा पञ्चगव्येन कुशैर्मण्डपभूमिं यज्ञसम्भारांश्च प्रोक्षयेत् । प्रायश्चित्तोक्त

प्रकारेण पञ्चगव्यकरणम् । प्रणवेन पञ्चगव्यमालोड्य वारुण मन्त्रै र्यज्ञभूमिं प्रोक्षयेत् ॥

यज्ञभूप्रोक्षणम्–ॐ हिरण्य वर्णाः शुचयः पावकाया सुजातः कश्यपो-
यास्विन्द्रः । अग्नियागर्भं दधिरेविरूपास्तान आपः श ँ स्योना
भवन्तु या सां देवादि विकृण्वन्तिभक्षं या अंतरिक्षे बहुधा
भवन्ति । य पृथिवी पयसोदंन्तिशुक्रास्तान आपः श ँ स्योना
भवन्तु । शिवेन मा चक्षुषा पश्यताप शिवया तनुवोपस्पृशतत्वचं
मे । सर्वां ँ अग्नि ँ रप्सुदोहुवेवो मयि वर्चो बलमोजोनिधत्त।
ततः पावनसूक्तं जपेत् ।

यजमानः—हस्तप्रमाणं चतुरस्त्र चतुरंगुलोच्चं स्थण्डिलं कृत्वा।

ॐ भूरिसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवींदृ ँ ह पृथिवीम्माहि ँ सीः । पृथ्वी-कूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः इति मन्त्रै षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

पुष्पाञ्जलिः - स्वस्तिवाचनं कृत्वा ।

अथ वास्तु पूजनम्

मण्डपे नैर्ऋत्य कोणे रचित वास्तुमण्डल तत्समीप उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ।

संकल्पः-ॐ अद्य विष्णुदेव प्रतिष्ठा कर्मणि वास्तुपूजा कर्माऽहं करिष्ये

चतुर्दिक्षुशंकुरोपणम्—वास्तुमण्डल चतुष्कोणेष्वौदुम्बरस्य वा लोहस्य शंकु चतुष्टयमीशानादिप्रदक्षिणेनारोपयेत् ।

मन्त्रः--ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ।
मण्डपे ऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा ॥

ततः शंकूनां पाश्र्वे रोपणक्रमेण माषभक्तदध्योदनेन बलिदानम् ।

ईशानेबलिदानम्--ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्वेभ्यो ये चान्ये तं समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः ।

आग्नेय्याम्--ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।

नैऋत्ये--ॐनैऋत्याधिपतिश्चैव नैऋत्यां ये च राक्षसा ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वं गृह्णन्तुमन्त्रितम् ॥

वायव्याम्--ॐ वायव्याधिपतेश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।

सुवर्णशलाकया--ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ यशोवत्य नम । ॐ कान्तायै नमः । ॐ सुप्रियायै नमः ।

रजतशलाकया--ॐ बिमलायै नमः । ॐ श्रियै नमः । ॐ सुभगायै नमः । ॐ सुमत्यै नम ।

पुष्पादीनांवानवरेखा--ॐ सुमत्यै नमः । ॐ इडायै नमः । पश्चादारभ्यप्राक् पर्यन्ताः रेखाकार्याः । ॐ धान्यायै नमः । ॐ प्राणायै नमः । ॐ विशालायै नमः । ॐ बिरजायै नमः । ॐ विभवायै नमः । दक्षिणतः आरभ्य उत्तरपर्यन्ताः नवरेखा कार्याः ।

शिखिमन्त्रः-ॐतमीशानं जगतस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये । शिखिने नमः

पर्जन्यमन्त्र — ॐ शन्नोवातः पवता ँ शन्नस्तपतुसूर्य्यः । शन्न कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु । पर्जन्याय नमः ।

जयन्तः—ॐमर्म्माणि वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु ॐ जयन्तायनमः

इन्द्रः—ॐ आयात्विन्द्रोवस ऽउप नऽइह स्तुतः सधमादस्तुशूरः । वावृधानस्त विषीर्यस्य पूर्वी द्यौर्नक्षत्रमभिभूति पुष्यात् । ॐइन्द्राय नमः

सूर्यः—ॐ वण्महाँ२ ऽअसि सूर्यवडादित्यमहाँ२ । ऽअसि महस्ते सतो- महिमापनस्यतेऽद्धादेवमहाँ२ असि ॐ सूर्याय नमः ।

सत्याय—ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा- श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॐ सत्याय नमः ।

भृशः—ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः । विशस्त्वासर्वा वाञ्छन्तुमात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् । भृशाय नमः ।

आकाश—ॐ या वांकशामधुमत्यमविना सूनृतावती । तया यज्ञमि- मिक्षितम् । उपयाम गृहीतो स्यश्विभ्यां त्वैषते योनिमाध्वी- भ्यान्त्वा । ॐ आकाशाय नमः ।

वायुः—ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये । ॐ वायवे नमः ।

पूषणः— ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्तऽइहस्मसि । ॐ पूष्णे नमः ।

वितथः—ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महि त्वंमद्ध्या कर्तो वितत ँ सञ्जभार । यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै ।

ॐ वितथाय नमः ।

गृहक्षतः—ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽअधूषत । अस्तोषस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्र ते हरी । ॐ गृहक्षताय नमः ।

यमः—ॐ यमायत्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहाधर्माय स्वाहाघर्मं पित्रे । यमाय नमः ।

गन्धवः— ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । इन्द्रस्यवाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडईडितः । मित्रावरुणौत्वोत्तरतः परिधित्तांध्रुवेणधर्मणा विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यरग्निरिडईडित ॐ गन्धर्वाय नमः ।

भृंगराजः— ॐ सौरीवलाकाशार्गः सृजंयः शयाण्डकस्तेमैत्राः सरस्वत्यैशारि, पुरुषवाक्च्छ्वाविद्धौमीशार्दूलोवृक. पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक् । ॐ भृङ्गराजाय नमः ।

मृगः— मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठा परावत आजगथां परस्याः । सृकꣳसꣳ शायपविसिंद्रतिग्मं विशत्रूताद्रिविमृधिनुदस्व । ॐ मृगाय नमः ।

पितृन्—ॐउशंतस्त्वानिधिमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशतऽआवह पितृन्हविषेऽअत्तवे । पितृभ्यो नमः ।

दौवारिकः—ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थेअन्यान्यावत्समुधापयेते । हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः । ॐ दौवारिकाय नमः ।

सुग्रीवः—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः । तेषाꣳ
सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । ॐ सुग्रीवाय नमः ।

पुष्पदन्तः—ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्चवो । नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः । ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।

वरुणः—ॐ इमम्मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युराचके । ॐ वरुणाय नमः ।

असुरः—ॐ यमश्विनानमुचेरादधिसरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय । इमन्त
ꣳ शुक्रमधुमन्तमिन्दꣳसोमꣳराजानमिहभक्षयामि । ॐअसुरायनम

शेषः—ॐ याऽइषवोयातुधानानां ये वा वनस्पतीं १ रनु ।
ये वा वटेषुशेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ शेषाय नमः ।

पापः—ॐ एस्तते रुद्रावस तेन परोमूजवतोतीहि । अवततधन्वापि·

रोगः-ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित । आसाम्प्रजानामेषां
पशूनाम्माभेरोङ्मोअनः किञ्चनाममत् । ॐ रोगाय नमः ।

अहिर्बुध्न्यः—ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमन्पुमाꣳसंपरिपातु विश्वतः ।
ॐ अहिर्बुधनाय नमः ।

मुख्यः—ॐ अवतत्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्यशल्यानां
मुखा शिवोन सुमनाभव । ॐ मुख्याय नमः

भल्लाटम्:—ॐ इमाःरुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः

यथाशमसद् द्विपदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्नानातुरम् ।
ॐ भल्लाटाय नमः ।

सोमम्—ॐ सोमꣳराजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे । आदित्यान्विष्णुꣳ सूर्यब्रह्माणं च बृहस्पतिꣳस्वाहा । ॐ सोमाय नमः ।

सर्पम्—ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोच यः पार्थिवानि विममेरजाꣳसो । योऽअस्कभायदुत्तर ꣳ तधस्थन्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो-विष्णवे त्वा । ॐ सर्पाय नमः ।

अदितिः—ॐ हिरण्यरूपमुषसोव्युष्टावय स्थूणमुदिता सूर्यस्य । आरोहथो वरुणमित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिञ्च । ॐ अदितये नमः ।

दितिः—त्वमग्ने वीर मद्यशसो देवश्च सविताभगः । दितिश्चाति वार्यम् । ॐ दितये नमः ।

अपः—ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणायचक्षसे ॐ अद्भ्यो नमः ।

अपांवत्सः—ॐ आतेवत्सोमनोजमत्परमाच्चित्सधस्त्यात् । अग्नेत्वां-कामयागिरा । ॐ आपवत्साय नमः ।

अर्यमा—ॐ यदद्यसूरऽउदितेनागा मित्रोऽअर्यमा ।
सुवाति सविताभगः । ॐ अर्यम्णे नमः ॥

सावित्रः—ॐ हस्तऽआधाय सविता बिभ्रदभ्रिꣳ हिरण्ययीम् । अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरदानुष्टुभेनच्छं दसाङ्गि-रस्वत् । ॐ सावित्राय नमः ।

सविता—ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्नऽआसुव । ॐ सवित्रे नमः ।

विवस्वान्- ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन्नमत्स्व ।
श्रदस्मैनरो वचसेदधातनयदाशीर्दान्दम्पतीवाममश्नुतः । पुमान्पुत्रो
जायतेविंदतेवस्वधा विश्वाहारएपधते गृहे । ॐ विवस्वते नमः ।

विबुधाधिप –ॐ सबोधिसूरिर्म्मघवावसुपते वसुदावन् । युयोद्ध्य-
स्मद्द्वेषा ँ सिविश्वकर्मणे स्वाहा । ॐ विबुधाधिपाय नमः ।

जयन्तः-ॐ अषाढयुत्सुपृतना सुप्रप्रि ँ स्वर्षामप्स्वांवृजतस्य गोपाम् ।
भरेषुजा ँ सुक्षिति ँ सुश्रुव संजयं तं त्वामनुमदेमसोम ।
ॐ जयन्ताय नमः ।

मित्रः—मित्रोन ऽएहि सुमित्रधइन्द्रस्योरुमाविशदक्षिणशन्नुशतं ँ
स्योनः स्योनम् । स्वानभ्राजांघारेबम्भारेहस्तकृशानवेतेवः सोम-
क्रयणास्तन्त्रक्षद्ध्वंमावोदभन ॐ मित्राय नमः ।

राजयक्ष्म - ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽउपचितामसि । अथो
शतस्य यक्ष्माणाभ्याकारोरसिनाशनी । ॐ राजयक्ष्मणे नमः ।

रुद्रः–ॐ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् । यथानोवस्यसस्करद्यथानः
श्रेमसस्करद्यथानो व्यवसाययात् । ॐ रुद्राय नमः ।

पृथ्वीधरः–ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म्मसप्रथाः । ॐ पृथिवीधराय नमः ।।

ब्रह्मा-ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः । सबुध्न्या
ऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विवः । ॐ ब्रह्मणेनमः ।

ईशानेचरकी-ॐ यन्तेदेवी निर्ऋतिरामबन्धपाशंग्रीवास्व विचृत्यम्। तन्ते विष्याम्यायुषोनमध्यादथैतम्पितुमद्धिप्रसूतः। नमोभूत्यैयेवं चकार। ॐ चरक्यै नमः।

विदारो अग्निकोणे -ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोधातन्क्षुधेयोगां विकृत तं विक्षमाणा ऽउपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॐ विदार्यै नमः

पूतना नैर्ऋतिकोणे—ॐ इन्द्रस्यक्रोडो दित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवो दित्यैभसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीततानभ ऽउदर्येण चक्रवाकौमस्ताभ्यां दिवं ववृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभरुपलान्प्लो-ह्नावल्मीकान्क्लोम भिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ती ह्रदान्कु-क्षिभ्या७ँसमुद्रमुदरेणवैश्वानरभमाना। ॐ पूतनायै नमः।

पापराक्षसी वायुकोणे—ॐ यस्यास्ते घोर ऽआसं जुहोम्येषाम्बन्धा-नामवसर्जनाय। याम्त्वा जना भूमिरितिप्रमन्दते निर्ऋतिन्त्वाहं परिवेदविश्वतः। ॐ पाप राक्षस्यै नमः।

स्कन्दः पूर्वस्याम्—ॐ यत्रवाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा ऽइव। तन्न इन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहाशर्मयच्छतु। ॐ स्कन्दाय नमः।

अर्यम्णे दक्षिणस्याम्—ॐ यदद्यसू ऽउदितेमागामित्रो ऽअर्यमा। सुवा-तिसविताभगः। ॐ अर्यम्णे नमः।

जृम्भकः पश्चिमे—ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा अवक्रन्दायस्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा। गन्धाय

स्वाहा घ्रातायस्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्हिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सᳪहानायस्वाहा होपस्थिताय स्वाहा यनायस्वाहा प्रायणाय स्वाहा। ॐ जृम्भकाय नमः।

पिलिपिच्छउत्तरे—ॐ कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः किᳪस्विदासीद्बृहद्वयः कास्विदासीत्पिलिपिलाकास्विदासीत्पिशंगिला। ॐ पिलिपिच्छायनमः

इन्द्रः पूर्वे—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳪहवे हवे सुहवᳪशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ᳪ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः।

अग्निः आग्नेयाम्—ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवया सिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳪ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्। ॐ अग्नये नमः।

यमः याम्ये—ॐ यमाय त्वा मखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे। देवस्त्वा सवितामध्वानक्तु पृथिव्याः सᳪस्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि। ॐ यमाय नमः।

निर्ऋतिः नैर्ऋत्याम्—ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु। ॐ नैर्ऋतये नमः।

वरुणः पश्चिमे—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदनमासीद। ॐ वरुणाय नमः।

वायुः वायव्ये—ॐ आनोनियुद्भिः शतनोभिरध्वरᳬसहस्त्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः । ॐ वायवे नमः ।

कुवेरः उत्तरे—ॐ वयᳬसोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ कुवेराय नमः ।

ईशानः ईशान्याम्—ॐ तमीशान जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो यथावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ॐ ईशानाय नमः ।

ब्रह्मा ईशान पूर्वयोमध्ये—ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासोवृत्रहत्ये भरहूतो सजोषाः । यः शᳬसतेस्तुवतेधायिपज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्मांर अवन्तु देवाः । ॐ ब्रह्मणेनमः ।

अनन्तः (निर्ऋति वरुणयोमध्ये)—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथा । ॐ अनन्ताय नमः । इत्यावाह्य ॐ वास्तुपीठ देवताभ्यो नमः ।

प्रतिष्ठा-ॐ मनोजूति र्जुषातामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमन्दधातु । विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ।

पूर्वोक्त कलशस्थापन विधिना ताम्रकलशं संस्थापयेत् तदुपरिकुक्कलरूपां सर्पमयीं वा वास्तु प्रतिमामपग्युत्तारणपूर्वकं सन्निधायपट्ट वस्त्राद्यैराच्छाद्य ततस्तं सकलदेवताधिष्ठितावयवमुत्तानमीशानकोण स्थितशिरसं नैऋत्यकोणस्थितपादं यथाकारं वास्तुपुरुषं ध्यायेत् ।

संकल्पः-ॐ देशकालौ संकीर्त्यास्यांमूर्तावघाताविदोषपरिहारार्थं-मग्न्युत्तारणं देवता सान्निध्यार्थं च प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये। मूर्ति पात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्यतदुपरिदुग्धधारां जलधारां च पातयेत् अग्न्युत्तारण सूक्तं वारद्वयं पठेत् ।

अग्न्युत्तारणसूक्तम्— ॐ समुद्रस्यत्वावकयाग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव । ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव । ॐ अपामिद न्ययन ँ समुद्रस्य निवेशनं । अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव । ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे । अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव । ॐ प्राणदाऽअपानदा व्यानदा बर्चोदावरिवोदाः अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव

ध्यानम्-ॐ आसीत्पूर्वं महादैत्यो वास्तुर्यज्ञ पकारकः । सदेवैर्बहु-कालेन युद्धे हत्वा महीतले । निपात्य बहुभिर्देवैर्निबद्धश्चस्तुवस्तुक ईशानेमस्तकोन्यस्तोनैर्ऋत्ये पादसम्पुटम् । जानुनी कूर्परी कृत्य बाहुयुग्म तथैव च । वायव्याग्न्यो स्ततो जानुं हृदये चांजलि-स्तथा । पदीकृत्य च तस्योर्ध्वं स्वयमुक्ताः सुराः स्थिताः ।

वास्तुनामावलि- ॐ शिखिनेनमः । ॐ पर्जन्यायनमः । ॐ जयन्ताय नमः । ॐ कुलिशायुध यनमः । ॐ सूर्यायनमः । ॐ सत्यायनमः ॐ भृशायनमः । ॐ आकाशायनमः । ॐ वायवेनमः । ॐ पूष्णे नमः । ॐ वितथायनमः । ॐ गृहक्षतायनमः । ॐ गन्धर्वाय-नमः । ॐ मृगराजायनमः । ॐ मृगायनमः । ॐ पितृभ्योनमः

ॐ दौवारिकायनमः । ॐ सुग्रीवायनमः । ॐ पुष्पदन्तायनम । ॐ वरुणायनमः । ॐ असुरायनमः । ॐ शोषायनमः । ॐ ॐ पापायनमः । ॐ रोगायनमः ॐ अहयेनमः । ॐ मुख्याय नम । ॐ भल्लाटायनमः । ॐ सोमायनम । ॐ सर्पेभ्योनमः । ॐ आदित्यैनम । ॐ अद्भुचैनमः । ॐ सवित्रायनमः । ॐ विवस्वतेनमः । ॐ विबुधाधिपायनम । ॐ मित्रायनमः । ॐ राजयक्ष्मणेनमः । ॐ पृथ्वीधरायनमः । ॐ आपवत्सानमः । ॐ ब्रह्मणेनम । ॐ वास्तोष्पतयेनमः । ओं चरक्यैनमः । ओं विदार्यैनम । ओं पूतनायैनमः । ओं पापराक्षस्यैनमः । ओं अर्यम्णेनमः । ओं स्कन्दायनमः । ओं जृंभकायनमः । ओं पिलिपिच्छायनमः । ओं इन्द्रायनमः । ओं अग्नयेनम । ओं यमायनमः । ओं निर्ऋतयेनमः । ओं वरुणायनम । ओं वायवे नमः । ओं सोमायनमः । ओं ईशानायनमः ओं ब्रह्मणेनमः । ओं अनन्तायनमः ॥

अथ मूर्तिप्राणप्रतिष्ठा

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य अस्या श्री वास्तु प्रतिमाया घटनादि दोषपरिहारार्थम् अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । मूर्ति घृतेनाभ्यक्तां दुग्धमिश्रितजलधारया सन्तर्पयेत् ।

अग्न्युतारणमन्त्रः-ओं प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदावरिवोदाः अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य शिवोभवा ।

प्राणप्रतिष्ठा—ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहम् अस्याः वास्तु प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ।

जीव प्रतिष्ठा—ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहं अस्या वास्तु प्रतिमायाः जीव इह स्थितः ।

इन्द्रिय प्रतिष्ठा—ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं स सोऽहं अस्या वास्तु प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणपाणि पादपायूपस्थानि इहैवागत्य चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

नेत्रोन्मीलनम्—ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽअसिचक्षुर्मे देहि । गन्धादि पञ्चोपचारान् दत्वा संस्कारसिद्ध्यर्थं षोडश प्रणवावृत्ति कुर्यात् । अनेनास्या वास्तु प्रतिमाया गर्भाधानादि संस्कारान्सम्पादयामि ।

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन । ततो वास्तुदेवेभ्यो नाममन्त्रैः बलिदानं दत्वा त्रिसूत्र्या मण्डपं समावेष्ट्य ॐ कृणुष्वः इत्यादि जलदुग्धधारां दद्यात् ।

अथ मण्डपपूजनम्

संकल्पः—ॐ अद्येतत्सद्य विष्णु प्रीतिकामः (रुद्रयागे सदाशिव प्रीतिकामः) मण्डप स्तम्भ द्वार तोरणायुध विष्णोः शंखचक्रगदापद्म (शिवस्य धनुस्त्रिशूल) दिक्पालध्वजपताका वेदिकास्तम्भानां स्थापनपूर्वकं पूजनमहं करिष्ये ।

स्तम्भखननम्—ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः ।

जलेनसिंचनम्—ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च । सुरायै बभ्र्वै मदेकिन्त्वो वदति किन्त्वः ।

दधिषेचनम्—ॐ दधिक्राव्णोऽकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखात्कर प्रणऽआयुᳬषि तारिषत् ॥

यव प्रक्षेपः—ॐ धानावन्त करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ।

हिरण्यम्— ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम

स्तम्भारोपणम्—ॐ उर्ध्व ऽउषुणऽऊतये तिष्ठादेवो न सविता । उर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे । नागमात्रे नमः । सर्पेभ्यो नमः ।

स्तम्भे सूत्रबंधनम्—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि-सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वा काम धुक्षः

शाखाबन्धनम्—ॐ आयं गौ पृश्निरक्रमीदसन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ।

स्तम्भाभिमन्त्रणम् - ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरुशन्नःकुरु प्रजाभ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः ।

कलशपूजनम्—कलश स्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य पूजयेत् । एवमेव सर्वेषां षोडशस्तम्भानां स्थापनं कुर्यात् । मण्डपान्तर्गत ऐशानीतः आरभ्य मध्यस्थांश्चतुः स्तम्भान् पूजयेत् ।

१. सुभद्रस्तम्भायनमः— ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमा ऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ब्रह्मणेनमः । स्थूणायां ॐ वसुदायैनमः ॐ वास्तुदेवतायैनमः । ॐ ब्रह्मणेनमः, गंगायै नमः । ॐ उर्ध्व ऊषुण० नागमात्रे नमः आयङ्गौ० यतो यतः० ।

यह विधि मन्त्र सहित १६ स्तम्भों में सर्वत्र प्रयुक्त करें । इतित्रयोऽपिविधयः सर्वस्तम्भेषु विधेयाः ।

२. विजयस्तंभाय— ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निधेपदम् । समूढमस्यपाᳫँसुरे ।। विष्णवेनमः । स्थू० ॐ भद्रायै नमः । ॐ लक्ष्म्यैनमः । ॐ मन्दायैनमः । ॐ विष्णव्येनमः ।

३. केदारस्तम्भाय— ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउततोऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः । सदाशिवाय नमः । स्थू० ॐ आदित्यै० । ॐ गौर्यै० । ॐ माहेश्वर्यै० । ॐ शोभनाय० ।

४. श्रीमतेस्तम्भाय— ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पति दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् इन्द्राय नमः । स्थू० ॐ नन्दायै० । इन्द्राण्यै० । ॐ आनन्दायै० । विभूत्यै० ।

मण्डपाद्बाह्ये वेदिकायां ईशानादि क्रमेणद्वादशस्तम्भानां पूजनंकार्यम्

१. महायशः स्तम्भाय— ॐ आकृष्णेनरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि

पश्यन् । द्वारश्रीविश्वेभ्योनमः । स्थू० भूत्यै० । सौर्ये० भूत्यैमङ्गलायै नमः ।

२. मङ्गलस्तम्भाय-ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् । ॐ गणपतये नमः। सरस्वत्यै नमः । विघ्नहारिण्यै० । जयायै० गणेश्वर्यै ।

३. गुणस्तम्भाय-ॐ असि यमोऽस्याऽअस्याऽऽदित्याऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेनसमया विपृक्त आहुस्ते त्रीणिदिवि बन्धनानि । ॐ धर्मराजाय० । स्थू० ॐ पूर्वसंध्यायै, अन्जन्यै, क्रूरायै, नियन्त्र्यै ।

४. जयस्तभाय- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ शेषायनमः स्थू० मध्यम संध्यायै० धरायै, पद्मायै महापद्मायै नमः ।

५. धनदस्तंभाय-ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्समुद्रादुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽअर्वन् । स्कन्दायनमः । स्थू० पश्चिम सन्ध्यायै, वल्लयै देवसेनायै० । ॐ महाशक्त्ये नमः ।

६. कल्याणस्तंभाय-ॐआनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणी-भिरुपयाहियज्ञम् वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । ॐ वायवेनमः । स्थू० गायत्र्यै, वायव्यै, प्राणेश्वर्यै सुषुम्णायै० ।

७. शुभस्तंभाय—ॐ इमन्देवा असपत्न ँसुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममसुष्य पुत्रममुष्यै विश ऽएष वो ऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँराजा । ॐ सोमायनमः । स्थू० सावित्र्यै, अमृतकलायै, विजयायै, इडायै ।

८. शान्तस्तंभाय—ओं तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुश ँसमान ऽआयुः प्रमोषी । ओं वरुणायनमः । स्थू० वृहत्यै, वारुण्यै ओं पाशधारिण्य, प्राण शक्त्यै ।

९. मनोरमस्तंभाय—ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रसि सहस्रधारम् देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कमा धुक्षः । ओं अष्ट वसुभ्यो नमः, स्थू० ओं आदित्यै, भूत्यै, अणिमायै, ओं गरिम्णायै नमः ।

१०. ऋद्धिदस्तंभाय—ओं वय ँसोमव्रते० ओं धनदाय नमः । स्थू० विनतायै नमः आदित्यायै, लघिमायै, महिमायै ।

११. सिद्धिदस्तंभाय—ओं वृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रयात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । गुरवे नमः । स्थू० ओं पौर्णमास्यै अन्तः स्फूर्त्यै, अन्तर्वृष्ट्यै, ज्ञानशक्त्यै ।

१२. विचित्रस्तंभाय—ओं विश्वकर्मण हविषा वर्द्धनेन त्रातार-मिन्द्रमकृणो रवध्यम् । तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो

विहव्यो यथासत् । ओं विश्वकर्मणे नमः । स्थू० सिनीवाल्यै, वास्तुदेवतायै, विश्वकर्त्र्यै विज्ञान शक्त्यै । अथ पूर्वादि चतुर्दिक्षु तोरणपूजनम् ।

१. पूर्वे— ओं मङ्गलनाम पूर्व द्वाराय नम । ओं अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातामम् ।। इति सुदृढाख्याश्वत्थ तोरणाय० । तस्य मस्तके पांचेजन्य शंखाय० (रुद्रयागे मङ्गलाख्य वैष्णव त्रिशूलाय०) । दक्षिण ओं राहवे० । वामे ओं बृहस्पतये० । तत्रकलश संस्थाप्य तत्र ओं ध्रुवायनमः ।

२. दक्षिणे—ओं धर्मिष्ठनामकद्वाराय०। ओं इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो ब. सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरन मीवाऽअयक्ष्मामावस्तेन ऽईशत माघश ँ सोध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि । सुभद्राख्यौ दुम्बर तोरणाय० सस्य मस्तके सुदर्शन चक्राय नमः । (रुद्रयागे शत्रुघ्नाख्य रौद्रत्रिशूलाय नमः । दक्षिणे सूर्यायनम वामे अंगारकाय० । कलश संस्थाप्य तत्र धरायै नम

३. पश्चिमे— ॐ विजयद्वाराय नमः । ॐ अग्नऽआयाहिवीतये गृणनो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ।। ॐ सुभीमाख्य (सुशर्माख्य) प्लक्षतोरणाय नमः । तस्य मस्तके कौमोदकीगदायै नमः । (रुद्रयागे पुत्रदाख्य ब्राह्मत्रिशुलाय नम) दक्षिणे- शुक्राय नमः । वामे बुधायनमः । स्थापितकलशे बावपतयेनमः ।

४. उत्तरे—ॐ कल्याणद्वाराय नमः । ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीत ये । शयोरभि स्रवन्तु नः । ॐ सुप्रभाख्य(सुहोत्रा-

वप) वट तोरणाय नमः। तस्य मस्तके ॐ पद्मायुधाय नमः (रुद्रयागे उत्तमाख्य सौम्यत्रिमूलाय नम) दक्षिणे ॐ सोमाय नम। वामे ॐ केतुशनिभ्यां नमः। स्थापितकलशे विघ्नवारणाय नम। इतिपञ्चोपचार पूजनम्।

अथ दिक्पालद्वारपूजा

पूर्वस्यां सुमङ्गलद्वारे- ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रँ हवे हवे सुहवँशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्रँस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। इति इन्द्रमावाह्य। द्वारशाखयोः प्रशान्तशिशिरनामानौ कलशौ संस्थाप्य ॐ ध्रुवायनमः, ॐ अध्वराय नमः। ॐ ऐरावतदिग्गजायनमः। उत्तरांगे गणेशायनम। वामदक्षिणस्तंभयोः भूलोकायनमः। भुवर्लोकायनमः। कलशद्वये ॐ गंगायैनमः। ॐ यमुनायैनमः। ॐ आदित्यायनमः। ॐ सोमायनमः। दक्षिणवाम शाखयोः धात्रेनमः विधात्रेनमः। ऊर्ध्वम् उर्ध्वश्रियैनमः। अधः देहल्यैनमः। मध्येवास्तुपुरुषाय नमः। द्वारस्तम्भयोः गणेशायनमः, स्कंदायनमः। ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा। ॐ अग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधाता मम्॥ संपूज्य। द्वारकलशयोः इन्द्राय साममायत विप्राय वृहते वृहत्। धर्म कृते विपश्चिते पनस्यवे। इन्द्रं संपूज्य ॐ इन्द्रायाहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः। इति पीतपताका ध्वजौ च समालभ्य। यो मे दण्डः परापत द्वेहायसोऽधिभूम्यान्तमहं

पुनरावदे आयुर्षे ब्रह्मणेवर्चसाय । इति ध्वजदण्डोच्छ्रयणम् ।
ततः ध्वजे कुमुदायनमः । पताकायां-हेतुकायनमः । ततः इन्द्राय
बलिदानम् । ❀ अग्निकोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य । ॐ पुण्डरी-
कायनमः । कलशेअग्नयेनमः इति अग्निं सम्पूज्य । ॐ अग्नि-
स्तिग्मेनशोचिषाया सद्विश्वन्यत्रिणम् । अग्निर्नो वनते रयिम् ।
इति रक्तपताकाध्वजौ समुच्छ्राय्य । सांगाय अग्नय बलिदानम्
दद्यात् ।

दक्षिणस्यां सुधर्म्मिष्ठद्वारे-ॐ असि यमोऽअस्या ऽदित्योऽअर्वन्नसि
त्रितो गृह्येन व्रतेन । असि सोमेनसमया विपृक्त आहुते त्रीणि-
दिवि बन्धनानि । यममावाह्य । द्वारशाखायोः पर्जन्याशोकना-
मानौकलशौसंस्थाप्य ॐ सोमायनमः ॐ अद्भ्योनमः । ॐ
वामनदिग्गजाय नमः । उत्तरांगे गणेशाय नमः । वामदक्षिण
स्तम्भयोः स्वर्लोकायनम । महर्लोकायनमः । कलशद्वये ॐ
गोदावर्यैनमः । ॐ कृष्णायैनमः । ॐ भौमयनम । ॐ बुधाय-
नमः । दक्षिणवामशाखयोः ॐ धात्रेनमः, ॐ विधात्रेनमः ।
ऊर्ध्वम् ऊर्ध्वश्रियैनमः । अधो देहल्यैनमः । देहलीमध्ये वास्तु
पुरुषायनमः । द्वारस्तम्भयोः पुष्पदंताय नमः, कपर्दिनेनमः,
यजर्वेदिनौ द्वारपालौ बृत्वा ॐ इषे त्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थ देवो
वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या
ऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरन मीवाऽअयक्ष्मामावस्तेन ऽईशत
माघशꣳ सोध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्यजमानस्य
पशून्पाहि । इति सम्पूज्य द्वारकलशयोः ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते

पितृमते स्वाहा । स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे । इति यमं संपूज्य कृष्णपताकाध्वजौ समुच्छ्रयेत् । सांगाययमाय बलिदानम्

नैॠत्य कोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य ॐ कुमुदायनमः ॐ दुर्जयाय-नमः । कलशे नैॠतयेनमः । ॐ मोषुणइन्द्रात्रपृत्सुदेवो रस्तिहि णते शुणिमन्तवयाः । महश्चिद्यस्य मोढुषो यव्याहविष्मतो मरुतो बन्दतेगोः । इति धूम्रपताकाध्वजौ समुच्छाय समालभ्य च निॠतये बलिदानम् ।

पश्चिमस्यांजयद्वारे-ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके। इति वरुणमावाह्य । द्वारशाखयोः संजीवनामृतनामानौ कलशौसंस्थाप्य ॐ अनिलायनम, ॐ अनलायनमः ॐ अंजनाखयदिग्गजायनमः । उत्तराङ्गे गणेशायनमः । वामदक्षिणस्तम्भयोः ॐ जनलोकायनम । तपोलोकायनमः । कलशद्वये ॐ रेवायैनमः, ॐ ताप्यैनमः, ॐ बृहस्पतयेनमः ॐ शुक्रायनमः दक्षिणवामशाखयोः ॐ धात्रेनमः ॐ विधात्रेनमः ऊर्ध्वं ऊर्ध्वश्रियैनमः । अधोदेहल्यैनमः । मध्येवास्तुपुरुषायनमः । द्वारस्तम्भयोः नन्दिनेनम ॐ चण्डायनमः । सामवेदिनौ द्वारपालौ-वृत्वा ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सिबर्हिषि । इति सम्पूज्य द्वारकलशयोः ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद । वरुणसम्पूजय श्वेतपताध्वजौ समुच्छ्राय ध्वजे शंकुकर्णायनमः । पताकायं क्षेत्रपालायनमः । वरुणाय बलिदानम् ।

वायुकोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य पुष्पदन्तायनमः। सिद्धार्थायनमः।
ॐ तववायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवाᳪस्यावृणीमहे।
वायवेनमः। वायुं सम्पूज्य पीतपताकाध्वजौ समुच्छ्राय वायवे
बलिंदद्यात्।

उत्तरस्यां कल्याणद्वारे—ॐ वयᳪसोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः
प्रजावन्तः सचेमहि। इति आवाह्य। द्वारशाखयोः धनद
श्रीप्रदनामानौ कलशौ संस्थाप्य प्रत्यूषायनमः। प्रभासायनमः।
इति वसुद्वयं सम्पूज्य। ॐ सर्वभौमनामदिग्गजायनमः।
उत्तराङ्गे गणेशाय नमः। वामदक्षिणस्तंभयोः ॐ सत्यलोकाय
नमः। ॐ ध्रुवलोकायनमः। कलशद्वये वेण्यैनमः। चयोल्ण्यै
नमः। शनैश्चराय नमः। राहवे नमः। दक्षिणशाखयोः धात्रे
नमः। विधात्रे नमः। ऊर्ध्वं-ऊर्ध्व-श्रियै नमः। अधो-देहल्यै
नमः। मध्ये-वास्तुपुरुषाय नमः। द्वारस्तंभयो-पार्वतीशाय नमः
चण्डेश्वराय नमः। अथर्ववेदिनौ द्वारपालौवृत्वा ॐ शन्नो
देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तु नः।
सम्पूज्य द्वारकलशयोः—ॐ हᳪसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता-
वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअ-
द्रिजाऽऋतं बृहत्। ॐ कुबेराय नमः। इति रक्तपताकाध्वजौ
समुच्छ्राय समालभ्य च कुबेराययक्षराजायबलिं दद्यात्।
❁ ईशानकोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य तत्र
सुप्रतीकाय नमः। ॐ सुमंगलाय नमः। ॐ ईशान

सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां । ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोधिपति ब्रह्मशिवोम् । इति मन्त्रेण ईशानं संपूज्य श्वेतपताकाध्वजौ समुच्छ्रायेत् । ततः ईशानाय बलिं दद्यात् । ततः । ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः । सबुध्न्याउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्च विवः ॥ मन्त्रेण कलशे ब्रह्माणं संपूज्य रक्तवर्णौ पताकाध्वजौ समुच्छ्राय समालभ्य च ब्रह्मणे बलिदानम् । नैर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्यस्थानं-गत्वा कलशे अनन्तमावाह्य ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । इति पताकाध्वजौ उच्छ्राय समालभ्य बलिदानं कुर्यात् ॐ भूतनाथाय क्षेत्रपालाय नमः । मण्डपमध्ये ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधि-महारथो जायतां दोग्ध्रीर्धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्ययजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो न कल्पताम् । मन्त्रेण महाध्वजं संपूज्य वंशेकिन्नरेभ्यो नम । ॐ इन्द्रस्यवृष्णो वरुणस्य राज्ञआदित्यानां मरुताᳬशर्द्धऽउग्रम् महामनसाम्भुवनच्यवानाङ् घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् इति मन्त्रेण मंडपमध्ये महाध्वजं स्थापयेत् । तत्र प्राच्यां ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳬहवामहे प्रियानान्त्वा प्रियपतिᳬहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिᳬहवामहे वसो मम आहमजानिगर्भध-मात्वमजासिगर्भधम् । इति गणपतिं सपूज्य ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिविमेषां वर्षमिषवः । तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणा दशप्रतीची-

दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽऽअस्तु तेनोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भेदध्मः ।
ॐ नमोऽस्तुरुद्रेभ्यो ये ऽअन्तरिक्षे येषाँ वातऽइषवः । तेभ्योदश०
ॐ नमोऽस्तुरुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश०
इति मण्डपवाह्ये दिग्विदिक्षु रुद्रान् संस्थापयेत् तेभ्यो बलिदानम्

अथ सर्वभूतेभ्योबलिदान

विद्याधराप्सरो लोका असुराश्चैव पन्नगा ।
सपत्नी परिवारश्च प्रतिगृह्णन्तु इम बलिम् ॥
नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्वं नक्षत्रैः परिवारिताः ।
स्थानं चैव पितृणांतु सर्वे गृह्णंतु इमं बलिम् ।
ईशानोत्तरयोर्मध्येक्षेत्रपाला महाबला ।
भीमनाभामहादंष्ट्रा सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम् ।
ये केचिदिह लोके तु आगता बलिकांक्षिणः ।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमकृत्य पुनः पुन ।
बलिं गृह्णन्तु इमे देवा आदित्यावसवः तथा ।
मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाग्रहाः ।
असुरायातुधानाश्च पिशाचा मातरो नगाः ।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ।
जृंभकाः सिद्धगन्धर्वा आद्याविद्याधरा नराः ।
दशैव दिक्पालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ।
सौम्यां भवंतु ते तृप्ता देवासुरगणास्तथा ।

ततो मण्डपात्पूर्वस्यां दिशि किंचिद्भूमि-
मुपलिप्य तत्रोपविश्य –

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवै सार्द्धरक्षां कुर्वन्तु तानि मे।
देव-दानव-गधर्व-यक्षराक्षस पन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकर्वन्तु मुदान्विता।
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैः सह।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः।

एवं संप्रार्थ्यं श्लोकोक्तदेवानांनाममन्त्रैस्तस्यामेव भूमौ पूजयेत्। ॐ त्रैलोक्येभ्य स्थावरेभ्यो भूतेभ्यो नम त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो-भूतेभ्यो नमः। ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, शिवाय नमः, दानवेभ्यो नमः गंधर्वेभ्यो नमः यक्षेभ्यो नम। राक्षसेभ्यो नमः, पन्नगेभ्यो नमः ऋषिभ्यो नमः मुनिभ्यों नमः, गोभ्यो नमः, देवमातृभ्यो नम. एवं प्रत्येकं संपूज्य भूमौ तेभ्यः बलिं।

तत पाणिपादं प्रक्षाल्य यजमान प्राग्द्वारेण समस्त ऋत्विक् मण्डल परिवृतः मण्डपं प्रविश्य महाविष्णु (महाशिवादि) प्रधानवेदी समीपं समागत्य उपविश्य मण्डपपूजापरिपूर्णतां प्रार्थयेत्।

मण्डपस्यप्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रपूजनम

संकल्पः–देशकालौ सँकीर्त्य श्रीनारायणप्रीतये विष्णुदेवप्रतिष्ठा यज्ञकर्मणि एतस्मिन् सर्वतोभद्रमण्डले वेदमन्त्रैर्ब्रह्मादिदेवानां वाहनं पूजनं करिष्ये।

ब्रह्मा—ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत सुरचोवेनऽआवः । सबुध्न्या उपमा ऽअस्यविष्ठा सतश्चयोनिमसतश्चविव । ॐ ब्रह्मणे नमः ।

उत्तरेवाप्यां सोमम्—ॐ वय ँ सोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रत । प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ सोमाय नमः ।

ईशान्यां खंडेन्दौ ईशानम्—ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धिय-ञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ॐ ईशानाय नम

पूर्वस्यां खंडेन्दौ इन्द्रम्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ इन्द्राय नम ।

आग्नेय्यामग्निम्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोअवया-सिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् । ॐ अग्नये नमः ।

दक्षिणेवाप्यां यमम्—ॐ सुगन्नु पथाम्प्रदिशन्न ऽएहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न ऽआयुः । अपैतुमृत्युममृतम्म ऽआगाद्वैवस्वतो नो ऽअभयं कृणोतु । ॐ यमाय नमः ।

नैऋत्यां खण्डेन्दौ निऋतिम्—ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेन-स्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु । ॐ निऋतये नमः ।

पश्चिमेवरुणम्—ॐतत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो-

हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश ऽ समान आयुः प्रमोषी । ॐ वरुणाय नमः ।

वायव्यां खण्डेन्दौ वायुम्—ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ऽ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः । ॐ वायवे नमः ।

वायुसोमयोर्मध्ये ऽष्टवसून्—ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा ऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जनाथां । द्यावा पृथिवीमित्रावरुणौत्वा वृष्ट्यावताम् । न्यन्तु वयोक्त ऽ रिहाणां मरुतां पृषतीर्गच्छवशापृश्निर्भूत्वा । दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह । चक्षुष्पा अग्ने ऽचक्षुर्मे पाहि । ॐ अष्टवसूभ्यो नमः ।

सोमेशानोर्मध्ये ईशानम्—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः ।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्—ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नादित्यासोभवतामृडयन्तः । आवो र्वाची सुमतिर्ववृत्याद ऽ होश्चिद्या वरिवोत्तरासत् । ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः ।

इन्द्राग्न्योर्मध्ये ऽश्विनौ—ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् । वाचेंद्रो बलेनेन्द्राय रघुरिन्द्रियम् ॐ अश्विनीभ्यांनमः

अग्नियमयोर्मध्ये विश्वेदेवान् —ॐ विश्वेदेवास ऽआगतश्रृणुता म इम ऽ हवम् । एदं बर्हिन्निषीदत । उपयामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्व देवेभ्यऽएषते योनिविश्वेदेवेभ्यस्त्वा देवेभ्यः । सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

यमनिर्ऋतयोर्मध्येसप्तयक्षान्— ॐ अभित्यं देव सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव रत्नधाममभि प्रियं मतिं कविम्। उ र्वायस्यामतिभाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्व प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनु प्राणन्तु प्रजास्त्वाम नु प्राणीहि। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः।

निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये भूतनागान्—ॐ भूताय त्वानारातये स्वरभि विख्येषन्दृ हन्तान्दुर्य्याः पृथिव्या मुखैरन्तरिक्षमन्वेमिपृथिव्या-स्त्वानाभौ सादयादित्याउपस्थेग्नेहव्य रक्ष। ॐ भूतेभ्यो नमः।

तत्रैवसर्पान्—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। सर्पेभ्यो नमः।

वरुणवायव्योर्मध्येगन्धर्वाप्सरसः—ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्य-बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरि-डऽईडितः। मित्रावरुणो त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा-विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य परिधिरस्यग्यिग्निरिडऽईडितः। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः। ॐ अयं पुरोहरिकेश सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्चरथौ जाश्च सेनानिण्यौ पुञ्जिकस्थला चक्रतुस्थला चाप्सरसौ दंक्षणवः पशवो हेति पौरुषेयोवधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो ऽअस्तुते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यद्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषां-ञ्जम्भेदध्मः। ॐ अप्सरोभ्यो नमः।

ब्रह्मसोमयोर्मध्येस्कंदम्—ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रा-

दुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महि-
जातन्ते अर्वन् । ॐ स्कन्दाय नम ।

तदुत्तरेनन्दीश्वरम् ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाधनः
क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शतँसेना
ऽअजयत्साकमिन्द्रः । ॐ नन्दीश्वराय नमः ।

तत्रैवशूल:— ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वा क्षित्या ऽउन्नयामि । समापो
ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी । ॐ शूलाय नमः ।

तदुत्तरेकालः महाकाली—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्या ऽउन्नयामि
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी । ॐ महाकालाय नमः ।

ब्रह्मेशानयोमध्येदक्षादि सप्तप्रजापतीन्—ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो
विश्वारूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वय
ममुष्यपिता सावस्यपिता वयँस्यामपतयो रयीणाम् ।
प्रजापतिभ्यो नमः ।

ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गाम्—ॐ अम्बे अम्बिके ऽअम्बालिके नमा नयति
कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।
दुर्गायै नमः ।

दुर्गापूर्वे विष्णुम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्य
पाँसुरे स्वाहा । ॐ विष्णवे नमः ।

ब्रह्माग्नयोर्मध्ये सस्वधा पितन्—ॐ उदीरतामवर उत्परासउन्मध्यमाः
पितरः सोम्यास । असुंय ऽईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनो ऽवंतु पितरो
हवेषु । ॐ पितृभ्यो नमः ।

ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगान्-ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थायस्ते अन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमिमानः प्रजाᳬ रीरिषो मोतवीरान् । ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः ।

ब्रह्मनिर्ऋतयोर्मध्ये गणपतिम् -ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳬहवामहे प्रियानान्त्वा प्रियपतिᳬहवामहे निधीनान्त्वा निधीपतिᳬहवामहे वसो मम आमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम् । ॐ गणपतयेनमः

ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये आप:-ॐअपो ऽअद्यान्वचारिषᳬरसेन समसृक्ष्महि पयस्वानग्न ऽआगमन्तम्मासᳬसृजवर्चसा प्रजया च धनेन च । ॐ अद्भ्यो नमः ।

ब्रह्मवायु मध्ये मरुत:— ॐ वृहदिन्द्रायगायत मरुतो वृत्रहन्तमम् । येनज्योतिरजनयन्नृतावृधोदेवन्देवायजागृवि । ओंमरुद्भ्यो नमः

ब्रह्मणपादतले कर्णिकाधः पृथ्वीम् -ॐ महीद्यौः पृथिवी चन ऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतानोभरीमभिः । ॐ पृथिव्यै नमः ।

तत्रैव गंगादि सरितः—ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णिया । असिक्निया मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया । ॐ गंगादिसरिद्भ्यो नमः ।

तत्रैव सप्तसागरान्—ॐ मापोमौषधीर्हिᳬसि धाम्नो धाम्नो राज स्ततो वरुण नो मुञ्च । ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः ।

तदुपरिमेरवे नमः—ॐ मेरवे नमः । उत्तरे ॐ गदायै नमः । ऐशान्याम् ॐ त्रिशूलाय नमः । पूर्वे वज्राय नमः । आग्नेय्यां ॐ शक्तये नमः । दक्षिणस्यां ॐ दंडाय नमः । नैर्ऋत्याम् ॐ खड्गाय नम । पश्चिमे ॐ पाशाय नमः । वायव्यां अंकुशाय नमः । ब्रह्माद्यो

उत्तरे गौतमाय नमः । ऐशान्यां भारद्वाजाय नमः । पूर्वे विश्वामित्राय नमः आग्नेय्यां ॐ कश्यपाय नमः । दक्षिणे जमदग्नये नमः । नैऋत्यां वशिष्ठाय नमः । पश्चिमे अत्रये नमः । वायव्यां वैष्णव्यै नमः । उत्तरस्यां माहेश्वर्यै नमः । ऐशान्यां वैनायक्यै नमः । ततः मनो जूतिर्जुषता० इत्यनेन प्रतिष्ठाप्य ।

पुष्पांजलिः—ॐ ब्रह्मणे नम, ॐ सोमाय नमः, ॐ ईशानाय नम, इन्द्राय० अग्नये० यमाय०, निर्ऋतये, वरुणाय०, वायवे, अष्टवसुभ्य. एकादश रुद्रेभ्यः, द्वादशादित्येभ्यः०, अश्विभ्यां० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो०, सप्तयक्षेभ्य ०, भूतनागेभ्यः, गन्धर्वाप्सरोभ्य ०, स्कन्दाय०, नन्दीश्वराय०, शूलाय०, महाकालाय०, दक्षादिभ्यसप्तगणेभ्यो० दुर्गायै०, त्रिष्णवे, स्वधायै० मृत्युरोगेभ्यो० गणपतये०, अद्भ्यः०, मरुद्भ्यो० पृथिव्यै० गंगाविनदीभ्य० सप्तसागरे०, मेरवे० अतः अग्रे ऽपि नाम मन्त्रैणैवस्थापनमुपलभ्यते । ॐ गदायै नमः ॐ त्रिशूलाय नमः वज्राय० ॐ शक्तये०, ॐ दंडाय०, ॐ खड्गाय०, ॐ पाशाय० ॐ अंकुशाय० ॐ गौतमाय०, ॐ भारद्वाजाय० ॐ विश्वामित्राय० ॐ कश्यपाय०, ॐ जमदग्नये, ॐ वसिष्ठाय०, ॐ अत्रये०, ॐ अरुन्धत्यै० ॐ ऐन्द्रयै नमः ॐ कौमार्य्यै०, ॐ ब्राह्मयै०, ॐ वाराह्यै०, ॐ वैष्णव्यै०, ॐ माहेश्वर्य्यै० ॐ वैनायक्यै नमः । एवं सर्वेभ्यो भद्रदेवताभ्यो नाममन्त्रैः पुष्पाञ्जलिसमर्प्यदेव बलिं चोपाहृत्य कलशस्थापन विधिना सौवर्णं राजतं ताम्रमयं वा कलशं स्थापयित्वा वरुणं सम्प्राथ्य तदुपरि प्राणप्रतिष्ठापुरस्सरं प्रतिमां

संस्थापयेत् (तत्र सुवर्णमयीं महाविष्णुप्रतिमां महालक्ष्मी प्रतिमां च निम्न प्रकारेण सम्पूज्य संस्थापयेत्) तत्रादौ विष्णु प्रतिमायां पुरुषसूक्तेनांगन्यासान् विधाय पुरुषसूक्तेनैव नारायणपूजा विधेया

अथ नारायणपूजा

अथध्यानम्— ध्येयः सदासवितृमण्डल मध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकर कुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृत शंख चक्रः ॥

आवाहनम्—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् ।
सभूमि ँ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । वामकरे

कुसुमासनम् ॐ पुरुष ऽएवेद ँ सर्वं यद्भूत यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ये नाति रोहति । दक्षिणकरे

पाद्यम् - ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायांश्चपूरुषः ।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि । वामपादे

अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि । दक्षिणपादे ।

आचमनम्—ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पुरुषः ।
सजातो ऽअत्य रिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः । वामजानौ

स्नानम्— ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये । दक्षिणजानौ

पञ्चामृत स्नानम्-(ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित्)

वस्त्रम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत। वामकट्याम्।

ब्रह्मसूत्रम् ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः। दक्षिणकट्याम्

गन्धः— ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये। नाभौ

तुलसीपुष्पाणि—ॐ यत्पुरुषं व्यदधु: कतिधाव्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा ऽउच्येते। हृदि

धूपः— ॐ ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृतः।
ऊरूतदस्य यद् वैश्यः पद्भ्याँशूद्रो ऽअजायत। कण्ठे

दीपः— ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निरजायत। वाम बाहुमूले

नैवेद्यम्—ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षँशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकांर अकल्पयन् दक्षिणबाहुमूले

ताम्बूलम्—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मः ऽइध्मः शरद्धविः। मुखे

(प्र) दक्षिणा—ॐ सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवायद्यज्ञन्तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्। ललाटे

पुष्पाञ्जलि:-ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवा:स्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
तेह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: । मूर्ध्नि
विष्णोर्द्वादशनामस्तव:—

केशवं मार्गशीर्षेतु पौषे नारायणं स्मरेत् ।
माधवं माधमासेतु गोविन्दं फाल्गुने स्मरेत् ॥
चैत्रमासे सदाविष्णुं वैशाखे मधुसूदनम् ।
ज्येष्ठे त्रिविक्रम विन्द्यादाषाढ़े वामनं पठेत् ।
श्रावणे श्रीधरं विन्द्याद्धृषीकेशं च भाद्रके ।
आश्विने पद्मनाभ च ऊर्ज्जे दामोदर जपेत् ॥
द्वादशैतानि नामानि ऋष्यशृंगो ऽब्रवीन्मुनि: ।
पूजयेन्मासनामानि सर्वान्कामान्समश्नुते ॥
आयुष्मन्तं सुतं सूते यशो मेधा समन्वितम् ।
धनबन्तं प्रजावन्त धार्मिकं सात्विकं शुचिम् ।
अनेन पूजनेन महाविष्णु: प्रीयतां न मम ॥

अथ महालक्ष्मी:पूजनम्

अथध्यानम्—या सा पद्मासनस्था विपुलकटि तटी पद्म पत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभि: स्तन भर नमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितै: स्नापिता हेमकुम्भै:
नित्यँ सा पद्महस्ता वसतु ममगृहे सर्वमांगल्य युक्ता ॥
आवाहनम्—ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह । मूर्ध्नि

पुष्पासनम्—ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। नेत्रयोः

पाद्यम्—ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम्। कर्णयोः

अर्घ्यम्- ॐकांसो ऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिह होपह्वये श्रियम्। नासिकयोः

आचमनम् -
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि। मुखे

स्नानम्-ॐआदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षो ऽथ बिल्वः
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः। कण्ठे

वस्त्रम्— ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे। बाह्वोः

ब्रह्मसूत्रम् ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्। हृदि।

गन्धः—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। नाभौ।

पुष्पाणि—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां मयि। गुह्ये।

धूपः— ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्। पायौ

दीप:—ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे ।
निच देवीं मातरँ श्रियं वासय मे कुले । ऊर्वोः

नैवेद्यम -ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टां पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह । जान्वोः

ताम्बूलम्—ॐ आर्द्रां यः करिणी यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह । जंघयोः

दक्षिणा—ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्यो ऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।चरणयोः

पुष्पांजलिः—ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्री काम सततं जपेत् । सर्वाङ्गे

प्रार्थना— भवानि त्वं महालक्ष्मी सर्वकाम प्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महा लक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ।।

अथ द्वादशलिङ्गतो भद्रमण्डल पूजनम्

प्रार्थना—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।

संकल्पः—देश कालौ संकीर्त्य अद्य पुण्य तिथौ मम इह जन्मनि
जन्मांतरे च सुख सौभाग्य सम्भूत्यादि फल प्राप्त्यर्थं श्री उमा-
महेश्वरदेवता प्रीतये रुद्रयज्ञे (मया आचरितस्य अमुक व्रतस्य

फल प्राप्ति द्वार उद्यापनांगभूतं वा) लिंगतो भद्र देवतानां आवाहन प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये । इति संकल्प्य मण्डल बाह्ये ईशानकोणे-गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि । एवं सर्वत्र १ आग्नेय्यां-गणपतये नमः २ नैऋते-दुर्गायै० ३ वायव्यां-क्षेत्र-पालाय नमः ४ ततः भद्रमध्ये-सदाशिवाय ५ ततः अष्टदले-पूर्वस्यां दिशि-कालाग्निरुद्राय० १ कूर्माय० २ मण्डूकाय० ३ आग्नेय्यां-वराहाय ४ अनन्ताय ५ दक्षिणे-पृथिव्यै० ६ स्कंदाय० ७ अंकुराय० ८ नैऋत्यां-दिशि नलाय० ७ पद्माय० पश्चिमे पत्रेभ्य०११ केसरेभ्य०१२ कर्णिकायै० १३ वायव्यां-सिंहासनाय १४ पद्मासनाय० १५ उत्तरे धर्माय० १६ ज्ञानाय० १७ वैराग्याय १८ ऐशान्यां-ऐश्वर्याय० १९ चिदाकाशाय० २० पद्ममध्ये-योगपीठात्मने० २१ ततः कर्णिकोपरिपूर्वे-पृथिव्यै० १ दक्षिणे-कपिलाय २ पश्चिमे-सप्तसरिद्भ्य ३ उत्तरे-सप्तसाग-रेभ्यः ४ अथ कर्णिका समीपे-चत्वारि श्वेतभद्राणितद्देवता स्थापनं पूर्वे-१ तत्पुरुषाय० २ दक्षिणे-अघोराय ३ पश्चिमे-सद्योजाताय० ४-उत्तरे वामदेवाय अथ तत्समीपे-कृष्णानि अष्टौ भद्राणि तद्देवता स्थापनमैशान्यक्रमेण ऐशान्यां-भगवत्यै० १ पूर्वे उमायै० २ आग्नेय्यां-शंकरप्रियायै० ३ दक्षिणे-पार्वत्यै० ४ नैऋत्यां-गौर्यै० ५ पश्चिमे-काल्यै० ६ वायव्यां-कौम्यै० ७ उत्तरे-विश्वम्भर्यै० ८ ततः कृष्णभद्राणामधः-अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ईशान्यादि क्रमेण १ ईशान्ये-नन्दिन्यै० पूर्वे महाकालाय० २ आग्नेय्यां-वृषभाय० ४ दक्षिणे-भृंगकिरीटिने

५ नैऋत्यां-स्कन्दाय० ६ पश्चिमे-उमापतये० ७ वायव्यां चण्डेश्वराय० ८ उत्तरे-सोमसूत्राय० अथ लिंगोपरि श्वेतभद्राणि तद्देवता स्थापनम् । १ पूर्वे धात्रे नमः २ दक्षिणे-मित्राय० ३ पश्चिमे-यमाय० ४ उत्तरे रुद्राय। तत समीपे लिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणि तद्देवता स्थापनम् । ईशानादि क्रमेण १ ईशान्ये वरुणाय० २ पूर्वे - सूर्याय० ३ आग्नेय्याँ-भगाय० ४ दक्षिणे-विवस्वते० ५ नैर्ऋते-पुरुषोत्तमाय० ६ पश्चिमे-सवित्रे० ७ वायव्ये त्वष्ट्रे ८ उत्तरे-विष्णवे० ततः द्वादशलिंगदेवता स्थापन पूर्वादि क्रमेण। १ पूर्वे शिवाय० २ एक नेत्राय ३ एक रुद्राय०१ दक्षिणे-मूर्तये० २ श्रीकण्ठाय० ३ वामदेवाय० १ पश्चिमे-ज्येष्ठाय० २ श्रेष्ठाय ३ रुद्राय १ उत्तरे-कालाय २ कलविकरणाय ३ बलविकरणाय० । अथ श्वेत षोडशवापीदेवतास्थापनम् । ईशानादि क्रमेण १ अणिमायै० २ महिमायै० ३ लघिमायै० ४ गरिमायै० ५ प्राप्त्यै० ६ प्राकाम्यायै० ७ ईशितायै० ८ वशितायै० ९ ब्राह्म्यै० १० माहेश्वर्यै० ११ कौमार्यै० १२ वैष्णव्यै० १३ वाराह्यै० १४ इन्द्राण्यै० १५ चामुण्डायै० १६ चण्डिकायै० ततः वापी समीपे अष्टौ रक्त भद्राणि तद्देवता स्थापनम् । ईशानादिक्रमेण । १ ईशाने असितांगभैरवाय० २ रुरुभैरवाय ३ चण्डभैरवाय० ४ क्रोधभैरवाय० ५ उन्मत्तभैरवाय० ६ कालभैरवाय० ७ भीषणभैरवाय० ८ संहारभैरवाय० अथ अष्टौ वल्ली देवता स्थापनमीशानादि क्रमेण। ईशाने १घृताच्यै २ मेनकायै० ३ रंभायै ४ उर्वश्यै० ५ तिलोत्तमायै० ६सुकेशायै०

७ मंजुघोषायै ० ८ अप्सरायै ततः मण्डलमध्ये परिधि समीपे शृंखला देवतास्थापनमाग्नेय्यादि क्रमेण । १ भवाय० २ शिवाय० ३ रुद्राय० ४ पशुपतये० ५ उग्राय० ६ महादेवाय० ७ भीमाय० ८ ईशानाय० ९ वासुकये १० ततः नैर्ऋत्यां परिधि समीपे शृंखला देवताः । १ तक्षकाय० २ कुलीराय० ३ कर्कोटकाय० ४ शंखपालाय० ५ कम्बलाय० ६ अश्वतराय० ७ वैन्याय ८ अंगाय० ९ हैहयाय० १० अर्जुनाय । ततः वायव्ये दशशृंखला देवताः । १ शाकुन्तलाय० २ भरताय० ३ नलाय० ४ रामाय० ५ सार्वभौमाय० ६ निषधाय० ७ विन्ध्याचलाय० ८ माल्यवते० ९ पारियात्राय० १० सह्याय । ततः ईशान परिधि समीपे दश शृंखला देवता स्थापनम् । १ हेमकूटाय० २ गंधमादनाय० ३ कुलाचलाय० ४ हिमवते ५ रैवताचलाय० ६ देवगिरये० इति शृंखला देवताः । अथ चतुर्दिक्षुखण्डेंदु देवता स्थापनमीशानादि क्रमेण । १ ईशाने अश्विनी कुमाराभ्या० आग्नेय्यां विश्वेदेवेभ्यो० ३ नैर्ऋते पितृभ्यो० ४ वायव्यां नागेभ्यः ततः मण्डलाद्बहिः प्रथमं सत्वपरिधौ पूर्वादि क्रमेण देवताः १ इन्द्राय० २ अग्नये० ३ यमाय० ४ निर्ऋतये० ५ वरुणाय० ६ वायवे० ७ कुबेराय ८ ईश्वराय० ९ ब्रह्मणे० १० अनन्ताय० तद्बहिः रजः परिधौ पूर्वादि क्रमेण देवताः । १ पूर्वं वज्राय० २ शक्तये० ३ दण्डाय० ४ खड्गाय० ५ पाशाय० ६ अंकुशाय० ७ गदायै० ८ त्रिशूलाय० तद्बहिस्तमोमय कृष्ण परिधौ पूर्वादि क्रमेण देवताः । १ कश्यपाय० २ अत्रये०

३ भरद्वाजाय० ४ विश्वामित्राय० ५ गौतमाय० ६ जमदग्नये० ७ वसिष्ठाय० ८ अरुंधत्यै० । ततः पुर्वे ऋग्वेदाय० १ दक्षिणे यजुर्वेदाय० २ पश्चिमे सामवेदाय० ३ उत्तरे अथर्ववेदाय० ४ एवं देवताः संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य सांबसदाशिव-प्रतिमां पूर्वोक्त क्रमेण ।

प्राण प्रतिष्ठा पुरस्सर तांतु प्रधानदेवतां मण्डलमध्ये कलशो परि संस्थाप्य पूजयेत् । इति शम् । ततो गणेशाम्बिकयोः पूजांकृत्वा ।

अथ शिवार्चनम्

नन्दीश्वर पूजा—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।

प्रार्थना—ॐ प्रैतुव्वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा ।
भरन्नग्निम्पुरीष्यमापादद्यायुषः पुरा ।

वीरभद्रपूजा—ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्ये मा क्षभिर्यजत्राः स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।

प्रार्थना—ॐ भद्रो नो ऽअग्निराहुतोभद्रारातिं सुभग भद्रो ऽअध्वरः ।
भद्राऽउत प्रशस्तयः ।

कार्तिकपूजनम्—ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्वन् ।

प्रार्थना—ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव । तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ।

कुबेरपूजा—ॐ कुपिदङ्गयवमन्तो यवञ्चिच्चद्यथा दान्त्यनु पूर्वं वियूय।
इहे हैषाङ्कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।

प्रार्थना—वयᳬसोमव्रते तव मनस्तनूषुविभ्रत । प्रजावन्त सचेमहि।

कीर्तिमुख पूजा—असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभवे स्वाहा विवस्वते
स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय
स्वाहा सᳬसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा।

प्रार्थना— ओजश्चमे सहश्चम ऽआत्मा च मे तनूश्चमे शर्म च मे
वर्म च मेङ्गानि च मे स्थीनि च में परूᳬषि च मे शरीराणि च
मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

आत्म नो ऽङ्गन्यास:—

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी।
तया नस्तन्वाशान्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि। शिखायाम्।

अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽ अधि।
तेषाᳬसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि शिरसि।

असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम्।
तेषाᳬसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि। ललाटे।

वयᳬसोम व्रते तव मनस्तनूषुविभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि। भ्रुवोर्मध्ये।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। नेत्रयोः

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । तृतीयनेत्रे ।

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च
नमः कुल्याय च सरस्याय च नमोनादेयाय च वैशन्ताय च । कर्णयोः

मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः
मानो वीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ।
नासिकयो ।

अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानांमुखा शिवो नः सुमनाभव । मुखे ।

नमोवञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो
नमो निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो
नम सृकायिभ्योजिघा ँ सद्भ्योमुष्णताम्पतये नमो
नमो सिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः । ग्रीवायाम्

नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव ँ रुद्रा ऽउपश्रिता ।
तेषा ँ सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि । कण्ठदेशे ।

नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने । बाह्वोः ।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण ।
तेषा ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि । हस्तयोः ।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजायचापरजाय ।
नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च अंगुलिषु ।

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय चा-
भिघ्नते च नम ऽआखिदते च प्रखिदते च नम ऽइषु कृद्भ्यो
धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳪहृदयेभ्यो
नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः । हृदये
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च
वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नम । पृष्ठे ।

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रᳪहेतयो ऽन्यमस्मन्निवपन्तुता । उदरे ।

नमः शंभवाय च मयो भवाय च नम शंकराय च ।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च । दक्षिणकुक्षौ ।

द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।
आसाम्प्रजानाम्मेषां पशूनामाभेर्मा रोङ्मोचन किञ्चना ममत् ।
वामकुक्षौ

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम । नाभौ

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।
परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्ति

वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि । कट्याम् ।

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तुमामाहि ँसीः ।
निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय-
सुवीर्याय । लिंगे ।

इमा रुद्राय तवसेकर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ।गुह्ये
इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय
भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेन ऽईशत
माघश ँसोध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात् वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि
वृषणयोः ।

मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम्
मानो वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिष । ऊर्वोः
एषते रुद्रभाग सहस्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व ।
स्वाहैषते रुद्रभाग आखुस्ते पशुः । जान्वो ।
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च
नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ।
जंघयोः ।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो वृहते च वर्षीयसे च ।
नमो वृद्धाय च सवृधे च नमो ग्र्याय च प्रथमाय च । गुल्फयोः ।
ये पथाम्पथि रक्षय ऽऐल वृदा ऽआयुर्युधः ।
तेषा ँसहस्र योजने ऽव धन्वानि तन्मसि । पादयोः ।
अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातु धान्योधराचीः परासुव । कवचे

नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमोदुन्दुभ्यायचाहनन्याय च । अस्त्रे ।

विज्यंधनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ उत ।
अनेशन्नस्यया इषब ऽआभुरस्य निषङ्गधिः । धनुषि ।
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिषा ऽइव ।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु । बाणे ।

विकिरिदद्रविलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र ँ हेतयो ऽन्यमस्मिन्निव पन्तुताः । खड्गे ।
य एता बन्तश्च भूयाँ ँसश्चदिशो रुद्रावितस्थिरे ।
तेषां ँसहस्रयोजनेव धन्वामि तन्मसि । दिग्बन्धनम् ।
एवं न्यासविधिं विधाय शिवो ऽहम् इति भावयेत् ।
एवमेव शिवलिङ्गे ऽपि न्यासविधि कुर्वीत् ।
ततः षोडशोपचारैः शिवार्चनं कुर्यात् ।

आवाहनम्–
मानो महान्तभुतमामो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमान ऽउक्षितम्।
मानो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रिया स्तन्वो रुद्ररीरिषः।

पुष्पासनम्–या ते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तन्वाशन्त मयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ।

पाद्यम्–यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ँसीः पुरुषञ्जगत् ।

अर्घ्यम्–शिवेन वचसात्वागिरिशाच्छावदामसि ।
यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँसुमना ऽअसत् ।

आचमनम्-अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव ।

स्नानम्- असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतवभ्रुः सुमङ्गल ।
ये चेनᳬरुद्रा ऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशो वैषाᳬहेऽईमहे ।

पयःस्नानम्-आप्या यस्व समेनुते विश्वतः सोम वृष्णयम् ।
भवावाजस्य सङ्गथे ।

शुद्धस्नानम्-देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांम्पूष्णो हस्ताभ्याम्

दधिस्नानम्-दधिक्राब्णो अकारिषं० जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनोमुखाकरत्प्रण आयुᳬषितारिषत् ।

शुद्धस्नानम्- देवस्यत्वा सवितुः०

घृतस्नानम् घृतवतीभुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरेभूरिरेतसा ।

शुद्धस्नानम् -देवस्यत्वा० असौ यस्ताम्रो अरुणऽउतवभ्रुः सुमङ्गलः
ये चैनᳬरुद्रा ऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाᳬहेड ईमहे ।

शर्करा स्नानम् स्वादुः पवस्वदिव्यायजन्मन स्वाद्युरिन्द्रायसुहवी
तुनाम्ने । स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे वृहस्पतये मधुमां२ ऽअदाभ्यः

शुद्धस्नानम्- असौयः० देवस्स्यत्वा०

पुनराचमनीयम्— अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यों धराचीः परासुव ॥

वस्त्रम्-ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासो ऽअग्ने विश्वरूपᳬसंव्ययस्व विभावसो ।

कटिवस्त्रम्- प्रमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे ।
अथो ये ऽअस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः ।

यज्ञोपवीतम्- प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम् ।
याश्चते हस्त ऽइषवः पराताभगवो वप् ।

गन्धम-युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो बिप्रा विप्रस्य वृहतोविपश्चितः
विहोत्रादधे वयुना विदेक इन्मही देवस्यसवितुः परिष्टुतिः स्वाहा

अक्षत- अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽअधूषत । अस्तोषतस्वभानवो
विप्रान विष्ठयामतं योजान्विन्द्रते हरी ।

पुष्प-विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ उत ।
अनेशन्नस्ययाऽ इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ।।

विल्वपत्रम्-
नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च । याते
हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनु । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज ।

दीप- परिते धन्वनो हेत्ति रस्मावृणक्तुविश्वतः ।
अथो य ऽइपुधिस्तवारे ऽऽअस्मिनिधेहि तम्

नैवेद्यम्- अवतत्यधनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना असत् ।

आचमनम्-अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वांश्चजम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव ।

मुखवासः— नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥

ताम्बुलम्—नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमः ऽआखिदते प्रखिदते च नमः ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्यश्च वो नमो नमो वः किरिके यो देवानाᳬहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्के यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः ।

दक्षिणा- हिरण्यगर्भ समवर्त्तताग्रेभूतस्य जात पतिरेक ऽआसीत् ।
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाँकस्मै देवाय हविषा विधेम ।

ध्यानम्—शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥
नीलग्रीवं शशांकांकं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
व्याघ्र चर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिंगलजटा शिखामुद्योत कारिणम् ॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्द्धधारिणम् ।
दिव्य सिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवम क्षरमव्ययम् ।
सर्वव्यापिनमीशानमेवं वै विश्वरूपिणम् ।
गौरी चतुर्भुजां चण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्वलाम् ।
पद्मदर्पणहस्तां च वरदाभय हस्तकाम् ।
दिव्यवस्त्रपरीधानां दिव्यालङ्कारभूषिताम् ॥

प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्सङ्गे तु वामत. ।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥

पुष्पोदकेनतर्पणर्म–ॐ भवं देवं तर्पयामि । ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि । ॐ पशुपति देवं तर्पयामि । ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि । ॐ उग्रं देवं तर्पयामि । ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि । ॐ देव देवं तर्पयामि । ॐ ज्येष्ठाय नमः । पुनराचमनीयम् । ॐ श्रेष्ठाय नम मधुपर्कः । मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कदः । मधुपर्क प्रदानेन प्रीतोभव महेश्वर। ॐ कालाय नमः गन्धः । ॐ कलविकरणाय नमः पुष्पाणि । ॐ सर्वभूतदमनाय नम. धूपः । ॐ मनोन्मनाय नमः दीपम् । ॐ भवोद्भवाय नमः नैवेद्यम् ।

पुष्पाञ्जलयः–ॐ भवाय देवाय नम । ॐ शर्वाय देवाय नमः। ॐ ईशानाय देवाय नमः । ॐ पशुपतये देवाय नम. । ॐ रुद्राय देवाय नमः । ॐ उग्राय देवाय नम । ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः । ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ॐ उग्रायवायुमूर्तये नम । ॐ भीमाया ऽऽकाशमूर्तये नमः । ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नम. । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः। एवं सम्पूज्य ततः सहस्रघटैः स्नपनम् ।

अथ अग्निस्थापनम्

त्रिभिःकुशैः परि समूहनम्—ॐ यद्देवाः देवहेडनन्देवासश्चकृमावयम् ।
अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहस । इतित्रिभिः कुशैः
परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां सम्परित्यजेत्

पूर्वतः प्राक्समारभ्यक्रमेणेव तु दक्षिणे ।
उदीच्यां च समूह्यान्ते ईशान्यां तान्परित्यजेत् । हलायुध ।

गोमयोदकेनोपलेपनम्—ॐ मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो
गोषु मानो ऽअश्वेषु रीरिष । मानो वीरान्रुद्रभामिनो बधीर्हु-
विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे । इतिगोमयोदकेनोपलिप्य ।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकम् ।
एकमेकं पावनीयं मांगल्ये सर्व कर्मणि । शांडिल्यः ।

स्रुवेण स्फेन वा प्रागग्रउत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लेखनम्—ॐ त्वां
वृत्रेष्विन्द्रसत्पतिं नरस्त्वां काष्ठा सर्वतः सत्वान्नश्चित्र ।
वज्रहस्तधृष्णुया महस्तवानो ऽअद्रिवः शामश्वꣳरयमिन्द्र संकिर-
सत्रावाजन्न जिगेयुषे । इति त्रिरुल्लिख्य ।

स्वर्मर्त्यश्चपाताला त्रिरुल्लिख्यो ल्लेखनात् ।
वैश्वानरः स्थितो यश्च होमे तत्र समागत । हारीतः

उल्लेखनक्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां पाँशूद्धरणम्—ॐ वज्र ङ्गच्छ
गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्वधामदेव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳशतेन
पाशैर्यो ऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मस्तमतो मामौक् ।
इत्यनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदधृत्य ।

अंगुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तो ऽनामिकाधनदायिनी ।

द्वाभ्यां समुद्धृतारेखा यजमानशुभावहः । संवर्तः ।

जलेनाभ्युक्षणम्–ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो

हस्ताभ्याम् । तत्र तूष्णीं कांस्य पात्रस्थ वह्निं प्रत्यङ्मुखं समाधाव

कृतयुगे स्वर्ण पात्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ।

द्वापरे रीति पात्रञ्च कलौ कांस्यं प्रशस्यते ॥

अग्न्याधानम्-ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह

अग्निपूजा–ॐ समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयता तिथिम् । अस्मिन

हव्या जुहोतन ।

कुंडमेखला पूजा–ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।

समूढमस्य पांसुरे । ॐ विष्णवे नम ।

ब्रह्मा–ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः ।

सबुध्न्याउपमाऽअस्य विष्ठा सतश्चयोनि मसतश्च विवः ।

शिवः–ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत षवे नमः ।

बाहुभ्यांमुत ते नमः । ॐ शिवाय नमः ।

समिदाधानम्–ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः

तज्जानन्नग्नऽआरोहाथानो वर्द्धया रयिम् ।

योनिपूजा– ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां २ कांपीलवासिनीम् ।

नाभिपूजा–नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मे पचितिर्भसत् । आनन्द-

नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः । जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोस्मि

विशिराजा प्रतिष्ठित ।

कण्ठपूजा - नीलग्रीवाः शिति कण्ठा दिवँरुद्रा उपश्रिताः ।
तेषाँसहस्रयोजने बधन्वानि तन्मसि ॥

विश्वकर्मपूजा-ॐविश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीयमुग्रो विहव्यो यथासत् ।

मेखलापूजा-ॐ इयंदुक्तं परिवाधमाणा वर्णं पवित्रं पुनतीम ऽआगात्
प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देबि सुभगा मेखलेयम् ।

अग्निपूजनम-
ॐ चत्वारिश्रृंगास्त्रयो ऽअस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो ऽअस्य
त्रिधा वद्धो बृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्या २ आविवेश ।

प्रार्थना-ॐ अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
हिरण्यवर्णममलं विशुद्ध सर्वतोमुखम् ।
सर्वत पाणिपादंतत् सर्वतो क्षि शिरो मुखम् ।
वैश्वानरोमहानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ॥

अथ ग्रहाणाम वाहन पूजन च

ऐशान्यां वस्त्राच्छादिते पीठे नवग्रहमण्डलं विलिख्य सूर्यादि ङवग्रहान् अधि देवता प्रत्यधि देवता पञ्चलोककपालदशदिक्पाल वास्तोष्पति क्षेत्र पाल सहितानावाहयेत् तद्यथा-

सूर्यः-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।

चन्द्रः-ॐ इमन्देवा ऽअसप म ँसुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते जान-
राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै विश ऽएष वो ऽमी
राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणानाँराजा ।

भौमः– ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ।
अपाᳪरेताᳪसि जिन्वति ॥

बुध–ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जा गृहि त्वमिष्टा पूर्ते सᳪसृजेथा मयं च
अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।

बृहस्पति ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

शुक्रः–ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳪशुक्रमन्धस इन्द्र स्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतँ मधु ।

शनिः– ॐ शन्नो देवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।
शं यो रभि-स्रवन्तु नः ।

राहुः-ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृध सखा । कयाशचिष्ठयावृता

केतुः–ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः

अथ ग्रहदक्षिणे पार्श्वेऽधिदेवतास्थापनम्

त्र्यम्बकः–ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

उमा–ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्वि-
नौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणमुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ।

स्कन्दः– ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात्
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहुऽउपस्तुत्यं महि जातन्ते अर्वन् ।

विष्णु:-ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।

ब्रह्मा—ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूरऽइषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीर्धेनुर्वोढा नड्वानाशुः
सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाःसभेयो युवास्ययजमानस्य वीरो
जायता निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः
पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

इन्द्र:-ॐ स जोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्
जहि शत्रूँरपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।

यमः —ॐ असि यमो अस्याऽऽदित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणिदिवि बन्धनानि ।

कालः—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि ।
समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

चित्रगुप्तः ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।

अथ प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहाणां वाम पार्श्वे

अग्निः—ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ२ आसादयादिह

जलम्—ॐ आपः प्रणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम । ज्योक् च सूर्यंदृशे

पृथिवी—ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्मसप्रथा ।

विष्णुः— ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ।
समूढमस्यपाँ सुरे स्वाहा ।

इन्द्रः—ॐ इन्द्रऽआसन्नेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञ पुरऽएतु सोम ।
देव सेनानामभिभञ्जन्तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।

इन्द्राणी--ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः । पूषासि घर्मायदीष्व

प्रजापति—ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम् ।

सर्पः-- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के पृथिवी मनु ।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य सर्पेभ्यो नमः ।

ब्रह्मा—ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः ।
सबुध्न्याउपमाऽअस्य बिष्ठा सतश्च योनि मसतश्च विवः ।

अथ ग्रहणामुत्तरे लोकपालानां स्थापनम्

गणपतिः—ॐ गणानन्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ
हवामहे वसोमम । आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम् ।

योनिपूजा— ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां २ कांपीलवासिनीम् ।

वायुः—ॐ वयो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि ।
नियुत्वान्त्सोमपीतये ।

नभः—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा । दिश. प्रदिश ऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो
दिग्भ्यः स्वाहा ।

अश्विनी—ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ।
तयायज्ञंमिमिक्षतम् ।

अथ मण्डल ब्रह्मे इन्द्रादि दशदिक्पालानामावाहनम्

इन्द्रः—त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रᳬहवे हवे सुहवᳬशूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।

अग्निः—ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषᳬरक्षमाणास्तव व्रते ।

यमः—ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे ।

नैर्ऋतिः-ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य
अन्यमस्मदिच्छ सात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।

वरुण—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमा नस्तदा शास्ते यजमानोहविर्भिः
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशᳬसमान आयु प्रमोषीः ।

वायु—ॐ आनो नियुद्भिः शतनीभिरध्वरᳬसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्
वायो ऽअस्मिनन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

सोमः-ॐ वयᳬसोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः । प्रजावन्तःसचेमहि

ईशानः—ॐ तमी शानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्
पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।

ब्रह्मा—ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोषः ।
यः शᳬसते स्तुवतेधायि पज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्मां ऽअवन्तु देवाः ।

अनन्त—या ऽइषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीं रनु । ये वा वटेषु
शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य-
रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्य सर्पेभ्यो नमः ।

वास्तु:—ॐ वास्तोष्पते प्रति जानी ह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

क्षेत्रपाल:—ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यस्माद्वैश्वा नरा पुर ऽएतारमग्ने। एमेनमवृधन्न मृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवा।

प्रार्थना—ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो निप्राय मतिम्। तेषां विशि प्रियाणां वो ऽहविषमूर्जं समग्रभमुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः समा भद्रेण पृङ्क्त विपृचौ स्थो बिमा पाप्मना पृङ्क्तम् मनोजूति रिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ततो ग्रहवेदीशाने कलशस्थापन विधिना रुद्र कलशं संस्थाप्य ॐ असंख्याता० इति मन्त्रेण असख्य रुद्रानावाह्य पूजयेत्। सत केचन ग्रहाणां पार्श्वे लेषादीनामपि पूजनं कुर्वन्ति तथाहिरवेः पूर्वे ॐ शेषाय नमः। सोमस्याग्रे ॐ वासुकये नमः। ब्रधोत्तरे ॐ कर्कोटकाय नमः। वृहस्पतेरग्रे ॐ पद्माय नम। शुक्रोत्तरे ॐ महापद्माय नमः। शनि पश्चिमे ॐ शंखपालाय नमः राहुपुरतः ॐ कालाय नम केतुपुरत ॐ कुलिशाय नमः।

बहिःपूर्वे—ॐ अश्विनी आदि सप्त नक्षत्रेभ्यो नमः तत्रैव ॐ विष्कम्भादि सप्त योगेभ्यो नम। ॐ बव बालव करणा वां नम ॐ सप्तद्वीपेभ्यो नमः। ॐ ऋग्वेदाय नम। बहिर्दक्षिणे—पुष्यादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नम। धृत्यादि सप्तयोगेभ्यो नम।

पश्चिमे—ॐ कौलव तैतिलकरणाभ्यां नमः। ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ स्वात्यादि सप्तरुद्रेभ्यो नमः।

ॐ वज्रादि सप्त योगेभ्यो नमः । ॐ गर वाणिज करणाभ्यां नमः । सप्त पातालेभ्यो नम । ॐ सामवेदाय नमः ।

उत्तरे–ॐ अभिजिदादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नमः । ॐ साध्यादि षड्-योगेभ्यो नमः विष्टिकरणाय नम । ॐ भूरादि सप्त लोकेभ्यो नमः । ॐ अथर्ववेदाय नम ।

वायव्याम्–ॐ ध्रुवाय नमः । ॐ सप्तकुलाचलेभ्यो नम ।

यथावकाशम्–ॐ नदीभ्यो नमः । सप्तकुलाचलेभ्यो नमः । ॐ अष्टवसुभ्यो नमः । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः । ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः । ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुद् यो नमः । ॐ षोडश मातृकाभ्यो नमः । ॐ षड् ऋतुभ्यो नमः । ॐ द्वादश मासेभ्यो नमः । द्वययनाभ्यां नमः । ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः । ॐ षष्ठि संवत्सरेभ्यो नमः । ॐ सुपर्णेभ्यो नमः । ॐ नागेभ्यो नमः । ॐ सर्पेभ्यो नमः । ॐ यक्षेभ्यो नमः । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः । ॐ विद्याधरेभ्यो नम । ॐ अप्सरोभ्यो नम । ॐ रक्षोभ्यो नमः । ॐ मनुष्येभ्योः ममः ।

प्रार्थना— यत्कृतं पूजनं देवभक्ति श्रद्धा बिवर्जितम् ।
परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः ।
आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नानावर्णाः पृथग्विधाः ।
सुप्रसन्ना प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ।

अथ योगिनी पूजनम्

आग्नेय्यां पीठे रक्त वस्त्राच्छादिते पूर्वभागे त्रीणि त्र्यस्राणि

विलिख्य तेषु कलशत्रयं विधिना संस्थाप्य तदुपरि सौवर्णी तिस्रः प्रतिमाः कृताग्न्युत्तारणाः संस्थाप्य महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीरावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् । तदग्रे कोष्ठेषु वक्ष्यमाणा देवीरावाहयेत् -ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति बुर्गाणि बिश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः । ॐ दिव्य योगिम्यै नमः । ॐ महायोगिन्यै नमः । ॐ सिद्धयोगिन्यै० । ॐ गणेश्वर्य्यै० । ॐ प्रेताक्ष्यै । ॐ डाकिन्यै० । ॐ काल्यै० । ॐ कालरात्र्यै । ॐ निशाचर्य्यै० । ॐ झंकार्यै० । ॐ रौद्रवेताल्यै० । ॐ भूतल्यै० । ॐ भूत डंबर्य्यै० । ॐ उर्ध्वकेश्यै० विरूपाक्ष्यै । ॐ शुष्कांग्यै० । ॐ नरभोजिन्यै० । ॐ भट्टार्यै० ॐ वीरभद्रायै० । ॐ धूम्राक्ष्यै० । ॐ कलह प्रियायै० । ॐ राक्षस्यै० ॐ घोररक्ताक्ष्यै० । ॐ बिश्वरूपायै । ॐ भयंकर्यै० । ॐ चंडिकायै० ॐ वीर कौमार्यै० । ॐ बाराह्यै । ॐ मुण्डधारिण्यै० ॐ सासुर्यै० । ॐ रौद्र झंकार भाषिण्यै० । ॐ त्रिपुरांतकाय० । ॐ भैरव ध्वंसिन्यै० । ॐ क्रोध दुर्मुख्यै० । ॐ प्रेतवाहिन्यै० ओं खट्वांग्यै० । ओ दीर्घलंबोष्ठ्यै० । ओं मालिन्यै० । ओं मन्त्रयोगिन्यै ओं कालाग्निग्रहण्यै० । ओं चक्रिण्यै० । ओं कंकाल्यै० । ओं भुवनेश्वर्यै० । ओं कटक्यै० । ओं कटिन्यै० । ओं रौद्र्यै० । ओं यमदूत्यै० । ओं करालिन्यै० । ओं घोराक्ष्यै० ओं कामुक्यै० ओं काकदृष्ट्यै० । ओं अधोमुख्यै० । ओं मुंडाग्रधारिण्यै० । ओं व्याघ्र्यै० । ओं किंकण्यै० । ओं प्रेत भाषिण्यै० । ओं कालरूपायै० ओं कामाख्यै० । ओं उद्गिरण्यै० । ओं योग पीठिकायै० । ओं

महालक्ष्म्यै० । ओं एकवीरायै० । ओं कालरात्र्यै० । ओं पीठिकायै नमः ।

इत्यावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ।

अथ क्षेत्रपाल पूजनम्

वायव्यां श्वेतवस्त्राच्छादिते पीठे चतुरस्रं विलिख्य सप्तसप्तदलानां सप्तकमलानि कृत्वा तिर्यङ्मान्यां पार्श्वमान्यां च सूत्र द्वन्दं समानान्तरालं दद्यात् । एवं समानि नव कोष्ठानि विद्यन्ते । मध्य कोष्ठे अष्टदलं विलिख्य कलशं संस्थाप्य पूर्णपात्रे कृताग्न्युत्तारणं सौवर्ण क्षेत्रपाल ओं नमोस्तुसर्पेभ्य इत्यावाह्य स्थापयेत् । पूर्वादि कोष्ठेषु षट्दलानि संपाद्य उत्तरेशानयो कोष्ठयोस्तु सप्तदलानि कुर्यात् । ॐ अजराय नमः । ॐ आपकुम्भाय नमः । ॐ इन्द्रस्तुतये नमः । ॐ ईडाचाराय नमः । ॐ उक्तसंज्ञाय नमः । ॐ ऊष्मादाय नमः । ॐ ऋषिसूदनाय नमः । ॐ ॠमुक्ताय नमः । ॐ लृप्तकेशाय नम । ॐ लॄपकाय नमः । ॐ एकदंष्ट्रकाय नमः । ॐ ऐरावताय नम । ॐ ओघबन्धवे नमः । ॐ औषधेशाय नमः । ॐ अंजनाय नमः । ॐ अस्त्रवाराय नमः । ॐ कंबलाय नम । ॐ खरुखानलाय नमः । ॐ गोमुखयाय नमः । ॐ घण्टानादाय नम । ॐ ङमनसे नम । ॐ चण्डवारणाय नमः । ॐ छटाटोपाय नमः । ॐ जटलाय नमः ॐ झंगीवाय नमः ॐ अडश्वराय नमः । ॐ टंकपाणये नमः । ॐ ठानबन्धवे नमः । ॐ डामराय नम । ॐ ढक्कारवायनमः । ॐ णवार्णवाय नमः । ओं तडिद्देहाय नमः । ओं थिराय नमः । ओं दन्तुराय नम । ओं

धमदाय नम । ओं नतिक्तकान्ताय नमः ओं प्रचण्डकाय नमः। ओं फटकाराय नमः। ओं वीर संधाय नमः। ओं भृंगाय नमः। ओं मेघभासुराय नमः। ओं गुगांताय नम । ओं रौह्यवाय नमः। ओं लंबोष्ठाय नमः। ओं वसवाय मम:। ओ शूकनन्दाय नमः। ओं षडालाय नम. ओं सुनाम्ने नम. ओं हेंब्रूकाय नमः। इति अजरादिक्षेत्रपालानावाह्य मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

अथ पञ्चाङ्गाधिष्ठातृदेवपूजनम्

बारदेवता:—ओं मृत्युञ्जयाय नम १ ओं गौर्यै नम २ ओं स्कन्दाय० ३ ओं विष्णवे० ४ ओं ब्रह्मणे० ५ ओं इन्द्राय० ६ ओं धर्मराजाय० ७ ओं आदित्यादि वाराधिष्ठातृ देवेभ्यो नम.।

तिथिदेवताः ओं अग्नये० १ ओं वायवे० २ ओं इन्द्राय० ३ सोमाय० ४ ओं अदित्यै० ५ ओं इन्द्राण्यै० ६ ओं मरुद्भ्यः० ७ ओं बृहस्पतये० ८ ओं अर्यम्णे० ९ ओं धात्रे० १० ओंइन्द्राय० ११ ओं वरुणाय० १२ ओं यमाय० १३ ओं रुद्राय० १४ ओं चन्द्राय० १५। ओं इन्द्राग्नीभ्यां० १ ओं सरस्वत्यै।२। ओं मित्राय।३। ओं निर्ऋतये।४। ओं अग्निषोमाभ्यां।५। ओं सर्पेभ्यः।६। ओं विष्णवे।७। ओं पूष्णे।८ ओं त्वष्ट्रे ९। ओं इन्द्राय।१०। ओं वरुणाय।११। ओं यम्यै।१२। ओं द्यावापृथिवीभ्यां।१३। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्य।१४। ओं पितृभ्य।३०। ओं तिथि देवताभ्यो नमः।

नक्षत्र देवाः-ॐ दस्त्रनासत्याभ्यां नमः १ ॐ धर्मराजाय नम २ ॐ अग्नये नमः ३ ॐ प्रजापतये० ४ ॐ सोमाय० ५ ॐ रुद्राय० ६ ॐ अदित्यै० ७ ॐ बृहस्पतये० ८ ॐ सर्पेभ्य ० ९ ॐ पितृभ्यः० १० ॐ भगाय० ११ ॐ अर्यम्णे० १२ ॐ सवित्रे० १३ ॐ वृद्धश्रवसेऽइन्द्राय (त्वष्ट्रे) १४ ॐ वाताय० १५ ॐ इन्द्राग्नीभ्यां० १६ ॐ मित्राय० १७ ॐ इन्द्राय० १८ ॐ निर्ऋतये० १९ ॐ अद्भ्य ० २० ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः० २१ ॐ ब्रह्मणे० २२ ॐ विष्णवे० २३ ॐ अष्टवसुभ्य ० २४ ॐ वरुणाय० २५ ॐ अजैकपदे० २६ ॐ अहिर्बुध्न्याय० २७ ॐ पूष्णे० २८ ॐ अश्विन्यादि साभिजिन्नक्षत्राधिष्ठातृ देवेभ्योनमः

योगाधिदेवाः—ॐ यमाय नमः १ ॐ विष्णवे० २ ॐ चन्द्रमसे० ३ ॐ ब्रह्मणे० ४ ॐ बृहस्पतये० ५ ॐ रक्षोभ्यः० ६ ॐ इन्द्राय० ७ ॐ अद्भ्य ० ८ ॐ सर्पेभ्य० ९ ॐ जातवेदसे० १० ॐ आदित्येभ्यः० ११ ॐ भूम्यै० १२ ॐ वायवे० १३ ॐ सोमाय० १४ ॐ वरुणाय० १५ ॐ गणेश्वराय० १६ ॐ रुद्राय० १७ ॐ वैश्रवणाय० १८ ॐ त्वष्ट्रे० १९ ॐ मित्राय० २० ॐ स्कन्दाय० २१ ॐ सावित्र्यै० २२ ॐ लक्ष्म्यै० २३ ॐ गौर्यै० २४ ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां २५ ॐ पितृभ्यः० २६ ॐ दित्यै० २७ ॐ विष्कम्भादि सप्तविंशति योगाधिष्ठातृ देवेभ्यो नमः।

करणाधिदेवाः—ॐ इन्द्राय नमः १ ॐ ब्रह्मणे० २ ॐ मित्राय० ३ ॐ अर्यम्णे० ४ ॐ पृथिव्यै० ५ ॐ श्रियै० ६ ॐ यमाय० ७ ॐ ववादिसप्तकरणेभ्यो नमः। ओं कलये नमः १ ओं नंदी-

इवराय० २ ओं सर्पेभ्यः० ३ ओं वायवे० ४ ओं शकुनादि चतुष्करणधिष्ठातृ देवेभ्यो नम ।

सूर्यराश्यंश (सौरतारिका) देवाः—ओं ब्रह्मणे नमः १ ओं प्रजापतये० २ ओं स्वर्गेश्वराय० ३ ओं अस्त्राय० ४ ओं तरुभ्यः ५ ओं मृगाय० ६ ॐ सोमाय० ७ ॐ कालाय० ८ ॐ अग्नये० ९ ॐ आकाशाय० १० ॐ वासोभ्यः ११ ॐ सूर्याय० १२ ॐ इन्द्राय० १३ ॐ गो य: १४ ॐ निर्ऋतये० १५ ॐ सावित्र्यैः० १६ ॐ स्कंदाय० १७ ॐ भवाय० १८ ॐ पितृभ्य १९ ॐ वरुणाय० २० ॐ दिग्भ्यः० २१ ॐ मरुद्भ्य० २२ ॐ सरस्वत्यै० २३ ॐ ह्रियै० २४ ॐ कुबेराय २५ ॐ पर्वतेभ्य० २६ ॐ पृथिव्यै० २७ ॐ वेद पुरुषाय० २८ ॐ परम पुरुषाय० २९ ॐ सोर राशिगत त्रिंशदंशाधिष्ठातृ देवेभ्यो०। ॐ पञ्चाङ्गाधिष्ठातृ देवेभ्यो नमः पाद्यादिभिः संपूज्य (रत्नकोषे)।

प्रार्थना—ॐ तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं चन्द्र एव च।
यौगाश्च करणं चैव सर्वं बिष्णुमयं जगत् । कर्म कांड प्रदीपे
अतः संकल्पे तिथिवार नक्षत्र योग करण गोत्र मन्त्रादि ज्ञानाभावे सर्वत्र विष्णुः विष्णुः इति प्रयोगो विधेयः ।

अथ ऋषि पूजनम्

मण्डलस्योत्तरस्यां ध्रुवारुन्धती सहितान् सप्तर्षीन् संपूज्य दक्षिणतश्चागस्त्य महर्षि पूजनं विधेयम् ।

ध्रुवावाहनम्—ॐ जज्ञानं सप्तमातरो वेधामशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतयत ॥

प्रार्थना—ॐ ध्रुवराजो महा प्राज्ञः पञ्च वर्षो महातपः।
ऋषीणां प्रबरः श्रेष्ठ स ध्रुवः प्रीयतां मम ॥

ऋषीणामावाहनम्—ओं सप्त ऽऋषय प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापः स्वपतो लोक मीयुस्तत्र जागृतो-ऽस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ ॥

प्रार्थना—ओं कश्यपो त्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतम.।
जमदग्निर्वशिष्ठश्चारुन्धत्या ऽऽयुष्य बर्धकाः।

अगस्त्यावाहनम्—

ओं अगस्य खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णांवृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम ॥

प्रार्थना—ओं दक्षिणाऽऽशापते देव नमस्ते कलशोद्भव।
विन्ध्याचल महावेगरोधकाय नमो नमः ॥
वाताऽऽतौ भक्षितौ येन येन पीतो महोदधि.।
लंकायां दक्षिणे द्वारे कुम्भयोने नमोऽस्तुते ॥

अथ कुशण्डिका

ब्रह्मवरणम्-ओंविष्णुर्विष्णु विष्णु कर्तव्यामुकनिमित्तकहोमकर्मणिकृता कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुक शर्माणमेभिः पुष्पचंदन तांबूल. वासोभिर्ब्रह्मत्वेन. त्वामहं वृणे।

ओं अमुक गोत्रोऽहं कर्तव्यामुककर्म निमित्तहोमकर्मण्यमुक गोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन तांबूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणें। वृतो ऽस्मि इति प्रतिवचनम् ओं यथाविहितं कर्म कुरु

करवाणि इति ।

ब्रह्मासनम्—हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्नि सन्निधावासनांतरे

आवाहनम्—ओं आवहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ।
कमण्डलुधरं हस्ते कुशकेतुं कृशायुधम् ॥
वेदशास्त्रपुराणज्ञमागमोक्तविदं तथा ।
यजमानस्य यज्ञस्य ब्रह्मत्वं रक्षको भव ।

ब्रह्मोपवेशनम् ओं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत सुरुचोवेन आव
स बुध्न्या उपमा ऽअस्य विष्ठा सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

ब्रह्माध्यानम्—ओं ब्रह्माणं रक्तवर्णाभं पीत वस्त्रैरलंकृतम् ।
चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं स्रुवञ्च स्रुचि हस्तकम् ॥

प्रार्थना—ओं ब्रह्माणि मतयशꣳसुतासः शुष्म इति प्रवृतो मे अद्रिः ।
आशासते अतिहर्यन्त्युक्थे माहरी वहतस्तानो ऽअच्छ ॥

प्रणीताग्रहण जलेन पूर्ण च—ओं आपो हिष्ठा० ।

ब्रह्मणो मुखावलोकनम्—ओं कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा
कया शचिष्ठया वृता ॥

ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ।
ततः परिस्तरणम् । बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय ॥

आग्नेयादीशानान्तम्—ओं अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।

ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्—ओं इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्याध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मावस्तेन ईशतमाघशꣳसो ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि

नैरृत्याद्वायव्यान्तम् ओं अग्नऽआयाहिवीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि वर्हिषि ॥

अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्—ओं शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शंयो रभिस्त्रवन्तु नः ॥

पात्रासादनम्-अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशिपवित्रछेदनार्थंकुशत्रयंपवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तरगर्भित कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम् । उपयमनार्थं वेणीरूप कुशत्रयम् समिधस्तिस्रः स्रुवः स्रुक् आज्यम् षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशत द्वयावच्छिन्नं तण्डुलपूर्णपात्रम् पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्वपूर्वं दिशि क्रमेणोत्तरोत्तरमासावनीयानि ततः ।

पवित्रच्छेदनम्—ओं पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि । इति मन्त्रेण पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रेच्छित्वा प्रादेशमितपत्रकरणम् सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां द्वाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणी । पात्रस्यसव्य हस्त करणम् अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणं तत प्रोक्षणी जलेन यथा सावित

बस्तु सेचनम् । ततोऽग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्। आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वाप: तत: ।

आज्याधिश्रयणम् ओं इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो व. सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽईशत माघश᳦सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्याहि । इति मन्त्रेणाज्याधिश्रयणम् । ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिण क्रमेण पर्यग्नि करणम् । तत

स्रुवप्रतनम-ओं त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र᳦हवे हवे सुहव᳦शूर मिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र᳦स्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्रः इति मन्त्रेण स्रुव प्रतपनं कृत्वा समार्जन कुशानामग्रैरन्तरतो मूले बाँह्यत: ।

स्रुवसमार्जनम्–ओं अनिशितोऽसिसपत्नक्षिद्वाजिनन्त्वावाजे ध्याय सम्मार्ज्मि इति मन्त्रेण स्रुव संमार्जनं कृत्वा प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य

स्रुवप्रतपनम्–ओं प्रत्युष्ट᳦रक्ष: प्रत्युष्टा अरातयो निष्टप्त᳦रक्षो निष्टप्ताऽअरातय । उर्वन्तरिक्षमन्वेमि । इति मन्त्रेण पुनस्त्रिः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निद यात् । तत आज्यमग्ने प्रदक्षिण कारयित्वा वतार्य आज्ये प्रोक्षण्युत्पवनम् ततोऽवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुन प्रोक्षण्युत्पवनम् । तत उपयमन कुशान् वाम हस्ते कृत्वा उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ता: समिधस्तिस्र: पालाश्य: प्रक्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्र करेण ।

प्रोक्षण्युदक ग्रहणम्—ॐ तद्देवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता ऽआपः स प्रजापति ॥

इति मन्त्रेण प्रोक्षण्युदकं गृहीत्वा सपवित्र करेण प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिण क्रमेण।

अग्नि पर्युक्षणम् -ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमँसस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्। इति मन्त्रेणाग्नि पर्युंक्षणं कृत्वा।

प्रणीपात्रे पवित्रे निधानम्—ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। इति मन्त्रेण प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वा ऽऽरब्धः समिद्धतमे ग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिर्जुहुयात्। तत्र तत्तदाहुत्यमन्तरं स्रुवावशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेप। ॐ प्रजापतये स्वाहा ॐ इन्द्राय स्वाहा। इत्याधारौ। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। इत्याज्य भागौ ततो व्याहृति होमः ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। ॐ भूर्भुव स्व इदं प्रजापतये नमः।

वरदाहुतिः—ॐ गणानान्त्वा गणपतिँहवामहे० स्वाहा।
ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन० स्वाहा

विष्णुहोमः—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्० स्वाहा।

ब्रह्मा होमः—ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत० स्वाहा।

रुद्रहोमः—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः० स्वाहा।

लक्ष्मीहोम:—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे० स्वाहा ।

सरस्वतीहोम:—ॐ पावकान सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधियावसु: स्वाहा, ॐ ओंकाराय स्वाहा ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ गोवर्धनेश्वराय स्वाहा ॐ पृथिव्यै स्वाहा, ॐ यज्ञेश्वराय० स्वाहा ।

मातृका होम:—ॐ गौर्येस्वाहा, ॐ पद्मायै, ॐ शच्यै, ॐ मेधायै, ॐ सावित्र्यै, ॐ विजयायै, ॐ जयायै, ॐ देवसेनायै, ॐ स्वधायै, ॐ स्वाहायै०, ॐ मातृभ्य, ॐ लोकमातृभ्य:, ॐ हृष्ट्य, ॐ पुष्ट्यै, ॐ तुष्टयै ॐ आत्मदेव्यै स्वाहा ।

सप्तमातृका—ॐ ललितायै०, ॐ उमायै०, ॐ गौर्यै० ॐ अम्बिकायै० ॐ सलिलायै०, ॐ भगायै०, ॐ भगाक्ष्यै स्वाहा । याज्ञिकसप्त मातृकानां ।

मातृकहोम:—ॐ श्रियै स्वाहा, ॐ लक्ष्म्यै, ॐ धृत्यै, ॐ मेधायै, ॐ स्वाहायै ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ।

नवग्रहहोम: ॐ सूर्याय स्वाहा (अर्क समिधा) ॐ चन्द्रमसे स्वाहा (पलाश) ॐ भौमाय (खदिर) ॐ बुधाय स्वाहा (अपामार्ग) ॐ बृहस्पतये स्वाहा (पिप्पल) ॐ शुक्राय स्वाहा (उदुम्बर) ॐ शनैश्चराय स्वाहा (शमी) ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा, (दूर्वा) ॐ केतवे स्वाहा (कुशा) ।

अधिदेवता:—ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा, ॐ उमायै० ॐ स्कन्दाय, ॐ विष्णवे०, ओं ब्रह्मणे०, ओं इन्द्राय०, ओं यमाय०, ओंकालाय० ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा (पलाश:) ।

प्रत्यधिदेवः— ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ अद्भ्यः, ॐ पृथिव्यै०, ॐ विष्णवे०, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ इन्द्राण्यै०, ॐ प्रजापतये, ॐ सर्पेभ्य, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा (पलाशः)।

पञ्चलोकपाल— ॐ विनायकाय स्वाहा, ॐ दुर्गायै०, ॐ वायवे०, ॐ अकाशाय स्वाहा, ॐ अश्विभ्यां स्वाहा (पलाश)।

दिक्पाल— ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्नये०, ॐ यमाय०, ॐ निर्ऋतये०, ॐ वरुणाय०, ॐ वायवे ॐ कुबेराय०, ॐ ईशानाय०, ॐ ब्रह्मणे०, ॐ अनन्ताय०, ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा ओं क्षेत्रपालाय स्वाहा (पलाशः)।

ऋषिहोमः-ओं सप्तर्षिभ्योऽरुन्धतीसहितेभ्यः स्वाहा। ओं ध्रुवाय० ओं अगस्त्याय स्वाहा। अनेन होमेन सूर्यादि नवग्रहाधिदेव प्रत्यधिदेव पञ्चलोकपाल दिक्पाल वास्तु क्षेत्रपालाश्च प्रीयन्ताम् न मम।

विशेष—सर्वेषां ग्रहाधिदेव प्रत्यधिदेव पञ्चलोकपाल दशदिक्पालानां वैदिक मन्त्राः पूर्वमेव लिखिताः। तत्र स्वाहाकारं योजयित्वा प्रतिदेवम् एका, अष्टौ ८, अष्टाविंशति २८, अष्टोत्तरशतं १०८ वाऽऽहुतयो यथासंभवं देयाः ॐ सर्वतो भद्र मण्डलाधिष्ठातृ देवेभ्यः स्वाहा। ॐ वास्तु मडलाधिष्ठातृ देवेभ्यः स्वाहा। ॐ दिव्ययोगिन्यादिचतुष्षष्टियोगिनीभ्यः स्वाहा। ॐ अजरादि-पञ्चाशत क्षेत्रपालेभ्यः स्वाहा। ततः पुरुष सूक्तेन ॐ नारायणाय स्वाहा श्री सूक्तेन च ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा इति मन्त्र द्वारा सम्पुटितेम व्रतोद्यापन प्रतिष्ठादौ पायसेन होमः कार्यः

अथ लक्ष्मीनारायणसूक्तयोरङ्गन्यासः

लक्ष्मीध्यानम्—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभि स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितै स्नापिताहेमकुम्भैः,
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतुगृहे सर्वमागल्ययुक्ता।

ॐ हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्कीतेन्दिरासुता ऋषयः आद्यानां तिसृणांमनुष्टुप्छन्दः चतुर्थ्याः प्रस्तार पंक्तिश्छन्दः पञ्चमीषष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्द. ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायाः प्रस्तार पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीमहालक्ष्मी प्रीत्यर्थं न्यासे होमे च विनियोगः।

विष्णुध्यानम्-सशंख चक्र सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसोरुहेक्षणम्
सहार वक्ष स्थलकौस्तुभं श्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।

ॐ सहस्रशीर्षेत्यादि षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्यः श्रीमन्नारायण ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्यत्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं श्रीमन्नारायणपुरुषोत्तमोदेवता न्यासे होमे च विनियोगः ॥

सहस्रशीर्षा०	वामकरे	हिरण्यवर्णा	मूर्ध्नि
पुरुषऽएवेद०	दक्षिणकरे	तामआवह०	नेत्रयोः
एतावानस्य०	वाम पादे	अश्वपूर्वा०	कर्णयोः
त्रिपादूर्ध्वं०	दक्षिणपादे	कांसोऽस्मितां०	नासिकयोः
ततोविराड०	ग्रामजानो	चन्द्रांप्रभासां०	मुखे

तस्माद्यज्ञा०	दक्षिण जानौ	आदित्य वर्णे०	कण्ठे
तस्माद्यज्ञा०	वाम कट्यां	उपैतु मां०	बाह्वोः
तस्मादश्वा०	दक्षकट्यां	क्षुत्पिपासा०	हृदि
तं यज्ञं वर्हिषि०	नाभौ	गन्धद्वारां०	नाभौ
यत्पुरुषं०	हृदि	मनसः काम०	गुह्ये
ब्राह्मणोऽस्य०	कण्ठे	कर्दमेन०	पादयोः
चन्द्रमा०	वाम वाहो	आप स्रजन्तु०	ऊर्वोः
नाभ्याऽआसी०	दक्षवाहो	आर्द्रां पुष्करिणीं०	जान्वोः
य पुरुषेण०	मुखे	आर्द्रांयः करिणी०	जङ्घयोः
सप्तास्या०	नेत्रयो	तांमऽआवह०	चरणयोः
यज्ञेन यज्ञ०	मूर्ध्नि	यः शुचि ०	सर्वाङ्गे

ब्राह्मणोऽस्य एवं कर्दमेन० हृदयादि अंगुष्ठादिकरन्यासांश्च कुर्यात्।

पुरुष सूक्त श्री सूक्त रुद्र सूक्तानाम न्यास कारिका-

पुरुष सूक्तस्य-

हस्तयोः पादयोर्जान्वोः कट्योर्नाभौ हृदि क्रमात्।
कण्ठे वाह्वोर्मुखे नेत्रे मूर्ध्निकर्मांगतो न्यसेत् ॥

लक्ष्मीसूक्तस्य—मूर्धाक्षि कर्णनास- गलदोर्हृदयनाभि गुह्येषु।
पायूरू जंघाचरणेषु न्यसेदृचः क्रमेण ॥

विष्णु यागे आहुति संख्याप्रमाणम् (क्वचित्प्राञ्चः)

प्रचलितविष्णुयागे	१६०००	— १६००००
महाविष्णु यागे	१६००००	— ३२००००

अतिविष्णु यागे ३२०००० — ४८००००

यत्र होमात्मको यागो वैष्णवः पाप नाशनः ।
तत्र लक्षं सहस्राणि षष्टिश्चाहुतयोः स्मृताः ।। १६००००

लक्षं त्रयं सहस्राणां विंशतिर्जुहुयात्तत ।
तं महाविष्णुयागं प्रवदन्ति मनीषिणः ।। ३२००००

यत्राशीति सहास्राणि तथा लक्षचतुष्टयम् ।
आहुतीनां मता संख्या अतिविष्णु ब्रुवन्ति तम् ।। ४८००००

अथ रुद्रयागे आहुति संख्या प्रमाणम्

रुद्रयागे १८११ आहु० लघुरुद्रे १९९२१ आहु०
महारुद्रे २१९१३१ ,, अतिरुद्रयागे २४१०४४१ ,,
एकस्मिन्नमके १६१ आहुतयः ।

एवं साङ्ग रुद्रादि यज्ञस्याहुति स्पष्टीकरणमधः-

मन्त्राः	रुद्रे	लघुरुद्रे	महारुद्रे	अतिरुद्रे
ॐ यज्जाग्रतः०	१	११	१२१	१३३१
सहस्रशी०	१	११	१२१	१३३१
अद्भ्यः०	१	११	१२१	१३३१
आशुः०	१	११	१२१	१३३१
विभ्राड०	१	११	१२१	१३३१
नमस्ते०	१७७१	१९४८१	२१४२९१	२३५७२०१
वाजश्च०	११	१२१	१३३१	१४६४१
ऋचं वाचं०	२४	२६४	२९०४	३१९४४

पञ्चाङ्गाधिष्ठातृ:— ॐ वर्तमान मासाय स्वाहा। ॐ वर्तमान मासदेवतायै स्वाहा। ॐ वर्तमाम तिथये स्वाहा। ॐ वर्तमान तिथि देवतायै०। ॐ वर्तमान वाराय०, ॐ वर्तमान वार-देवतायै०, ॐ वर्तमान नक्षत्राय०, ॐ वर्तमाम नक्षत्र देवतायै० ॐ वर्तमान योगाय०, ॐ वर्तमाम योग देवताय०, ॐ वर्तमान करणाय०, ॐ वर्तमान करणदेवतायै०, (यथा सम्भवं प्रत्येकं तिथि नक्षत्रवारादिभ्य: स्वदेवता सहितेभ्यो जुहुयात्। ॐ मृत्यु-ञ्जयाय०, ॐ अश्विनी नक्षत्राय० ॐ प्रतिपत्तिथये० ॐ अग्नये० ॐ रविवाराय० ॐ नासत्यदस्राभ्यां (अश्विनी कुमाराभ्यां) ॐ विष्कम्भ योगाय० ॐ यमाय० ॐ बव करणाय०, ॐ इन्द्राय स्वाहा।

सरस्वती होम:–ॐ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टुधियावसु: स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम।

अथ प्रधानहोम:

शिवस्यहोम:–ॐ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शङ्कराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च स्वाहा। १०८

विष्णोहोम:–ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रे धा निवधे पदम् समूढमस्य पाँसुरे स्वाहा। १०८

सूर्यस्यहोम:–ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्यये सविता र थेना देवो याति भुवमानि पश्यन् स्वाहा। १०८

गणपतेर्होम:-ॐ गणानान्त्वा गणपति हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति

ॐ हुवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम् स्वाहा १०८

देव्यास्तुहोम:-ॐ अम्बेऽअम्बिके ऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन ससस्त्यश्वक सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् स्वाहा। १०८

वृषभध्वजस्यहोम – ॐ आशु: शिशानो वृषभो न भीमो घनाघ क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीर: शतꣳसे ऽअजयत्साकमिन्द्र: । नंदीश्वराय स्वाहा । १०८

गरुडस्यहोम:—ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्या: सीद भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश ऽउदृं स्वाहा । १०८

वा नाममन्त्रेण प्रधानहोमं कुर्यात । इति प्रधानहोम: ।

अथ कर्मकुटीकर्म

तत्राचार्यो यजमान ऋत्विक्सुवासिनीसहितस्तूर्यघो शिल्पशालां गत्वा देवस्याग्रे कलशस्थापनविधिना कलशं संस्था मनोजूतिरिति प्रतिष्ठां कृत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तद्यथा

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधो: पुरी।
शालिग्राम: स-गोकर्ण नर्मदा च सरस्वती ।१।
गङ्गाद्या: सरित: सर्वा समुद्राश्च सरांसि च ।
वृषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा ।२।
आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गा पापप्रणाशिनी ।३।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा

आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ।
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा ।४।

एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः ।।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ।५।

इति तीर्थान्यावाह्य सम्पूज्य चतुर्दिक्षु विदिक्षु च इन्द्राय नमः अग्नये नमः यमाय नमः निर्ऋतये नमः वरुणाय नमः वायवे नमः कुबेराय नमः ईशानाय नमः इत्यष्टलोकपालान् गन्धादिभिः सम्पूज्य । ततः प्रतिमादिषु न्यूनातिरिक्तपाषाणदोषोपशमनार्थं प्रतिमायोग्यं स्थण्डिलं कृत्वा पञ्चभूसंस्कारांश्च कृत्वा तत्राग्नि प्रतिष्ठाप्य ।। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्र शर्माहं प्रतिमानिर्माणे प्राणिवधादिदोषनिरासार्थं दुर्निमित्तोपशमनाय घृतेन तिलैर्वा देवनाममन्त्रेण होमं करिष्ये । ततो ब्रह्मोपवेशनादि-आघार वाज्यभागौ हुत्वा देवमन्त्रेणाऽऽज्याहुतिशतद्वयं तिलैर्वा हुत्वा तत्र मन्त्राः –

ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्ते ऽअन्य ऽइतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमिमा न प्रजा ँरीरिषो मोत वीरान् स्वाहा । १०८

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा । १०८

त्र्यम्बकः—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।। १०८

पूजास्विष्टं नवाहुत्यं पूर्णाहुतिं च हुत्वा देवं प्रार्थयेत्।

त्वयि सम्पूजयामीशं नारायणमनामयम्।
हरित सर्वदोपैस्त्वं ऋद्धियुक्तो सदा भव॥

इति प्रार्थ्य। प्रतिमां कुशै सम्मार्ज्य मध्वाज्याभ्यङ्गेन देवस्य व्रणभङ्गः कार्यं। ततो मृदा गोमयगोमूत्रभस्मना क्षीरेण च पृथक् शुद्धोदकसहितेन स्नात्वा गन्धादिभि सम्पूज्य सुवर्णपात्रे रजतपात्रे वा मधुसर्पिषी कृत्वा सुवर्णशलाकया नेत्रे आपूर्य नेत्रावरण कृत्वा। स्थापितकुम्भोदकेन शिल्पदेवं संस्नाप्य दापयेत्। ततो यजमानः शिल्पिवर्गं वस्त्रालङ्कारादिभि सन्तोष्य प्रतिमां गृहीत्वा आचार्यं प्रार्थयेत् भो गुरो प्रतिमां सावयवां निरीक्षस्व। आचार्यो हि प्रतिमां सावयवां निरीक्षेत्। ततो देवस्य दक्षिणहस्ते सितोर्णादि सूत्रं आचार्यवितस्तिमात्रं दोरकं मूलमन्त्रेण बध्नीयात्।

अथ जलाधिवासः

ततः आचार्यं ऋत्विग्भिः सह शङ्खतूर्यादिवेदध्वनिसुवासिनीभिः मङ्गलगीतैः शिल्पिस्थानात् सवस्त्रां प्रतिमां रथे आरोपयति।

ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र तत्र कामयते सुखारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः॥

इति मन्त्रेण रथे आरोप्य शनैः शनै जलाधिवासस्थावे गच्छेत्। ततो जलसमीपे मूर्तिमवस्थाप्य तस्याग्रे पुण्याहवाचनं कृत्वा ततो जले पञ्चगव्यं प्रक्षिप्य देवं मूलमन्त्रेण जलेऽधिवासयेत्। देशकालौ सङ्कीर्त्य सग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां

अचलप्रतिष्ठाकर्मणि गणेशपूजनपूर्वकं जलमातृजीवमातृयोगिनीक्षेत्र-
पालजलवरुणपूजनं च करिष्ये ।

गणपतिः—ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे वसोमम । आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम्

ॐ भू० गणपतये नमः इति सम्पूज्य ।

सिद्धिबुद्धिसहिताय गणाधीशाय इवं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । अथ जलमातृः जले पूजयेत् ।

ॐ मत्स्यै नमः १। ॐ कच्छप्यै नमः ।२। ॐ कूर्म्यै नमः ३। ॐ वाराह्यै नमः ४ ॐ दर्दुर्य्यै नमः ।५। ॐ शिशुमार्य्यै नम ।६। ॐ ईश्वर्य्यै नमः ।७ इति नाममन्त्रेण सम्पूज्य ।

अथ जीवमातृः अक्षतपुञ्जेषु पूजयेत् । ॐ मत्स्यै नमः ।१। ॐ हृद्यै २। ॐ गोधायै० ।३ ॐ मकर्य्यै० ।४। ॐ डुण्डुभ्यै० ।५। ॐ दर्दुर्य्यै० ।६। ॐ जल्यै० ।७। इति सम्पूज्य ।

ॐ चतुः षष्टियोगिनीभ्यो नमः इति जले योगिनीं पूजयेत् ॥
ततो वायव्यां क्षेत्रपालपूजनं अक्षतपुञ्जोपरि ।

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि ।
मा त्वा हि ँ सीन्मा हि ँ सीः ॥

ॐ भू० क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य ॥ ततः स-दीप-दधि माष-भक्तबलिं दद्यात् ।

क्षेत्रपाल ! महाबाहो ! महाबलपराक्रम ! ॥
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृह्ण नमो नमः ।

अथ जलपूजनम्- अद्भ्यो नमः । सप्तसागरेभ्यो नमः पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः ॐ गङ्गादिमहानदीभ्यो नमः । इति गन्धाक्षतान् जले क्षिपेत् ।

वरुणपूजा-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

वरुणाय नमः, इति सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात् । ततः पञ्चामृतं गृहीत्वा ।

पञ्चामृतस्नानम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ।

जलस्थितं देवं प्रार्थयेत् ।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द ! उत्तिष्ठ गरुडध्वज ! ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त ! त्रैलोक्यमङ्गलं कुरु ॥

इति उत्थाप्य देवं महामण्डपप्रादक्षिण्येन यागमण्डपमानयेत् । ततो यागमण्डपनैर्ऋत्यां देवमन्नाधिवासयेत् ततो भूमौ प्रशस्तधान्यं विकीर्य तस्योपरि वस्त्रं प्रसार्य

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वो दानाय
त्वा दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो व सविता-
हिरण्यपाणिः ँ प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण
पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥

इति देवं स्वापयेत् देवोपरि वस्त्रमाच्छाद्य तस्योपरि प्रचुरधान्यं विकिरेत्, गन्धाक्षतकुशांश्च क्षिपेत् । इति धान्याधिवास । अथ गुरुस्नानमण्डपे ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रेण पञ्चगव्येन वेदिकात्रयं च सम्प्रोक्ष्य ॥

कलशाधिवासन्

[प्रथम वेदी]

मृत्तिका—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ।
अपा ँ सि रेता ँ जिन्वति ॥

पञ्चपल्लववृक्षीयकषाय—यज्ञायज्ञा वा अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ।

गोमूत्र—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

गोमय— गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

भस्म-मा नस्तोके तनये मान आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिष
मां नो वीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ।

गन्धोदक—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

गन्धोदक—ॐ नमः शम्भावाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च । ॐशिवायनमः ।

गन्धोदक—हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद् वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतंबृहत् ।

गन्धोदक—या ते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी ।
तया मस्तन्बाशम्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।

गन्धोदक—विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥

गन्धोदक—ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः ।
सबुध्न्याउषमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्च विवः ।

गन्धोदक-शतँ जीव शरदो वर्धमान शतं हेमान्ताञ्छतमुप वसन्तान्
शतमिन्द्राग्नी सविता वृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥

[दूसरी वेदी]

मृत्तिका— अग्निर्मूधा दिव ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अँपां रेताँ सि जिन्वति ॥

पञ्चपल्लव— यज्ञायज्ञा वा अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥

गोमूत्र—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गोमय— गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

भस्म-मा मस्तो के तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ।

गन्धोदक—ॐ नमः शम्भावाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च। ॐशिवायनमः।

गन्धोदक—हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद् वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतंवृहत्।

गन्धोदक—या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी।
तया नस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।

गन्धोदक—विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

गन्धोदक—ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
सबुध्न्याउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्च विवः॥

[उत्तरवेदी कलशविधान कलश ५]

शुद्धोदक—
मा नस्तो के तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।

शुद्धोदक—ॐ इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलञ्च यत्।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्।
आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥

शुद्धोदक—
ॐआपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वँसुरभाउलोके।
तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥

शुद्धोदक— ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युराचके ॥

शुद्धोदक—तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

[उत्तरवेदी कलशविधान कलश २०]

अष्टपलमृत्तिका—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ।
अपा ँ सि रेता ँ सि जिन्वति ॥

सप्तपलगोबर— ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद् ।

द्वादशपलगोमूत्र— गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

मुष्टिपरिमित भस्म—
ॐ देवीरापा ऽअपाँ पाद्यो व ऽऊर्मिर्हविष्य ऽइन्द्रियावान् मदिन्तमः
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा ॥

त्रिपल पञ्चगव्य—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

षोडशपलदूध—ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ।

वीसपलदधि—ॐ प्रसद्यो अग्ने अत्येष्यन्यानाविर्यस्मै चारुतमो बभूथ
ईडेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम् ॥

सातपल घृत—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।
शं यो रभि स्रवन्तु नः ॥

तीनउलशहद—पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाम्ः
पयस्वतीः प्रदिश सन्तु मह्यम् ।

तीनपलशर्करा—यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥

शुद्धोदक(केवल)—ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः ।
भवा नः सुश्रवस्तम सखा वृधे ।

शुद्धोदक—ॐ तस्माऽअरङ्गमामव । ॐ यस्य क्षयायजिन्वथ ।
ॐ आपोजन यथा च नः ।

शुद्धोदक—ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखो करत् प्रण आयूँषि तारिषत् ॥

शुद्धोदक—ॐ युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविताधियः ।
अग्नेज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या ऽअध्याभरत् ॥

शुद्धोदक—ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥

शुद्धोदक-ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां

शुद्धोदक—ॐ मधुवाताऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥

शुद्धोदक—ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ॥

शुद्धोदक—ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः

शुद्धोदक—ॐ आपो ह्यद्बृहदीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जयन्तीरग्निम्।
ततो देवानाँ समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

[उत्तरवेदी तृतीय पंक्ति कलश २]

शुद्धोदक—
मा नस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

शुद्धोदक—ॐप्रतद् विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीम कुवरो गिरिष्ठाः
यस्योरषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।

[उत्तरवेदी चतुर्थ पंक्ति कलश ६]

पञ्चामृत—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवाव्वाजस्य सङ्गथे॥

शुद्धोदक- उरुँ राजा बरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ।
अपदे पादा प्रतिधातवेऽक रुतापवक्ता हृदयाविधश्चित्॥

शुद्धोरक- सते पयाँसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्य भिमातिषाहः
आप्यायमानोऽअमृताय सोम दिवि श्रवाँस्युत्तमानि धिष्व

शुद्धोदक(केवल)—ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः
भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे॥

शुद्धोदक-अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः

शुद्धोदक—ॐ अपाँ रसमुद्वयसँ सूर्येसन्तँ समाहितम्
अपाँरसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा

जुष्टङ् गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

[उत्तर वेदी पञ्चम पँक्ति कलश १४]

गन्ध—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

पञ्चपल्लवकषाय—यज्ञायज्ञा वा अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयमृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ।

सर्वौषधी— ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनैनु बभ्रुणामह ँ शतंधामानि सप्त च ।।

सफेदपुष्प—ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इवसजित्वरीर्वीरुध पारयिष्णवः ।

शान्तिजल— द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ।

आठफल- ॐ या फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ।।

सुवर्ण—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

गोश्रृंगोदक— ॐ हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मां २ ऽआबिवासति ।
हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्मां २ ऽअस्तु सूर्यः ।।

सप्तधान्य- धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वाऽ पानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणि प्रति गृह्णतु ॥

सहस्रछिद्रकलश(उसके सहायतार्थ एक कलश)-

ॐ अग्ने सहस्व पूतना अभिमातीरपास्य।
दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसि ॥

दिव्यसर्वौषधि-ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रुणामह ँ शतंधामानि सप्त च॥

पञ्चपल्लव-ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

नवरत्न-अष्टौव्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास त्री धन्व योजमा सप्तसिन्धून् हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि॥

तीर्थोदक-ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युराचके ॥

[पूर्वविग्वेदी समुद्र अष्ठ दिक्कलश ८]

क्षारोदक-ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कयाशचिष्ठया वृता ॥

दूध-ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः।
भवा न सुश्रवस्तमः सखा वृधे ॥

शुद्धोदक-ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखो करत् प्रण आयूँषि तारिषत्।

घृत—घृतवतीभुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमधुबुधे सुपेशसा ।
द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरेभूरिरेतसा ।।

तीनउलशहद—पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाम्:
पयस्वती: प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।

सुरोदक—ॐ देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रं वयोधसं देवमवर्धयत् ।
ककुभा छन्दसेन्द्रियं यंशऽइन्दे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं

वादुदक-स्वादिष्टया मदिष्टया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमहोयते । द्रोणे सथस्थमासदत् ।

गर्भोदक (दर्भोदक या नारी केलोदल)—
सरस्ती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति ।
अपाँरसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ँ श्रियं जनयन्नप्सु राजा ।

[उत्तरवेदी षष्ठपंक्ति कलश १०]

कर्दव—त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रँहवे हवे सुहवँ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्रँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।

शालमली ॐ त्वं नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषँरक्षमाणास्तव व्रते ।।

जंब—ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे ।।

अशोक—ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेमस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

प्लक्ष—ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

चूत—ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्
वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

वट—ॐ वय ँ सोम ब्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि

ज़िल्व—ॐ तमी शानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्
पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

नागपल्लव—ॐ नमो स्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य सर्पेभ्यो नमः ॥

पलाश ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत सुरुचोवेनऽआवः ।
सबुध्न्याउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

(सप्त पंक्ति कलश ४)

आ नो भद्रः-(यजु० अ० २५।१४–२३) इस अनुवाक से ।

प्रतिमाया: पार्श्वेऽधिवासनजलै: स्नपनम् ।

२५५ पृष्ठ से २६४ पृष्ठ तक लिखे मन्त्रों से अधिवासन कलशों के जल से उनके लिखे हुए मन्त्रों द्वारा विष्णु, लक्ष्मी, शिव आदि देवताओं की प्रतिमाओं पर ऐसे छिटके या चरणों पर जल के छींटों से ही स्नान कराये जिससे उनके रङ्गों में फीकापन न आये । शेष जल कलशों का वालटी आदि में डालता जाये जो प्रासाद या मन्दिर के अधिवासन में प्रयोग करने तक दूषित न हो । उसके वाद प्रतिमाओं को २०७ पृष्ठ पर विष्णु (नारायण) पूजा २०९ पृष्ठ से महालक्ष्मी पूजा एवं २२० पृष्ठ से शिव पूजा के विधान से प्रतिमाओं का पूजन कर वेदी में लाकर अन्नाधिवास १, गन्धाधिवास २, पुष्पाधिवास ३, घृताधिवास ४, फलाधिवास ५, शर्कराधिवास ६, मिष्ठान्नाधिवास ७, ओषध्यधिवास ८, भी करा सकते हैं उसके वाद शय्याधिवास कराए ।

शय्याधिवासविधि:—

वेदी में कुशा विछाकर उस पर विष्णु शिवादि की प्रतिमा रखें ।

विष्णु प्रतिमा रखकर	शिव प्रतिमा रखकर
पूर्वे ॐ विष्णवे नमः ।	पूर्वे ॐ शर्वाय नमः ।
दक्षिणे ॐ मधुसूदनाय नमः ।	दक्षिणे ॐ पशुपतये नमः ।
पश्चिमे ॐ त्रिविक्रमाय नमः	पश्चिमे ॐ उग्राय नमः ।
उत्तरे ॐ वामनाय नमः ।	उत्तरे ॐ रुद्राय नमः ।

आग्नेय्यां ॐ श्रीधराय नमः ।	आग्नेय्यां ॐ भवाय नमः ।
नैर्ऋत्यां ॐ हृषीकेशाय नमः ।	नैर्ऋत्यां ॐ ईश्वराय नमः ।
वायव्यां ॐ पद्मनाभाय नमः ।	वायव्यां ॐ महादेवाय नमः ।
ईशान्यां ॐ दामोदराय नमः ।	ईशान्यां ॐ भीमाय नमः ।
आठों दिशाओं की पूजा के पश्चात् तीन प्रदक्षिणा करे ।	आठों दिशाओं की पूजा के बाद तीन प्रदक्षिणा करके
ॐ नमो नारायणाय मन्त्र से शय्या पर पूर्व की ओर सिर विष्णु की प्रतिमा स्थापित करें ।	ॐ नमः शिवाय मन्त्र से शय्यापर शिव की पूर्वसिर प्रतिमा को स्थापित करें ।

विष्णुशिवौत्रिभिःपट्टवस्त्रैराच्छादनमन्त्रः—

ॐ विश्वश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।

देवस्य शिरोदेशभूमौनिद्रा कलशस्थापन मन्त्रः— ॐ आपोदेवीः प्रति गृभ्णीत भस्मतत्स्योने कृणु व ऽ सुरभाऽउलोके । तस्मै नमन्तो जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं विभृताप्स्वेनत् । इति निद्रा कलश प्रतिष्ठा ।

देवं मधुघृताभ्यामभ्यङ्गः— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ।

सिद्धार्थतैलेनोपलेपनम्— ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पाप काशिनी । तया न स्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि ।

सितपरिसरेण करे कंकणबन्धनम्— ॐ बृहस्पते परिदीयारथेन

रक्षोहा मित्राँ२ अपबाधमानः । प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम् ।

देवस्य पादनाभि वक्षः शिरः सु. आलम्भनम् (स्पर्श)— ॐ विश्वतश्चक्षु० तत्पश्चात् देवता के आगे पादुका, दोनों ओर शान्तिकलश, दाईं ओर छत्र, पंखा, चामर, दर्पण, आसन, घण्टा, भक्ष्य, भोज्य, जलपात्र इत्यादि को भी सामने स्थापित करले । तत्पश्चात् भस्म, कुशा, तिलों के द्वारा रक्षार्थ तीन बार घुमाए । उसके बाद मण्डप से बाहिर की ओर जाकर दशदिक्पालों को बलि देवे ।

लोकपालबलिमन्त्रः— ॐ पूर्वादि दिग्वासिभ्यो दिक्पति दिग्भूताधिपति दिग्रुद्र दिङ् मातृका दिक्क्षेत्रपालेभ्यो नमः ।

भूतेभ्यो बलिदानम्— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० आचम्य

होमः— ॐ पराय शिवात्मने स्वाहा, ॐ पराय विष्णवात्मने स्वाहा, ॐ पराय सूर्यात्मने स्वाहा, ॐ पराय गणेशात्मने स्वाहा, ॐ परायाम्बिकात्मने स्वाहा, ॐ पराय नन्दीश्वरात्मने स्वाहा, ॐ पराय हनुमदात्मने स्वाहा, ॐ पराय गरुडात्मने स्वाहा, प्रत्येकमष्टोत्तरशतं होमः ततः प्रतिमायां न्यासः ।

१. सर्वदैव्यः प्रणवन्यास — अ पादयोः । उ हृदये । म ललाटे । इति प्रणवन्यासः ।

२. सर्वदैव्यः व्याहृतिन्यासः— भू पादयोः । भुवः हृदये । स्वर्ललाटे इति व्याहृतिन्यासः ।

३. सर्वदैव्यः मातृकान्यासः— अ तालुके । आ मुखे । इ दक्षिणनेत्रे ।

ई वामनेत्रे । उ दक्षिणकर्णे । ऊ वामकर्णे । ऋ दक्षिणगंडे । ॠ वामगंडे । लृ दक्षिणनासापुटे । लॄ वामनासापुटे । ए ऊर्ध्वोष्ठे ऐ अधरोष्ठे । ओ ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ । औ अधरदन्तपंक्तौ । अं ललाटे । अः जिह्वायाम् । य त्वचि । र चक्षुषोः । ल नासिकायाम् । व दशनेषु । श श्रोत्रयोः । ष उदरे । स कटौ । ह हृदये । क्षं नाभ्याम् । लं लिङ्गे । प फ बं भं म दक्षिणबाहौ तं थं दं धं नं वामबाहौ । टं ठं डं ढं णं दक्षिणजंघायाम् । चं छं जं झं ञं वामजंघायाम् । कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु । इति मातृकान्यासः ।

४. सर्वदेव्यो ग्रहादिन्यासः— रविचन्द्राभ्यां नेत्रयोः । भौमाय हृदये । बुधाय स्कन्धे । बृहस्पतये जिह्वायाम् । शुक्राय लिङ्गे शनैश्चराय ललाटे । राहवे पादयोः । केतवे केशेषु । इति ग्रहन्यासः ।

५. सर्वदेव्यो नक्षत्रादिन्यासः— रोहिणीभ्यो हृदये । मृगशिरसे शिरसे । आर्द्रायै केशेषु । पुनर्वसवे ललाटे । पुष्पाय मुखे । आश्लेषाभ्यो नासापुटयोः । मघाभ्यो दन्तेषु । पूर्वाफाल्गुनीभ्यो दक्षिणकर्णे । उत्तराफाल्गुनीभ्यो वामकर्णे । हस्ताय हस्तयोः । चित्रायै दक्षिणभुजे । स्वात्यै वामभुजे । विशाखा-अनुराधाभ्यो दक्षिणवामस्तनयोः । ज्येष्ठाभ्यो दक्षिणकुक्षौ । मूलाय वामकुक्षौ पूर्वाषाढाभ्यः कटिपार्श्वयोः । उत्तराषाढाभ्यो लिङ्गे । श्रवण-धनिष्ठाभ्यो वृषणयोः । शतभिषाभ्यो नेत्रे । पूर्वाभाद्र-पदोत्तराभाद्रपदाभ्यः ऊर्वोः । रेवत्याश्विनीभ्यो जङ्घयोः ।

ॐ भरणीकृत्तिकाभ्यां दक्षिणवामपादयोः । ॐ ध्रुवाय नाभ्याम्। ॐ सप्तर्षिभ्यः कण्ठे । ॐ मातृमण्डलाय कटीदेशे । ॐ विष्णुपदेभ्यः पादयोः । ॐ नागवीथ्यै अङ्गवीथ्यै वनमालादेशे । ॐ ॐ ताराभ्यो रोमकूपेषु । ॐ अगस्त्याय कौस्तुभदेशे । इति नक्षत्रन्यासः ।१५

६. सर्वदैव्यः कालन्यास– ॐ चैत्राय शिरसि । वैशाखाय मुखे । ॐ ज्येष्ठाय हृदये । ॐ आषाढाय दक्षिणस्तने । ॐ श्रावणाय वामस्तने । ॐ भाद्रपदाय उदरे । ॐ आश्विनाय कट्याम् । ॐ कार्तिकाय दक्षिणोरौ । ॐ मार्गशीर्षाय बामोरौ । ॐ पौषाय दक्षिणजङ्घायाम् । ॐ माघाय वामजङ्घायाम् । ॐ फाल्गुनाय पादयोः । ॐ संवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ । ॐ परिवत्सराय दक्षिणाधोबाहौ । ॐ इद्वत्सराय बामाधोबाहौ । ॐ अनुवत्सराय वामोर्ध्वबाहौ । ॐ पर्वभ्यो सन्धिषु । ॐ ऋतुभ्यो लिङ्गे । ॐ अहोरात्रेभ्यो अस्थिषु । ॐ क्षणाय लवाय कामायै काष्ठायै रोमसु । ॐ कृतयुगाय मुखे । ॐ त्रेतायुगाय हृदये । ॐ द्वापुराय नितम्बे । ॐ कलियुगाय पादयो । ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो बाह्वोः । ॐ पराय, परार्द्धाय जङ्घयोः ॐ महाकल्पाय शरीरे । ॐ उदगयनाय, दक्षिणायनाय पादयोः । ॐ विषुवद्भ्यो सर्वाङ्गुलिषु । इति कालन्यासः ।६।

७. सर्वदैव्यो वर्णन्यासः:– ॐ ब्राह्मणाय मुखे । ॐ क्षत्रियाय बाह्वोः । ॐ वैश्याय ऊर्वोः । ॐ शूद्राय पादयोः । ॐ सङ्करजेभ्यो पादाग्रे । ॐ अनुलोमजेभ्यो सर्वाङ्गसन्धिषु ।

ॐ गोभ्यो मुखे । ॐ अजाभ्यो, आविकाभ्यो हस्तयोः । ॐ ग्राम्यपशुभ्यो, आरण्यपशुभ्यो ऊर्वोः । इति वर्णन्यासः ७।

८. सर्वदैभ्यः स्तोयन्यासः— ॐ मेघेभ्यो केशेषु । ॐ अभ्रेभ्यो रोमसु । ॐ नन्दीभ्यो सर्वगात्रेषु । ॐ समुद्रेभ्योः कुक्षिदेशे । इति स्तोयन्यासः ।८।

९. सर्वदैभ्यो वेदन्यासः— ॐ ऋग्वेदाय शिरसि । ॐ यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे । ॐ सामवेदाय वामभुजे ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये । ॐ इतिहासपुराणेभ्यो जङ्घयोः । ॐ अथर्वाङ्गिरसेभ्यो नाभौ । ॐ कल्पसूत्रेभ्य पादयो । ॐ व्याकरणेभ्यो वक्त्रे । ॐ तर्केभ्यः कण्ठे । ॐ मीमांसाय, निरुक्ताय हृदये । ॐ छन्दः शास्त्रेभ्यो, ज्योतिः शास्त्रेभ्यो नेत्रयोः । ॐ गीताशास्त्रेभ्यो, भूतशास्त्रेभ्यो श्रोत्रयोः । ॐ आयुर्वेदाय दक्षिणभुजे ॐ धनुर्वेदाय वामभुजे । ॐ योगशास्त्रेभ्यो हृदये । ॐ नीतिशास्त्रेभ्यः पादयोः । ॐ वश्यतन्त्राय ओष्ठयोः । इति वेदन्यास ।९।

१०. सर्वदैभ्यो वैराजन्यासः— ॐ दिवे नमो मूर्ध्नि । ॐ सूर्यलोकाय, चन्द्रलोकाय नेत्रयोः । ॐ अनिललोकाय घ्राणे । ॐ व्योम्ने नाभो । ॐ समुद्रेभ्यो वस्तिदेशे । ॐ पृथिव्यै पादयोः । इति वैराजन्यासः ।१०।

११. सर्वदैभ्यो देवतान्यासः— ओं हिरण्यगर्भाय शिरसि । ओं कृष्णाय केशेषु । ओं रुद्राय ललाटे । ओं यमाय भ्रुकुट्याम् ओं अश्विभ्यां कर्णयोः । ओं वैश्वानराय मुखे । ओं मरुद्भ्यो

प्राणे । ओं वसुभ्योः कण्ठे । ओं रुद्रेभ्यो दन्तेषु । ओं सरस्वत्यै जिह्वायाम् । ओं इन्द्राय दक्षिणभुजे । ओं बलये वामभुजे । ओं प्रह्लादाय दक्षिणस्तने । ओं विश्वकर्मणे वामस्तने । ओं नारदाय दक्षिणकुक्षौ । ओं अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ । ओं वरुणाय हस्तयोः । ओं मित्राय पादयोः । ओं विश्वेभ्य ऊर्वोः ओं पितृभ्यो जान्वोः । ओं यक्षेभ्यो जङ्घयोः । ओं राक्षसेभ्यो गुल्फयोः : ओं पिशाचेभ्यो पादयो. । ओं असुरेभ्यः पादाङ्गुलीषु ओं विद्याधरेभ्यो पार्ष्ण्योः । ओं ग्रहेभ्यः पादतलयोः । ओं गुह्यकेभ्यो गुह्ये ओं पूतनादिभ्यो नखेषु ओं गन्धर्वेभ्य-ओष्ठयोः । ओं कार्तिकेयाय दक्षिणपार्श्वे । ओं गणेशाय वामपार्श्वे । ओं मत्स्याय मूर्ध्नि । ओं कूर्माय पादयोः । ओं नृसिंहाय ललाटे । ओं वराहाय जङ्घयोः । ओं वामनाय मुखे ओं परशुरामाय हृदये । ओं रामाय बाहुषु । ओं कृष्णाय नाभौ । ओं बोधाय बुद्धौ । ओं कल्किने जानुदेशे । ओं केशवाय शिरसी । ओं नारायणाय मुखे ओं माधवाय ग्रीवायाम् । ओं गोविंदाय बाह्वोः ओं विष्णवे हृदये । ओं मधुसूदनाय पृष्ठे । ओं त्रिविक्रमाय कट्योः । ओं वामनाय जठरे । ओं श्रीधराय दक्षिणजङ्घायाम् । ओं हृषीकेशाय वामजङ्घायाम् । ओं पद्मनाभाय गुल्फयोः । ओं दामोदराय पादयोः । इति मूर्तिन्यासो देवयोनिन्यासश्च ।११।

१२. सर्वदैव्यः क्रतुन्यासः— ओं अश्वमेधाय मूर्ध्नि । ओं नरमेधाय ललाटे । ओं राजसूयाय मुखे । ओं गोसवाय कण्ठे

ओं द्वादशाहाय हृदि । ओं अहीनेभ्यो नाभौ । ओं सर्वजिद्भ्यो दक्षिणकट्याम् ओं सर्वमेधाय वामकट्याम् । ओं अग्निष्टोमाय लिङ्गे । ओं अतिरात्राय वृषणयोः । ओं आप्तोर्यामाय ऊर्वोः । ओं षोडशिने जान्वोः । ओं उक्थ्याय दक्षिणजङ्घायाम् । ओं वाजपेयाय वामजङ्घायाम् । ओं अत्यग्निष्टोमाय दक्षिणबाहौ ओं चातुर्मास्याय वामबाहौ । ओं सौत्रामणये हस्तेषु । ओं पशिवष्टिभ्यो अङ्गुलीषु ओं दर्शपूर्णमासाभ्याम् नेत्रयोः । ओं सर्वेष्टिभ्यो रोमकूपेषु । ओं स्वाहाकाराय, वषट्काराय स्तनयोः ओं पञ्चमहायज्ञेभ्यो पादाङ्गुलीषु । आहवनीयाय मुखे । ओं दक्षिणाग्नये हृदये । ओं गार्हपत्याय नाभौ । ॐ वेद्यै उदरे । ॐ प्रवर्ग्याय वृषणेषु । ॐ सवनेभ्यः पादयोः । ॐ इध्मेभ्यो बाहुषु । ॐ दर्भेभ्यो केशेषु । इति मूर्तिन्यासः १२।

१३. सर्वदेव्यो गुणन्यास :— ॐ धर्माय मूर्ध्नि । ॐ ज्ञानाय हृदि । ॐ वैराग्याय गुह्ये । ॐ ऐश्वर्याय पादयोः । इति गुणन्यास ।१३।

१४. विष्णुप्रतिष्ठाया आयुधन्यासः— ॐ खड्गाय शिरसि । ॐ शार्ङ्गाय मस्तके ॐ मुसलाय दक्षिणभुजे । ॐ हलाय वामभुजे ॐ चक्राय नाभि-जठर-पृष्ठेषु । ॐ खड्गाय लिङ्गवृषणदेशे च । ॐ गदायै जङ्घयोर्जानुनोश्च । ॐ पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च । इति आयुधन्यासः ।१४।

१५. शिवप्रतिष्ठायाँ आयुधन्यासः—ॐ वज्राय शिरसि । ॐ शक्तये मस्तके ॐ दण्डाय दक्षिणभुजे । ॐ खड्गाय वामभुजे । ॐ पाशाय जठर-नाभि-पृष्ठदेशेषु । ॐ अंकुशाय लिङ्गे-वृषणयोश्च ।

ॐ त्रिशूलाय जान्वोः । ओं ध्वजाय जङ्घयोः । ओं चक्राय गुल्फयोः । ओं वज्राय पादयोः । इति आयुधन्यासः ।१५।

१६. सर्वदेव्यः शक्तिन्यासः— ओं लक्ष्म्यै ललाटे । ओं सरस्वत्यै मुखे । ओं रत्यै गुह्ये । ओं प्रीत्यै कण्ठे । ओं कीर्त्यै दिक्षु । ओं शान्त्यै हृदि । ओं तुष्ट्यै जठरे । ओं पुष्ट्यै सर्वाङ्गे । इति शक्तिन्यासः ।१६।

१७. विष्णुप्रतिष्ठायाम् न्यासः– ओं हृदयाय नमः हृदये । ओं शिरसे स्वाहा शिरसि । ओं शिखायै वषट् शिखायाम् । ओं कवचाय हुं सर्वाङ्गेषु । ओं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रयोः । ओं ओं अस्त्राय फट् करयोः । ओं नम हृदये । ओं नं नमः शिरसि ओं भगवते शिखायाम् । ओं वासुदेवाय कवचे । ओं नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्रम् । ओं श्रीवत्साय स्तनयोः । ओं कौस्तुभाय उरसि । ओं वनमालायै कण्ठे । ओं नमः पादयोः । ओं नमः जानुनोः । ओं नमः गुह्ये । ओं नमो नाभ्याम् । ओं नमः हृदये । ओं नमः कण्ठे । ओं नमो मुखे । ओं नमः नेत्रयोः ओं नमो भाले । ओं नमः मूर्ध्नि । ओं नमः दक्षिणपार्श्वे । ओं नमः वामपार्श्वे । एवमेव तत्तद्देवताया अङ्गमन्त्रन्यास-कल्पना कार्या । इति अङ्गमन्त्रन्यासः १७।

१८. सर्वदेव्यो मन्त्रन्यासः— ओं अग्निमीले पादयोः । ओं इषेत्वोर्जे गुल्फयोः । ओं अग्नआयाहि जङ्घयोः । ओं शन्नोदेवी जान्वोः । ओं एका च ऊर्वोः । ओं स्वस्तिन इन्द्रो जठरे । ओं दीर्घायुस्त ओ हृदये । ओं विश्वतश्चक्षुः कण्ठे । ओं त्रातारमिन्द्र वक्त्रे ।

ओं त्र्यम्बकं यजा-स्तनयोर्नेत्रयोश्च । ओं मूर्द्धानं दिवो मूर्ध्नि इति मन्त्रन्यास ।१८।

१९. नारायणमूर्तौ द्वादशाक्षरमन्त्रेण न्यासः — ओं केशवाय शिरसि ओं मं नारायणाय मुखे । ओं मो माधवाय ग्रीवायाम् । ओं मं गोविन्दाय कण्ठे । ओं गं विष्णवे पृष्ठे । ओं वं मधुसूदनाय कुक्षौ । ओं तें त्रिविक्रमाय कटिदेशे । ओं वां वामनाय जङ्घयोः ओं सुं श्रीधराय वामगुल्फे । ओं दें हृषीकेशाय दक्षिणगुल्फे । ओं वां पद्मनाभाय वामपादे । ओं यं दामोदराय दक्षिणपादे । इति नारायणमूर्तौ । ९।

२०. नारायणमूर्तौ विष्णवष्टाङ्गमन्त्रन्यासः — ओं हुं हृदयाय हृदये ओं विष्णवे शिरसि । ओं ब्रह्मणे शिखायाम् । ओं ध्रुवाय कवचे ओं चक्रिणे अस्त्रायफट् अस्त्रहस्तयोः । ओं ममः शम्भवाय गायत्रीं दक्षिणनेत्रे । ओं विजयाय सावित्रीं वामनेत्रे । ओं चक्रशूलाय पिङ्गलास्त्रं दिक्षु । इति नारायणमूर्तौ ।२०।

२१. नारायणमूर्तो पुरुषसूक्तन्यासः— ओं सहस्रशीर्षा पादयोः । ओं पुरुष एव जङ्घयोः ओं एतावानस्य जान्वोः । ओं त्रिपादूर्ध्वं ऊर्वो । ओं ततो विराड वृषणदेशे । ओं तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संकटयोः । ओं तस्माद्यज्ञात्० ऋचः सा नाभौ । ओं तस्मादश्वा हृदि । ओं तं यज्ञं ब स्तनयोः । ओं यत्पुरुषं बाह्वोः । ओं ब्राह्मणोस्य मुखे । ओं चन्द्रमा मनसो चक्षुषोः । ओं नाभ्याआसी कर्णयोः । ओं यत्पुषेण भ्रुवोः । ओं सप्तास्या भाले । ओं यज्ञेन यज्ञ शिरसि । इति नाराणमर्तौं ।२१।

२२.अथोत्तरनारायणन्यासः–ॐ अद्भ्यःसम्भृत हृदये। ॐ वेदाहमे तं शिरसि । ॐ प्रजापतिश्च शिखायाम् । ॐ यो देवेभ्य आ कवचे । ॐ रुचं ब्राह्मं नेत्रयोः । ॐ श्रीश्चते अस्त्रायफट् । इति अथोत्तरनारायणन्यासः ।२२।

२३. सूर्यस्य गायत्रीन्यासः–ॐ तकारं पादाङ्गुष्ठयोः । ॐ त्सकारं गुल्फयोः । ॐ विकार जङ्घयोः । ॐ तुः कारं जानुनोः । ॐ वकारं ऊर्वोः । ॐ रेकारं गुह्ये । ॐ णिकारं वृषणयो । ॐ यंकारं कटिदेशे । ॐ भकारं नाभौ । ॐ गोकारं जठरे । ॐ देकारं स्तनयोः । ॐ वकारं हृदये । ॐ स्यकारं कण्ठे । ॐ धीकारं वदने । ॐ मकार तालदेशे । ॐ हिकारं नासिकायाम् । ॐ धिकारं चक्षुषो । ॐ योकारं भ्रूमध्ये । ॐ योकारं ललाटे । ॐ नः कारं पूर्वशिरसि । ॐ प्रकार दक्षिणशिरसि । ॐ चोकारं पश्चिमशिरसि । ॐ दकारं उत्तरशिरसि । ॐ याकारं मूर्ध्नि । ॐ तकारं सर्वत्र । ॐ तत्सवितुः हृदये । ॐ वरेण्यं शिरसि । ॐ भर्गोदेवस्य शिखायाम् । ॐ धीमहि कवचे । ॐ धियोयोनः नेत्रयोः । ॐ प्रचोदयात् । इति गायत्रीन्यास ।२३।

२४. देवमूर्तौ निवृत्तिन्यासः– ॐ ह्रीं अं निवृत्यै शिरसि । ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै मुखे । ॐ ह्रीं इं विद्यायै दक्षिणनेत्रे । ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै वामनेत्रे । ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै दक्षिणनेत्रे । ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै वामश्रोत्रे । ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै दक्षिणनासपुटे । ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै वामनासापुटे । ॐ ह्रीं ऌं परायै दक्षकपोले । ॐ ह्रीं ॡं सूक्ष्मायै वामकपोले । ॐ ह्रीं

ऐं सूक्ष्मामृतायै ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै अधौदन्तपङ्क्तौ । ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै उर्ध्वोष्ठे । ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै अधरोष्ठे । ॐ ह्रीं अं सुरूपायै जिह्वायाम् । ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कण्ठे । ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै दक्षवाहुमूले । ॐ ह्रीं खं ऋष्यै दक्षकूर्परे । ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै दक्षमणिबन्धे । ॐ ह्रीं घं मेधायै दक्षकराङ्गुलिमूले । ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै दक्षङ्गुल्याग्रेषु ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै वामबाहुमूले । ॐ ह्रीं छं द्युत्यै वामकूर्परे। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै वाममणिबन्धे । ॐ ह्रीं झ स्थित्यै वामाङ्गुलिमूले । ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै वामाङ्गुल्यग्रेषु । ॐ ह्रीं टं जरायै दक्षपादमूले । ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै दक्षजानुनि । ॐ ह्रीं डं शान्त्यै दक्षगुल्फे । ओं ह्रीं ढं ऐश्वर्यै दक्षणपादाङ्गुलीषु ओं ह्रीं णं रत्यै बामापादाङ्गुल्यग्रेषु । ओं ह्रीं त कामिन्यै वामपादमूले । ओं ह्रीं थं रदायै वामजानुनि । ओं ह्रीं द ह्रादिन्यै वामगुल्फे । ओं ह्रीं धं प्रीत्यै वामपादाङ्गुलिमूले। ओं ह्रीं नं दीर्घायै वामपादाङ्गुल्यग्रेषु । ओं ह्रीं पं तीक्ष्णायै दक्षिणकुक्षौ । ओं ह्रीं फं सुप्त्यै वामकुक्षौ । ओं ह्रीं बँ अभयायै पृष्ठे । ओं ह्रीं भं निद्रायै नाभौ । ओं ह्रीं मं मात्रे उदरे। ओं ह्रीं यं शुद्धायै हृदि । ओं ह्रीं रं क्रोधिन्यै कण्ठे । ओं ह्रीं लं कृपायै ककुदि । ओं ह्रीं वं उल्कायै स्कन्धयो । ओं ह्रीं शं मृत्यवे दक्षिणकरे । ओं ह्रीं षं पोतायै वामकरे । ओं ह्रीं सं अरुणायै दक्षिणपादे । ओं ह्रीं हं अरुणायै वामपादे । ओं ह्रीं त्रँ असितायै मूर्द्धादिपादान्तम । ओं ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्य्यै

पादादिमूर्धान्तम् । इति देवमूर्तौ निवृत्तिन्यासः ।२४।

२५. देवीमूर्तौ वशिन्यादिन्यासः— ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ओं कं खं गं घ ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ओं चं छ जं झं ञं क्लीं मोदनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ओं टं ठ डं ढ णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे। ओं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नम हृदि। ओं पं फं बं भं मं ड्स्ल्व्यूँ जयिनीवाग्देवतायै नमः नाभौ। ओं यं रं लं वं हल्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै आधारे। ओं शं षं सं हं क्षं क्ष्मीं कौलिनीवाग्देवतायै सर्वाङ्गे। ॐ म जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। ॐ ब बुद्ध्यात्मने० ॐफ अहङ्कारात्मनेनमः

देवशरीरे व्यापकम्:

ॐ पं मन आत्मने हृदि। ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने शिरसि। ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने मुखे। ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने हृदये। ॐ थं रसतन्मात्रात्मने हस्तयोः। ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने पादयोः ॐ णं श्रोत्रात्मने श्रोत्रयोः। ॐ ढं त्वगात्मने त्वचि। ॐ डं चक्षुरात्मने नेत्रयोः। ॐ ठ जिह्वात्मने जिह्वायाम्। ॐ टं प्राणात्मने घ्राणे। ॐ ञं वागात्मने वाचि। ॐ झं पाण्यात्मने पाण्योः। ॐ जं पदात्मने पादयोः। ॐ छं पाय्वात्मने पायौ। ॐ चं उपस्थात्मने उपस्थे। ॐ ङं पृथिव्यात्मने पादयोः। ॐ घं अबात्मने बस्तौ। ॐ गं तेज आत्मने हृदि। ॐ खं प्राणात्मने घ्राणे। ॐ कँ आकाशात्मने शिरसि।

ॐ षं सूर्यात्मने हृत्पुण्डरीकमध्ये । ॐ सं सोमात्मने हृत्पुण्डरीकमध्ये । ॐ षं वह्न्यात्मने हृत्पुण्डरीकमध्ये ।

स यथा स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्यं तेज: पुञ्जं वाममनाड्यां निःसार्य, ब्रह्मरन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिकर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे, पुरुषं न्यसेत् ।

ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्यां स्वमन्त्रेण संयोज्य विशेषबीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं सानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य तद्यथा—

ॐ शिं शिवात्मने ॐ विं विष्ण्वात्मने नमः । ॐ रां रामात्मने नमः । इत्यादिप्रकारेण देवं भावयित्वा । ॐ यं सर्वात्मने इति सर्वसाक्षिणं भावयित्वा । ॐ गं सर्वात्मने नमः इतिदेवंसर्वतोमुखं भावयित्वा । ॐ वं अनुग्रहणात्मने-इत्यनुग्राहकं भावयित्वा । ॐ यं सर्वभूतात्मने-इति सर्वभूत कारणं भावयित्वा । ॐ लं सर्वसंहारात्मने-इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा । ॐ क्षं कोपात्मने-इति सर्वक्षयकारकं ध्यात्वा तत्वत्रयं न्यसेत् । ॐ आत्मतत्वाय । ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे पादयो: । ॐ विद्यात-वाय । ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे हृदये । ॐ शिवतत्वाय । ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय शिरसि ।

२६. शिवस्य ब्रह्मन्यासः— ओं ईशानाय अङ्गुष्ठयो: ओं तत्पुरुषाय तर्जन्यो: । ओं अघोरेभ्यो मध्यमयो: । ओं वामदेवाय अनामिकयो: ओं सद्योजाताय कनिष्ठिकयो: । ओं सद्योजाताय हृदि । ओं वामदेवाय शिरसि । ओं अघोराय शिखायाम् । ओं तत्पुरुषाय

कवचे । ओं ईशानाय अस्त्रे । ओं हृदयाय कनिष्ठिकयोः । ओं शिरसे स्वाहा अनामिकयोः । ओं शिखायै वषट् मध्यमयोः ओं कवचाय हुम् तर्जन्योः । ओं अस्त्राय फट् अङ्गुष्ठयोः ।

एवं विन्यस्य, परेण तेजसा संयोज्य, कवचेनावगुण्ठ्य, सर्वकर्मसु नियोजयेत् । आचमनं सर्वत्र । इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा 'लिङ्गमुद्रां' बध्वा ओं ईशानः सर्वविद्यानां सदा शिवोम्, इति मन्त्रेण ईशान (नाम्नीं) मुष्टि बध्नीयात् २६।

२७. शिवस्य कलान्यासः– ओं ईशान सर्व० ईशानं मूर्ध्नि (अङ्गुल्यग्रैः रुद्रमुद्रया अयं न्यासः कार्यः) । ओं तत्पुरुषाय वि० तत्पुरुषं मुखे (तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः) । ओं अघोरेभ्योऽथ० अघोरं हृदि (मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः) । ओं वामदेवाय वामदेवं गुह्ये (अङ्गुष्ठानामिकायोगेन अयं न्यासः कार्यः) । ओं सद्योजातं प्रपद्यामि (पादादारभ्य मस्तकान्तं कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन न्यासः) । ओं ईशानः सर्वविद्यानां नमः ईशानीं देवस्य उपरितनमूर्ध्नि । ओं ईश्वरः सर्वभूतानां नमः अभयदां देवस्य पूर्वमूर्ध्नि ओं ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा इष्टदां कलां देवस्य दक्षिणमूर्ध्नि । ओं शिवो मे अस्तु नमः० मरीचीं कलां देवस्य उत्तरमूर्ध्नि । ओं सदाशिवोऽम् नमः ज्वालिनीं पश्चिममूर्ध्नि । इति शिवस्यकलान्यासः २७।

२८- शिवस्य तत्पुरुषकलान्यासः– ओं तत्पुरुषाय विद्महे पूर्ववक्त्रे शान्तिम् । ओं महादेवाय धीमहि दक्षिणवक्त्रे विद्याम् । ओं तन्नो रुद्रो उत्तरवक्त्रे प्रतिष्ठां । ओं प्रचोदयात् पश्चिमवक्त्रे

धृतिम्। इति शिवस्य तत्पुरुषकलान्यास: ।२८

२९. शिवस्य घोरकलान्यास:— ओं अघोरेभ्यो तमां हृदये। ओं थ अघोरेभ्यो जरां उरसि। ओं घोर सत्वां स्कन्धयो:। ओं घोरतरेभ्यो निद्रां नाभौ। ओं सर्वेभ्यो सर्वव्याधिं कुक्षौ। ओं सर्वसर्वेभ्यो मृत्युंअङ्गुष्ठे। ओं नमस्ते अस्तु क्षुधां वक्षसि। ओं रुद्ररूपेभ्यो तृषां उरसि। इति शिवस्याघोर कलान्यास: ।२९

३०. वामदेव कलान्यास:—ओं वामदेवाय जरां गुह्ये। ओं ज्येष्ठाय रक्षां लिङ्गे। ओं श्रेष्ठाय रतिं दक्षिणोरौ। ओं रुद्राय पालिनीं वामोरौ। ओं कालाय कलां दक्षिणजानौ। ओं कलविकरणाय सञ्जीवनींवामजानौ। ओं बलविकरणाय धात्रींदक्षिणजङ्घायाम् ओं बलाय वृद्धिं वामजङ्घायाम्। ओं बलाय छायां दक्षिणस्फिचि ओं प्रथमनाय क्रियां वामस्फिचि। ओं सर्वभूतदमनाय-भ्रामणीं कट्याम्। ओं मनो शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे। ओं उन्मनाय ज्वरां वामपार्श्वे इति वामदेवकलान्यास ३०।

३१. सद्योजातकलान्यास:—ओं सद्योजातं प्रपद्यामि सिद्धिंदक्षिणपादे ओं सद्योजाताय वै नमो ऋद्धिं वामपादे। ओं भवे दीप्तिं दक्षिणपाणौ। ओं भवे लक्ष्मीं वामपाणौ। ओं नातिभवे मेधां नासायाम्। ओं भवस्व मां कान्तिं शिरसि। ओं भव स्वधां दक्षिणबाहौ। ओं उद्भवाय प्रभां वामबाहौ।

ततः 'तमाद्या: कला अत्र विशन्तु' इति मन्त्रेणावशिष्ट-कलान्तरन्यास भावनां कुर्यात्। इत्थं न्यासकरणेन विद्यादेहं हंसं भावयित्वा 'ओं हंस हंस' इति मन्त्रेण हृदयादिन्यासं कुर्यात्।

तद्यथा - ओं हँ सा हृदयाय नम । ओं हं सीं शिरसे स्वाहा । हं सूँ शिखायै वषट् । हं सैं कवचाय हुम् । ओं हं सौं अस्त्राय फट् ।

नृसिंहमूर्तौ तु 'नायं हृदयादिन्यास: किन्तु 'ओं नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल स्वाहा' इति मन्त्रेण षडावृत्तेन षडङ्गन्यासा कार्या: । न्यासानन्तरं बलिश्च नृसिंहाय देव हिति विशेषे: । नारसिंही यदा स्थाप्या अधिवास्य निशागमे । कृत्रिमं वाऽथ साक्षाद्वा पशुं दत्वा बलिं हरेत् । इति बचनात् । एवं न्यासविधिं कृत्वा निद्राकलशे निद्रामावाहयेत् । इति ।

ॐ साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्यो पूर्वादि दश इन्द्रादि दिक्पालेभ्यो मातृ क्षेत्रपालेभ्यो दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

इति लोकपाल मातृ क्षेत्रपाला भूतेभ्यो बलिं दत्वा बलि देकर सर्वतोभद्र पर स्थापित देवताओं की सुवर्णादि प्रतिमाओं के अलग २ आवाहन करे । शय्या से प्रतिमा को सर्वतोभद्र मण्डल में रखकर विधिविधान से पूजा करे विष्णु की प्रतिमा हो तो द्वादशार चक्र के मध्य में अष्टदल पद्म मध्य कर्णिकायाम्- ॐ हुं हृदयाय नम: हृदयं पूजयेत् । ॐ विष्णवे नम: इति शिर पूर्व पत्रे । ॐ ब्रह्मण्याय नम: इति शिखां दक्षिणे । ॐ ध्रुवाय नम: इति कवचं पश्चिमे । ॐ चक्रिणे नम: इति फट् अस्त्रमुत्तरे । ॐ शम्भवाय नम: गायत्री माग्नेय दले । ॐ विजयाय नम: सावित्री मीशानदले । ॐ ज्योतिरूपाय नम: नैर्ऋत्य । ॐ चक्रिरूपाय नम: पिंगलास्त्रं वायव्ये ।

इति प्रथमं गर्भावरणम्

(द्वादश आराओं में पूर्वादिक्रम से देव स्थापन)

१. केशव, २. नारायण, ३. माधव, ४. गोविन्द, ५. विष्णु, ६. मधुसूदन, ७. त्रिविक्रम, ८. वामन, ९. श्रीधर; १०. पद्मनाभ, ११. हृषीकेश, १२. दामोदर इति द्वादश मूर्तिपूजा । इति द्वितीया वरणम् ।

अथ मन्त्रन्यासः ।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ।। इति पादयो ।। १ ।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्याय ध्वमघ्न्या भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तने ऽईशत माघशꣳसो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।। इति गुल्फयो ।।२।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभिस्रवन्तु नः । इति जान्वोः ।४।

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्र चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोम तोम ऽआत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम ।। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत । इति ऊर्वोः ।५।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । इति जठरे ।६। ॐ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा

जरसन्तनू नाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो: । इति हृदये ।७। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुंम्म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण इति कण्ठे ।८। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र: । इति वक्त्रे ।९। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् । इति नेत्रयो: ।१०। ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् । कवि ँ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवा: । इति मूर्ध्नि ११।

(इति न्यासं कृत्वा शय्याया शिर प्रदेशे निद्राकलशं स्थापयित्वा तस्मिन् कलशे निद्रामावाहयेत्) तद्यथा ।

निद्रां भगवतीं देवीं विष्णोरतुलतेजसाम् ।
परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहम् ।।

मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीम् ।
विरूपाक्षि ! शिवे ! शान्ते ! आगच्छ त्वं तु मोहिनी १।

वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बरविभूषिते ! ।
आगच्छ सहसाजस्त्रं सुप्तसंसारमोहिनी ।२।

सुषुप्तं संहरे देवी कुमार्येकाम्तमानसे ।
श्रमनि:श्वासबाह्ये तु आगच्छ भुवनेश्वरि ! ।३।

तम सत्त्वरजोपेते ! आगच्छ वरवर्णिनि ! ।
मनोबुद्धिरहकारसहारस्त्व सरस्वति ! ।४।

शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गंधश्च पंचमः ।
आगच्छ गृह्ण संक्षिप्य मोहपाशनिबंन्धिनि ! ।५।
भवस्योत्पत्तिहेतुस्त्वं यावदाभूतसंप्लवम् ।
भुवः कल्पान्तसंध्यायां वयसे त्वं चराचरम् ६।
भोगिशय्याप्रसुप्तस्स वासुदेवस्य शासने ।
त्वं प्रतिष्ठासि वै देवि ! मुनियोनिसमुत्थिते ! ।७।
पितृदेवमनुष्याणां सयक्षोरगरक्षसाम् ।
पशुपक्षिमृगाणां च योगमायाविवर्धिनी ।८।
वससे सर्वसत्त्वेषु मातेव हितकारिणी
एहि सावित्रिमूर्ति ! त्व चक्षुभ्यां स्थानगोचरे ।९।
विश नासापुटे देवि ! कण्ठे चोत्कण्ठिता विश ।
प्रतिभावय मां सर्वं मातृत्वं देवि ! सुन्दरि ! ।१०।
इदमर्घ्यं मया दत्तं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।
उपप्रागात्परमिति तस्याः पूजाविधौ स्मृतः ११।

निद्राकलशपूजा।

ॐ उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वाँ २ ऽअच्छा पितरं मातरं च। अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्या ऽअथाशास्ते दाशुषे वार्य्याणि।

इति निद्राकलशे निद्रां पूजयित्वा दिक्पालेभ्यो बलिं दत्वा स्थाप्य देवशय्यान्तः प्राच्यां सर्वतोभद्रे लिङ्गतोभद्रमण्डले वा द्वादशारं कृत्वा पूजयेत् ।

अथ शिवप्रतिष्ठायां मण्डलेऽ... कृत्वा तत्र कर्णिकायां मेरुं पूजयेत्

अथ पौष्टिकमन्त्राः

ततो नमः शिवायेति देवं संस्थाप्य । ॐ ह्रां हृदयाय नमः, इति कर्णिकायां हृदयम् । ॐ शिवाय नमः, इति पूर्वपत्रे शिरः पूजयामि ॐ ब्रह्मण्याय नमः दक्षिणपत्रे शिखायै वषट् । ॐ ध्रुवाय नमः, इति पश्चिमपत्रे कवचाय हुँ । ॐ शूलिने नमः, इत्युत्तरपत्रे अस्त्रम् । (इति गर्भाभरणम्) पुनः अष्टपत्रे प्रागादितः पूर्वे ॐ अनन्ताय नमः । आग्नेय्यां ॐ सूक्ष्माय नमः । दक्षिणे ॐ शिवोत्तमाय नमः । नैर्ऋत्यां ॐ एकनेत्राय नमः । पश्चिमे ॐ एकरुद्राय नमः । वायव्यां ॐ त्रिमूर्त्तये नमः । उत्तरे ॐ श्रीकण्ठाय नम । ईशान्यां ॐ शिखण्डिने नम । (पुनः पूर्वादि-क्रमेण पत्रेषु) पूर्वे ॐ टङ्कायै नमः । आग्नेय्यां ॐ कृपाक्षाय नमः । दक्षिणे ॐ वज्राय नमः । नैर्ऋत्यां ॐ दहनाय ममः । पश्चिमे ॐ भोगेन्द्राय नमः । वायव्यां ॐ घण्टायै नमः । उत्तरे ॐ अङ्कुशाय नमः । ईशान्यां ॐ पाशाय नमः । पुनः पूर्वे ॐ पृथ्वी-मूर्त्तये नमः । पृथ्वीमूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः । दक्षिणे ॐ अर्कमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः । पश्चिमे ॐ जलमूर्तये नमः । जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः । उत्तमे ॐ वायुमूर्त्तये ममः । वायुमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः । ईशान्याँ ॐ पशुपतये नमः । पशुमूर्त्यधिपतये यजमानमूर्त्तये नमः । आग्नेय्यां ॐ इन्द्रमूर्त्तये नमः । इन्द्रमूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः । मैऋत्यां ॐ खमूर्तये नमः । खमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः । वायव्यां ईशानाय नमः । ईशानमूर्त्यधिपतये सूर्याय नमः । ततो दिव्यवाससा देवमाच्छाद्य रुद्रसूक्तेन स्तुत्वा पुष्पाञ्जलिं दत्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् शान्ति-

शिवप्रतिष्ठायाम् । (ततो विष्णुश्चेद्
पौष्टिकमन्त्रैर्हुत्वा इति
द्वादशारे द्वादशदले पद्मे ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति शय्यायां
देवं निवेशयेत्) ॐ हुं हृदयाय नमः इति कर्णिकायां हृदयं
पूजयेत् । पूर्वे ॐ विष्णवे नमः इति शिरः पूजयेत् । आग्नेय्यां
ॐ ब्रह्मणे नमः इति शिखां पू० । दक्षिणे ॐ रुद्राय नमः इति
कवचं पू० । नैर्ऋत्यां ॐ ध्रुवाय नमः इत्यस्त्रं पू० । पश्चिमे ॐ
चक्रिणे नमः इति गायत्रीं पू० । वायव्याम् इति सावित्रीं पू० ।
उत्तरे ज्योतिरूपाय० इति पूजयेत् । ईशान्यां शक्तिधराय० इति
पूजयेत् । (ततः पूर्वादिक्रमेण द्वादशदलपत्रेषु) ॐ केशवाय नमः ।
ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः ।
मधुसूदनाय नमः । ॐ त्रिविक्रमाय नमः । ॐ वामनाय नमः ।
ॐ श्रीधराय नमः । ॐ हृषीकेशाय नमः । ॐ पद्मनाभाय नमः ।
ॐ वासुदेवाय नमः । ॐ दामोदराय नमः । पुनः प्रागादित
शस्त्रम् । खड्गाय नमः । गदायै नमः । चक्राय नमः । शङ्खाय
नमः । पद्माय नमः । हलाय नमः । मुशलाय नमः । शार्ङ्गाय
नमः । पुनः पूर्वे । ॐ पृथ्वीमूर्तये नमः । पृथ्वीमूर्त्यधिपतये
वासुदेवाय नमः । दक्षिणे । ॐ जलमूर्तये नमः । जलमूर्त्यधिपतये
सङ्कर्षणाय नमः । पश्चिमे । अग्निमूर्तये नमः अग्निमूर्त्यधिपतये
प्रद्युम्नाय नमः । उत्तरे । ॐ वायुमूर्त्तये नमः । वायुमूर्त्यधिपतये
अनिरुद्धाय नमः । मध्ये । खमूर्त्तये नमः । खमूर्त्यधिपतये
नारायणाय नमः । ततो दिव्यवाससा देवमाच्छाद्य पुरुषसूक्तेन
स्तुत्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् । अत्र रात्रौ जागरणं
कुर्यात् । शान्तिकपौष्टिकैर्मन्त्रैर्जुहुयात् ।

अथ शान्तिकमन्त्राः

ॐ शं नो वात पवता७ँ शं नस्तपतु सूर्य्यं । शं नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्यो ऽअभिवर्षतु ।१। ॐ शं न ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभि शं न ऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न ऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ।२। ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्त्रभवन्तु नः ३। इति शान्तिकमन्त्राः ।

अथ पौष्टिकमन्त्राः

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हि७ँसीः निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्प्रजननाय राय स्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ।१। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतात् । इति पौष्टिकमन्त्राः । (पञ्चकुण्डीपक्षे) पूर्बकुण्डे । ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् । दक्षिणकुण्डे । ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्स्थ देवो व सविता प्प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽअ प्यायवद्ध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माघश७ँसो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि । पश्चिमकुण्डे । ॐ अग्न ऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि । उत्तरकुण्डे । ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः । इति पञ्चकुण्डीपक्षः (यदा नवकुण्डीपक्षः तदा) (पूर्वकुण्डे) ॐ अग्निमील पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्त्विजम् ।

होतारं रत्नधातमम् ।१। (आग्नेयकुण्डे) ॐ वौषट् ।२। (दक्षिण-कुण्डे) ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्प्यतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीर-नमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माघश ँ सो द्ध्रुवा ऽअ स्मिन्गो-पतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।३। (नैर्ऋत्यकुण्डे) दशप्रणवयुक्तगायत्र्या ४। (पश्चिमकुण्डे) ॐ अग्न ऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोतासत्सि बर्हिषि ५। (वायव्यकुण्डे) ॐ जातवेदसे सुनयाम सोममरातीयतो निदहाति वेद । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि ।६। (उत्तरकुण्डे) ॐ शन्नो देवी० ।७। (ईशानकुण्डे) ॐ नमो ब्रह्मणे० ८। ततः त्याग कुंडपूर्वदिशि पूर्वस्था पितशान्तिकलशेषु क्षिपेत् । (ततो अष्टसु पूर्वादिकुण्डेषु मूर्तिमूर्पिलोकपालेभ्यः घृतेन तिलैर्वाऽष्टाष्ट-संख्यया जुहुयात्, तेषां मन्त्रा- ॐ स्योनापृथिवि० स्वाहा । इति पृथिवीमूर्तेः ।१। ॐ अघोरेभ्याऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा । इति पृथिवीमूर्तिपते सर्वस्य ।२। सयोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँ ।२। रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा । इति इन्द्राय ३। (इति पूर्वकुण्डे हुत्वा १) ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे देवाँ २ ऽआसादयादिह स्वाहा । इत्यग्निमूर्तेः ।१। ॐ तेजः पशूना ँ हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता पयसा सारघं मधु । अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुता-सुताभ्याममृतः सोम इन्दु स्वाहा । इत्यग्निमूर्तिपतेः पशुपतेः ।२।

ॐ अग्न ऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि स्वाहा । इत्यग्ने ।३ (इत्यग्निकुण्डे) ॐ य ऽइन्द्र ऽइन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः । स सुत्रामा हविष्पतिर्यजमानाय सश्चत स्वाहा । इति यजमानमूर्तेः ।१ ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा इति यजमानमूर्तिपतेः रुद्रस्य ।२। ॐ यमाय त्वांगिरस्वते० । इति यमस्य ।३। (इति दक्षिणकुण्डे) ॐ उदु त्यं जातवेदसं देव वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यं स्वाहा इति सूर्यमूर्ते ।१ ॐ असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैन ँ रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः । सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे स्वाहा । इति सूर्यमूर्तिपते रुद्रस्य ।२। ॐ असुन्वन्त म यजमान० स्वाहा । इति निऋते ।३ (इति नैर्ऋत्यकुण्डे) ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज० स्वाहा । इति जलमूर्ते ।१। उग्रंल्लोहितेन मित्रः सौव्रत्त्येन रुद्र दौर्व्रत्ये नेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यः रुद्रस्यान्तं पाश्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्टुः पशुपतेः पुरीतत् स्वाहा । इति जलमूर्त्तिपतेर्भवस्य ।२। ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके स्वाहा । इति वरुणस्य ।३। (इति पश्चिमकुण्डे) ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये स्वाहा । इति वायुमूर्तेः ।१। ॐ तमीशानं० स्वाहा । इति वायुमूर्तिपतेरीशानस्य ।२। ॐ आ नो नियुद्भि स्वाहा । इति वायो ।३ (इति वायुकुण्डे) ॐ वय ँ

सोमव्रते० स्वाहा। इति सोममूर्तेः ।१। ॐ सोमो राजामृत सुत ऽऋजीषेणाजहान्मृत्युम्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳪ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा। इति सोममूर्तिपतेर्महा-देवस्य ।२। ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा। इति कुबेरस्य ।३। (इत्युत्तरकुण्डे) ॐ तमीशानं० स्वाहा। इति खमूर्त्ते ।१। ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्था परस्याः सृकᳪसᳪशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा। इति खमूर्त्तिपतेर्भीमस्य ।२। ॐ ईशा वास्यमिदᳪसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् स्वाहा। इति ईशानस्य ।३। (इति ईशानकुण्डे) ततः स्थाप्यदेवस्य मूलमन्त्रेण घृतादिद्रव्यैः पञ्चकुण्डेषु वा आचार्यकुण्डे अष्टाष्टसंख्यया हुत्वा) तद्यथा (पूर्वकुण्डे) घृताहूत्यष्टकं मूलमन्त्रेण हुत्वा देवपादौ स्पृशेत्। (याम्यकुण्डे) पूर्वोक्तमन्त्रेण दधि हुत्वा देवस्य नाभिं स्पृशेत्। पश्चिमकुण्डे पूर्वोक्तमन्त्रेण क्षीरं हुत्वा देवस्य हृदयं स्पृशेत्। (उत्तरकुण्डे) पूर्वोक्तमन्त्रेण मधु हुत्वा देवस्य मूर्ध्नि स्पृशेत्। ततः कूर्मशिला-ब्रह्मशिला-पिण्डिकावाहनानि ❀परिवारदेवांश्च नाममन्त्रैः वैदिकमन्त्रैर्वा सम्पूज्य मुख्यप्रतिमाया वामपार्श्वेऽधिवासयेत्। तानि मधु-घृताभ्यामभ्यज्य प्रक्षाल्य पुनः सम्पूज्य वस्त्रेणाच्छाद्य प्रधान-

---

❀ टि० परिवारदेवाः। विष्णोः चण्ड-प्रचण्डौ। महादेवस्य नन्दीभृङ्गीमहाकालगणेशचण्डमातृवृषस्कन्दाः। सूर्यस्य दण्डि-पिङ्गलादयः।

पिण्डिकायां स्व-स्वमन्त्रैर्न्यासं कुर्यात् । (ततः शिवस्य पत्न्या नाममन्त्रेण न्यास) । ॐ घं गौर्य्यै० हृदये । ॐ हं गौर्य्यै० शिरसे स्वाहा । ॐ यं गौर्य्यै० शिखायै वषट् । ॐ भं गौर्य्यै० कवचाय हुं । ॐ फं गौर्य्यै० नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ हुं गौर्य्यै० अस्त्राय फट् । (विष्णोः पत्न्या न्यासः) ॐ घं लक्ष्म्यै० हृदये । ॐ हं लक्ष्म्यै० शिरसे स्वाहा । ॐ य लक्ष्म्यै० शिखायै वषट् । ॐ भं लक्ष्म्यै० कवचाय हुं । ॐ फं लक्ष्म्यै० नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ हु लक्ष्म्यै० अस्त्राय फट् । (केचित्तु न्यासान्ते तत्त्वत्रय-मूर्तिमूर्तिपांश्च पूर्ववत् बिन्यासं च कुर्यात्) ॐ ह्लां श्रीं ह्लां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः । ॐ ह्लां श्रीं ह्लीं दिव्यतेजोधारिण्यै सुभगायै नम । इति मन्त्राभ्यां अधिवासयेत् । इत्यधिवासनम् ।

अथ प्रासादोऽपि नूतनश्चेत्तस्याऽप्यधिवासनम्

तद्यथा । प्रासादाग्रे एकाशीतिपदमण्डलं यवचूर्णेन कृत्वा । अथवा। नबकोष्ठान् कृत्वा तेषु नवकोष्ठेषु प्रतिकोष्ठे नव नव कलशान् जलपूर्णान् धान्यपुञ्जोपरि धृत्वा । एवं एकाशीतिकलशा भवन्ति तत्र मध्यादिकोष्ठेषु क्रमेण नवनवकानां मध्ये ओषध्यादि क्षिप्त्वा । तद्यथा (मध्यकोष्ठनवकमध्यकलशे) शमी, उदुम्बर, अश्वत्थ, चम्पक, अशोक, पलाश, प्लक्ष, न्यग्रोध, कदम्ब, आम्र, बिल्व, अर्जुन, इति पल्लव द्वादशकं क्षिपेत् ।१। (तत पूर्वदिशि नवकमध्यकलशे) पद्मक, गोरोचन, दूर्बाङ्कुर, दर्भपिंजुली, श्वेतपीतसर्षप, सितरक्तचन्दन, जातीसुमन, नद्यावर्त, इति दशकं क्षिपेत् ।२। (आग्नेयां नवकमध्यकलशे) यव, व्रीहि, तिल, सुवर्ण

रजत, गङ्गामृत्तिका, गोमयमिति सप्तकं क्षिपेत् ।३। (दक्षिणे नवकमध्यकलशे) सहदेवी, विष्णुक्रान्त, भृङ्गराज, महौषधी, शमी, शतावरी, गुडूची, श्यामाकमित्यष्टकं क्षिपेत् ।४। (नैऋत्यनवकमध्यकलशे) कदली, पूगीफल, नारिकेल, बिल्व, नारिङ्ग, मातुलिङ्ग, वदर, आमलकमिति, फलाऽष्टकं क्षिपेत् ५। (पश्चिमनवकमध्यकलशे) मन्त्रसाधितं पञ्चगव्यं क्षिपेत् ।६ (वायव्यनवकमध्यकलशे) शङ्खपुष्पी, शमी, उदुम्बर, अश्वत्थ, न्यग्रोध, पलाश, एतत्पञ्चवृक्षस्य त्वच कषायं क्षिपेत् ७। (उत्तरनवकमध्यकलशे) शङ्खपुष्पी, सहदेवी, बला, शतावरी, घिकुआर, गुरुच, वच व्याघ्री, इति मूलाष्टकं क्षिपेत् ।८। (ईशाननवकमध्यकलशे) सप्तमृत्तिकां क्षिपेत् ९। शेषान् कलशान् गन्धोदकेन पूरयित्वा सर्वान् सूत्रेण नवकं नवकं वेष्टयेत् । ततः प्रासादं अन्तः-बहिः अधः-ऊर्ध्वञ्च पञ्चगव्येन सम्प्रोक्ष्य ततः प्रासादे ॐ मूर्द्धानं दिवेति सप्तमृत्तिका विलिम्पेत् । (ततः ईशानमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासाद स्नापयेत्) तत्र मन्त्रः । ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमां २। ऽउदारदुपाᳪशुना सममृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः १। (ततो वायव्यमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ यज्ञा यज्ञा वो ऽअग्नये गिरा गिरा च दक्षसे । प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं नशᳪसिषम् ।२। (पश्चिममध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ याः फलिनीर्येति ।४। (उत्तरमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ हᳪसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा

ऽऋतसजा ऽअद्रिजा ऋतं बृहत् ।५। (पूर्वमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।६। (आग्नेयमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ७ (दक्षिण-मध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्याँ धमति सपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएक ।८। (मध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्) ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।९। (ततो गन्धोदक-पूरिताष्टकलशान् पूर्वादिक्रमेण प्रासादं सशिखरं स्नापयेत्, तत्र मन्त्राः) ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलञ्च यत्। यच्चाभिदु-द्रोहानृतं यच्च शेपे ऽअभीरुणम् आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु। दैव्याय कर्म्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वो शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि। इति मन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य सूत्रेणावेष्ट्य स्नापयित्वा देवरूपं प्रासादं चिन्तयित्वा पताकादिना शोभयित्वा गन्धादिना पूजयित्वा तस्याप्यधस्तादेव संचिन्त्य वक्ष्यमाणमन्त्रेण प्रासादमधिवासयेत्। तत्र मन्त्र। ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्वलाकृते। यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव, इत्यधिवास्य। ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी-मिदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे, इत्यादिरक्षोघ्नसूक्तेन। यदत्र संस्थिते भूतमित्यादि मन्त्रेण श्वेतसर्षपं बाह्यान्तरं विकीर्य। ॐ

वास्तुपुरुषाय नमः, इति वास्तुं सम्पूज्य। तीर्थोदकेन कुशैः सर्वतः प्रासादं प्रोक्ष्य प्रासादं स्पृष्टवा न्यासं कुर्यात्। तद्यथा। ॐ ह्लां पृथिवीतत्त्वाय नमः, पृथिवीतत्त्वाधिपतये श्रीकूर्माय नमः। ॐ ह्लां अप्तत्त्वाय नमः अप्तत्त्वाधिपतये जलेशाय नमः। ॐ ह्लां तेजस्तत्त्वाय नमः। तेजस्तत्त्वाधिपतये त्विषां निधिपतये नमः। ॐ ह्लां वायुतत्त्वाय नमः वायुतत्त्वाधिपतये मातरिश्वने नमः ॐ ह्लां आकाशतत्त्वाय नमः आकाशतत्त्वाधिपतये सूक्ष्माय नमः। (इति प्रासादपादेषु) ॐ ह्लां रूपतन्मात्राय नमः रूपतन्मात्राधिपतये भानुमते नमः। ॐ ह्लां रसतन्मात्राधिपतये जलदाय नमः। ॐ ह्लां गन्धतन्मात्राय नमः गन्धतन्मात्राधिपतये गन्धाक्षाय नमः। ॐ ह्लाँ स्पर्शतन्मात्राय नमः स्पर्शतन्मात्राधिपतये बलतत्वाय नमः। ॐ ह्लां शब्दतन्मात्राय नमः शब्दतन्मात्राधिपतये सूक्ष्मनादाय नमः। (इति प्रासादजङ्घयो) ॐ ह्ां वाक्तत्वाय नमः वाक्तत्वाधिपतये दुन्दुभये नमः। ॐ ह्ां पाणितत्वाय नमः पाणितत्वाधिपतये समादानाय नमः। ॐ ह्ां पादतत्वाय नमः पादतत्वाधिपतये संक्रमाय नमः। ॐ ह्ां पायुतत्वाय नमः पायुतत्वाधिपतये विसर्गाय नमः। ॐ ह्ां उपस्थतत्वाय नमः उपस्थतत्वाय नमः उपस्थतत्वाधिपतये आनन्दाय नमः। (इति प्रासादकटिप्रदेशे) ॐ ह्ां श्रोत्रतत्वाय नमः श्रोत्रतत्वाधिपतये व्योमाय नमः। ॐ ह्ां त्वक्तत्वाय नमः त्वक्तत्वाधिपतये सर्वाङ्गाय नमः। ॐ ह्ां चक्षुस्तत्वाय नमः चक्षुस्तत्वाधिपतये आकाशाय नमः। ॐ ह्ां रसनातत्वाय नमः रसनातत्वाधिपतये महावक्त्राय नमः। ॐ ह्ां घ्राणतत्वाय नमः घ्राणतत्वाधिपतये

विलुण्ठाय नमः। (इति प्रासादनाभौ) ॐ ह्रां मनस्तत्त्वाय नमः मनस्तत्त्वाधिपतये सङ्कल्पाय नमः। ॐ ह्रां बुद्धितत्त्वाय नमः बुद्धितत्त्वाधिपतये बुद्धये नमः। ॐ ह्रां अहङ्कारतत्त्वाय नमः अहङ्कारतत्त्वाधिपतये अहंकृतये नमः। ॐ ह्रां चित्तत्त्वाय नमः चित्तत्त्वाधिपतये मनसे नमः (इति प्रासादकण्ठे) ॐ ह्रां प्रकृतितत्त्वाय नमः प्रकृतितत्त्वाधिपतये पितामहाय नमः। (इति प्रासादद्वारमध्ये) ॐ ह्रां हृदये पुरुषतत्वाय नमः पुरुषंतत्वाधिपतये विष्णवे नमः। (इति प्रासादमध्ये) ॐ ह्रां कलातत्वाय नमः कलातत्वाधिपतये क्रतुध्वजाय नमः ॐ ह्रां विद्यातत्वाधिपतये नमः विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः (इति प्रासादवक्त्रे) ॐ ह्रां सदाशिवतत्वाय नमः सदाशिवतत्वाधिपतये अजेशाय नम (इति प्रासादकलशे) ॐ ह्रां चक्रायुधचिह्नेभ्यो नमः। ॐ ह्रां सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ अर्कमण्डलाय नमः (इति कलशोपरि सम्पूज्य) इति प्रासादन्यासं कृत्वा ऋत्विग्भिः सह कुण्डे स्थण्डिले वा न्यासमन्त्रेण तत्वहोमं कुर्यात्।

ॐ अथ प्रासादशिखरकलशप्रतिष्ठा ॐ

आचार्यो मण्डपस्योत्तरभागे स्नानमण्डपे स्वस्तिकं लिखित्वा तस्योपरि शिखरकलश संस्थाप्य लौकिकपञ्चभिः कलशै संस्थाप्य लौकिकपञ्चभिः कलशैः संस्नाप्य ॐ मनोजूतिर्जुषतेति प्रतिष्ठाप्य तैलेनाऽभ्युक्ष्य संस्नाप्य चन्दनादिभिरभ्यर्च्य सूत्रेणा-

वेष्टच तस्य पुरतः पुण्याहवाचनं कृत्वा । ॐ घृतं घृतपावानः इति घृतेनाभ्यज्य । ॐ द्रुपदादिवेति यव-मसूर-हरिद्रापिष्टेनोद्वर्त्य उष्णोदकेन प्रक्षाल्य । मूर्द्धानं दिवेति वल्मीकमृत्तिकया उपलिप्य ॐ या दिव्या आपः इति गन्धोदकेन स्नापयेत् । पुनः स्नान-वेदिचतुःकोणस्थितचतुर्भिः कलशैः स्नापयेत् । तद्यथा । ॐ मा नस्तोके इति प्रथमेन ॐ विष्णोरराटमसीति द्वितीयेन । ॐ वयँसोमेति तृतीयेन । ॐ विश्वतश्चक्षुरिति चतुर्थेन । ॐ पयः पृथिव्येति शुद्धोदकेन स्नापयित्वा द्वादशाक्षरमन्त्रेण अर्चयित्वा (तत्र मन्त्रः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) गन्धाद्यैः सम्पूज्य वस्त्रैराच्छाद्य ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रेति उत्थाय मण्डपदेवालय-प्रादक्षिण्येनानीय पश्चिमद्वारेण प्रविश्य देवसमीपे भद्रासने निवेश्य पुन सम्पूज्य ॐ विश्वतश्चक्षुरिति पठित्वा सकलीकृत्य (षडङ्गन्यासः, इति सकलीकृत्य) घृत-दधि-क्षीर-मधुभिः पृथक् पृथक् ॐ त्र्यम्बकं यजामहेति अष्टोत्तरशतं हुत्वा शान्तिकलशे संस्रवं निक्षिप्य तेनोदकेन पादनाभिहृदाक्षिशिरांसि कलशस्य क्रमेण स्पृशेत् । गन्धादिना सम्पूज्य उत्थाय ॐ आ जिघ्र कलशं मह्यात्वेति मन्त्रेण शिखरोपरि प्रतिष्ठाप्य तस्मिन् कलशे शिव-प्रतिष्ठायां त्रिशूलं स्वर्णमयं ताम्रमयं वा स्थापनीयम् । (विष्णुप्रतिष्ठायां चक्रं सूर्यलक्ष्मीविरञ्चीनां पद्मं इत्यायुधानि (केचित्तु कलशसमीपे मानस्तम्भोध्वजस्तम्भं च प्रतिष्ठापयेत्) ततो गुरु प्रासादाभिमुखो भूत्वा देवरूपं प्रासादं ध्यायेत् । (तद्यथा)-पादौ पादशिलास्तस्य जङ्घा पादोर्ध्वमुच्यते ।

गर्भश्चवोदरं ज्ञेयं कटिश्चैव तु मेखला ।१।

स्तम्भाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टा जिह्वा प्रकीर्तिता ।
दीपः प्राणोऽस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः ।२।
ब्रह्मस्थानं यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्त्तिता ।
हृत्पद्मं पिण्डिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृतः ।३।
पादचारस्त्वहङ्कारो ज्योतिस्तच्चक्षुरेव च ।
तदूर्ध्वं प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः ४
जलकुम्भादधो द्वारं तस्य प्रजननं स्मृतम् ।
शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्यते ।५।
कपोतपालिः स्कन्धोऽस्य ग्रीवा चामलसारक ।
कलशस्तु शिरो ज्ञेयं मज्जा क्षिप्तरसं हितम् ।६।
मोदश्चैव सुधां विद्यात् प्रलेपो मांस उच्यते ।
अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नायुः कीलादयः स्मृताः ७
चक्षुषी शिखरास्तस्य ध्वजा केशाः प्रकीर्त्तिताः ।
एवं पुरुषरूपं तं ध्यात्वा च मनसा सुधीः ८
प्रासादं पूजयेत् पश्चाद् गन्ध-पुष्पादिभिः शुभैः ।
सूत्रेण वेष्टयेद्देवं वासस्तत्परिकल्पयेत् ।९।
प्रासादमेवमभ्यर्च्य वाहनं चाग्रमण्डपे ।
ध्यात्वा सम्पूज्य प्रासादं आत्मानं च निवेदयेत् ।१०।

ततः पिण्डिकावाहनपरिवारदेवानां तत्तन्नाममन्त्रैः तिलैरष्टाष्टसंख्याकं होमं कृत्वा । चतस्रो धेनवो उदङ्मुखीः स्थापयित्वा सम्पूज्य गुरवे दद्यात् । इति प्रासादाधिवासनम् ।

अथ प्रासादोत्सर्गः ।

तद्यथा । देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं इमं शिलेष्ट-कादार्वादिनिर्मितं नलभीजगतीप्राकारपरिवारगोपुरपरिवारदेव-तालयसंयुतं तत्तद्देवतालोककामः कुलद्वयानुग्रहायाऽमुकदेवता-प्रीतयेऽहमुत्सृजामि । इति कुश-यव-जलानि भूमौ क्षिप्त्वा । इति प्रासादोत्सर्गः ।

अथाऽचलप्रतिष्ठायाः कर्म ।

तत आचार्यः अधिवासितां देवताधारभूतां कूर्म्मं शिलां ब्रह्मशिलां पिण्डिकां च । ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः । इति मन्त्रेण गृहीत्वा । शान्तिघोषैः प्रदक्षिणं प्रासादमानीय द्वारदेशे स्थापयित्वा ॐ अस्त्राय फट् इति मन्त्रेण । ततः पुण्योदकेन प्रासादगर्भमभ्युक्ष्य । ॐ महां ।२। ऽइन्द्रो वज्र हस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्म्मान्दद्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते

---

१. प्रासादमण्डने । अर्द्धाङ्गुलो भवेत् कूर्म एकहस्ते सुरालये । अर्द्धाङ्गुलो ततो वृद्धिः कार्या तिथिकरावधिः । एकत्रिंशत्करान्तं च तदर्धा वृद्धिरिष्यते । तस्योपरि सदर्धान्तकूर्मो मन्वङ्गुलात्तमः ।

२. शाकल्यसंहितायाम् । पीठार्धप्रमाणेन तृतीयांशेन वा पुन, स्वाम्भुवी शिला पञ्चचत्वारिंशद्गतंयुता ।

योनिर्म्महेन्द्रायत्वा । इति मन्त्रेण दर्भेणोल्लिख्य हुं फट् इति जलेन प्रोक्ष्य । देवालयमध्ये सूत्रं दत्वा तन्मध्यात् यवप्रमाणेन वा उत्तराश्रितां स्नानादिसंस्कृतां कूर्मशिलां प्रणवेन पञ्चरत्नोपरि निधाय तच्छ्वभ्रे सौवर्णं कूर्मं द्वारसम्मुखं निधाय। तदुपरि पञ्चरत्नानि निधाय तस्योपरि पञ्चचत्वारिंशद्गर्तयुतां ब्रह्मशिलामधिवासितां निदध्यात् । ॐ नमो व्यापिन स्थिरे अचले ध्रुवे ॐ श्रीं लं स्वाहा इति मन्त्रेण ततः सम्पूज्य प्रार्थयेत् त्वमेव परमा शक्तिस्त्व मेवासनधारिका शिवाज्ञया त्वया देवि ! स्थातव्यमिह सर्वदा । इति प्रार्थना तत आसन-शिलायां पूजयेत् ॐ वर्णाध्वने नमः । ॐ पदाध्वने नमः । ॐ मन्त्राध्वने नमः । ॐ भुवनाध्वने नमः । ॐ तत्वाध्वने नमः । ॐ सकलाध्वने नमः, इत्यासनस्थानस्थां कूर्मशिलां सम्पूज्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रणमेत् । इति शिलां स्थिरीकृत्य ॐ इदं विष्णुरिति अष्टोत्तरशतं कुण्डे हुत्वा । ततः बौधायनोक्त-पुण्याहवाचनं कृत्वा । ब्रह्मशिलागर्तेषु सहेम्ना रत्नादिन्यासं हस्तेनैव कुर्यात् (तद्यथा बाह्यपरिधौ) यव-व्रीहि-निष्पाव-प्रियङ्गु-तिल-माष-नीवार-शालिसिद्धार्थकान्(तदधः श्वभ्रे) वज्र-मौक्तिक-वैडूर्य-शङ्ख-स्फटिक-पुष्पराग-चन्द्रकान्तइन्द्रनील-पद्मरागान् (तदधः श्वभ्रे) मनःशिला-हरताल-श्वेताञ्जन-श्यामाञ्जन-कौसीससौ-राष्ट्री गोरोचन-गेरुपारदान् (तदधः श्वभ्रे) सौवर्ण-रौप्य-ताम्र-आयस-त्रपु-सीस-कांस्य-आरकूट-तीक्ष्णलोहानि (तदधः श्वभ्रे) श्वेतरक्तचन्दन-अगरु-अर्जुन-उशीर-वैष्णवी-सहदेवी-लक्ष्मणा चेति (तत्र बीजानामभावे यवान् । रत्नानामभावे वज्रम् । धातूनाम-

भावे हरितालम्। ताम्राद्यभावे सुवर्णम्। औषधीनामभावे सहदेवीं न्यसेत्) एवं न्यस्तानां दिक्पालमन्त्रेणाऽऽलम्भनं कुर्यात्। तद्यथा। पूर्वे। ॐ त्रातारमिन्द्र०। ॐ त्वन्नो ऽअग्ने०। ॐ यमाय त्वा०। ॐ असुन्वन्त म०। ॐ तत्त्वा यामि०। ॐ वायो ये ते०। ॐ वयꣳसोम०। ॐ तमीशानं०। एवं रत्नादिन्यासं कृत्वा। श्वभ्ररहिते शिलोपरिभागे सश्वभ्रपिण्डिकापूर्वपश्चिमानने प्रासादे उत्तरप्रणालीम्। दक्षिणोत्तरानने पूर्वप्रणालीं ध्रुवसूक्तेन निधाय। तद्यथा। ॐ ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृꣳहदध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षं दृꣳहाच्युतक्षिदसि दिवं दृꣳहाग्नेः पुरीषमसि। देवपत्नीमन्त्रेण पिण्डिकां स्थापयेत्। (देवपत्नीमन्त्रः) ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः इति शिवप्रतिष्ठायाम् (यदा विष्णुश्चेत्तदा श्रीश्च तेति मन्त्रेण। ब्रह्मा चेत्तदा गायत्रीमन्त्रेण वा। पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञंवष्टु धिया वसुः। सूर्यश्चेत्तदा। ॐ उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्यꣳ वाजिनीवति। येन तोकञ्च न तनयञ्च धाम हे। (इति मन्त्रेण स्थापयेत्) ततो तत्वन्यासं कुर्यात्। शिवतत्त्वाय नमः। शिवतत्वाधिपत्न्यै इच्छाशक्त्यै नमः। इति इति शिवप्रतिष्ठायाम्। विष्णुश्चेत्तदा। आत्मतत्त्वाय नमः। आत्मतत्वाधिपत्न्यै क्रियाशक्त्यै नमः। विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्वाधिपत्न्यै ज्ञानशक्त्यै नम.। इति तत्वन्यासः। पिण्डिकायां आधारशक्त्यै नमः। इति न्यस्य। अनन्तासनतत्वेभ्यो नमः आसनशक्तिभ्यो नमः इत्युक्त्वाभ्यर्च्य प्रार्थयेत्—

सर्वदेवमयीशानि त्रैलोक्याह्लादकारिणि ! ।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते १।

यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा ।
तावत् त्वं देवदेवेशि ! मन्दिरेऽस्मिन् स्थिरा भव २।

पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम् ।
अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि मे ।३

विजयं नृपतेः सर्व लोकानाँ क्षेममेव च ।
सुभिक्षं सर्वलोकानां कुरु देवि ! नमोऽस्तु ते ।४।

एवं पिंडिकां प्रतिष्ठाप्य प्रासादाद्बहिरष्टदिक्षु स्थंडिलं कृत्वा स्थण्डिलानामीशानभागेषु कलशस्थापनविधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशान् सम्पूज्य । स्थण्डिलेषु पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं प्रतिष्ठाप्य, प्रतिस्थण्डिले प्रादेशमात्रपालाशसमिधामष्टोत्तरशतं देवस्य मूलमन्त्रेण हुत्वा आज्येन च । अथाचार्योऽष्टदिक्संस्थेभ्य पात्रे तोयमुद्धृत्य मूलमन्त्रेण अभिमन्त्र्य प्रतिमासन्निधौ गत्वा सर्वतीर्थमयमिदं जलमिति ध्यायन् देवमूर्ध्नि अभिषिञ्चेत् । देवप्रार्थना । प्रबुध्यस्व महाभाग ! देवदेव ! जगत्पते ! । मेघश्याम ! गदापाणे ! प्रबुद्धकमलेक्षण ! । प्रबुद्धभूधारानन्त ! वासुदेव ! नमोऽस्तु ते । जल-क्षीर कुशाग्र-तिल-तण्डुल-यवसिद्धार्थकपुष्पाणि शंखे वा अर्घे कृत्वा देवायाऽर्घ्यं दत्वा । ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पतेति देवमुत्थाप्य प्रासादद्वारसंमुखं लिङ्गं कृत्वा अर्घ्यं दत्वा प्रासादं प्रवेशयेदिति । तत सुमुहूर्ते सुस्थिरे लग्ने सौवर्णं पद्मं पिण्डिकायाः श्वभ्रे निधाय तस्मिन् श्वभ्रेऽष्ट-

बंधनादि कृत्वा मूर्ति निधाय लिङ्गयोरन्तरालं वालुकासीसकादिभिर्दृढं कृत्वा पुनर्न चालयेत्। ॐ स्थिरो भव शाश्वतो भव। ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवीध्रुवं विश्वमिदं जगत्। ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः। इति सूक्तं पठेत्। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएक। इति मन्त्रेण देवस्य मूर्ध्नि हस्तं निधाय परं देवं ध्यात्वा रुद्रसूक्तं जप्त्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् (विष्णुश्चेत्तदा पुरुषसूक्तं जप्त्वा)।

अथ प्रतिमा प्राणप्रतिष्ठा

तद्यथा। अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं क्रौं शक्तिः प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमो मुखे। प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि। आं बीजाय नमो गुह्ये। क्रौं शक्तये नमः पादयोः ॐ कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः। ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ टं ठं डं ढ णं उं श्रोत्र-त्वक्चक्षुर्जिह्वा-घ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्। ॐ तं थं दं ध नं ए वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुं। ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षँ अं मनोबुद्ध्य-

हंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् । एवं न्यासं कृत्वा देवं स्पृष्टबा जपेत् । तद्यथा । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः, महादेवस्य प्राण इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः महादेवाय जीव इह स्थितः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः महादेवस्य सर्वेन्द्रियाणि । ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ रं लं वं शं षं सं हं सः । महादेवस्य बाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । आचार्यः हृद्यङ्गुष्ठं दत्वा जपेत् । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेत्ति च कश्चन ।१। ॐ इति सन्निरुद्ध्य सजीवं ध्यात्वा । ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् । ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः । इति सूक्तं जपित्वा कर्णे गायत्री मन्त्रं जप्त्वा ।

श्री शिवगायत्रीः- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ।

श्री विष्णुगायत्रीः- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

श्री सूर्यगायत्रीः- ॐ भास्कराय विद्महे प्रभाकराय धीमहि ।
तन्नो भानु प्रचोदयात् ।

श्री गणेशगायत्रीः- ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

श्री गौरीगायत्रीः- ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि ।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।

श्री नन्दीगायत्रीः- ॐ हरिवक्त्राय विद्महे रुद्रवक्त्राय धीमहि।
तन्नो नन्दी प्रचोदयात् ।

श्री क्ष्लमीगायत्रीः- ॐ महाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्धयै च धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।

श्री गरुडगायत्रीः- ॐ वैनतेयाय विद्महे स्वर्णपक्षाय धीमहि।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात्

श्री हनुमतगायत्री- ॐ अजञ्नीसुताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि।
तन्नो हनुमत्प्रचोदयात् ।

श्री रामचन्द्रगायत्री - ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

श्री सीतागायत्रीः- ॐ जनकात्मजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि।
तन्नः सीता प्रचोदयात् ।

श्री लक्ष्मणगायत्रीः- ॐ दाशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।

श्री भरतगायत्री - ॐ दाशरथाय विद्महे माण्डबोवल्लभाय धीमहि।
तन्नो भरतः प्रचोदयात् ।

शत्रुघ्नगायत्री - ॐ दाशरथाय विद्महे श्रूतिकीर्तिवल्लभाय धीमहि।
तन्नः शत्रुघ्न प्रचोदयात् ।

श्री कृष्णगायत्री - ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नः कृष्ण प्रचोदयात् ।

श्री राधागायत्रीः- ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णवल्लभायै धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात् ।

श्री नृसिंहगायत्री:- ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ।

श्री ब्रह्मगायत्री:- ॐ चतुर्मुखाय विद्महे पद्मासनाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।

श्री स्कन्दगायत्री - ॐ महासेनाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि ।
तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात् ।

स्वागतं देवदेवेश ! मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ।१।

धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय नः ।
सान्निध्यं तु महादेव ! स्वार्चायां परिपालय ।२।

यावच्चन्द्रावमी सूर्यस्तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः ।
तावत्त्वयाऽत्र देवेश ! स्थेयं भक्तानुकम्पया ।३।

(विष्णुश्चेत्) अतसीपुष्पसङ्काशं शङ्खचक्रगदाधरम् ।
संस्थापयामि देवेश देवो भूत्वा जनार्दनम् ।४।

(रुद्रस्य) त्र्यक्षं च दशबाहुं च चन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ।
गणेशं वृषभस्थं च स्थापयामि त्रिलोचनम् ।५।

(सूर्यस्य) सहस्रकिरणं शान्तमप्सरोगणसेवितम् ।
पद्महस्तं महाबाहुं स्थापयामि दिवाकरम् ।५।

(इत्यादि प्रार्थयेत्) ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु । विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ । शिवप्रतिष्ठितो वरदो भव । (विष्णुश्चेत्)

विष्णो प्रतिष्ठितो वरदो भव । एवं सर्वत्र । ततः षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

आवाहनम्:- ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।

आसनम्:- ॐ पुरुष ऽएवेदः ँ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।

पाद्यम्:- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।

अर्घ्यम्:- ॐ त्रिपादूर्ध्वं ऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाऽभवत्पुनः ।
ततो विष्वं व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि ।

आचमनम्:- ॐ ततो विराडजायत बिराजो ऽअधि पूरुषः ।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ।

स्नानम्:- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।

दुग्धस्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।

शुद्धोदकस्नानम्:- ॐदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याँपूष्णो-
हस्ताभ्याम् । एवं सर्वत्र दधिघृतमधुशर्करा स्नानान्ते
ऽपि शुद्धस्नानं प्रयोज्यम् ।

ॐ दधिस्नानम्:-दधि क्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूँषि तारिषत् ।

घृतस्नानम्- ॐ घृतमिम्मिक्षे घृतमस्य योनिघृंते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।

मधुस्नानम्:- ॐ मधुवाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

शर्करास्नानम्:- ॐ अपाँ रसमुद्वयसँ सूर्य्ये सन्तँ समाहितम्। अपाँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा-जुष्टतमम्।

शुद्धोदकस्नानम्:- ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। शुद्धोदकस्नानं स०।

वस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः। वासो ऽअग्ने विश्वरूपँ संव्ययस्व विभावसोः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्:- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। यज्ञोपवीतं स०।

उपवस्त्रं:- ॐ युवासुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।

तिलकम्ः- ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान्यक्ष्माादमुच्यत । गन्धं सम० ।

अक्षताः-ॐअक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत । अस्तोषतस्वभानवो
विप्रानविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी । अक्षतान् सम० ।

पुष्पाणिः-ॐओषधीः प्रतिमोदध्व पुष्पवतीः प्रसूवरी । अश्वा ऽइव
सजित्वरीर्वीरुधः । पारयिष्णवः । पुष्पमालां स० ।

परिमलद्रव्य- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं
परिबाधमानः । हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पु
मान्पुमाꣳसंम्परिपातु विश्वतः । नानापरिमलद्रव्याणि स०

धूपम्ः- ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं
वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमं
जुष्टतमं देवहूतमम् । धूपम् स० ।

दीपः- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः
सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो
ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
दीपं सम० ।

नैवेद्यम्ः- ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ ऽअकल्पयन् ।

हस्तौप्रक्षाल्यः- ॐ प्राणाय स्वाहा । अपानाय स्वाहा । समानाय
स्वाहा । उदानाय स्वाहा । व्यानाय स्वाहा नैवेद्यं
समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मध्ये २ पानीयं
समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

करोद्वर्त्तनं:- ॐ अꣳशुना ते ऽअꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः । चन्दनेन समर्पयामि

पूगीफलताम्बूलम्:- ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः मुखवासार्थे ।

दक्षिणा:- ॐ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम । दक्षिणां समर्पयामि ।

कर्पूरार्त्तिक्यं:- ॐ इदꣳ हविः प्रजननँ मे ऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य-भयसनि । अग्निः प्रजां बहुलाँ मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ।

पुष्पाञ्जलि - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः ।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् । सार्वभौमः सार्वायुषांतादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो बिश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमो जनयन्देव एकः। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाः- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाᳫं सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि प्रदक्षिणां समर्पयामि

विष्णोःप्रार्थना:- ॐ ज्ञानतो ज्ञानतो वापि यावद्विधिरनुष्ठितः। स सर्बस्त्वत्प्रसादेन समग्रो भवतान्मम। इति

शिब प्रार्थना:- ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भगवन् यत्कृतं मया। तत्सर्वं पूर्णमेवाऽस्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर !। इति प्रार्थ्य

ततः कर्तुनामयुतं देवनाम कुर्यात् सर्वदा व्यवहारार्थं तद्यथा। शिवस्य-अमुकेश्वरः। विष्णोः--अमुकनारायणः। सूर्यस्य--अमुकादित्यः। गणपतेः-अमुकविनायकः। देव्याः–अमुकेश्वरी। इत्यादि नाम विदध्यात्।

अथ प्रतिष्ठाहोमः

ॐ शिवाय स्थिरो भव स्वाहा। ॐ शिवाय प्रमेयो भव स्वाहा। ॐ शिवायानादिबोधो भव स्वाहा। ॐ शिवाय नित्यो भव स्वाहा। ॐ शिवाय सर्वगो भव स्वाहा। ॐ शिवायाविनाशो भव स्वाहा। ॐ शिवाय क्लृप्तो भव स्वाहा।

अथ सर्वशान्त्यर्थं अघोरमन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतं हुत्वा–

। तत्र मन्त्र। ॐ अघोभ्योऽथ घोरेभ्यो० स्वाहा।१०८।

एवं सर्वदेवमूलमन्त्रे हुत्वा शिवस्थाने नारायणायेति सर्वेषु ऊहा कार्या ।

(अथ ब्रह्मादिमण्डलदेवतानां आज्येन होमः)

ॐ ब्रह्म यज्ञानं० । ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे० । ॐ वयꣳ । सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय० । ॐ तमीशानं ईशानाय स्वाहा इदमीशानाय० । ॐ त्रातारमिन्द्र० । इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय० । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने० । अग्नये स्वाहा । इदमग्नये० । यमाय त्वा० ॐ यमाय स्वाहा इद यमाय० । ॐ असुन्वन्तम० निर्ऋतये स्वाहा । इदं निर्ऋतये० । ॐ तत्त्वा यामि० । वरुणाय स्वाहा । इदं वरुणाय० । ॐ आनोनियुद्भिः । वायवे स्वाहा । इदं वायवे० । ॐ वसोः पवित्रमसि । अष्टवसुभ्यः स्वाहा । इदं अष्टवसुभ्यो० । ॐ नमस्ते रुद्र० । रुद्राय० स्वाहा इदं रुद्राय० ॐ बण्महाँ ऽअसि० । द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा । इदं द्वादशादित्येभ्यो० । ॐ यावाङ्कशा० । ॐ अश्विभ्यां स्वाहा । इदमश्विभ्यां० । ॐ विश्वेदेवासऽआ० । सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । इदं सपैतृकविश्वेभ्यो० । ॐ अभित्यन्देवꣳ स० । सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा । इदं सप्तयक्षेभ्यो० । ॐ नमोऽस्तु सर्पे० । अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा । इदं अष्टकुलनागेभ्यो० । ॐ ऋताषाड्ऋत० । गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा । इदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो० । ॐ यदक्रन्द : स्कन्दाय स्वाहा । इदं स्कन्दाय० । ॐ आशुः शिशान० । वृषभाय स्वाहा । इदं वृषभाय० । ॐ कार्षिरसि० । शूलाय स्वाहा ।

इदं शूलाय० । ॐ कार्षिरसि० । महाकालाय स्वाहा । इदँ महाकालाय० । ॐ नमो गणेभ्यो० । दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा। इदं दक्षादिसप्तगणेभ्यो० । ॐ अम्बे अम्बिके० । दुर्गायै० स्वाहा। इदं दुर्गायै० । ॐ इदं विष्णु० । बिष्णवे स्वाहा । इदँ विष्णवे० ॐ पितृभ्यः । स्वधायै स्वाहा । इदं स्वधायै० । ॐ परमृत्यो० । मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा । इदँ मृत्युरोगेभ्यो० । ॐ गणानान्त्वा० । गणपतये स्वाहा । इदँ गणपतये० । ॐ आपोहिष्ठा० । अद्भ्यः स्वाहा । इदमद्भ्यो० । ॐ मरुतो यस्य । मरुद्भ्यः स्वाहा। इदँ मरुद्भ्यो० । ॐ स्योनापृथिवी० पृथिव्यै स्वाहा । इदँ पृथिव्यै ॐ इमं मे वरुण० । गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा इदं गङ्गादिनदीभ्यो० । ॐ पञ्चनद्यः वा समुद्रोऽसि० । सप्तसागरेभ्य स्वाहा । इदं सप्तसागरेभ्यो० । ॐ प्र पर्वतस्य० वा अश्मा च मे० । मेरवे स्वाहा । इदं मेरवे० । ॐ गणानां त्वा० । गदायै स्वाहा। इदं गदायै० । ॐ त्रिँ शद्धाम० । त्रिशूलाय स्वाहा । इदं त्रिशूलाय० । ॐ महांइन्द्रो वज्र । बज्राय स्वाहा । इदं बज्राय० । ॐ बसु च मे० । शक्तये स्वाहा इदं शक्तये० । ॐ इड एह्य । दण्डाय स्वाहा । इदं दण्डाय० । ॐ खड्गो वैश्व० । खड्गाय स्वाहा । इदं खड्गाय० । ॐ उदुत्तम० । पाशाय स्वाहा । इदं पाशाय० । ॐ अँशुश्च मे० । अङ्कुशाय स्वाहा । इदमङ्कुशाय० । ॐ आयङ्गौ । गौतमाय स्वाहा। इदं गौतमाय० । ॐ अयं दक्षिणा० भरद्वाजाय स्वाहा इदं भरद्वाजाय० । ॐ इदमुत्तरात्० । विश्वामित्राय स्वाहा ।

इदं विश्वामित्राय० । ॐ त्र्यायुषं जम० । कश्यपाय स्वाहा । इदं कश्यपाय० । ॐ अयं पश्चा० । यमदग्नये स्वाहा । इदं यमदग्नये० । ॐ अयं पुरो० । वशिष्ठाय स्वाहा । इदं वशिष्ठाय० । ॐ अत्र पितरो० । अत्रये स्वाहा । इदमत्रये० । ॐ तं पत्नी० । अरुन्धत्यै स्वाहा । इदं अरुन्धत्यै० । ॐ आदित्यैरास्ना० । ऐन्द्र्यै स्वाहा । इदमैन्द्र्यै० । ॐ अम्बेऽम्बिके० । कौमार्यै स्वाहा । इदं कौमार्य्यै० । ॐ पावकानः । ब्राह्म्यै स्वाहा इदं ब्राह्म्यै० ।

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्य दिशां यजत्रऽदित्यै भसञ्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳫं समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ।

वाराह्यै स्वाहा । इदं वाराह्यै० । ॐ अम्बेऽअम्बिके० । चामुण्डायै स्वाहा । चामुण्डायै० । ॐ श्रीश्चते लक्ष्मी० । वैष्णव्यै स्वाहा । इदं वैष्णव्यै० । ॐ या ते रुद्रशिवा० । माहेश्वर्यै स्वाहा । इदं माहेश्वर्यै० । समख्येदेव्या० । वैनायक्यै स्वाहा । इदं वैनायक्यै० । (ततः स्विष्टकृदादिहोमः) तद्यथा ।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं विधेम ।

ॐ स्वाहा स्वधा ऽयुताग्नये वैश्वानराय नमः, इति मन्त्रेणाऽग्निं सम्पूज्य (ततो हुतशेषद्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः

स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्) ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम (इत्यारभ्य प्राजापत्यन्तं दशसु आहुतिषु हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे त्यागः) ततो भूरादिनवाहूतयः । ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्ने० । इदमग्नये अयसे० । ॐ ये ते शतं० । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण० । इदं वरुणायादित्यायादितये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।

अथ बलिदानम्:—(ततो अग्न्यायतनस्य समन्ताद्दिक्षु विदिक्षु च दशदिक्पालानां स-दीपदधिमाषभक्तबलयो देयाः । ॐ त्रातारमिन्द्रेत्यादि० ।

ॐ इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि । भो इन्द्र ! त्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् नमम । एवं सर्वत्र (एकतन्त्रपक्षे) ।

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ।

ततो गन्धादिभिः इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः इति सम्पूज्य। हस्ते जलाक्षतान् गृहीत्वा।

दशदिक्पाल बलिः— ॐ इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपदधि-माषभक्तबलीन् समर्पयामि। प्रार्थना। भो भो इन्द्रादिदश-दिक्पालाः! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्तारः शुभकर्तारः शान्ति-कर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। हस्ते जलं गृहीत्वा। अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।
(एव सर्वेभ्यो ग्रहेभ्य एकतन्त्रेणैकमेव बलिं दद्यात्, तद्यथा)

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्जं समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।

सूर्यादिवास्तोष्पत्यन्तदेवताभ्यो नमः, इति सम्पूज्य हस्ते जलाक्षतान् गृहीत्वा।

सपरिवार ग्रहबलीदानम्: ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

प्रार्थनाः— भो भो सूर्यादिग्रहाः! साधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः पञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सपरिवारस्य गृहे आयु कर्तार शुभकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टि-

कर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । हस्ते जलं गृहीत्वा। अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

अथ क्षेत्रपालबलिदानम्

एकस्मिन् वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहार-चतुर्गुणं द्विगुणं वा माषदध्योदनं वा जलपात्रं च चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्रा-कुंकुमादिपताकायुतं कृत्वा ।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः । एमेनममृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ।

क्षेत्रपालाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमो वै क्षेत्रपास्त्वं भूतप्रेतगणैः सह । पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ।१। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामाँश्च देहि मे। आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ।२। (ततो बलिदानम्) हस्ते जलाक्षतान् गृहीत्वा । क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-पिशाचिनीगणसहिताय एतं स-दीप-दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । प्रार्थना । भो क्षेत्रपाल ! क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । हस्ते जलं गृहीत्वा । अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् । ततो दुर्ब्राह्मणेन शूद्रेण वा (नापितद्वारा) बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत् । ततो यजमानस्तस्य पृष्ठतो द्वारपर्यन्तं गत्वा हिंकारायेति मन्त्रेण जलं

क्षिपेत् । तत्र मन्त्रः ।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दा स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्ठाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धा स्वाहा विजृम्भमाणाय सꣳहामाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ।

(ततो यजमानः पाणिपादँ प्रक्षाल्याचम्य) ततः नारिकेलं फलं रक्तवस्त्रवेष्टितं द्वादशषट्चतु.स्रुवेण गृहीतमाज्यं स्रुच्यां कृत्वा स्रुच्युपरि संस्थाप्य ॐ पूर्णाहुत्यै नमः, इति सम्पूज्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ।

पूर्णाहुति मन्त्र

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमां २ । ऽउदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्यनाभिः । वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामानमोभिः । उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुश्शृङ्गोऽवमीद्गौर ऽएतत् ।२। चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्त्यां२ । आविवेश ।३। त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानँ गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् । इन्द्र ऽएकः सूर्य ऽएकं जजान वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः ।४। एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे । घृतस्य धारा ऽअभिचा-

कशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य ऽआसाम् ।५। सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ।६। सिन्धोरिव प्राध्वने शूघ्नासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ७। अभिप्रवन्त समनेव योषाः । कल्याण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम् । घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ८। कन्या ऽइव वहतुमेतवा उ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि । यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते ।९। अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त । इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ।१० धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तःसमुद्रे हृद्यन्तरायुषि । अपामनी के समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमं तँ त ऽऊर्मिम् ।११। पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः घृतेन त्वँ तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ।१२। सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा ।१३। मूर्द्धानँ दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् । कवि सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।१४। पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जँ शतक्रतो स्वाहा ।१५।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते

ग्नये अद्भ्यश्च न मम । इति प्रोक्षणीपात्रे त्यागः । इति पूर्णाहुतिः ।

वसोर्द्धारा मन्त्राः । ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिध सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्रीः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा ।१। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च । शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ँहाः ।२। ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च । मितश्च सम्मितश्च सभराः ।३ ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च । धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः ।४। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ।५ ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुण सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ।६। स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च । क्रीडी च शाकी चोजेषि ।७। इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ८। इम ँ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रिय ँ सदनमाविशस्व ।९। घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ।१०। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण

सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ।११।

इदमग्नये वैश्वानराय न मम । इति वसोर्द्धारा समाप्ता । (ततोऽग्नि प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमदेशे प्राङ्मुख उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय त्र्यायुषाणि कुर्यात्) तद्यथा । ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे । कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे । तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । (संस्रवप्राशनम्) आचमनम् । पवित्राभ्यां प्रणीतोदकेन मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः (ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्) कृतस्य अमुकदेव (पञ्चायतन) प्रतिष्ठाहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु, इति मन्त्रेण पूर्णपात्रं ब्रह्मा गृह्णीयात् । ततोऽग्नेः पश्चादैशान्यां वा प्रणीताविमोकः । ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् । उपयमनकुशैर्मार्जयेत् । उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । ततः श्रेयःसम्पाद्यदानम् । आचार्यः जलाक्षतं गृहीत्वा सङ्कल्प कुर्यात् अद्येत्यादि कृतस्य प्रतिष्ठाख्यस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये । पुन जलाक्षतपूगीफलं गृहीत्वा भवन्नियोगेन मया अस्मिन् प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं एभिर्ब्राह्मणैः सह यदुत्पन्नं श्रेयस्तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव । भवामीति जयमानः । तत आचार्यादीन् गन्धवस्त्रालङ्कारादिभिर्यथाविभवं पूजयेत् । (ततो दक्षिणादानम् । तत्राऽयं क्रमः)

आचार्याय गाम्। ब्रह्मणे वृषभम्। सदस्यायाऽश्वम्। गाणपत्याय रथम्। उपद्रष्ट्रे गन्त्रीम्। ऋत्विग्भ्यः सुवर्णं दद्यात्। तत्र सङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य० गोत्रः शर्माऽहं कृतस्य शिवादि (वा विष्ण्वादि) प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति कृतस्य० इदं वृषनिष्क्रयभूतं द्रव्यं० ब्रह्मणे तुभ्य० कृतस्य० इदमश्वनिष्क्रय० सदस्याय०। कृतस्य० इदं रथनिष्क्रय गाणपत्याय तुभ्य०। कृतस्य० इदं गन्त्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यं० उपद्रष्ट्रे। कृतस्य० इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं ऋत्विग्भ्यः विभज्य दातुमहमुत्सृजे। (ततः प्रधानपीठशय्यादिदानम्) यथालब्धोपचारैः देवान् सम्पूज्य कर्पूरनीराजनं पुष्पाञ्जल्यन्तमुत्तरपूजां कृत्वा। ततो दानम् देशकालौ सङ्कीर्त्य० गोत्रः शर्माऽहम् इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करां शय्यां च अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। कृतैतत् प्रधानपीठादिदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं दक्षिणाद्रव्य अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। कृतस्य० प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाऽहं भोजयिष्ये। भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये।

अथऽभिषेकः

ततो रुद्रकलशं देवतान्तरकलशोदकं च एकस्मिन् पात्रे कृत्वा दूर्वापञ्चपल्लवैरुदङ्मुखमाचार्यादि तिष्ठन् प्राङ्मुखमुप-

विष्टं सकुटुम्बं यजमानमभिषिञ्चेयुः । तत्र मन्त्राः ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चास्यसौ । देवस्य त्वा० । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि देवस्य त्वा० । आश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ।१।

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।२।

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिता सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ३

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपु शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ४

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागतः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजाः ।५।

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ।६।

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसा गणाः ।७।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ।८।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ।९

अमृताभिषेकोऽस्तु । ॐ कृतस्य अमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणः तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः समाश्रितबन्धुवर्गेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्सह भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे । (अथावाहितदेवता अग्निं च बिसर्जयेत्) तत्र मन्त्रः ।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवासचा ।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामस- मृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च १।
आवाहितदेवताः स्वस्थाने गच्छत । इति देवविसर्जनम् ।

ॐ यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा । एष ते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर ! ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ! । इत्यग्निविसर्जनम् ।
कृतस्य० साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं सभूमिमण्डपं (वा निष्क्रयभूतं द्रव्यं)

आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॐ स्वस्ति। हस्ते कुशजलाक्षतान् गृहीत्वा। मया यत्कृतं यथाकालं यथादेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति प्रतिष्ठाकर्म तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्। सकुशजलाक्षतान् भूमौ क्षिपेत्। प्रार्थना।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मारणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥१॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥२॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

अथ तिलकाशीर्वादः

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥१॥

एवं चलप्रतिष्ठाऽपि दृढ बिहाय सर्वं पूर्ववत् कृत्वा। इति प्रतिष्ठाकर्म समाप्तम्।

अथ संक्षेपेण चलप्रतिष्ठाप्रयोगः

तत्रादौ शुचौ देशे स्थण्डिलादि कृत्वा प्रतिष्ठादिने नित्यकर्म समाप्य शिल्पिस्थानाद्देवं तत्रानीय आसने निधाय तत्राऽचान्तः प्राणानायम्य। आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठित्वा संकल्पं

कुर्यात् । देशकालौ सङ्कीर्त्य० गोत्रः शर्माऽहं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्षय्यसुखकामः अस्यां मूर्तौ लिङ्गे वा देशकालसान्निध्यार्थं अमुकदेवमूर्त्तिचलप्रतिष्ठां करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयो पूजनं च करिष्ये । ततो गणेशपूजनादारभ्य दिग्रक्षणप्रोक्षणान्तं कृत्वा ततः सर्वतोलिङ्गतोभद्रं वा देवतानुसारेण कृत्वा तदुपरि प्रधानप्रतिमां सम्पूज्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् सम्पूज्य कुशकण्डिकां विधाय आज्यभागं हुत्वा तदुपरि प्रधानदेवमन्त्रेण अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा आहुतिं कुर्यात् ।

प्रार्थना - स्वागतं देवदेवेश ! विश्वरूप ! नमोऽस्तु ते ।
शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिकर्म सहस्वताम् । ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० इति मन्त्रेण देवमुत्थाप्य स्नानपीठे निधाय पञ्चगव्यैः पञ्चामृतैश्च पृथक् पृथक् तत्तन्मन्त्रैः संस्नाप्य । ततो घृताभ्यङ्गमुद्वर्तनमुष्णोदकेन प्रक्षालनं कृत्वा । पुन चतुर्भिः कलशैः देवस्य त्र्येति अभिषेकमन्त्रैः देवमभिषिच्य पुनः औदुम्बरपीठे निधाय अष्टदिक्षु सजलकुम्भान् पूर्वादिक्रमेण संस्थाप्य तेषु कलशेषु गन्ध-पुष्प-दूर्वाः क्षिप्त्वा । प्रथमकुम्भे सप्त मृदः । द्वितीयकुम्भे पञ्चपल्लवाम् । तृतीयकुम्भे सप्तधान्यकुशांश्च । चतुर्थकुम्भे पञ्चरत्नशान्त्युदकं च । पञ्चमकुम्भे फलपुष्पाणि । षष्ठकुम्भे यवान् । सप्तमकुम्भे सरूपासोदकम् । अष्टमकुम्भे सर्वौषधीः निक्षिप्य स्नापयेत् । ॐ

स्योना पृथिवीति मृत्तिकाप्रथमकलशेन । ॐ अश्वत्थे वो० इति पल्लवद्वितीयकलशेन । ॐ ओषधयः समवदन्तेति । ॐ पवित्रे स्थो० इति धान्यकुशतृतीयकलशेन । ॐ परिवाजपति द्यौः शान्तिरिति चतुर्थकलशेन । ॐ याः फलिनीति पञ्चमकलशेन । ॐ यवोऽसीति षष्ठकलशेन । ॐ द्यौः शान्तिः, इति सप्तमकलशेन । ॐ या ऽओषधीरिति अष्टमकलशेन संस्नाप्य वाससी परिधायोपवीतं दत्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य अग्निर्ज्योतिरिति अष्टौ दीपान् प्रदर्शयेत । रजतपुटके मधु घृतं कृत्वा हिरण्यशलाकया

ॐ चित्र देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

इत्यर्धर्चेन नेत्रद्वयं कल्पयित्वा । ततो भक्ष्य भोज्यादर्शादि दर्शयेत् (तदा अग्रे कोऽपि न तिष्ठेत्) ततो ब्राह्मणान् पुण्याहवाचनं कृत्वा तत आचार्याय गां दत्वा कृतस्य नेत्रोन्मीलनसाङ्गतासिद्ध्यर्थं सवत्सां गां (वा तन्निष्क्रयद्रव्यं) आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे

प्रार्थनाः- गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठत ।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।१।

कृतैतत्सवत्सगोदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ततो देवं सम्पूज्य ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति देवमुत्थाप्य मण्डलादुत्तरतः स्वस्तिकोपरि शय्यायां देवं उपवेश्य । ॐ सहस्रशीर्षा० पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा न्यासं कुर्यात् तद्यथा । पुरुषात्मने नमः । प्राणात्मने नमः । प्रकृतितत्त्वाय नमः । बुद्धितत्त्वाय नमः । अहंकारतत्त्वाय नमः । मनस्तत्त्वाय नमः ।

इति सर्वाङ्गेषु । प्रकृतितत्त्वाय नमो हृदि रसतत्त्वाय नमो बस्तौ । गन्धतत्त्वाय नमः पादयोः । श्रोत्रतत्त्वाय नमः कर्णयोः । त्वक्तत्त्वाय नमः सर्वशरीरे । चक्षुंस्तत्त्वाय नमः चक्षुषोः । जिह्वातत्त्वाय नमः जिह्वायाम् । घ्राणतत्त्वाय नमः घ्राणे । वाक्तत्त्वाय नमः वाचि । पाणितत्त्वाय नमः पाण्योः । पादतत्त्वाय नमः पादयोः । पायुतत्त्वाय नमः पायौ । उपस्थतत्त्वाय नमः उपस्थे । पृथिवीतत्त्वाय नमः पादयोः । अपतत्त्वाय नम बस्तौ । तेजस्तत्त्वाय नमः हृदि । वायुतत्त्वाय नमः घ्राणे आकाशतत्त्वाय नमः शिरसि । तेजस्तत्त्वाय नम, तमस्तत्त्वाय नमः, सत्त्वतत्त्वाय नम । देहतत्त्वाय नमः इति देहे । इति तत्त्वन्यासं कृत्वा पुरुषसूक्तन्यासं कुर्यात् । ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः । पुरुष ऽएवेदꣳ । इति करयोः एतावानस्य० । त्रिपादूर्ध्वेति पादयोः । ततो विराडजायत० तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः इति जान्वोः । तस्माद्यज्ञा सर्वहुतऽऋचः० । तस्मादश्वेति कटयोः । तं यज्ञमिति नाभौ । यत्पुरुषं व्यदधुः इति हृदि । ब्राह्मणोऽस्येति कण्ठे । चन्द्रमा मनसो० । नाभ्याऽआसीदन्त० इति बाह्वोः । यत्पुरुषेणेति मुखे । सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिरित्यक्षणोः । यज्ञेन यज्ञमयजन्तेति शिरसि । इति पुरुषसूक्तन्यासं कृत्वा । ततः सुखशायी भव इति शय्यायां देवं । बस्त्रेणाच्छाद्य स्वापयित्वा ततो शिरःप्रदेश-निद्रा-कलशं प्रष्ठाप्य सम्पूज्याधिवासयेत् । ततः प्रातररुणोदये देव-मुत्थाप्य मूलमन्त्रेण प्रधानदेवमन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतं हुत्वा । तद्यथा ।

अग्नये स्वाहा । सोमाय स्वाहा । धन्वन्तरये स्वाहा । कुह्वै स्वाहा । अनुमत्यै स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । परमेष्ठिने स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा । अग्नये सोमाय स्वाहा । अग्नये अन्नाय स्वाहा । अग्नयेऽन्नपतये स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । सर्वेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इति होमं कृत्वा तीर्थजलमादाय देवमन्त्रेण दशवारमभिमन्त्र्य देवशिरसि अभिषिच्य । ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति देवमुत्थाप्य । ॐ विश्वतश्चक्षुरिति प्रासादे उपस्थाय देवस्य पुरस्तात् जपेत् । तद्यथा । ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः । दिक्पालेभ्यो नमः वसुभ्यो नमः । रुद्रेभ्यो नमः । आदित्येभ्यो नमः । अश्विभ्यां नमः । मरुद्भ्यो नमः । कुबेराय नमः । गङ्गादिमहानदीभ्यो नमः अग्नीषोमाभ्यां नमः । द्यावापृथिवीभ्यां नमः । इन्द्राऽग्नीभ्यां नमः । धन्वन्तरये नमः । सर्वेशाय नमः । विश्वेभ्यो देवेभ्यो नम । ब्रह्मणे नमः । इति जपित्वा पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा प्रतिष्ठितपरमेश्वराय नमः, इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा । ध्रुवसूक्तेन प्रधानदेवमन्त्रेण पुरुषसूक्ते गायत्र्या व्याहृतिभिर्देवं आर्चायां प्रतिष्ठाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

ॐ अथ प्राणप्रतिष्ठा ॐ

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं क्रों शक्तिः प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः । ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमः मुखे ।

प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि । आं बीजाय नमः गुह्ये । क्रौं शक्तये नमः पादयोः । ॐ कं खँ गं घं ङ अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः । ॐ च छं ज झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा । ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् । ॐ तँ थं दं धं नं ए वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुँ । ॐ पं फं बं भ म ॐ वचनादानगतिविसर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ य रं लं वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अँ मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् । एवमात्मनि देवे च कृत्वा । देवँ स्पृष्ट्वा जपेत् । ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ रं लं वं शं षँ हं स देवस्य प्राण इह प्राणाः । पुन ॐ आं ह्रीं० देवस्य जीव इह स्थितः । पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं० देवस्य सर्वेन्द्रियाणि । पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं० देवस्य वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । प्रतिमायाः लिङ्गस्य वा हृद्यङ्गुष्ठं दत्वा जपेत् ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।१।

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवँ विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवाश्चेमे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः ।२।

ततः कर्णे देवगायत्रीं देवमन्त्रं च जप्त्वा ।
पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा पादनाभिशिरः स्पृष्ट्वा प्रार्थयेत् ।

प्रार्थनाः- स्वागतं देवदेवेश ! मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ।१।

धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय नः ।
सान्निध्यं तु महादेवस्यार्चायां परिकल्पय ।२।

यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः ।
तावत्त्वयाऽत्र देवेश ! स्थेयं भक्तानुकम्पया ।३।

भगवन् देवदेवेश ! त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ।
येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराऽचरम् ।४।

तेन रूपेण देवेश अर्चायां सन्निधो भव ।, इति नमेत् १।

ततोऽग्निं सम्पूज्यः- पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य। स्विष्टकृदादिपूर्णाहुतिपर्यन्तं कर्म समाप्याचार्याय द्वादश तिस्रः एकाँ वा गां दत्वा ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्वा शतं विंशतिं वा विप्रान् भोजयेत् । इति सँक्षेपेण चलप्रतिष्ठा-प्रयोग समाप्तः ।

अथ जीर्णोद्धारविधिः

ततो यजमानः शुभदिने प्रासादस्योत्तरैशान्यां वा पश्चिम-द्वारैकतोरणं मण्डपं विधाय तन्मध्ये चतुरस्रां वेदीं तन्नैऋत्ये वास्तुवेदीं उत्तरे हवनार्थं स्थण्डिलं च कृत्वा । आचम्य प्राणा-नायम्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठेत् । देशकालौ सङ्कीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं ईश्वरप्री-तिकामो जीर्णादिदोषदुष्टलिङ्गस्य प्रतिमाया वा जीर्णोद्धारं करिष्ये तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्य-मन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये । तत्रादौ

निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयो पूजममहं करिष्ये । ततो गणेशपूजनादारभ्य वरणान्तं कृत्वा मण्डपे दिग्रक्षणं प्रोक्षणं वास्तुपूजनं मण्डपपूजनं सर्वतोभद्रादिदेवतापूजनं च कृत्वा पीठादौ प्रणवेनासनपूजनं कृत्वा तद्यथा । ॐ व्यापकेश्वराय एह्येहि नमः ॐ व्यापकेश्वराय हृदयाय नमः । ॐ व्यापकेश्वराय शिरसे स्वाहा । ॐ व्यापकेश्वराय शिखायै वषट् । ॐ व्यापकेश्वराय कवचाय हुं । ॐ व्यापकेश्वराय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ व्यापकेश्वराय अस्त्राय फट् । इति मन्त्रैः शिवं पूजयेत् । अभ्यदेवतो द्वारे मूलमन्त्रेणाऽर्चयेत् । ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः इति मन्त्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा । ततोऽग्निं संस्थाप्याज्यभागान्तं हुत्वा लिङ्गचालनार्थं लिङ्गमन्त्रेण अघोरेण च तिलाहुतिसहस्रं हुत्वा मण्डलदेवताहोमं कृत्वा इन्द्रादिभ्यो बलिं दत्वा जीर्णदेवं प्रणवेन सम्पूज्य

प्रार्थना.- जीर्णभग्नमिदं देव ! सर्वदोषावहं नृणाम् ।

अस्योद्धारे कृते शान्तिः शास्त्रेऽस्मिन् कथिता त्वया ।१।

जीर्णोद्धारविधानं च नृपराष्ट्रविवर्द्धनम् ।

तदत्राधिष्ठितं देवं प्रोद्धरामि तवाज्ञया ।२

इति देवस्य जीर्णदोषं श्रावयित्वा । पुनः क्षीराज्यमधुदूर्वासमिद्भिर्देवमन्त्रेणाष्टोत्तरशतं जप्त्वा तिलैः पायसेन च हुत्वा लिङ्गं ।

प्रार्थना:- लिङ्गरूपं समागत्य येनेदं समधिष्ठितम् ।

या यास्त्वं सम्मितं स्थानं सत्याज्यैव शिवाज्ञया ।१।

अत्र स्थाने च या विद्या सर्वविद्येश्वरैर्युता ।

शिवेन सह सन्तिष्ठेति मन्त्रितजलेनाऽभिषिच्य विसर्जयेत्। शिल्पियुतः शिवं साङ्गं विसृज्य। सौवर्णखनित्रेण खात्वा लिङ्ग-मादाय रथमारोप्य वामदेवाय नमः इति नद्यादौ क्षिपेत्। प्रतिमां तु प्रणवेन क्षिपेत्। दारुजं तु मधुनाऽभ्यज्य अघोरेण दहेत्। पुनः पूर्ववत् मूर्तिं स्थापयेत्। प्रासादे जीर्णे तु। प्रासादं मन्त्रवत्खड्गेन छूरिकया वा संयोज्य नूतनप्रासादसिद्धिपर्यन्तं खड्गादिकमर्चयित्वा प्रासादे सिद्धे खड्गादिमन्त्रान् यथास्थान प्रतिष्ठाकाले न्यस्य यजमानमभिर्षिञ्च्य। ततो लिङ्ग प्रतिमां वा तत्रैव विधिना संस्थाप्य।

ध्रुवसूक्तपाठः:- ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वताऽइमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामय।१।
ध्रुवन्ते राजा वरुणा ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवन्त ऽइन्द्रश्चाग्निराष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।२।
ध्रुवं ध्रुवेण हविष्याभिसोमं मृशामसि।
अथोतऽइन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्।३

इति ध्रुवसूक्तं पठित्वा स्थिरीकृत्य यथोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

प्रार्थनाः- भगवन् भूतभव्येश! लोकनाथ! जगत्पते!।
जीर्णलिङ्गसमुद्धारः कृतस्ते चाज्ञया मया।१।
अग्निना दारुजं दग्धं क्षिप्तं शैलादिकं जले।
प्रायश्चित्ताय देवेश! अघोरास्त्रेण तर्पितम्।२।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ! ।३

कर्तुराज्ञः प्रजानां च शान्तिर्भवतु सर्वदा ।
अस्माकं शिल्पिनां चैव सुप्रीतो भव सर्वदा ।४।

इति नत्वा । पूजास्विष्टनवाहुतीबलिपूर्णाहुत्यन्तकर्म समाप्याचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणो पूर्वोक्तां दत्वा देवान् विसृज्य ब्राह्मणान् भोजयेत् ।

एवं संक्षेपतः प्रोक्ता जीर्णोद्धारविधिस्तथ ।
सर्वेषामेव देवानामेष साधारणः स्मृतः ।१।

यो जीर्णविधिना देवं संस्कुर्यान्मानवो भुवि ।
फलं दशगुणं तस्य मूलान्नास्त्यत्र संशयः २।

वापीकूपतडागानां सुरधाम्नां सदानघ ! ।
प्रतिमानां समानां च संस्कर्ता यो नरो भुवि ।३।

पुण्यं शतगुणं तस्य भवेन्मूलान्न संशयः ।
संशयो त्र न कर्तव्यो जीर्णसंस्कारकर्मणि ।४

मूलाद्दशगुणं प्रोक्तं पुण्यं कूपे प्रतिष्ठिते ।
प्रतिमायां शतगुणं कूपादेः परिकीर्त्तितम् ।५।

प्रतिमादेर्दशगुणं जीर्णसंस्करणाद्भवेत् । स्फुटितशीर्णश्वपचसेवितानां लिङ्गानां तादृशानां बाहुपादशिरःकर्णानासास्यहीनां विध्युक्तप्रकारेण चालनं जलादौ प्रतिपादनं च कृत्वा नूतनप्रकारेण तस्मिन्नेव स्थाने पूर्वसजातीयद्रव्यनिर्मितं तन्मानं तदाकारं

लिङ्गं तादृशी प्रतिमां च स्थापयेत् । निषिद्धदूषितनिषिद्धजलम-द्यस्पृष्टविप्रक्षतजदूषितपतिताद्यर्चित-श्लेष्मविण्मूत्रादिदूषितानां स्वस्थानस्थितानामेव पुनः संस्कारो नोद्धारो नापि प्रतिपत्तिः। ताम्रादिधातुमूर्तीनां चोरचांडालादिस्पर्शे धातुशुद्धिं कृत्वा पुनः प्रतिष्ठा अर्चाभङ्गादौ तद्दिने उपवासः । इति जीर्णोद्धारविधि ।

ॐ अथ संक्षेपतः बौधायनोक्तराधाकृष्णप्रतिष्ठा ॐ

आचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठेत् । देशकालौ सङ्कीर्त्य० मम सर्वपापक्षयार्थं दीर्घायुर्विपुलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ-शत्रुपराजय-सर्वपापनिरसन-सकलसुखधर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिद्वारा श्रीराधाकृष्णप्रीत्यर्थं समवग्रहमखसप्रासादराधाकृष्णमूर्त्योः स्थिरां वा चलप्रतिष्ठाँ करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजप नान्दीश्राद्धं आचार्यादिवरणानि च करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये । गणेशपूजनादारम्य प्रधान-पूजनान्तं ग्रहशान्त्यनुसारेण कुर्यात् ।

अथ जलाधिवासः

पञ्चगव्येन हिरण्ययवदूर्वाश्वत्थपलाशपर्णमिश्रोदकेन आपो-हिष्ठेत्यादिमन्त्रैः संस्नाप्य देवमभिषिच्य । ॐ इदं विष्णुर्विचक्र-मेति यवदूर्वाक्षतपुष्पफलानि देवपादयोर्निक्षिप्य रक्षोहणमिति

प्रतिसरं वद्ध्वा ततः सम्पूज्य ततो वाससा पुष्पादिभिः आच्छाद्य जलेऽधिवासयेत् । ॐ उदुत्तमेति मन्त्रेण ततो वास्तुपूजनम् । ततः सर्वतोभद्रे चचतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण द्वौ द्वौ कलशौ स्थापयेत् । तन्मध्ये पञ्चपल्लवकषायांश्च निक्षिप्य पञ्चपल्लवदूर्वागन्धपुष्पसर्वौषधीयवहस्तमृत्तिकापूगीफलपञ्चरत्नानि निक्षिपेत् पूजयेत् तदग्रे नारिकेलं स्थापयेत् ततो ऋत्विजो ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पतेति जलाधिवासाद्देवमुत्थाप्य शुचिदेशे स्थापयित्वा । बल्मीकमृदाऽनुलिप्य शुद्धोदकेन स्नापयेत् । ततः पञ्चगव्येन पृथक् पृथक् स्नापयेत् । देवस्य वेति कुशोदकेन । ॐ इदं विष्णुरिति अष्टभिः कलशोदकेन स्नापयेत् । शमीपलशखदिरबिल्वाश्वत्थन्यग्रोधआम्रउदुम्बरत्वक्कषायेन । ॐ अश्वत्थे वेति अभिषिच्य पुनः परिवाजपतिरिति वा आपोहिष्ठेति पञ्चरत्नोदकेन च संस्नाप्य पीठान्तरे निवेश्य । युवासुवासा इति वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् । गन्धादिभिः सम्पूज्य । ततः अष्टौ दीपान् बलिं स्थापयित्वा । ततः आचार्यहस्ते तैजसपात्रस्थघृतमधु गृहीत्वा सुवर्णशलाकया नेत्रोन्मीलनं ॐ तेजोसीति मन्त्रेण तदा न कश्चित्पुरतः तिष्ठेत् । ततः आदर्शं दर्शयित्वा । आचार्याय गां दद्यात् । ततो देवँ उत्थाप्य कुशप्रस्तरे शुभवस्त्रेणाच्छाद्य प्राक्शिरसं देवं स्थापयेत् । प्राजापत्यं मुहूर्तोऽस्तु । आचार्यः स्थंडिले पञ्चभूसँस्कारपूर्वकबलवर्द्धननामाग्निं स्थापयेत् । ततो ग्रहस्थापनँ पूजनँ च कृत्वा । ब्रह्मासनाद्यारभ्य आघारावाज्यभागान्तं कृत्वा ततो ग्रहाहुतिपूर्वकवास्तुहोमः प्रधानहोमं च समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः

प्रत्येकं अष्टाष्टसंख्याभिः कृत्वा । ततः ।

प्रधानहोमः

ॐ सहस्रशीर्षाः नारायणाय स्वाहा ।१। ॐ पुरुष एवेदं० स्वाहा ।२। ॐ एत ।वानस्य० स्वाहा ३। ॐ त्रिपादूर्ध्वं० स्वाहा ।४। ॐ ततोविराड० स्वाहा ।५। ॐ तस्मा-द्यज्ञात्० स्वाहा ।६। ॐ तस्माद्यज्ञात्० स्वाहा ।७। ॐ तस्मादश्वा० स्वाहा ।८। ॐ तं यज्ञं० स्वाहा ।९ ॐ यत्पुरुषं स्वाहा ।१०। ॐ ब्राह्मणोस्य० स्वाहा ।११। ॐ चन्द्रमा० स्वाहा ।१२। ॐ नाभ्याऽआसी० स्वाहा १३। ॐ यत्पुरुषेण० स्वाहा ।१४। ॐ सप्तास्यासन्० स्वाहा ।१५। ॐ यज्ञेन यज्ञ० स्वाहा ।१६ इति षोडशाहुतीर्हुत्वा । ततः श्रीश्चतेति अष्टोत्तरशतं हुत्वा । ॐ इदं विष्णु० स्वाहा । इति देवचरणौ स्पृष्ट्वा । पुनः तेनैव हुत्वा नाभिं स्पृष्ट्वा । ॐ विष्णोरराटेति शिरसि स्पृशेत् । पुरुषसूक्तेन सर्वाङ्गं स्पृशेत् । ॐ उदुत्यं जातवेदसमिति देवमुत्थाप्य देवालयं प्रवेश्य गर्ते पञ्चरत्नसुवर्णखण्डं वा निधाय मूर्तिं संस्थाप्य दृढं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । ततो न्यासं कुर्यात् । ॐ धर्मतत्वाय नमः मूर्ध्नि । ॐ ज्ञानाय नमः हृदि । ॐ वैराग्या० गुह्ये । ॐ ऐश्वर्या० पादयोः । ॐ खड्गाय० शिरसि । ॐ शार्ङ्गाय० मस्तके । ॐ मुसलाय० दक्षिणभुजे । ॐ हलाय० वामभुजे । ॐ चक्राय० नाभ्यां जठरे पृष्ठे च । ॐ शङ्खाय० लिङ्गे वृषणे च । ॐ गदायै० जङ्घयोर्जानुनोश्च । ॐ पद्माय० गुल्फयोः पादयोश्च । ॐ लक्ष्म्यै० ललाटे ॐ सरस्वत्यै० मुखे ।

ॐ रेवत्यै० गुह्ये । ॐ रेवत्यै० कण्ठे । ॐ कीर्त्यै० नेत्रे । ॐ शान्त्यै० हृदये । ॐ तुष्टयै० जठरे । ॐ पुष्टयै० सर्वाङ्गे ।

अथ पुरुषसूक्तन्यासः

ॐ सहस्रशी० पादयोः । ॐ पुरुष ए० जङ्घयोः । ॐ एतावानस्य जान्वोः । ॐ त्रिपादूर्ध्वं० ऊर्वोः । ॐ ततो विराड० वृषणयोः । ॐ तस्माद्यज्ञा० कटयाम् । ॐ तस्माद्यज्ञा० तस्मादश्वा० हृदि । ॐ तं यज्ञं० स्तनयो । ॐ यत्पुरुषं० बाह्वोः । ॐ ब्राह्मणोऽस्य० मुखे । ॐ चन्द्रमा० नेत्रयोः । ॐ नाभ्याऽआसी० कर्णयोः । ॐ यत्पुरुषेण० भ्रुवोः । ॐ सप्तास्यास० भाले ॐ यज्ञेन यज्ञ० शिरसि । ॐ अद्भ्यः हृदये । ॐ वेदाहमे० शिरसि । ॐ प्रजापतिश्चरति० शिखायाम् । ॐ यो देवेभ्य० कवचम् । ॐ रुचं ब्राह्मं० नेत्रयोः । ॐ श्रीश्च ते० अस्त्रम् । ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि क्रियामवपुः प्राणाख्या देवता राधा-कृष्णयोः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ॐ आं ह्रीं क्रों य रँ लं वँ शं षं सं हं सः राधाकृष्णयोः प्राण इह प्राणाः । पुनः ॐ आं ह्रीं० राधाकृष्णयोः जीव इह स्थितः । पुनः आँ ह्रीं राधाकृष्णयोः सर्वेन्द्रियाणि । पुनः ॐ आं ह्रीं० राधाकृष्णयोः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । देवस्य मूर्ध्नि हस्तं निधाय गायत्रीं जपेत् । ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नः

कृष्णः प्रचोदयात् । अतसीपुष्पसङ्काशं शङ्ख-चक्र-गदाधरम् । संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम् । तत पुरुषसूक्तेन देवमभिमन्त्र्य ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषमा० । ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषमा० । ततो राधिकाया मूर्ध्नि हस्तं निधाय ॐ समुद्धृतायै विद्महे विष्णुनैकेन धीमहि । तन्नो राधा प्रचोदयात् ततो ब्रह्मरूपं विभाव्य । सप्तकुशात्मकं कूर्चं दद्यात्, कस्तूरी-तिलकमिति ध्यानम् : आवाहयामि देवेशं श्रीराधावल्लभ हरिम् । देवकीतनयं कृष्णं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम् । राधाकृष्णाभ्यां नमः । इत्यावाहनम् । राजाधिराजेन्द्र कृष्णं चन्द्रादित्ययदूद्भवम् । इदं सिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ! । ततो दूर्वा-विष्णुक्रान्ता-श्यामाक-पद्मपत्रजलेन पाद्यम् । श्रीकृष्णाऽत्रागच्छ भगवन् वासुदेव ! जगत्पते ! राधया सह गोपेश ! सुस्थिरो भव सर्वदा । कृष्णचन्द्र ! महाबाहो ! कंसचाणूरमर्दन ! । यावच्चन्द्रावनीसूर्य्यां तावत्त्वं सन्निधौ भव । देवकीसुत ! राजर्षे ! कृष्ण ! राजीव-लोचन ! राधावल्लभ ! मे देव ! श्रीकृष्णाभिमुखो भव । सुप्रसीद जगन्नाथ ! महाबलपराक्रम ! । प्रसन्नो भव मे देव ! पाण्डवा-र्तिविनाशन ! । त्रैलोक्यपावनस्त्वं हि राधया सहितो हरे ! । पाद्यं गृहाण देवेश ! नमो राजीवलोचन ! । राधाकृष्णाभ्यां० पाद्यं स० । परिपूर्ण परानन्द ! ब्रह्मादिदेवतात्मक ! । गृहा-णाऽर्घ्यं मया दत्तं तीर्थवारिसमन्वितम् । यव-तण्डुल-चन्दन-पुष्प-दूर्वा-कुशाग्रयुक्तजलेन अर्घ्यं स० । एला-लवङ्ग-तज-कर्पूरमिश्रेण जलेन राधाकृष्णाभ्यां आचमनं स० । वासुदेवाय कृष्णाय तत्त्व-

ज्ञानस्वरूपिणे । मधुपर्कं प्रदास्यामि दीनानाथाय ते नमः । राधाकृष्णाभ्यां मधुपर्कं स० । नमः शुद्धाय बुद्धाय सत्याय ज्ञानरूपिणे । गृहाणाचमनं नाथ ! सर्वलोकैकनायक ! । राधा-कृष्णाभ्यां० आचमनं स० । पञ्चामृतं मया० । राधाकृष्णाभ्यां पञ्चामृतस्नानं स० । ब्रह्माण्डोदरमध्यस्थं तीर्थैश्च यदुनन्दन ! । स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या स्वकरेण जनार्दन ! । स्नानं स० । शीतवातोष्णसंत्राणं पीताम्बरमिदं हरे ! । सगृहाण जगन्नाथ ! कृष्णचन्द्र ! नमोऽस्तु ते । राधाकृष्णाभ्यां० वस्त्रं स० । आचमनं० श्रीकृष्णाच्युत ! यज्ञेश ! श्रीधरानन्दराधन ! । ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण यदुनायक ! राधाकृष्णाभ्यां० उपवीतं उत्तरीयं च स । आचमनं समर्पयामि । किरीट-हार-केयूर-वंशीकुण्डल-मेखलाः । ग्रीवेयकौस्तुभोहाररत्नकंकणनूपुरौ एवमादीनि सर्वाणि भूषणानि सुरोत्तम ! । अहं दास्यामि सद्भक्त्या संगृहाण जनार्दन ! । राधाकृष्णाभ्यां० अलङ्करणं स० कुंकुमाऽगरुकर्पूर-कस्तूरीमिश्र-चन्दनम् । तुभ्यं दास्यामि विश्वेश ! राधयासहितो हरे ! । राधाकृष्णाभ्यां गन्धं स० । तुलसी-कुन्द-मन्दार-जाति-पुन्नाग-चम्पकैः । कदम्बकरवीरैश्च कुंकुमैः शतपत्रकैः । नीलाम्बुजै-विल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्च केशव ! । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाण जनार्दन ! । राधाकृष्णाभ्यां० पुष्पमालां स० ।

अथाङ्गपूजा

ॐ कृष्णाय नमः पादौ पूजयामि ।१। ॐ राधावल्लभाय० गुल्फौ पू० ।२। ॐ केशवाय० जानुनी पू० पू० ।३ ॐ पद्म-

नाभाय० नाभिं ।४।ॐ परमात्मने० हृदयं पू० ।५। ॐ श्रीकण्ठाय० कण्ठं पू० ।६। ॐ सर्वास्त्रधारिणे० बाहुं पू० ।७। ॐ यद्गुद्भवाय० मुखं पू० ।८। ॐ वाचस्पतये० ऊरू पू० ।९। ॐ विश्वरूपाय० जङ्घे पू० ।१०। ॐ माधवाय० कटिं पू० ११। ॐ विश्वमूर्तये० मेढ्रं पू० ।१२। ॐ विश्वेशाय० जिह्वां पू० ।१३ ॐ दामोदराय० दन्तान् पू० ।१४। ॐ गोपीनाथाय० ललाटं पू० ।१५। ॐ ज्ञानगम्याय० शिरः पू० ।१६। ॐ सर्वात्मने० सर्वाङ्गं पू० ।१७। वनस्पतिरसो० । राधाकृष्णाभ्यां धूपं स० । ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमः कृष्णाय वेधसे । गृहाण दीपकं विष्णो ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् । राधाकृष्णाभ्यां दीपं स० । हृद्यंदिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिः समन्वितम् । श्रीकृष्ण ! सत्यभामेश ! नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। राधाकृष्णाभ्यां० नैवेद्यं स० । पूगीफलं महद्दिव्यं० । ताम्बूलं स०। ॐ हिरण्यगर्भेति दक्षिणां स० । कर्पूरगौरमिति आर्तिक्य स०। नानासुगन्धेति पुष्पाञ्जलिं स० । प्रार्थयेत् । स्वागतं देवदेवेश ! मद्भाग्यात्त्वमिहागतः । प्राकृतिं त्वामहं दृष्ट्वा बालवत्परिपालय। धर्मार्थकामसिध्यर्थं सर्वेषां च शुभासिन । सान्निध्य तु सदा कृष्ण ! स्वार्चायां परिकल्पय । यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्ति प्रतिघातिनः । तावत् कृपास्व देवेश ! स्वयं भक्त्याऽनुकम्पया। भगवन् सर्वदेवेश ! त्वं पिता सर्वदेहिनाम् । येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराऽचरम् । तेन रूपेण देवेश ! स्वर्चायां सन्निधौ भव । इति नमेत् ततः केशवादिद्वादशनामभिः तर्पणं कार्यम्। ॐ केशवं तर्पयामि । ॐ माधवं तर्प० । ॐ गोविन्दं तर्प०।

ॐ नारायणं तर्प०। ॐ विष्णुं तर्प०। ॐ मधुसूदनं तर्प०।
ॐ त्रिविक्रमं तर्प०। ॐ वामनं तर्प०। ॐ श्रीधरं तर्प०।
ॐ हृषीकेशं तर्प०। ॐ पद्मनाभं तर्प०। दामोदरं तर्प०।
ॐ सङ्कर्षणं तर्प०। एतैर्नामभिः संतर्प्य पुष्पाणि च निवेद्य।
केशवादिनामभिः तिलोदनं हरिद्रोदनम् गुडोदनं हुत्वा।

पूजास्विष्टंनवाहुत्या बलिं पूर्णाहुतिं तथा।
श्रेयः सम्पाद्य दानं च अभिषेकं विसर्जनम् ।१।

ततः पूर्वोक्तहविर्भिः कृष्णाय बलिं दद्यात्।

मन्त्र - त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं विश्वसृजं यजामहे।
त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमेवमात्मा प्रतिगृह्णीष्व हव्यम्।

अश्वत्थपर्णे हुतशेषं निवेद्य प्रदक्षिणीकृत्य। ॐ विश्वभुजे नमः। ॐ सर्वभुजे नमः। ॐ आत्मभुजे नमः। ॐ परमात्मभुजे नमः। ॐ आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। आचार्याय द्वादश गा दद्यात्। ब्राह्मणभोजनम्। प्रधानमण्डपादि-आचार्याय निवेद्य भूयसीं दद्यात्। 'यान्तु देवा'ति विसर्जनम् पठित्वा। कर्मेश्वरार्पणं कुर्यादिति राधाकृष्णप्रतिष्ठा समाप्ता।

※ अथ संक्षपतो हनुमत्प्रतिष्ठाविधिः ※

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं करिष्यमाण—सप्रासादवास्तुसनवग्रहमखहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणि अनधिकारिताप्रयोजक-कायिकादि--निखिलपापक्षयपूर्वक--तत्राऽधि--कारसिद्ध्यर्थं त्रिकृच्छ्रप्रायश्चित्तं गोप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये।

पञ्चगव्य प्राशनम्

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ।१

इति मन्त्रेण पञ्चगव्यप्राशनं कृत्वा गोद्रव्यमुत्सर्गं कुर्यात् । ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं पूर्वाङ्गीकृतकृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नायत्वेन इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं उत्सृजे । तत आचम्य प्राणानायम्य । 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वे'ति आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य । हस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठित्वा प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात् । ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं मम समस्तपापक्षयपूर्वक-ऐश्वर्यायुरारोग्याभिवृद्धिद्वारा तत्सत्परमेश्वरप्रीतये च अस्यां हनुमत्मूर्तौ देवत्वसंसिद्धये सप्रासादवास्तुसनवग्रहमखहनुमत्प्रतिष्ठां करिष्ये । तदङ्गत्वे० करिष्ये । तत्रादौ नि० करिष्ये । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृत्वा दिग्रक्षणं पञ्चगव्यप्रोक्षणं च कुर्यात् । अथ प्रासादे गत्वा तत्र प्रोक्षणादिकं विधाय वास्तुमण्डलपूजनं होमान्तं बल्यन्त वा कृत्वा त्रिसूत्र्यादिकं निर्वर्त्य ।

ततः देवं स्नानपीठे निवेश्य आपोहिष्ठेत्यादिमन्त्रेण क्षालनं कृत्वा या ओषधीरिति मन्त्रेण सर्वौषधिभिर्यथाविधि मूर्त्यङ्गस्योद्वर्तनं विधाय शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य सप्तधान्यपिष्टैस्तु । धान्यमसीति उद्वर्त्तनम् । शुद्धजलेन क्षालयेत् । ततः सुवर्णादिधातुमूर्तीनां अग्न्युत्तारणं कर्तव्यम् । न तु पाषाणादिमूर्तीनाम् ।

यदाबध्नम्, इति इति प्रतिसरं बद्ध्वा। पञ्चोपचारैः सम्पूज्य उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति जलान्निष्कास्य बौधायनोक्तपञ्चभिर्वाक्यैः पुण्याहं वाचयित्वा।

प्रार्थनाः— स्वागतं देवदेवेश! विश्वरूप! नमोऽस्तु ते।
शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मस्तु मारुते! ।१।
मन्त्रमूर्तिर्भवान्नाथ! संसारोच्छेदकारक!।
यथापूजार्हो देवः स्यात्कुरु धर्मगतिं च नः ।२।
संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः।
प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नो भवतु द्विज! ३

ततः पञ्चामृतस्नानम्। शुद्धोदकस्नानम्। अष्टकलशैरभिषेकं कुर्यात्। तत्र मन्त्राः। पुरुषसूक्त पावमानीय सूक्तं ऋचं वाचं बिभ्राड्सौरसूक्तम्, इत्यादि। ततः पीतवस्त्रेणाच्छाद्य नाममन्त्रेण सम्पूज्य। मनोजवमिति प्रार्थयेत्। अग्रे अन्नादिनैवेद्यं निधाय आदर्श १० दश दीपान् प्रज्वाल्य हिरण्यगर्भः, इति मन्त्रेण प्रणमेत्। ततो रजतपात्रे मधुघृते गृहीत्वा सुवर्णशलाकया चित्रं देवानामिति अर्घर्चेन नेत्रमुन्मीलयेत्। ॐ उत्तिष्ठमिति देवं उत्थाप्य प्राक्शिरसं शय्यायां स्वापयेत्। ततः पञ्चभूसँस्कारपूर्वकबलवर्द्धननामाग्निं प्रतिष्ठाप्य सूर्यादिग्रहान् सम्पूज्य कुशकण्डिकां विधाय आघारावाज्यभागं ग्रहाहुतिं च कृत्वा प्रधानहोमं कुर्यात्। ततः शय्यातः उदुत्यमिति देवमुत्थाप्य देवालयं प्रविश्य पञ्चरत्नानि गर्ते निक्षिप्य।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमत्प्रचोदयादिति ।१।

मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य । ॐ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । शाश्वतो भव । गन्धादिना सम्पूज्य । ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषमावाहयामि । ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषमावाहयामि । ततो देवं स्पृष्टवा ध्रुवसूक्तं जपित्वा । तद्यथा ।

प्रतिमास्थापनम्:—

ॐ इहैवेधि मापच्योष्टाः पर्वत इवाचाचलिः ।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रे मुधास्य ।१
इममिन्द्रो अदीधर ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ।
तस्मै सोमो अधिब्रुवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः ।२।
ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पति ।
ध्रुवे ते इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ।३।
ध्रुवेण हविषाभिसोममृशामसि ।
अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृयस्करत् ।४।

इति जपित्वा । प्रणवेन देवमूर्तौ षडङ्गन्यासं कृत्वा ।

प्राणप्रतिष्ठाः— अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजु सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजम् । क्रौं कीलकम् । ह्रीं सौं शक्तिः प्राणाख्यदेवता प्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ततो भूतशुद्धिं कृत्वा ॐ अं कं खँ गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः । ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओं पं फं बं भं म वचनादानविसर्गानंदात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ अं यं रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ बुद्ध्यहँकारचित्ताऽव्यक्तात्मने अः करतलकरापृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिः ।

ध्यानम्:— रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुश चापबाणान् ।।
बिभ्राणां स्रक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ।१

इति ध्यात्वा जपेत् । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वँ शँ षं सं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं० देवस्य जीव इह स्थितः । ॐ आं ह्रीं देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ततः हनुमते नमः ।१। अञ्जनीसूनवे नमः ।२। वायुपुत्राय नमः ।३। महाबलाय नमः ।४। रामेष्टाय नमः ।५। फाल्गुनसखाय नमः ।६। पिङ्गाक्षाय नमः ।७। अमितविक्रमाय नमः ।८। उदधिक्रमणाय नमः ।९। सीताशोकविनाशाय नमः ।१०। लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ।११। दशग्रीवदर्पहन्त्रे नमः ।१२। एतैर्द्वादशनामभिः षोड-

शोपचारैः सम्पूज्य प्रणम्य क्षमापयेत् । ततो देवस्य कर्णे गायत्रीं जप्त्वा ।

प्रार्थना:— हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ।१।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ।२।

इति द्वादशनामभिः पुष्पाञ्जलिं दत्वा ।

स्वागतम्— स्वागतं देवदेवेश ! मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ।
सान्निध्यं सर्वदा देव ! हनुमन् ! परिकल्पय ।१।
यावचन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः ।
तावत्त्वयाऽत्र स्थातव्यं स्वेच्छाभक्तयानुकम्पया ।२।

ततो देवस्य दक्षिणकर्णे त्वं दासहनुमानसि इति नामकरणम् । ब्रह्मादिमण्डलदेवता एकैकाज्याहुत्या शेषेण स्विष्टकृदादिपूर्णाहुत्यन्तं बसोर्द्धारां च कृत्वा अभिषेकं कुर्यात् । आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । यान्तु देवेति विसर्जनं प्रमादादिति पठित्वा । इति हनुमत्प्रतिष्ठा समाप्ता ।

अथ संक्षेपेण वापीकूपतडागप्रतिष्ठाप्रयोगः

ततो अधिवासनपूर्वदिने कुण्डमण्डपं कृत्वा पूर्ववत्सर्वप्रायश्चित्तं कुर्यात् । द्वितीयदिने आचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य । हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठेत् ।

सङ्कल्पः—ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतकायिकादिनिखिलपापक्षयार्थं रुद्रालयगमनपूर्वकवैष्णवपदप्राप्तिकामः अमुकजलाशयोत्सर्गकर्माहं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनम्०। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं०। ततो गणेशपूजनादारभ्य वरणान्तं कृत्वा। ततो मण्डपप्रवेशदिग्रक्षणं प्रोक्षणं वास्तुपूजनं मण्डपपूजनं अग्निस्थापनोत्तरं मध्यवेदीलिखितवारुणमण्डलमध्यस्थे पद्मे ग्रहान् पूजयेत्। एतत्सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम्। ततो ग्रहपूजनानन्तरं मण्डलमध्ये ताम्रकलशं संस्थाप्य तस्योपरि वरुणप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं संस्थाप्य सम्पूज्य तस्याऽग्रे सौवर्णकूर्ममकरराजतमत्स्यडुंडुभताम्रमय कुलीरमण्डूकलोहमयं शिशुमारयुतां सुवर्णपात्राम्। ॐ इमं मे वरुणेति मन्त्रेण स्थापयेत्। कुशकण्डिकां विधाय कुण्ड ईशान्यां शान्तिकलशं स्थापयेत्। कलशे वरुणं सम्पूज्य।

प्रार्थना:— नमस्ते विश्वरूपाय नमो विष्णो अपां पते!।
सान्निध्यं कुरु मे देव! समुद्रादिह शान्तये ॥१॥

(कूपप्रतिष्ठायां तु। अत्र कूपस्य चतुर्दिक्षु धान्योपरि सितवस्त्रादियुक्तान् कलशान् स्थापयेत्) ततः कुण्डे आघाराज्यभागौ हुत्वा। यजमानः कुण्डदक्षिणत उपविश्य जलमादाय। अस्मिन् कर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथादैवतामि सन्तु। ततः सूर्यादिग्रहाद्यारभ्य प्रधानहोमं मण्डलदेवताहोमं च स्विष्ट-

कृदन्तं कृत्वा (प्रधानहोमस्तु ॐ इमँ मे वरुण श्रुधी० । इति अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं वा हुत्वा) ततो भूरादिनवाहुतिं बलिं च पूर्वोक्तं कृत्वा ।

ॐ अथाऽनन्तरं सुमुहूर्त्ते यूपस्थापनं कुर्यात ॐ

आचार्यः मण्डपात् पूर्वतः पादत्रयमितां भूमिं त्यक्त्वा तत्र यूपस्थापनं करोति (कूपात् पूर्वतः ईशान्यां वा) तत्र पालाश-काष्ठस्य पुरुषाकृतिं पुरुषसमं यूपं कृत्वा अरत्निमात्रं खातं कृत्वा यूपं स्थिरी कृत्य स्तुतिं कृत्वा ।

प्रार्थना:— यूपस्त्वँ निर्मितः पूर्वं यज्ञभागः सुरेश्वरः ।
स्तुतः कूपस्य रक्षार्थं पूजां पुष्पंबलिं तथा ।१।
गृहीत्वा सुस्थिरो भूत्वा यजमानोदयँ कुरु ।

ततः यूपं हरिद्रातैलाभ्यक्तं कृत्वा स्नापयित्वा घृतेनाभ्युज्य पुष्पमालादिनाऽभ्यर्च्य सर्षपगोरोचन-गुग्गुल-दूर्वा-निम्बपत्राणि एतेषां पोटलिकां कृत्वा यदा बध्नेति यूपदक्षिणहस्ते बद्ध्वा ।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमाना । तन्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मां जरदष्टिर्यथासम् ।

वस्त्रम्:-ॐ युवासुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः
तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।
इति मन्त्रान्ते वस्त्रेणाऽवेष्टच्च ।

यूपालम्भनम्: ॐ यूपव्रस्का ऽउत ये यूपवाहाश्चषालं ये ऽअश्व-
यूपाय तक्षति । ये चार्वते पचन ँ सम्भरन्त्युतो तेषामभि-

गूर्त्तिम्म ऽइन्वतु ।

इति मन्त्रेण यूपमालभ्य । ततो यजमानः यूपोपरि अभिषेकं कुर्यात् तद्यथा । ॐ असंख्याता सहस्राणि० । ॐ इमं मे वरुण श्रुधी० । ॐ एका च मे० । ॐ चतस्रश्च मे० । ॐ ये तीर्थानि० । इत्यभिषेकः ।

अथ यूपन्यासः

यूपशिरसि ब्रह्मणे नमः । चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां नमः । हृदि केशवाय नमः । नाभौ अग्नये नमः । ऊर्वोः कटणां गुह्ये एकादशरुद्रेभ्यो नमः । जङ्घयोर्मेरुपर्वताय नम । पादयोर्नागेभ्यो नमः ।

ॐ अर्थेत स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौजस्वती स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्र मे दत्त स्वाहौजस्वती स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्ताप परिवाहिणी स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः परिवाहिणी स्तथ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रँ मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि । इति शिखायाम् ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः । इति चक्षुषोः । ॐ खड्गो वैश्वदेवश्च कृष्णः कर्णोगर्द्दभस्तरक्षसामिन्द्राय सूकरः सिँ होमारुत. कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः । इति नासिकायाम् ।

ॐ अग्निं दूतं० इति मुखे । ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव इति ग्रीवायाम् ।

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियँ हस्तौ मे कर्मवीर्यम् । आत्मा-क्षत्रमुरो मम । इति बाह्वोः ।

ॐ हृदेत्वा मनसे त्वा दिवेत्वा सूर्याय त्वा । ऊर्ध्वमिममध्वरं दिविदेवेषु होत्रायच्छ । इति हृदये । समुद्रादूर्मिर्मधुमांऽ। उदारदुपाँशुना समभृतत्वमामट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः । इति उदरे ॐ वाममद्य सवितुर्वाममु दिवेदिवे वाम स्मभ्यँसावीः । वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाज स्याम । इति कटिद्वयोः ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् । आनन्दमन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः । जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः । इति जङ्घयोः ।

ॐ आयङ्गौः इति पादयोः । एवं यूपन्यासँ कृत्वा पुनः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य बलिं दद्यात् ।

यूपबलिः- एह्येहि धर्मध्वज ! यज्ञनाथ ! त्रयीमयो वेदशरीर यूप ! ।
विधातु देवाध्वरयज्ञरक्षां बलिं गृहाण भगवन्नमस्ते ।१।
यूपायैष बलिर्न मम

प्रार्थना:— त्वां प्रार्थये ह्यहं यूप ! लोकानां शान्तिदायक ! ।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं अगदानन्दकारक ! १।
देहि मेऽनुग्रहं यूप ! प्रसादं कुरु सुप्रभो ! ।
मूलच्छेदेन यत्पापं भूमिघातेन पातकम् ।२।

अदुष्टयूपघानोत्थँ यूप ! पापं व्यपोहतु ।
यद्बाल्ये यच्च कौमारे यत्पापँ वार्द्धके कृतम् ।३।
तत्सर्वं मम देवेश यूप ! पापँ व्यपोहतु ।
यन्निशायाँ तथा प्रातर्यन्मध्याह्नाऽपराह्णयोः ।४।
सन्ध्ययोश्च कृतँ पापं कर्मणा मनसा गिरा ।
तत्सर्वं मम देवेश यूप ! पापं व्यपोहतु ।५।
येन केन निमित्तेन कर्ता पापं तु कारयेत् ।
तस्य पापेन नो लिप्तो यो यूपस्पर्शकृन्नरः ।६।

इति सम्प्रार्थ्य । ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता० इति पुष्पमालां परिधाय यूप प्रदक्षिणीकृत्य यूपमालिंग्य पुत्रपौत्रादियुक्तो नमस्कुर्यात्

ॐ अथ यूपप्रमाणं बृहत्पाराशरे ॐ

पालाशो ब्राह्मणस्योक्तो नैय्यग्रोधस्तु भूभुजः ।
बैल्वो वैश्यस्य यूपः स्याच्छूद्रस्यौदुम्बरः स्मृतः ।१।
शिरःप्रमाणो विप्रस्य आकण्ठं क्षत्रियस्य च ।
उरःप्रमाणो वैश्यस्य शूद्रस्य नाभिमात्रकः ।२।

इति यूपपूजनविधिः । ततो यजमानः सुलग्ने जलाशयजले कनकशृङ्गादिभूषितां गां यथाशक्ति सम्पूज्य ।

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतः सूयवासिनी मनवे दशस्या । व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ।

इति मन्त्रेणावतारयेत् (वापीकूपोत्सर्गे त्रिरुपरि भ्रामयेत्) तरन्ती तामनुमन्त्रयेत् । तत्र मन्त्रः । ॐ इदँ सलिलं पवित्रं

कुरुष्व शुद्धाः पूता अमृताः सन्तु नित्यँ मां तारयन्ती सर्वतीर्थाभिषेकम् । कोकालोकं तरते तीर्यते चेति । ततो गुरुणाऽन्वारब्धस्तत्पुच्छे लग्नो जले गच्छन्नेव मन्त्रद्वयं पठेत् तत्र मन्त्रः । ॐ समुद्रादूर्मिर्म्मधुमां० ।१। ॐ ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्य सर्पेभ्यो नमः ।२

ततो जल एवेशान्यामुत्तराभिमुखया गोः पुच्छं गृहीत्वा जले स्थित्वा यजमानो यवकुशादिभिर्देवमनुष्यपितृतर्पणं स्वशाखोक्तं कुर्यात् । सव्येन प्राङ्मुखो-ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् कण्ठीकृत्वोदङ्मुखो-सनकादयो सनकादयो मनुष्याः तृप्यन्ताम् । अपसव्येन दक्षिणाभिमुखो-कव्यवाडनलादयोः दिव्यपितरस्तृत्यन्ताम् ।

पिता पिता पितामहश्चैव तथैव प्रतितामहः ।
स्वस्वपत्नीसमेताश्च प्रीयन्ताँ जलतर्पणात् ।१।
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः ।
स्वस्वपत्नी समेताश्च प्रीयन्तां जलतर्पणात् ।२।
अजातदन्ता ये केचिद्ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय तडागोदकतर्पणात् ।३।
पितृव्यकाश्च येऽस्माकं भ्रातरश्च सहोदराः ।
गुरवो मातुलाः पुत्रा आचार्यसखिबान्धवाः ।४।
तेषां पुत्राश्च पत्न्यश्च श्वशुरा ये सपुत्रकाः ।
एतेषां क्रीडनार्थाय तडागोदकतर्पणम् ।५।
बन्धुवर्गाश्च ये केचित् गोत्रनामविवर्जिताः ।
स्वगोत्रा परगोत्रा वा तेभ्यश्चेदं तिलोदकम् ।६।

उद्बन्धने मृता ये च सिंहव्याघ्राहताश्च ये ।
दँष्ट्रिभिः शृङ्गिभिश्चैव तेभ्यश्चैव तिलोदकम् ।७।

असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिका तथा ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ग्रहदेवाधिदेवताः ।८।

तेषामुद्धरणार्थाय तडागोदकतर्पणम् ।
अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ।९।

विद्युच्चोरहता ये च तेभ्योऽपीदं तिलोदकम् ।
रौरवे चान्धतामिस्रे कुम्भीपाके च ये गताः ।१०।

अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोकेषु ये गताः ।
पच्यन्ते संयमन्यां ये नीता ये यमकिङ्करैः ११।

असीपत्रवने घोरे तेभ्योऽपीदं तिलोदकम् ।
विश्वेदेवास्तथा साध्या आदित्याश्च मरुद्गणाः ।१२।

क्षेत्रपीठोपपीठानि नद्यश्चैव स-सागराः ।
पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव सपर्वताः ।१३।

पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गन्धर्वराक्षसाः ।
पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च ।१४।

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तडागोदकतर्पणात् ।
आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ।
वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ।१५
मित्राणि सख्युः पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकाराः
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यस्तडागोदकमेतदस्तु ।१६।

(वापी-कूपयोस्तु तडागपदस्थाने तत्तत्पदप्रक्षेपः) ततस्तर्पणान्ते यजमानः पुच्छग्रहणयुक्त आपो अस्मानिति पठन्नीशान्यां उत्तीर्य। तत्र मन्त्रः।

ॐ आपो ऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वँहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि। इति

ॐ सूयवसाद्भगवती हि भूया ऽअथोवयं भगवन्तः स्याम।
अद्धितृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ति १।

इत्यनेन जलान्निष्कास्य ईशान्यां दिशि स्थापयेत्। ततो यजमानः गां सम्पूज्य सामवेदिने ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत्। ततः कुङ्कुमाक्तेन त्रिवृता सूत्रेण जलाशयं वेष्टयित्वा तत्समीपे उपविशेत्। आचार्यः पूर्वासादितां कूर्ममकरादियुतां हेमपात्रीं दध्यक्षतमहानदीजलयुतामादायोदङ्मुखंश्चतुर्भिर्ऋत्विग्भिः सह स्वयं प्राङ्मुखः स्थित्वाऽगाधे जले सौवर्णौ कूर्ममकरौ प्रागाग्नेयभागयोः प्रत्यङ्मुखौ राजतौ मत्स्यडुण्डुभौ दक्षिणनैर्ऋत्यभागयोः। उदङ्मुखौ ताम्रौ कुलीरमण्डूकौ पश्चिमवायव्ययो। प्राङ्मुखौ आयसं शिशुमारं उत्तरदक्षिणाभिमुखं वारुणैर्मन्त्रैः प्रक्षिपेत्। ॐ शन्नोदेवी०। ॐ आपोहिष्ठा०। उदङ्मुखस्तां सुवर्णपात्रीं न्युब्जीकुर्यात्। आचम्य प्राङ्मुखो यजमानः जलाशयोत्सर्गं कुर्यात्। तत्र कुशजलयवतिलनादाय ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं मम सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानन्तर–बहुकल्पकालावधिकद्युलोकभागानुभवपूर्वकपरार्द्धद्वयकालावच्छिन्नमहस्तपः–प्रभृतिलोकगमनादिहतल्लोकभोगोत्तर कालसद्योगबलप्राप्य वैष्णवपदप्राप्तिका-

मोऽहमिमं तडागादिजलाशयं वरुणदेवताकं स्नानपानावगाहनाद्यर्थं सर्वेभ्यो भूतेभ्यो उत्सृजे। इत्युक्त्वा जलाशयं निरीक्ष्य जलं भूमौ निक्षिपेत्। मन्त्रद्वयं जपेत्।

मन्त्रजपः— सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतज्जलमूर्जितम्।
रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥१॥
सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मया दत्तमिदं जलम्।
रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥२॥

ततो मण्डपमागत्य प्रागादिष्विन्द्रादिभ्यः दधिमाषभक्तबलिं दद्यात्। (अथाचारः तडागे नागयष्ट्यारोपणम्) तत्र गुरुरष्टसु चूतपत्रेष्वनन्तवासुकितक्षककर्कोटकपद्मकुलिकानां नामानि प्रत्येकं लिखित्वा प्राक्स्थापितरसजलकलशे प्रक्षिप्यालोड्य तत्र वरुणं पूजयित्वा एकं चूतपत्रमाकृष्य तत्पत्रलिखितनामानं नागं तीर्थजलाप्लुतायां यज्ञियवृक्षोद्भवायां जलाशयाल्पत्वाद्यनुसारतो द्वादशपञ्चदशविंशत्यन्यतमारत्निमितायां यष्ट्यां अमुकनाग इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा अनेन नागेनास्य जलाशयस्य रक्षा कार्या, इति जनेभ्यः श्रावयित्वा तं नागं यष्टौ अमुकनागाय नम इति पूजयेत्। ततो यष्टि सम्बन्धिवर्तुलमस्तकोपरि लोहमयं त्रिशूलं चक्रं वा आरोपयन्ति। ततो जलमध्ये प्रागेव यष्ट्यर्थकृतखातसमीपे अर्चितां यष्टिं नयेत्। ततः खाते दधिमध्वक्षतकुशतीर्थजलपञ्चरत्नानि प्रक्षिप्य।

ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयाममे । ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्गः ऽआशुर्भववाज्यर्वन् । पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः ।

इति मन्त्रद्वयेन स्थिरकरणम् (इदं यष्टयारोपणं कूपवाप्योर्न कर्तव्यम्) इति नागयष्टिरोपणम् । ततो यजमानो गङ्गादितीर्थजलं जलाशये क्षिपेत् । ततः प्राङ्मुखोपविश्य पठेत् ।

तीर्थप्रार्थनाः– कुरुक्षेत्रं गयां गङ्गां प्रभासँ पुष्कराणि च ।
एतानि पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ।१।
वितस्ता कौशिकी सिन्धुः सरयू च सरस्वती ।
एतानि पञ्चतीर्थानि तडागे निवसन्तु ये २।
दशार्णा मुरला सिंधुरथावती दृषद्वती ।
एतानि पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ।३।
यमुना नर्मदा रेवा चन्द्रभागा च वेदिका ।
एतानि पुण्यतीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ४।
गोमती वाङ्मती शोणो गण्डकी सागरस्तथा ।
एतानि पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ।५।

इति पठित्वा जलं स्पृष्ट्वा ॐ आपो हिष्ठेति तृचं जपन्नविच्छिन्नदुग्धधारया जलाशयं त्रिः प्रदक्षिणीकुर्यात् । तत एकं ब्राह्मणं यथेष्टदुग्धं पाययेत् । गुरुर्दिनत्रयँ स्थापितदेवानां पूजनं कृत्वा वारुणहोमँ कुर्यात् । स्विष्टकृदादिपूर्णाहुत्यतं उत्तराङ्गानि च कुर्यात् । संस्रवप्राशनं आचमनं पवित्राभ्यां मार्जनम्

पूर्णपात्रदानं प्रणीताविमोकः आचार्याय सवत्सां गां शय्यापात्रीं च दद्यात् । ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । अभिषेको विसर्जनम् । प्रमादादिति पठित्वा विष्णुं स्मरेत्। इति जलाशयोत्सर्गः समाप्तः ।

❀ अथऽऽरामोत्सर्गप्रयोगः ❀

अथ जलाशयोत्सर्गोक्तकालमनुस्मृत्याधिवासनदिनात् पूर्वेद्युः कृतैकभक्तादिनियमोऽधिवासनदिने कर्ता शुभासने प्राङ्मुखोपविश्याचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च सँप्रोक्ष्य हस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् पठेत् । देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माऽहँ मम समस्तपापक्षयातीतानागतपितृकुलतारणकामो भगवत्प्रीतिकामो वा आरामोत्सर्गं करिष्ये । तद स्वेन स्वस्ति० करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नता० । गणेशपूजनादारम्य मण्डपपूजन-प्रधानपूजनाग्निस्थापनग्रहस्थापन-ग्रहाहुतिं च कृत्वा ततो आचार्यः चतुरस्रपीठिकामध्ये कृतवालान् वृक्षान् सर्वौषध्युदकैः सिक्तां पिष्टांतकैः पुष्पमालाभिर्वासोभिश्चाऽलङ्कृत्य सुवर्णसूच्या प्रतिवृक्षस्कन्धसमीपे कर्णवेधं तदुपरिप्रदेशे सुवर्णशलाकया नेत्राञ्जनं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्वा मूलबद्धचतुरस्रवेदिकोपरि सप्तधान्यं प्रक्षिप्य तस्योपरि जलपूर्णान् घटान् सोपस्कारान् प्रतिवृक्षसमीपे स्थापयेत् । प्रतिवृक्षे कर्णाशक्तौ वृक्षाष्टके कलशस्थापनं कर्त्तव्यमित्याहुः । ततोऽग्निस्थापनान्ते आचार्यः मध्यवेद्यां षोडशारे सूर्याद्या लोकपालान्ता देवता जलाशयोत्सर्गवत्संस्थाप्य प्रतिवृक्षं सप्ताष्टौ वेति कृतसँख्याकानि स्वर्णफलानि वेद्यां कूर्ममकरादिपात्रीस्थाने ।

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया ऽअस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो ऽअसि वीडय स्वास्त्थाता ते जयतु जेत्वानि ।

इत्यासादयेत् । तत्रैव ब्रह्माणं शिवं बिष्णुं विनायकं कमलामम्बिकां भूतग्रामं च संस्थाप्य सर्वान् पूजयेत् । ततः सर्वेभ्यो बलीन् दद्यात् । अग्निस्थापनात्प्राच्यां पदत्रय भुवँ त्यक्त्वा जलाशयोत्सर्गवद्यूपं निखनेत् ततः कुशकण्डिकां विधायाज्यभागान्तं कृत्वा समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकं सूर्यादिग्रहाणामधिप्रत्यधि-पञ्चलोकपालदशदिक्पालदेवताभिः अष्टाष्टाभिराहुतिभि र्जुहुयात् तदनन्तरं प्रधानमन्त्रेण होमः । तत्र मन्त्रः । ॐ वनस्पते वीड्वङ्गेति । अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं आज्येन जुहुयात् । ततो अग्न्यादिपूजनं स्विष्टकृद्धोम नवाहुतीं बलिं पूर्णाहुतिं च कुर्यात् । ततः कुण्डसमीपस्थकलशजलेन कुशैर्यजमानं सकुटुम्ब-मभिषिञ्चेयुः, सर्वौषधीमनुलिप्य स्नापयेयुः । त्र्यायुषँ जमदग्नेति त्र्यायुषकरणम् । संस्रवप्राशनम् । आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् । कृतैतत् आरा-मोत्सर्गं० ब्रह्मणे० । अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः बिमोकोदकेन उपयमनकुशैर्मार्जयेत् । उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । कृतैतत् आरामोत्सर्गकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां सवत्सां गां रुद्रदैवतां आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । कृतैतद्गोदानकर्मणः साङ्गता० । कृतैतत्० आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । कृतैतत् कर्मणः० यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । कृतैतत्

कर्मणः न्यूनातिरिक्त० भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ततः कर्ता हस्ते जलं गृहीत्वा। इदं आराम यथासंख्यअश्वत्थादियुतान् वृक्षान् वनस्पतिदैवतान् स्वीयपापक्षयपूर्वकपितृमातृकुलद्वयतारणकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सर्वसत्त्वेभ्योऽहं उत्सृजे। ततो मन्त्रद्वयँ पठेत्।

सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतद्वममूर्जितम्।
रमन्तां सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः १।
सामान्यं सवभूतेभ्यो मया दत्तमिदं वनम्।
रमन्तां सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः।२।
प्रमादादिति पठित्वा।

इति आरामोत्सर्गपद्धतिः समाप्ता।

पञ्चायतनप्रतिष्ठाक्रमकारिका, ज्ञानमालायाम

[शिवपञ्चायननम्] यदा तु शङ्करं मध्ये ऐशान्यां श्रीपतिं यजेत्।
आग्नेय्यां च तथा हंसँ नैऋत्यां पार्वतीसुतम् १।
वायव्यां च सदा पूज्या भवानी भक्तवत्सला।
[विष्णुपञ्चायतनम्] यदा तु मध्ये गोविन्दमीशान्यांँ शङ्कर यजेत्।२
आग्नेय्यां गणनाथञ्च नैऋत्यां तपनं तथा।
वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यं समाहितः।३।
[सूर्यपञ्चायतनम्] सहस्रांशुर्यदा मध्ये ऐशान्यां पार्वतीपतिम्।
आग्नेय्यामेकदन्तं च नैऋत्यामच्युतं तथा।४।

वायव्यां पूजयेद्देवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम् ।
[गणेशपञ्चायतनम्] हेरम्बं तु यदा मध्ये ऐशान्यामच्युतं यजेत् ।५

आग्नेय्यां पञ्चवक्त्रन्तु नैरृत्यां द्युमणिं यजेत् ।
वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः ।६।

[देवीपञ्चायतनम्] भवानीं तु यदा मध्ये ऐशान्यां माधवं यजेत् ।
आग्नेय्यां पार्वतीनाथं नैर्ऋत्यां गणनायकम् ।७।

प्रद्योतनं तु वायव्यामाचार्यस्तु प्रपूजयेत् ।
[रामपञ्चायतनम्] रामचन्द्रं यजेन्मध्ये वामे जनकनन्दिनीम् ।८।

दक्षिणे लक्ष्मणं चैव अग्रतो मारुतिं तथा ।
भरतं दक्षिणे चैव शत्रुघ्नं वाम एव च ।९।

इति स्थापनप्रकारः तस्य चक्रम् ।

विष्णु १ सूर्य	शिव २ गणेश	शिव ३ गणेश
शिव	विष्णु	सूर्य
अम्बिका गणेश	अम्बिक सूर्य	अम्बिका विष्णु

विष्णु ४ शिव	विष्णु ५ शिव
गणेश	अम्बिका
अम्बिका सूर्य	रवि गणेश

देवीमूर्तौ षोडशन्यासानन्तरं निवृत्यादिन्यासः कार्याः-

ॐ ह्रीं अँ निवृत्यै नम शिरसि न्य० १ ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै न० मुखे न्य० २ ॐ ह्रीं इँ विद्यायै न० दक्षिणनेत्रे न्य० ३ ॐ ह्रीं इं शान्त्यै न० वामनेत्रे न्य० ४ ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै न० दक्षिणश्रोत्रे न्य० ५ ॐ ह्रीं ऊँ दीपकायै न० वामश्रोत्रे न्य० ६ ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै न० दक्षिणनासापुटे न्य० ७ ॐ ह्रीं ॠँ मोचिकायै न० वामनासापुटे न्य० ८ ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै न० वामकपोले न्य० ९ ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै न० ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ न्य० १० ॐ ह्रीं ऐं ज्ञामामृतायै न० अधोदन्तपङ्क्तौ न्य० ११ ॐ ह्रीं ओं साविव्यै न० ऊर्ध्वोष्ठे न्य० १२ ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै न० अधरोष्ठे न्य० १३ ॐ ह्रीं अँ सुरूपायै न० जिह्वायां न्य० १४ ॐ ह्रीं अः अनन्तायै न० कण्ठे न्य० १५ ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै न० दक्षबाहुमूले न्य० १६ ॐ ह्रीं खं ऋध्यै न० दक्षकूर्परे न्य० १७ ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै न० दक्षमणिबन्धे न्य० १८ ॐ ह्रीं घँ मेधायै न० दशकराङ्गुलिमूलेषु न्य० १९ ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै न० दशाङ्गुल्यग्रेषु न्य० २० ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै न० वामबाहुमूले न्य० २१ ॐ ह्रीं छं द्युत्यै न० वामकूर्परे न्य० २२ ॐ ह्रीं जँ स्थिरायै न० वाममणिवन्धे न्य० २३ ॐ ह्रीं झं स्थित्यै न० वामाङ्गुलिमूले न्य० २४ ॐ ह्रीं अं सिध्यै न० वामङ्गुल्यग्रेषु न्य० २५ ॐ ह्रीं टं जरायै न० दक्षपादमूले न्य० २६ ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै न०

दक्षजानुनि न्य० २७ ॐ ह्रीं डं शान्त्यै न० दक्षगुल्फे न्य० २८ ॐ ह्रीं ढँ ऐश्वर्यै न० दक्षपादाङ्गुलीषु न्य० २९ ॐ ह्रीं णं रत्यै न० वामपादाङ्गुल्यग्रेषु न्य० ३१ ॐ ह्रीं तं कामिन्यै न० वाम-पादमूले न्य० ३१ ॐ ह्रीं थँ रदायै न० वामजानुनि न्य० ३२ ॐ ह्रीं दं ह्रादिन्यै न० वामगुल्फे न्य० ३३ ॐ ह्रीं धँ प्रीत्यै वामपादाङ्गुलिमूले न्य० ३४ ॐ ह्रीं नं दीर्घायै न० वाम-पादङ्गुल्यग्रे न्य० ३५ ॐ ह्रीं पं तीक्षणायै न० दक्षिणकुक्षौ न्य० ३६ ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै न० वामकुक्षौ न्य० ३७ ॐ ह्रीं बँ अभयायै न० पृष्ठे न्य० ३८ ॐ भँ निद्रायै न० नाभौ न्य० ३९ ॐ ह्रीं मं मात्रे न० उदरे न्य० ४० ॐ ह्रीं यं शुद्धायै न० हृदि न्य० ४१ ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै न० कंण्ठे न्य० ४२ ॐ ह्रीं लं कृपायै न० ककुदि न्य ४३ ॐ ह्रीं वं ऊल्कायै न० स्कन्धयोर्न्य० ४४ ॐ ह्रीं शं मृत्यवे न० दक्षिणकरे न्य० ४५ ॐ ह्रीं षं पीतायै न० वामकरे न्य० ४६ ॐ ह्रीं स श्वेतायै न० दक्षिणपादे न्य० ४७ ॐ ह्रीं हं अरुणायै न० वामपादे न्य० ४८ ॐ ह्रीं त्रं असितायै न० मूर्द्धादीपादान्तं न्य० ४९ ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै न० पादादिमूर्द्धान्तं न्य० ५० इति त्रितीयो निवृत्तिन्यासो देवीमूर्तौ । निवृत्तिन्यासानन्तरं वशिन्यादिन्यासो देवीमूर्तौ कार्यः । तद्यथा—

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं एं ऐं ओं औं अं अः ॡं वासिमीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे न्य० १ ॐ कं खं गं घं ङं

क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै न० ललाटे न्य० २ ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिमीवाग्देवतायै म० भ्रूमध्ये न्य० ३ ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यू विमलावाग्देवतायै न० कण्ठे न्य० ४ ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै न० हृदि न्य० ५ ॐ पं फं बं भं मं ह्स्लब्ल्यूँ जयिनीवाग्देवतायै न० नाभौ न्य० ६ ॐ यं रं लं वं ह्स्पब्यूँ सर्वेश्वरीवाग्देवतायै न० आधारे न्य० ७ ॐ शं षं हं क्षं क्ष्मों कौलिनीवाग्देवतायै न० सर्वाङ्गे न्य इति वशिन्यादिन्यासः । ॐ जीवात्मने नमः ।१। ॐ प्राणात्मने नमः २ देवी शरीरे व्यापकं कुर्यात् ।

अधिवासनम् (क्लीबे)

अधिवासयति, स्थापयति देवता अनेन

(अधि+वस्+णिच्÷करणेल्युट्)

अधिवासः

गन्धमाल्यादिभिः सँस्कार करणम् इत्यमरः

तद् द्रव्याणिः— मृद् गन्धः शिलाधान्यँ दूर्वापुष्पँफलं दधि ।

घृत स्वस्ति सिन्दूर शङ्ख कज्जल रोचना ।१।

श्वेतसर्षपः स्वर्ण रौप्यं ताम्रं च चामरम् ।

दर्पणं च तथा दीपः प्रशस्तपात्रमेव च ।२

द्वाविंशति प्रोक्तानि द्रव्याणि चाधिवासने ।

तैलहरिद्रया चादौत्रयो विंशतिकं स्मृतम् ।३।

क्वचित्पुस्तके सर्षपस्थाने सिद्धान्नँ । इति भवदेवः क्वचिच्च चामरस्थाने सिद्धान्नम् । तत्रानुष्ठानम् ।

दुर्गापूजा दोलयात्रा यागादौ पूर्वदिने सायँकाले आचारात् संस्कार कर्मणि तद्दिने पूर्वोक्त मन्त्रं पठित्वा क्रमेणोक्तद्रव्याणि आदौ देवादीनां ललाटे पश्चाद् भूमौ स्पर्शयित्वा प्रशस्तपात्रे स्थापयित्वा तस्पात्रँ पूर्वोक्त क्रमेण वारत्रयं स्पर्शयेत् द्रव्य-विशेषेण सँस्कारः । तत्र यजुर्वेदोक्तमन्त्रास्त्रयो विंशति द्रव्याणि च यथा—

तैलहरिद्रयाः— ॐ कोसि कतमोसि कस्मैत्वा

काय त्वा सुश्लोकः सुमङ्गलः सत्यराजन् ।१।

अनया तैल हरिद्रया अस्य शुभाधिवासनमस्तु । एवं सर्वत्र

गन्धगृहीत्वा:– ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां त्वामिहोपह्वये श्रियम् ।२।

मृत्तिकांगृहीत्वा: ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया
विश्वस्य भुवनस्य धर्त्रीं पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृँह पृथिवीं
माहिँसीः ।३।

पुनर्गन्धन ॐ गन्धद्वारां०

शिलांगृहीत्वा:– ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठाभावश्चरन्ति स्वसि
च इयानाः । ता आवृत्रनधरा गुदक्ता अहिबुध्न्य-
मनुरीयमाना: । विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि
विष्णोः क्रान्तमसि ।४।

धान्यंगृहीत्वा:– ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान् धिनुहि यज्ञं धिनुहि
यज्ञपतिं धिनुहि मां यज्ञन्यम् ।५।

दूर्वांगृहीत्वा:– ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।६।

पुष्पंगृहीत्वा:– ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या ऽहोरात्रे पाश्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्म-
ऽइषाण सर्वलोकम्म ऽइषाण ।७।

फलंगृहीत्वा:—ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वँ हसः ।८।

दधिगृहीत्वा:—ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन ।
सुरभिणो मुखाकरत्प्रण ऽआयूँषितारिषत् ।९।

घृतं गृहीत्वाः— ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासप्रियं देवानामनाधृष्टं यजनमसि ।१०।

स्वस्तिकं गृहीत्वाः— ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति न स्ताक्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।११।

सिन्दूरं गृहीत्वाः— ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनाशो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ।१२।

शङ्खं गृहीत्वा — ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकँशब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्ममवरस्यराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्यावदावपम् ।१३।

कज्जलंगृहीत्वाः— ॐ समिद्धोऽअञ्जनं कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत्पिन्वमानः । वाजीवहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमासधस्यम् ।१४।

रोचनांगृहीत्वाः— ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ।१५।

सिद्धान्नंगृहीत्वाः— ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्र प्रदातारं तारिष ऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।१६।

"सिद्धान्नमत्र आतपतण्डुलाः"

काञ्चनं गृहीत्वा:- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।१७।

रजतंगृहीत्वा:- ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामसि । प्रियँ देवानामनाधृष्टं देव यजनमसि १८।

ताम्रं गृहीत्वा:- ॐ असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनँ रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रृताः सहस्रशोऽवैषाँ हेड ऽईमहे ।१९।

सिद्धार्थंगृहीत्वा:- ॐ रक्षोहणो वो बलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां बलगहना ऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां बलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ।२०।

दर्पणंगृहीत्वा:- ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेम सविता रथेनादेवो याति भुवनानिपश्यन् ।

दीपंगृहीत्वा:- ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ।२१।

सर्वद्रव्ययुक्त प्रशस्तपात्रं (डल्लकँ) गृहीत्वा:- ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदेत्वा ऽअनुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ।२३।

इति यजुर्वेदीय दुर्गोत्सव पद्धतिः ।।

सामवेदिनामाधिवासनमन्त्रा

तैलहरिद्रया:– ॐ कोसि कतमोसि कस्मैत्वा काय त्वा सुश्लोकः सुमङ्गलः सत्यराजन् ।१।

अनया तैल हरिद्रया अस्य शुभाधिवासनमस्तु । एवं सर्वत्र

गन्धेन:– ॐ भद्रा इन्द्रस्य रातय: यो ऽअस्य कामं । विधतो न रोषति मनोदानाय चोदयन् ।२।

मृत्तिकया:– ॐ महित्रीणामवरमस्तु द्युक्षमित्रस्या–र्यम्नः दुराधर्षं वरुणस्य ।३।

पुनर्गन्धेन:– ॐ भद्रा इन्द्रस्य रातय:० इत्यादि पूर्ववत्

शिलया:– ॐ वित्व दापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः । तं त्वागिर: सुष्ठुतयो वाजयन्त्याजिन गिर्व-बाहो जिग्युरश्वाः ।५।

धान्येन:– ॐ धाना वन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्रपातर्जुषस्वन: ।६।

दूर्वया:– ॐ जज्जायथामपूर्व्यं मघवन् वृत्र हत्याय तत्पृथिवीमप्रथमस्तदस्तभ्नाऽउतो दिवम् ।७।

पुष्पेण:– ॐ पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातम: । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ।८।

फलेन:– ॐ इन्द्रस्तरोने मधिता हवन्ते यत्पार्या युञ्जते धियस्ताः शूरो नृषाता श्रवसश्च कामस्वा गोमति व्रजे भजात्वन्नः ।९

दध्ना:— ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूँषि तारिषत् ।१०।

घृतेनः— ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणाविष्कभिते भूरिरेतसा ।११।

स्वस्तिकेनः— ॐ अग्निसोमोअयं ँ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः ।
उत स्वराजो ऽआश्विना ।१२।

सिन्दूरेणः— ॐ सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्त्यमुक्षणं हिरण्य पावा
पशुमप्सु गृभ्नते ।१३।

शङ्खेन— ॐ स्व सुन्वयो वसूनां यो रायामानेता य ऽइडानां
सोमोयः सुक्षितीनाम् ।१४।

कज्जलेनः— ॐ अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुंरिहन्ति मध्वा
व्यञ्जते ।१५।

रोचनया :— ॐ श्रायन्त ऽइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत वसूनि
जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ।१६।

सिद्धार्थेणः— ॐ प्रणी उषाःअपूर्वा व्युत्सति प्रिया दिवस्तुषे वा
मश्विना बृहत् ।१७।

काञ्चनेन — ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् । सनिं
मेधा मयासिषम् ।१८।

रौप्येणः— ॐ यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि ।१९।

ताम्रेण:- ॐ बन्महां असि सूर्य बडादित्य महांअसि महस्ते सतो महिमापनिष्ट समन्हा देव महां असि ।२०।

दीपेन:- ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमँ तनोत्वरिष्टँ यज्ञं समिमं दधातु विश्वेदेवाः सह मादयन्तामों २ प्रतिष्ठ ।२१

दर्पणेन:- ॐ आदित्य प्रयनस्य बेत्तसो ज्योतिः पश्यन्तिवासरं पाबाय दिव्यँ तो दिवि ।२२।

सर्वद्रव्यपूर्ण स्थापितैक प्रशस्त पात्रेण:- ॐ उद्यल्लोकानरोचय प्रभभूतमरोचय होइ इमान् लोकानरोचय होइ विश्व-भूतमरोचय । हो हा रोवात्र धर्मो ज्योतीँषि ।२३।

इति सामवेदीय दुर्गोत्सवपद्धति ।

गायत्री मन्त्र संहिता

ब्रह्मगायत्रीः– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि ।
धीयो यो नः प्रचोदयात् ।१।

विष्णुगायत्रीः– ॐ नारायणाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।२।

शिवगायत्रीः– ॐ तत्पुरुषाय विद्महे । महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।३

रामगायत्रीः– ॐ दाशरथाय विद्महे । सीतावराय धींमहि ।
तन्नो रामः प्रचोदयात् ।४।

लक्ष्मण गायत्रीः– ॐ दाशरथाय विद्महे । उर्मिलेशाय धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।५।

कृष्णगायत्रीः ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।६।

नृसिंहगायत्रीः– ॐ नृसिंहाय विद्महे । वज्रदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ।७

जलगायत्रीः– ॐ जलबिंबाय विद्महे । नीलपुरुषाय धीमहि ।
तन्नोऽम्बु प्रचोदयात् ।८।

सूर्यगायत्रीः– ॐ भास्कराय विद्महे । दिवाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।९।

अग्निगायत्रीः– ॐ महाज्वालाय विद्महे । अग्निमग्नाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।१०।

पृथ्वीगायत्री- ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे । धरामूर्त्यै धीमहि ।
तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् ।११।

नारायणगायत्रीः- ॐ नारायणाय विद्महे । शेषशायिने धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।१२।

हनुमद्गायत्रीः- ॐ अंजनीजाय विद्महे । स्वर्णपुत्राय धीमहि ।
तन्नो वीरः प्राचोदयात् ।१३।

गरुडगायत्रीः- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे । स्वर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।१४।

देवीगायत्रीः- ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे । महाशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।१५।

गोपालगायत्रीः- ॐ गोपीप्रियाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो गोपः प्रचोदयात् ।१६।

परशुरामगायत्रीः- ॐ जामदग्न्याय विद्महे । महावीराय धीमहि ।
तन्नो विप्रः प्रचोदयात् ।।१७।

तुलसीगायत्रीः- ॐ तुलसीपत्राय विद्महे । विष्णुप्रियायै धीमहि ।
तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् १८।

गुरुगायत्रीः- ॐ परब्रह्मणे विद्महे । गुरुदेवाय धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।१९।

आकाशगायत्रीः- ॐ आकाशाय विद्महे । नभोदेवाय धीमहि ।
तन्नो व्योम प्रचोदयात् ।२०।

चन्द्रगायत्रीः— ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे । अमृतत्वाय धीमहि ।
तन्नश्चंद्रः प्रचोदयात् ।२१।

हंसगायत्रीः— ॐ परमहँसाय विद्महे । महत्तत्त्वाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।२२।

लक्ष्मीगायत्रीः— ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे । विष्णुप्रियायै धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।२३।

गंगागायत्रीः— ॐ भागीरथ्यै च विद्महे । विष्णुपद्यै च धीमहि ।
तन्नो गंगा प्रचोदयात् ।२४।

इति चतुर्विंशतिगायत्र्यः ।

वेदाधिकाररहितानां गायत्रीमन्त्रः ।

ह्रीं यो देवः सविताऽस्माकं मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
प्रचोदयति तद् भर्गो वरेण्यं समुपास्महे ।१।

रुद्रगायत्रीः— ॐ तत्पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।१।

शिवगायत्रीः— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।२।

वृषगयत्रीः— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नन्दिकेश्वराय धीमहि ।
तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ।३।

गणेशगायत्रीः— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।४।

स्कन्दगायत्रीः— ॐ षण्मुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
स नः स्कन्दः प्रचोदयात् ।५।

वैश्वानरगायत्रीः— ॐ पावकाय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि ।
तन्नो वैश्वानरः प्रचोदयात् ।६।

अग्निगायत्रीः— ॐ वैश्वानराय विद्महे ललज्जिह्वाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ७।

सूर्यगायत्रीः— ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।८।

आदित्यगायत्रीः ॐ काराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि ।
तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ।९।

भानुगायत्रीः— ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि ।
तन्नो भानुः प्रचोदयात् ।१०।

वृषभःगायत्रीः— ॐ तीक्ष्ण शृंगाय विद्महे वक्रपादाय धीमहि ।
तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ।११।

दुर्गागायत्रीः— ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ।१२।

भगवतीगायत्रीः— ॐ महाशूलिन्यै विद्महे महादुर्गायै धीमहि ।
तन्नो भगवती प्रचोदयात् ।१३।

गौरीगायत्री- ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि ।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।१४

गरुडगायत्रीः— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।१५।

विष्णुगायत्रीः— ॐ नारायणाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।१६।

नृसिंहगायत्रीः— ॐ नृसिंहाय विद्महे । वज्रनखाय धीमहि ।
तन्नः सिंहः प्रचोदयात् ।१७

ब्रह्मागायत्रीः— ॐ चतुर्मुखाय विद्महे कमण्डलुधराय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।१८।

हंसगायत्रीः— ॐ परमहँसाय विद्महे महातत्वाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।१।

ब्रह्मगायत्रीः— ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् २।

सरस्वतीगायत्रीः— ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।३।

विष्णुगायत्री — ॐ श्रीविष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।४।

लक्ष्मीगायत्रीः— ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।५।

नारायणगायत्रीः— ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो नारायणः प्रचोदयात् ।६।

रामगायत्रीः– ॐ दाशरथाय विद्महे । सीतावराय धीमहि ।
तन्नो रामः प्रचोदयात् ।७।

जानकीगायत्रीः– ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि ।
सा नः सीता प्रचोदयात् ८।

लक्ष्मण गायत्रीः– ॐ दाशरथाय विद्महे सुमित्रात्मजाय धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।९।

हनुमद्गायत्रीः– ॐ अञ्जनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ।१०

गरुडगायत्रीः– ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णपर्णाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।११।

कृष्णगायत्रीः - ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।१२।

गोपालगायत्रीः– ॐ गोपालाय बिद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि ।
तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ।१३।

राधिकागायत्रीः– ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि ।
तन्नो राधिका प्रचोदयात् १४।

परशुरामगायत्रीः– ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि ।
तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ।१५।

नृसिंहगायत्रीः– ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ।१६।

हयग्रीवगायत्रीः– ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।१७।

शिवगायत्री – ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि ।
तन्नो शिवः प्रचोदयात् ।१८।

रुद्रगायत्रीः– ॐ तत्पुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् १९।

दक्षिणामूर्तिगायत्रीः– ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि ।
तन्नो धीशः प्रचोदयात् ।२०।

गौरीगायत्री– ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि ।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।२१।

गरुडगायत्रीः– ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।२२।

स्कन्दगायत्रीः– ॐ षण्मुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
स नः स्कन्दः प्रचोदयात् २३।

नन्दीगायत्रीः– ॐ तत्पुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो नन्दीः प्रचोदयात् ।१०।

सूर्यगायत्रीः– ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।२५।

चन्द्रगायत्रीः– ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि ।
तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।२६।

भौमगायत्रीः– ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि ।
तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।२७।

बुधगायत्रीः– ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि ।
तन्नो बुधः प्रचोदयात् ।२८।

गुरुगायत्रीः– ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि ।
तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।२९।

शुक्रगायत्रीः– ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।३०।

शनिगायत्रीः– ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि ।
तन्नो सौरिः प्रचोदयात् ।३१।

राहुगायत्रीः– ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।३२।

केतुगायत्रीः– ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ३३।

यन्त्रगायत्रीः ॐ यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि ।
तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् ।३४।

पृथ्वीगायत्रीः– ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्रमूर्त्यै च धीमहि ।
तन्नो मही प्रचोदयात् ।३५।

अग्निगायत्रीः– ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्याय धीमहि ।
तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ।३६।

जलगायत्रीः— ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि ।
तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात् ।३७।

आकाशगायत्रीः— ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि ।
तन्नो गगनं प्रचोदयात् ३८।

वायुगायत्रीः— ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्तये च धीमहि ।
तन्नो वायुः प्रचोदयात् ।३९।

गणेशगायत्रीः— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।४०

कामगायत्रीः— ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ।४१

तुलसीगायत्रीः— ॐ श्रीत्रिपुरायै विद्महे शतपत्रायै धीमहि ।
तन्नस्तुलसी प्रचोदयात् ।४२।

देवीगायत्रीः— ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।४३।

शक्तिगायत्रीः— ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि ।
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।४४।

दुर्गागायत्रीः— ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ४५।

दुर्गागायत्रीः— ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि ।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।४६।

अन्नपूर्णागायत्रीः— ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि।
तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।४७।

कालीगायत्रीः— ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि।
तन्नो घोरा प्रचोदयात् ।४८।

तारागायत्रीः ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।२२।

षोडशी(त्रिपुरसुन्दरी)गायत्रीः— ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि। सा नः क्लिन्ना प्रचोदयात् ।५०।

बालागायत्रीः— ॐ ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि।
सा नः शक्तिः प्रचोदयात् ।५१।

भुवनेश्वरीगायत्रीः— ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।५२।

भैरवीगायत्रीः— ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।५३।

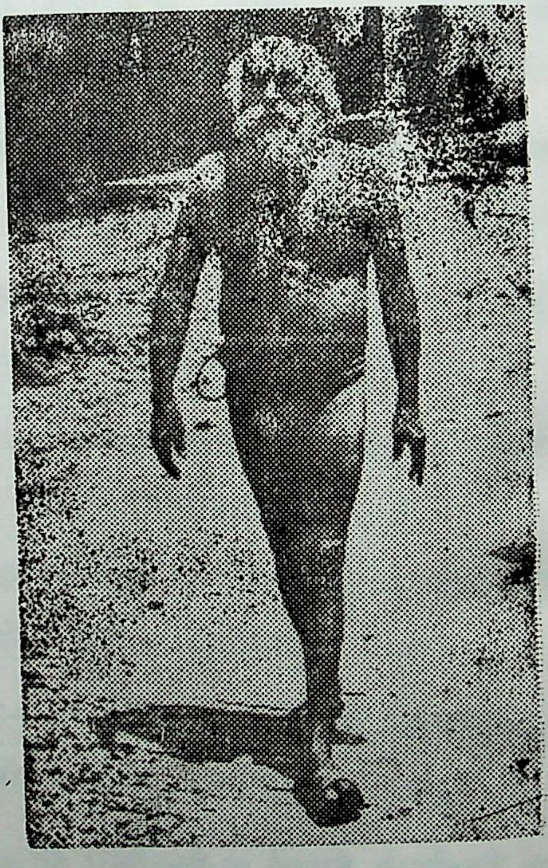
छिन्नमस्तागायत्रीः— ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।५४।

धूमावतीगायत्रीः— ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि।
तन्नो धूमा प्रचोदयात् ५५।

बगलामुखीगायत्रीः— ॐ बगलामुखी च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।५६।

श्रीरघुनाथोविजयतेतराम् ❀

विश्वकल्याणार्थम् अतिविष्णुयाग महोत्सव



ब्रह्मर्षि बावा दूधाधारी जी

सवत् २०५० श्रावण प्र० ५ (२०-७-१९९३ ई०)

श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी जी वर्फानी आश्रम शास्त्रीनगर जम्मू(तवि)

✡ श्री राघवेन्द्रो विजयतेतराम् ✡

❀ श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः ❀

दुग्धाधारी यतिवरप्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारी प्रतिपदमहो विश्वतो यज्ञकारी ।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मानन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी ।१।

नाम्नां धाम्नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
पुण्यात्मानो द्विजसुरगवां सर्वदैवावधानाः ।
यज्ञैरिष्ट्वा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेतो-
र्धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः ।२।

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मनाः-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासत ।
नानातीर्थनिषेवणाद्गुरुकृपामासाद्यगोपलनाद्
देवानां सततार्चनात्षडक्षरजपादष्टाङ्गयोगार्जनात् ।३।

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बनात्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पिचर्चनान्नित्यशः ।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्नित्यं पुरश्चर्यया
श्रीतस्मात्तंमखैः सदेह जगतः कल्याण सच्चिन्तनात् ।४

ब्रह्मर्षिप्रवरा जगद्गुरुवरा दृष्ट्वैक दृष्टचा जग
हस्राक्षं जितवन्त इत्थमपि ते जाताः सहस्राध्वराः
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाशाय्यास्तपश्चर्यः
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम् ।

उङ्गासमङ्गः मागधखसाऽऽसाकेत काशीग
जम्बू श्रीनगर सद्धमपुराम्बाराम आर्यश्रियम्
राजौरी ह्यखमूर मानससरो जन्द्राह भड्डुगु
गङ्गायामुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम् ।

क्षेत्रं नैमिषिकं तमेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वर
गामं गाममहो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
न्यासस्थच्छ्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं मह
भारश्री वहतां सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम् ।

इति विहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता

श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदुग्धाधारिमहात्मनां

प्रशस्तिः समाप्ता ।।